बैठक चरित्र

निज वार्ता घरू वार्ता

जगद्गुरु
श्रीमद्वल्लभाचार्य वंशावतंस
आचार्यवर्य्य गोस्वामि तिलकायित
श्री१०८ श्रीइन्द्रदमन जी (श्रीराकेश जी) महाराज
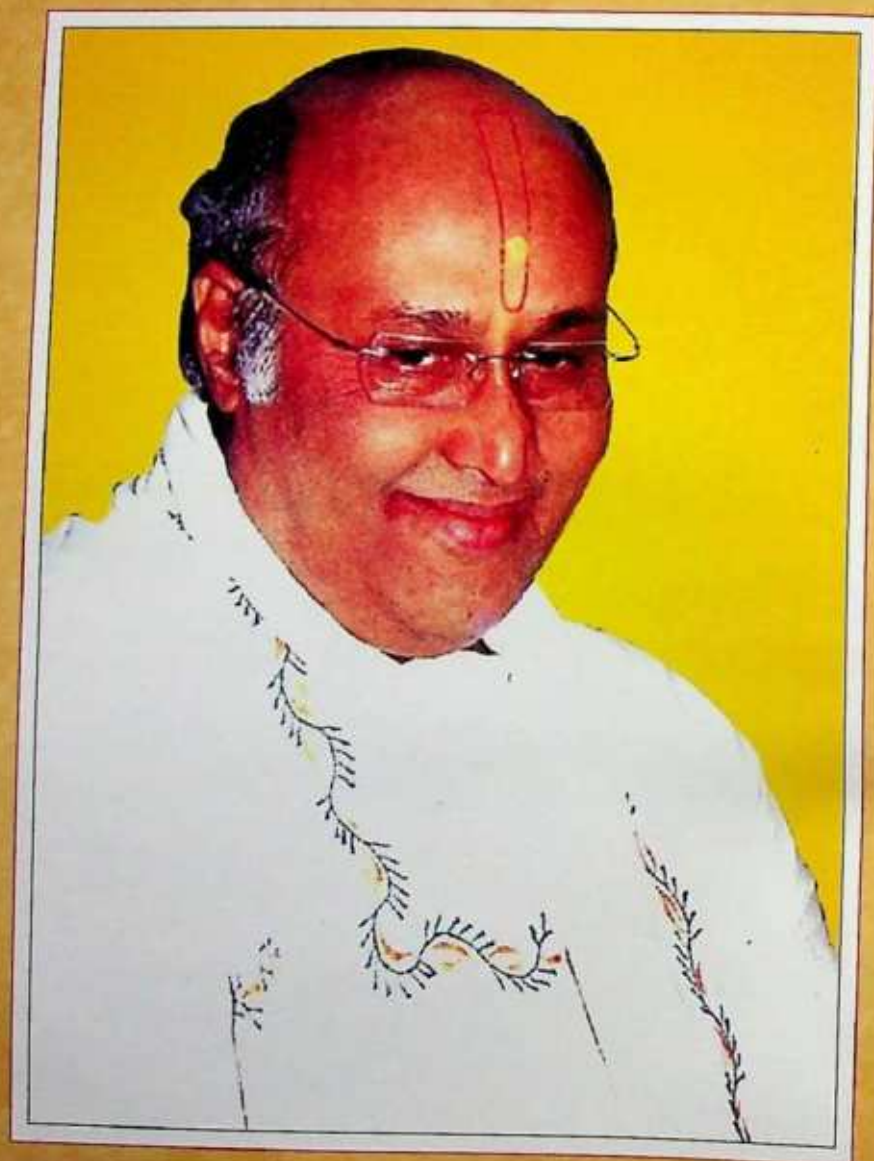
नाथद्वारा

जन्मतिथि फाल्गुन शुक्ल ७
विक्रम संवत् २००६

प्राकट्य
२४ फरवरी सन् १९५०

बैठक चरित्र

पूज्यपाद आचार्य वर्य्य गो.ति. श्री १०८ श्री इन्द्रदमन जी
(श्री राकेशजी) महाराज की आज्ञा से प्रकाशित)

संपादक एवं संशोधक

त्रिपाठी यदुनन्दन श्री नारायणजी शास्त्री
साहित्यायुर्वेदाचार्य, एम.ए., संस्कृत, हिन्दी
अध्यक्ष

प्रकाशक

विद्या विभाग, मंदिर मण्डल नाथद्वारा

प्रति : २०००
प्रति : २०७३

न्योछावर
८०/-

निवेदन

श्रीमद्भगवद् वदनानलावतार श्रीमद्अखण्ड भूमण्डलाचार्य श्रीमद्वल्लभाचार्य की चौरासी बैठक तथा श्रीमत्प्रभु चरण श्रीगुंसाईजी की श्रीविट्ठलनाथजी की अट्ठाईस बैठक एवं ज्येष्ठलालजी श्रीगिरिधरजी की चार बैठक, श्रीगोकुलनाथजी की तेरह बैठक श्रीहरिरायजी की सात बैठक श्रीगोवर्धन की एक बैठक श्रीघनश्यामजी (सप्तमलालजी) की एक बैठक, श्रीगोवर्धननाथजी की बारह चरण चौकी का वर्णन, निज वार्ता, घरू वार्ता का व्रज भाषा से हिन्दी भाषान्तर पूज्यपाद आचार्य वर्य्य गो.ति. श्रीराकेशजी (श्रीइन्द्रदमनजी) महाराज श्री नाथद्वारा की आज्ञा से किया गया है।

आशा है वैष्णवजन इस पुस्तक से लाभान्वित होंगे तथा हमारे इस प्रयास को सफल करेंगे।

यदुनन्दन शास्त्री
अध्यक्ष
विद्या विभाग
मन्दिर मण्डल नाथद्वारा (राज.)

चौरासी बैठक के चरित्र की अनुक्रमणिका

श्रीगुसांईजी की २८ बैठक के चरित्र की अनुक्रमणिका

श्री गिरिधर जी ४ बैठक

श्री गोकुलनाथजी की १३ बैठक का चरित्र

श्री हरिराय जी की ७ बैठक का चरित्र

चरण चौकी

श्री वल्लभाचार्य जी की निजवार्ता की अनुक्रमणिका

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की घरू वार्ता की अनुक्रमणिका

जगद्गुरु श्री वल्लभाचार्य
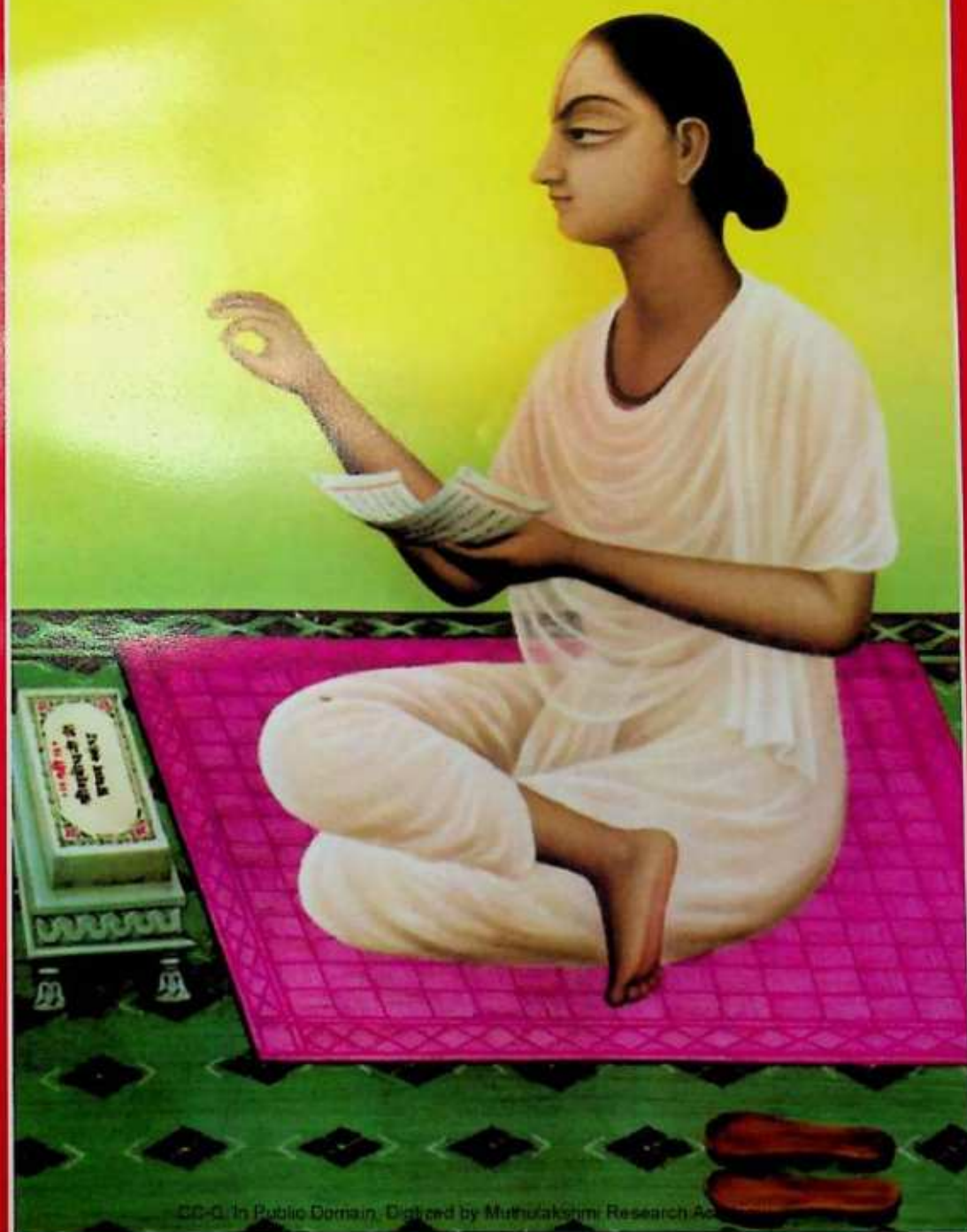
बैठक चरित्र

श्रीमद् अखण्ड भूमण्डलाचार्य वर्य

श्रीमद् वल्लभाचार्य जी की ८४ बैठक का चरित्र

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की चौरासी बैठक इस पृथ्वी मण्डल में हैं। जहाँ जहाँ आपने अलौकिक चरित्र दिखाए है। जहाँ जहाँ आपने श्री भागवत का पारायण किया है वहाँ वहाँ आपकी बैठक प्रसिद्ध हुई है। चौरासी प्रकार की भक्ति आपने प्रकट की है और चौरासी वैष्णवों के हृदय में आपने स्थापित की है। इक्यासी प्रकार की सगुण भक्ति और तीन प्रकार की निर्गुण भक्ति प्रेम, आसक्ति, व्यसनादि भेद हैं। इसी कारण चौरासी वैष्णव मुख्य भक्ति के अधिकारी हुए हैं।

।। श्री मंगलाचरणम् ।।

सौन्दर्य निजहृदगतं प्रकटितं श्रीगूढभावात्मकं
पुंरुपं च पुनस्तदंतरगतं प्रावीविशत् स्वप्रिये।।
संश्लिष्टावुभयोर्बभौ रसमयः कृष्णो हि तत्साक्षिकम्
रूपं तत् त्रितयात्मकं परमभिध्येयंसदा वल्लभम्।।1।।

सायं कुञ्जालयस्थासनमुपविलसत्स्वर्णपात्रं सुधौतं
राजद्यज्ञोपवीतं परितनुवसनं गौरमम्भोज वक्त्रम्।।
प्राणानायम्य नासापुट निहितकरं कर्णराजद्विमुक्तं
वन्दे धोंन्मीलिताक्षं मृगमद तिलकं विट्ठलेशंसुकेशम्।।2।।

।।श्रीकृष्णाय नमः।।

।।श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः।।

१. गोकुल की प्रथम बैठक–गोविन्द घाट, उत्तरप्रदेश
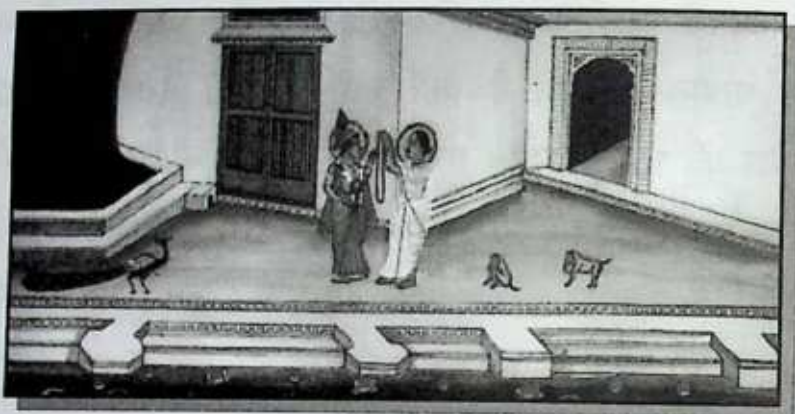
श्री गोकुल में श्रीआचार्यजी महाप्रभु की तीन बैठक है उसमें एक बैठक तो गोविन्द घाट के ऊपर छोंकर के वृक्ष के नीचे है। आप जब प्रथम श्री गोकुल पधारे थे तब छोंकर के नीचे बिराजे थे। तब दामोदर दास हरसानी को आज्ञा की कि दमला गोविन्द घाट और ठकुरानी घाट दोनों (समान) बराबर है। इनमें कौन सा गोविन्द घाट है और कौन सा ठकुरानी घाट है यह मालुम नहीं पडता है।

तब इतने में ही अकस्मात् वहां एक स्त्री आयी। जिसने नरव से शिख पर्यन्त हीरा पन्ना के आभरन पहन रखे हैं। उसने आकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु को कहा कि तुम इस छोंकर के नीचे बिराजो यही गोविन्द घाट है और आपके दक्षिण की ओर ठकुराणी घाट है। इतना कहकर वह स्त्री अन्तर्ध्यान हो गयी।

तब श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास ने कहा कि दमला यमुनाजी ऐसे

परम उदार हैं जो हमे रंचक (थोड़ी देर) खड़े हुए वह भी आपसे नहीं सहा गया। आप तत्काल पधार कर हमको गोविन्द घाट तथा ठकुरानी घाट बता गये। तब दामोदर दास ने विनती की कि महाराज गोविन्द घाट और ठकुरानी घाट का क्या अभिप्राय कहा है। तब आपने आज्ञा की जो रावल सों ठकुरानी घाट तक श्री स्वामिनी की हद् (सीमा) है और महावन से गोविन्द घाट तक श्रीठाकुरजी की हद् (सीमा) है।

यह छोंकर का वृक्ष ब्रह्म का स्वरूप है, यह आज्ञा आपने की। उसी दिन श्रावण सुदी ग्यारस को सूत का पवित्रा सिद्ध किया था। उसको केसर से रंगा। केसरी धोती उपरना रंगे। मिश्री सिद्ध करके रात्रि में पोढे। दामोदर दास आपसे थोड़ी दूर आपकी इच्छा से सोये थे। उसी समय आपके मन में यह चिन्ता हुई कि मेरा प्राकट्य भूतल पर हुआ है। वह दैवी जीवों के उद्धार के लिए हुआ है। इसलिए मायामत का खण्डन करके भक्तिमार्ग की स्थापना करनी है। तथा सकल (सभी) तीर्थों को सनाथ करने हैं। जीव तो सब दोष का निधान है तथा पुरुषोत्तम गुण निधान है। इनका सम्बन्ध कैसे होगा। इस प्रकार की चिन्ता होने पर श्रीयमुनाजी की पुलिन में से कोटि कन्दर्प लावण्य साक्षात् श्रीनाथजी ने प्रकट होकर श्रीमहाप्रभु के निकट पधारकर आज्ञा की कि तुम चिन्ता क्यों करते हो। तुम तो सर्वकरण समर्थ हो तब श्रीआचार्यजी ने प्रमाणपूर्वक कहा। जीव कहाँ और आप कहाँ, यह सम्बन्ध कैसे संभव होगा। तब श्रीनाथजी ने आज्ञा की कि आप जिसको नाम दोगे उसके सेवा में सकल (सभी) दोष निवृत्त होंगे। "सर्वदोष निवृत्ति र्हि दोषाः पंचविधाः स्मृताः" और आज्ञा की कि "शरणस्थ समुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्" तब इतना सुनते ही श्रीआचार्यजी ने धोती उपरना धराया तथा पवित्रा पहराकर मिश्री भोग धरा।

तब श्रीगोवर्धनाथजी ने आज्ञा की कि आप जिसको ब्रह्मसम्बन्ध कराओगे उनको में निश्चय अंगीकार करुंगा। ऐसी आज्ञा करके आप अन्तर्ध्यान हो गये।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने दामोदर दास से कहा कि दमला तेने कुछ सुना। तब दामोदर दास ने कहा कि महाराज सुना तो सही परन्तु कुछ समझा नहीं। क्यों कि पुरुषोत्तम के वाक्य तो वेद भी नहीं समझते हैं तो मै जीव क्या समझूंगा।

तब आपने कहाकि दमला श्रीठाकुरजी ने ब्रह्म सम्बन्ध की आज्ञा दी है। दामोदर दास ने विनती की कि महाराज कृपा करके प्रथम तो मेरे को ही ब्रह्म सम्बन्ध करवाइये। तब द्वादशी के दिन प्रातः काल ही श्रीआचार्यजीने दामोदर दास को स्नान करवा कर के प्रथम ही छोंकर के नीचे ब्रह्म सम्बन्ध करवाया और मार्ग का रहस्य सिद्धान्त उसके हृदय में स्थापित किया तथा आपने दामोदर दास से कहा कि दमला यह मार्ग तेरे लिए प्रकट किया है। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने गोविन्द घाट पर छोंकर के नीचे दिखाया।

२. गोकुल दूसरी बैठक–भीतर की बड़ी बैठक
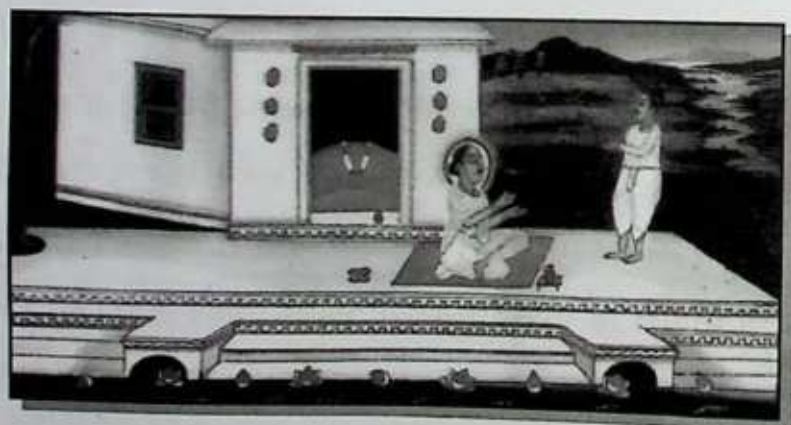
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की दूसरी भीतर की बड़ी बैठक है वहाँ आप

नित्य भोजन करते थे और कथा कहते थे। आपने प्रकट होकर सेवा मार्ग प्रकट किया। तब वृन्दावन के बड़े बड़े महानुभाव कृष्ण चैतन्य प्रभृति संत महंत उनने यह विचार किया कि श्रीनाथजी की सेवा हम करें। तब उनको श्रीनाथजी ने यह आज्ञा की कि मेरी सेवा तो मेरा स्वरूप होगा वही करेगा।

तुमको तो भगवद् भजन का अधिकार है। भजन से तुम्हारा उद्धार होगा। मेरी सेवा तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु करेंगे। उन वृन्दावन के महंतो ने अपना एक वैष्णव परीक्षा के लिए श्री गोकुल मे श्रीआचार्यजी के पास भेजा। उस वैष्णव का नाम श्यामानन्द था। वह वैष्णव गोकुल में आया। उसके पास एक शालिग्रामजी का स्वरूप था वह स्वरूप बटुआ में था। उस बटुआ को छोंकर के वृक्ष पर लटका कर वह भीतर श्रीआचार्यजी के पास दर्शन को गया। आपके दर्शन करके पीछा (पुनः) आया तो पेड़ पर बटुवा नहीं है। पुनः आकर श्रीआचार्यजी से कहा कि आपके सेवकों ने मेरा बटुआ चुरा लिया है। आपने उससे कहा कि हमारा सेवक होगा वह तेरा बटुआ क्यों लेगा। तेने जहाँ धरा हो वहाँ देख ले। तब उसने वापस आकर उस स्थान पर देखा तो सारा छोंकर का वृक्ष बटुओं से भरा है। पुनः श्रीआचार्यजी महाप्रभु के पास जाकर कहा। महाराज वहाँ तो अनेक बटुए हैं सो मैं कौन सा लूं। तब आपने उससे कहा कि तू तो अपने इष्ट को पहचानता नहीं है तो आगे सेवा क्या करेगा। तू जा करके देख तो सही। तब फिर वह आकर देखता है तो एकही बटुआ है। वह उस बटुआ को लेकर श्री वृन्दावन गया। श्री वृन्दावन जाकर उन संत महंतों को सारे समाचार कहे। वे सभी सुनकर आश्चर्य करने लगे ओर कहा कि वे ईश्वरी अंश हैं। यह चरित्र आपने भीतर की बैठक में दिखाये। ऐसे और भी आपने अनेक चरित्र दिखाये हैं।

३. श्री गोकुल की तीसरी बैठक– श्रीद्वारकाधीश का शैय्या मन्दिर
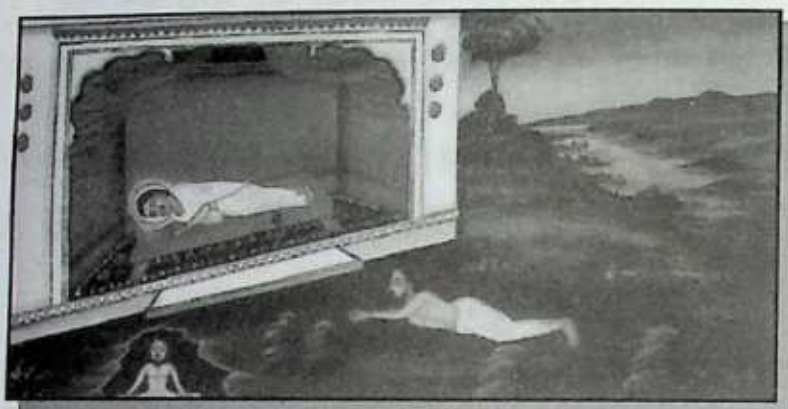
एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप शैय्या मन्दिर की बैठक में शयन कर रहे थे। उस समय तक श्री द्वारकाधीश का मन्दिर बना नहीं था। वहाँ एक योगेश्वर द्वापर युग से बैठकर तपस्या कर रहा था। उसकी पर्ण कुटी भूमि के भीतर थी। उस योगेश्वर ने पर्ण कुटी से निकलकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु को साष्टांग दण्डवत् कर विनती की कि महाराज मैं द्वापर युग से बैठकर तपस्या कर रहा हूँ उसका फल आज मेरा सिद्ध हो गया है जो आपके दर्शन हो गये। अब इस स्थान पर सात मन्दिर बनेंगे और श्री गोकुल फिर बसेगा। मेरे को कोई यहां से उठावे नहीं ऐसी आप आज्ञा करो। तब श्रीआचार्यजी ने कहा तुम को यहाँ से कोई नहीं उठायेगा। उसके पश्चात् कितने ही दिनों के बाद में उस स्थान पर श्री द्वारकाधीश का मन्दिर बना उस समय उस योगीश्वर की कुटी निकली। श्रीद्वारकेशजी महाराज ने उस योगीश्वर से कहा कि अब तुम यहाँ से हठ जाओ उस समय योगीश्वर ने कहा कि महाराज मेरे को श्रीआचार्यजी महाप्रभु की आज्ञा है कि तेरे को यहाँ से कोई नहीं उठायेगा। तब श्रीद्वारकेशजी महाराज ने कहा कि अब तुम यहाँ से हठ जाओ। वह कुटी

सोलह हाथ नीचे भूमि में प्रवेश कर गयी। तब वहाँ श्रीद्वारिकानाथजी का मन्दिर बना। उसमें श्रीठाकुरजी बिराजे। किन्तु वहाँ नित्य राजभोग सरने के पश्चात् महाप्रसाद में क्रमि (कीड़े) होने लगे। श्रीद्वारकेशजी महाराज ने श्रीगोकुलनाथजी से पूछा। श्रीगोकुलनाथजी ने कहा कि मैं श्रीनाथजी से पूछकर उत्तर दूंगा। उसके पश्चात् श्रीगोकुलनाथजी नाथद्वार पधारे। राजभोग पीछे श्रीगोकुलनाथजी महाराज शैय्या मन्दिर के द्वार पर खड़े रहे। वहाँ श्रीनाथजी को सब वृत्तान्त कहा उस समय जंभाई लेकर श्रीनाथजी ने आलस्य युक्त यह वचन कहे कि जो "तस्येदं कर्मणा फलम्" पश्चात् श्रीनाथजी शैय्या मन्दिर मे पोढ़ने को पधारे। श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीद्वारिकेशजी को सर्व समाचार कहे। इसलिए कितने ही दिनों तक श्रीद्वारिकानाथजी श्रीमथुरेशजी के पास बिराजे। यह चरित्रशैय्या मन्दिर की बैठक में दिखाया।

४. वंशीवट–वृन्दावन, जिला मथुरा
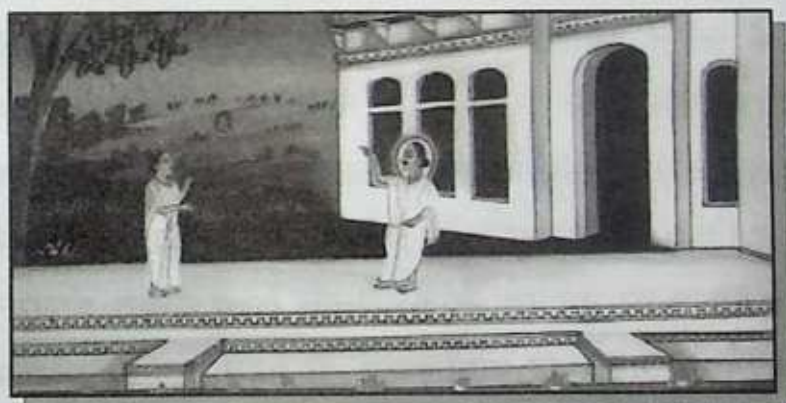
श्री वृन्दावन में बंसीवट के निकट श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक है। वहाँ आपने यह अलौकिक चरित्र दिखाया। एक वैष्णव प्रभुदास जलोटा क्षत्री था उससे श्रीआचार्यजी ने कहा कि प्रभुदास सखड़ी महाप्रसाद लो। तब प्रभुदास ने कहा महाराज मैंने स्नान नहीं किया है। सखड़ी महाप्रसाद कैसे

लूँ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने दो श्लोक पद्मपुराण के वृन्दावन माहात्म्य के कहेः—

"वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः।।
यत्र वृन्दावनं तत्र स्नाना स्नान कथा कुतः।।1।।
रसजोऽ पि पुण्यं जलं जलादपि रजोवरम्।।
यत्र वृन्दावन तत्र लक्ष्या लक्ष्य कथा कुतः।।1।।"

ऐसा कहकर वृन्दावन का स्वरूप दिखाया। वृक्ष वृक्ष प्रति तथा पत्र पत्र प्रति भगवद् दर्शन हुआ। तब प्रभुदास ने महाप्रसाद लिया और दूसरा अलौकिक चरित्र यह दिखाया उसको कहते हैं कि एक गोपालदास सनोड़िया करके कृष्ण चैतन्य का सेवक था वह भक्तिमार्गीय था। उसने कृष्ण चैतन्य से विनती की कि महाराज मेरे माथे कुछ सेवा पधरा दो। तब कृष्ण चैतन्य ने उसके माथे श्रीशालिग्रामजी की सेवा पधरादी। उनकी वह सेवा करने लगा। किन्तु उसके मन में बड़ा ताप (दुःख) रहता था कि इनका श्रृंगार कैसे करूं और मुकुट काछनी कैसे धराऊं। गुरु ने जो स्वरूप पधरा दिया है उसके उपरान्त दूसरा स्वरूप नहीं पधराया जा सकता है। तब उसने कृष्ण चैतन्य से पुनः निवेदन किया कि महाराज मेरे स्वरूप सेवा पधरादो दो अच्छा रहे उस समय कृष्ण चैतन्य तो चुप रहे इसके पश्चात् कृष्ण चैतन्य श्रीजगन्नाथरायजी के दर्शन करने को गये। तब गोपालदास को बहुत ताप (दुःख) जानकर कृष्ण चैतन्य ने स्वप्न में कहा कि मेरा जितना सामर्थ्य है उतना दे सकता हूँ। मैं तो भगवद् आज्ञा से मार्ग का उपदेश देता हूँ। भगवत्स्वरूप का सामर्थ्य तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु में है। इसलिए जब वे पधारें तब उनसे विनती (प्रार्थना) करना। तेरा सर्व मनोरथ वे पूर्ण करेंगे। तब उसने आकर के श्रीआचार्यजी

बैठक चरित्र

महाप्रभु से प्रार्थना की कि महाराज मेरे को गुरु ने तो श्रीशालिग्रामजी की सेवा पधरा दी हैं पर मेरे मनमें भांति भांति के शृंगार करने की ताप (इच्छा) रहती है। इसलिए और दूसरा स्वरूप पधरा दो। आपने आज्ञा की कि उसकी कोई चिन्ता नहीं। तू दूसरा स्वरूप क्यों पधराना चाहता है। यदि तेरा सच्चा भाव होगा तो इसी में से स्वरूप प्रकट हो जायेगा। तथा श्रीशालिग्रामजी पीठक में रहेंगे। श्रीठाकुरजी सर्वकरण समर्थ है।

श्लोक– *कृष्णस्तावतमात्मानं यावंतीर्व्रजयोषितः।*

जैसी तेरी अभिलाषा है वैसा स्वरूप हो जायेगा। जैसी तेरी इच्छा हो वैसी तू भावना करना। वैसे ही प्रातः काल तुझे दर्शन होंगे। तब वह अपने घर आकर सो गया। प्रातः काल उसको श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की कृपा से इच्छानुरूप दर्शन हुए। तब उन श्रीठाकुरजी का नाम राधारमण हुआ। वे अब वृन्दावन में विराजते हैं। उसके पीछे गोपालदास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से प्रार्थना की कि महाराज मेरे को गुरु उपदेश दो। आप तो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम हो। तब आपने आज्ञा की कि इस जन्म में तो तू कृष्ण चैतन्य का सेवक है और जन्मान्तर (अगले जन्म) मे हमारे मार्ग का सम्बन्ध होगा।

श्लोक– *जन्मान्तर सहस्त्रेषु तपोध्यान समाधिभिः।*
नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते।।1।।

तब फिर किसी समय में उसका इस मार्ग में सम्बन्ध हुआ। उस समय इसका नाम गोपाल नागा नाम हुआ। यह चरित्र आपने वृन्दावन की बैठक में दिखाया।

५. विश्राम घाट–मथुरा
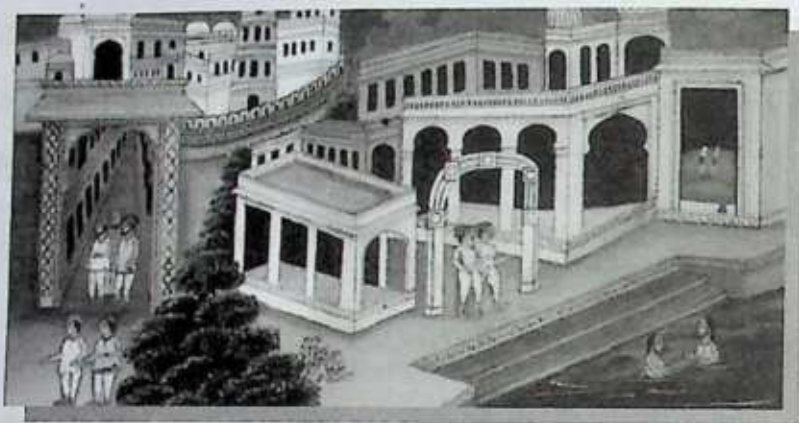
श्री मथुराजी में विश्राम घाट के ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की बैठक है। वहाँ आप विराजे थे। उस समय वहाँ ऊपर वन था और बस्ती तो भूतेश्वर में थी। वहाँ से श्मशान भूमि पास में थी इस कारण आपको भी भागवत पाठ करने में ग्लानी (घृणा) हुई। तब कमंडल में से जल लेकर कृष्णदास मेघन को दिया और आज्ञा की कि इस जल को जितने में छिड़क दिया जायेगा वहाँ उतने में बस्ती हो जायेगी। तब कृष्णदास ने वह जल असकुंडा से लेकर सूर्यकुंड तक छिड़का। इसलिए उतने में बस्ती बस गई। तथा तत्काल श्मशान भूमि ध्रुवघाट पर जाकर गिरी। उस समय रूप सनातन दर्शन को आये हुए थे। उनने श्रीआचार्यजी के सेवकों को दुर्बल देखकर कहा कि आपका मार्ग तो पुष्टि है और ये सेवक दुर्बल क्यों है' तब आपने कहा कि हमने तो इनको बहुत मना किया था कि तुम इस मार्ग में मत पड़ो। परन्तु इनने हमारा कहना नहीं माना उसका ये फल भोग रहे हैं। इसका आशय रूप सनातन समझे नहीं। इसमें आपने अपना स्वरूप तथा मार्ग का स्वरूप तथा सेवकों का स्वरूप संबंधी तीनों ही बात दिखाई है।

बैठक चरित्र

यह जो हमने मुखारविन्द से रास पंचाध्यायी में व्रज भक्तों को मना किया तथा इन्हें कहा कि तुम पीछे अपने घर को जाओ सो इनने स्वीकार नहीं किया। उसका फल संयोग और विप्रयोग ये भोग रहे हैं। जिस समय श्रीआचार्यजी आप मथुरा पधारे थे उस समय एक आसुरी मंत्र लिखकर काजी ने विश्राम घाट ऊपर धर रखा था। वह मंत्र ऐसा था कि जो उसके नीचे होकर हिन्दू निकले उसकी चुटिया (शिखा) कट जाती और डाढी हो जाती थी। इस कारण वह मुसलमान हो जाता था इस प्रकार धर्म भ्रष्ट करते थे। उस समय श्रीआचार्यजी आप विश्राम घाट ऊपर स्नान करने को पधारे थे। श्रीआचार्यजी के साथ उस समय पाँच सात वैष्णव साथ थे। दो चार वैष्णव केशव भट्ट के साथ थे।

श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी ने सभी सेवकों के साथ स्नान किया। उस समय किसी भी वैष्णव को म्लेच्छ के यन्त्र का पराभव नहीं हुआ। उसके पश्चात् आपने सात दिन तक मुक्ति क्षेत्र के ऊपर श्री भागवत का पारायण किया वहाँ तक सभी हिन्दुओं ने स्नान किया किसी की चोटी नहीं कटी। आप मधुवन को पधारने लगे उस समय सभी मथुरा के चोबे लोगों ने आपसे मिलकर प्रार्थना की कि यह यन्त्र विश्रान्त घाट के ऊपर है उसको आप दूर करके पधारो। तब आपने आज्ञा की कि तुम जाकर काजी से कहो कि गोकुल का फकीर कहता है कि विश्राम घाट से इस यंत्र को उठा लो तब उन चौबे लोगों ने जाकर काजी से कहा कि हमारे श्रीआचार्यजी पधारे हैं वे कहते हैं कि तुम इस यन्त्र को यहाँ से उठा लो। यह सुनकर काजी ने कहा कि यह यंत्र तो बादशाह ने धराया है। जब उनका आदेश आयेगा तब यह यंत्र यहाँ से उठेगा। उन चोबे लोगों ने सर्व समाचार श्रीआचार्यजी महाप्रभु को कह

सुनाया। तब श्रीआचार्यजी ने अपने हाथ से एक यंत्र लिखकर वासुदेव दास छकड़ा को तथा केशव भट्ट को देकर आज्ञा की कि तुम दिल्ली जाओ। दिल्ली के जितने दरवाजे हैं उन सब पर एक एक यह यंत्र धर आओ। वासुदेव दास छकड़ा एवं केशव भट्ट दिल्ली को चले। दिल्ली जाकर सभी दरवाजों पर यंत्रों को धर दिया। उस यंत्र के प्रभाव से जो कोई म्लेच्छ वहाँ से होकर निकले उसके चोंटी हो जाती और डाढी होती तो उड जाती। इस से वे हिन्दू हो जाते। इस प्रकार कितने ही म्लेच्छ हिन्दू हो गये। तब पातशाह को खबर गई। तब पातशाह ने आदेश दिया कि ऐसे यंत्रों को वहाँ से उठा दो। पातशाह के मनुष्य यंत्र उठाने लगे तब वह यंत्र किसी के हाथ में नहीं आता। तब किसी ने कहा कि यह यंत्र तुम्हारे हाथ में नहीं आयेगा। वे मनुष्य पुनः फिर गये। पातशाह ने पूछा यह यंत्र किसने धरा है। तब हलकारा ने कहा कि मथुरा के दो फकीर आये हैं उनने यह यंत्र धरा है। इतने में वासुदेव छकड़ा तथा केशवभट्ट दोनों आकर वहाँ खड़े हो गये। पातशाह ने कहा कि यह यंत्र यहाँ से उठाओ।

तब केशव भट्ट ने कहा कि साहब यह यंत्र यहाँ से जब उठेगा जब मथुरा से उस यंत्र को उठवाकर मंगवाओगे। हमारे गुरु श्रीआचार्यजी महाप्रभु की आज्ञा है। इस बात को सुनकर बादशाह मन मे डरा। उसने कहा हम उस यंत्र को उठवाकर मंगवाते हैं। बादशाह ने अपने हलकारा को मथुरा भेजे। मथुरा से हलकारा पत्र लाये। तब वासुदेव दास छकड़ा और केशवभट्ट ने दिल्ली के दरवाजों से यंत्र उठवाकर मथुरा गये। श्रीमहाप्रभुजी के पास आकर दोनों ने दण्डवत की तथा सर्व समाचार कहे। श्रीआचार्यजी सब समाचार सुनकर चुप रहे। जब दिल्ली के दरवाजों से यंत्र उठे तब सब म्लेच्छों ने

चुटिया कटवा डाली। तब बादशाह बाहर बाग की सैर (भ्रमण) करने निकला। जब विश्रान्त घाट के ऊपर से यंत्र उठा उसके पश्चात् श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सन्ध्या वंदन का जल लेकर विश्रान्त घाट के ऊपर छिड़का तथा आपने श्रीमुख से कहा कि आज के पीछे यदि कोई म्लेच्छ यहाँ पर यंत्र रखेगा तो झूठा हो जायेगा। बाद में वहाँ उजागर चोबे को पौरोहित्य कार्य के लिए लिख दिया। उसकी आज्ञा लेकर आप व्रजयात्रा करने को पधारे। संवत् १५४६ भाद्रपद सुदी १२ शरद ऋतु में विश्रान्त घाट पर स्नान कर के नियम लिया तथा विश्रान्त घाट से पधारे। वहाँ से मधुवन पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने विश्रान्त घाट की बैठकपर प्रकट किया। इसके अलावा इस बैठक पर और भी चरित्र आपने प्रकट किये थे।

६. मधुवन–महोली, जिला मथुरा
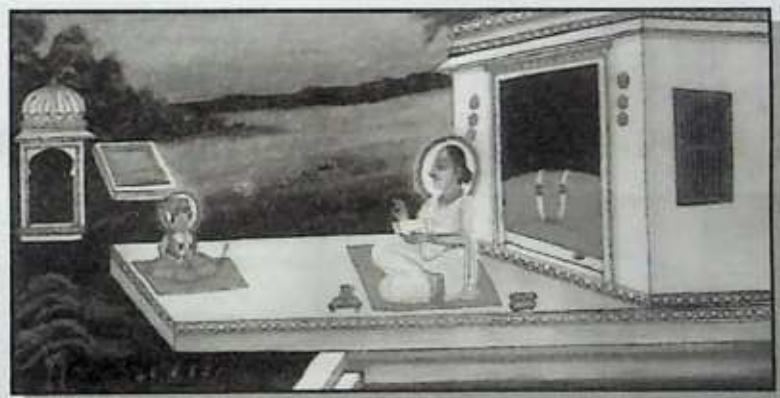
श्री मधुवन में मधुवनिया ठाकुर व्रजनाभ के द्वारा स्थापित है। उनके दर्शन करके माधव कुण्ड के ऊपर कंदब के नीचे आकर के श्रीआचार्यजी बिराजे। वहाँ सात दिनों तक श्री भागवत का पारायण किया। वहाँ मधुवनिया ठाकुर नित्य कथा सुनने को पधारते। एक दिन एक पण्डा स्नान करके सेवा करने के लिए मन्दिर में गया। तब वहाँ देखता है कि श्री ठाकुरजी मन्दिर में

नहीं हैं। तब वह पण्डा अपने मन में दुःख करने लगा। तब दोपहर पीछे मन्दिर में उस पण्डा को श्री ठाकुरजी के दर्शन हुए। पण्डा ने पूछा कि महाराज आप कहाँ पधारे थे। तब श्री ठाकुरजी ने कहा कि यहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं वे श्री भागवत पारायण कर रहे हैं वहाँ सुनने को गया था। इसलिए तुम प्रातः काल जल्दी सेवा कर लिया करो। उस दिन से वे पण्डा बड़े सवेरे उठकर सेवा कर लेते थे। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सात दिनों तक श्रीभागवत का परायण किया। वहाँ तक मधुवनिया ठाकुर नित्य पधारते। जिस समय श्रीआचार्यजी व्रजयात्रा करने के लिए पधारे उस समय ये वैष्णव आपके साथ रहते थे। उनके नाम इस प्रकार से हैं:– १. वासुदेव दास छकड़ा २. यादवेन्द्र दास कुम्हार, ३. गोविन्द दुब्बे सांचोरा ब्राह्मण, ४. माधव भट्ट काश्मीरी, ५. सूरदास जी, ६. परमानन्द दास जी, इतने वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभु के साथ व्रज यात्रा करने के लिए गये थे।

७. कुमुद वन–पोस्ट उस पार, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश
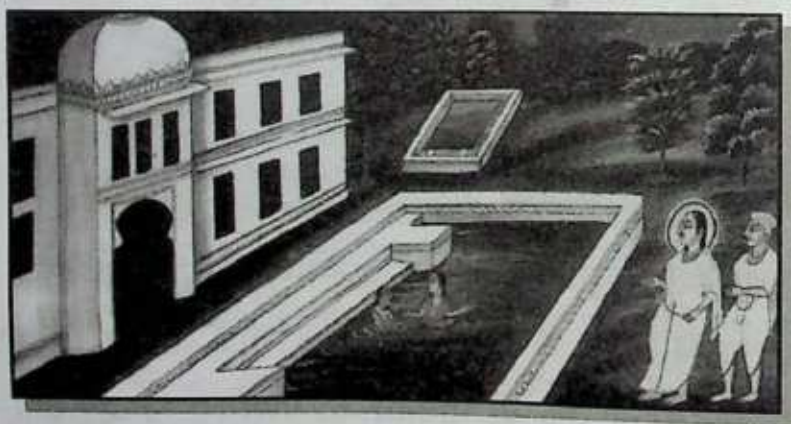
श्रीआचार्यजी मधुवन से तालवन पधारे वहाँ तालवन के कुंड में स्नान करके तालवन की परिक्रमा की। वहाँ कोई भगवत् स्वरूप नहीं था इसलिए वहाँ

श्रीभागवत का पारायण नहीं किया। वहाँ आपने कारिका ही की उसमे श्लोक –

"बलभद्रस्य बोधाय भगवद् वचनेन हि। स्वधर्माः सकला एव बलभद्रे निरुपिताः। लोकानां च प्रतीत्यर्थं तेन बोधेन कारणं"

वहाँ से आगे कमोदवन में बैठक है वहाँ कुंड के ऊपर श्यामताल के नीचे तीन दिन तक (आप) श्री बिराजे और परायण की वहाँ कृष्णदास मेघन ने पूछा महाराज इस वन का नाम कमोदवन क्यों है। तब आपने आज्ञा की कि सामवेद में कथा है। जहाँ व्रज का माहात्म्य कहा है। उसमें कहा कि एक समय श्रीठाकुरजी और श्रीस्वामिनीजी इस वन में पधारे थे। उस समय शरद चांदनी का प्रकाश बहुत था। तब श्रीस्वामिनीजी ने कहा कि यहाँ कमोद और कमोदनी का वन सिद्ध हो तो अच्छा रहे। तब कुमुदा और कमोदनी दोनों सहचरी थीं। उनको श्री ठाकुरजी ने आज्ञा की कि यहाँ दो कुण्ड सिद्ध करो। तब कुमुदा कमोदनी ने कमोद कुण्ड सिद्ध किये। उनकी रक्षा के लिए उन सहचरियों को आज्ञा की इसलिए इस वन का नाम कमोदवन है। वैष्णवों ने मिलकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु से प्रार्थना की कि महाराज कमोद और कमोदनी के दर्शन आपके साथ रहने पर भी नहीं होंगे तो फिर कब होंगे। तब आपने श्रीगीताजी का एक वाक्य कहा– "दिव्यंते ददामि चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्" यह कहकर दो घड़ी तक सब वैष्णवों को दिव्य चक्षु दिये। तब कमोद और कमोदनी सहित जल स्नान की लीला का एवं महलों का दर्शन कराया। बहुत भावकर वैष्णव विवश हो गये। शरीर का अनुसंधान नहीं रहा। तब आपने मन में विचार किया कि ये लीला में प्रवेश हो जायेंगे। अतः लीला का तिरोधानकर वहाँ से आप आगे पधारे। आप शांतन कुण्ड तथा गंधर्वकुण्ड में स्नानकर बहुला वन पधारगये यह चरित्र आपने कमोद वन की बैठक में दिखाया।

८. बहुलावन–पोस्ट बाटी गाँव, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश
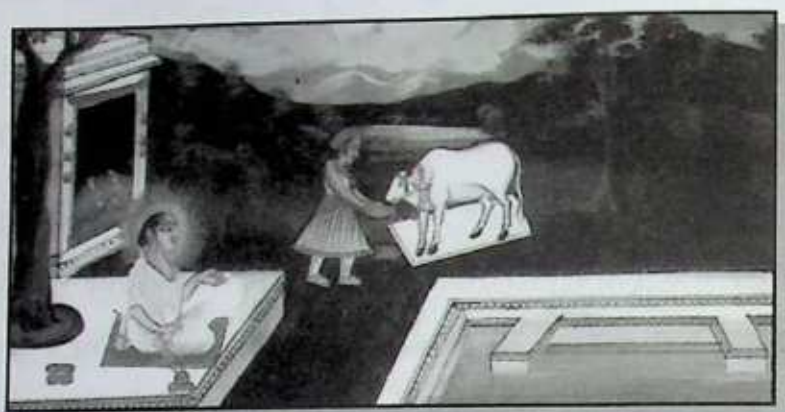
बहुलावन में कृष्ण कुण्ड के ऊपर उत्तर दिशा में वट वृक्ष के नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजे वहाँ पर बैठक है वहाँ तीन दिन तक आप विराजे। श्री भागवत का पारायण किया तब वहाँ के ब्राह्मणों ने प्रार्थना की कि महाराज यहाँ का अधिकारी यवन है वह बहुला गाय की पूजा नहीं करने देता है। वह कहता है कि अगर यह गाय है तो हमारे सामने दाणा, घास खावे तो तुम सुख पूर्वक पूजा करो। तब आपने आज्ञा की कि हाँ, हाँ, वह घास दाना खायेगी। श्रीआचार्यजी ने अधिकारी को बुलवाया। आपने स्वयं बहुला गाय के सम्मुख घास, दाणा मंगवाकर रखा वह घास दाणा खाने लगी। वह अधिकारी यह देखकर आश्चर्य चकित हो गया। उसने आप श्री को दण्डवत की तथा निवेदन किया कि मेरे को आपका सेवक करो। तब आपने आज्ञा की कि तुमने गाय की सेवा पूजा बन्द की वह चालू कर दो। तब तुम्हारा अगले जन्म में अंगीकार होगा। अधिकारी ने गाय की पूजा की छुट्टी कर दी तब सब कोई गाय की पूजा करने लगे। उसके पश्चात् वह यवन बहुत वर्षपर्यन्त जीवित रहा। पीछे जब उसकी देहछूटी तब रावल के पास गोपाल पुर गांव है उसमें इसका जन्म मल्हा के घर में हुआ। तब इसको श्रीगुसांईजी ने अंगीकार किया। उस जन्म में इसका नाम मेहा धीमर हुआ। इसकी वार्ता श्रीगुंसाईजी

के सेवकों में लिखी है। इसके बाद वहाँ से आगे पधारे। तोस ग्राम में होकर जिखिन ग्राम में श्री बलदेवजी के दर्शन किये। शृंगार किया। वहाँ एक रात्रि बिराजे। दमला को आज्ञा की कि ये श्री बलदेव जी प्राचीन हैं। इन्हींने शंख चूड को मारा था। इसलिए इस गांव का नाम जिखिन गांव है। पीछे दूसरे दिन श्रीआचार्यजी मुखराई होकर श्री कुण्ड पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने बहुला वन की बैठक में प्रकट किया।

६. राधाकृष्ण कुण्ड, पो. राधाकुण्ड, जिलामथुरा

श्री राधाकुण्ड में श्रीस्वामिनीजी के महल हैं वहाँ छोकर के वृक्ष के नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक है। वहाँ पर आप एक मास तक बिराजे। उसके निकट श्यामतमाल के नीचे आपकी बैठक के पास श्रीगुसांईजी की भी बैठक है। वहां छोकर के नीचे प्रातःकाल के समय श्रीमहाप्रभुजी बिराजे थे। उस समय श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी बांह जोटी किये श्री गिरिराज के शिखर पर पधारे यह श्रीआचार्यजी ने जाना। इसलिए आपका नाम श्रीगुसांईजी ने श्रीसर्वोत्तमजी में कहा है– "श्रीकृष्णहार्द वित्" आप श्रीनाथजी का अभिप्राय जानते हैं। तभी तो श्रीकुण्ड होकर के आप श्रीनाथजी के पास पधारे। अन्तरंग (श्रीनाथजी के साथ हैं) वैष्णवों को दर्शन हुए। तब वे मूर्च्छित

हो गये। पीछे वहाँ से श्रीआचार्यजी (आप) तीसरे दिन पधारे। श्रीठाकुरजी तथा श्रीस्वामिनीजी की आज्ञा हुई सो सारा वृत्तान्त दामोदर दास से कहा कि मेरे को भगवद् आज्ञा ऐसी हुई है। उसके पीछे कमंडल का जल लेकर सब वैष्णवों के ऊपर छिड़का। तब सभी की मूर्च्छा दूर हुई। पश्चात् श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्री राधाकुण्ड, कृष्णकुंड और आठ दिशाओं में जो आठों सखियों के आठ कुण्ड है उनमें एक कुण्ड श्री स्वामिनीजी ने तथा एक कुंड श्री ठाकुरजी ने खोदा (बनाया) है। कृष्ण कुण्ड है उसको तो श्री ठाकुरजी ने वेणु से खोदा है और राधा कुण्ड है उसको श्रीस्वामिनीजी ने नखों से खोदा। उसमें असाधरण जल हुआ। उसके भीतर श्रीस्वामिनीजी का निकुंज द्वारा रत्न जटित महल है। वहाँ सदैव आप श्रीस्वामिनीजी रमण करती हैं। यह श्रीगुसांईजी की बैठक चरित्र में विस्तार से लिखा है और आठ दिशाओं में जो आठ सखियों के कुण्ड हैं उनके नाम इस प्रकार बताये गये हैं।

चन्द्रभागा कुण्ड, चंपक लता कुण्ड, चन्द्रावली कुण्ड, ललिता कुण्ड, विशाखा कुण्ड, बहुलाकुण्ड, संध्यावली कुण्ड, चित्राकुण्ड इन सभी कुण्डों में श्रीमहाप्रभुजी आप स्नान करके आगे कुसुमोखरी को पधारे। वहाँ कुसुमोखरी में स्नान किया। जहाँ उद्धवजी गुल्मलता होकर रहते हैं। उद्धवजी से आपका समागम हुआ। तब उद्धवजी ने प्रार्थना की कि महाराज भ्रमरगीत की श्री सुबोधिनीजी मेरे को सुनाओ। तब आपने आज्ञा की कि एक श्लोक कहूंगा। वह श्लोकः–

"भुजमगुरु सुगन्धं मुध्न्र्यधास्यत्कदानु"

(भागवत स्कंध १० अ: ४७ श्लोक २१)

इस चतुर्थपाद का अर्थ करते करते तीन प्रहर हो गये वहाँ तक आप खड़े ही रहे। शरीर का कुछ भी अनुसंधान नहीं रहा। तब उद्धवजी ने प्रार्थना की कि महाराजचतुर्थ पाद का अर्थ मेरे को अवधारण हो गया है। तब आपने आज्ञा की कि हमने तो एक श्लोक का संकल्प किया है। उतना कहेंगे तुम जितना धारण कर सको उतना करो।

आपने बारह प्रहर में एक श्लोक का अर्थ कहा। तब तक सभी भगवदियों को महा आनन्द हुआ। भूखप्यास की कुछ भी वाधा नहीं हुई। इसके पश्चात् आप नारद कुण्ड में स्नान कर ग्वाल पोखर में स्नान करके मानसी गंगा चक्रतीर्थ के नीचे आकर के बिराजे। यह चरित्र श्री राधाकुण्ड की बैठक में प्रकट किया।

१०. मानसी गंगा (दो बैठकें) वल्लभघाट चकलेश्वर के पास पोस्ट गोवर्धन, जिलामथुरा

मानसी गंगा के ऊपर आपकी बैठक है। वहाँ आप सात दिन तक बिराजे। श्रीभागवत का पारायण किया। वहाँ कृष्ण चैतन्य की भजन करने की

बैठक है। वहाँ कृष्ण चैतन्य छः महिना से बैठे हुए थे। उन्होंने यह संकल्प किया था कि सवा लाख भगवन्नाम लेना। उसके बाद किसी से संभाषण करना। भगवन्नाम सवा लाख पूरे नहीं हुए थे उस समय किसी ने कहा कि यहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं। तब यह सुनकर कृष्ण चैतन्य ने उठकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु को साष्टाड्ग दण्डवत की। आपने आज्ञा की कि तुमको यहाँ कितने दिने हुए हैं। तब कृष्ण चैतन्य ने कहा कि हमको यहाँ छः महिने हुए हैं। मानसी गंगा में स्नान करने का यह महत्व है पुराण में कहा कि मानसी गंगा दूधमय है। अतः उसका दर्शन होगा तब स्नान करके श्री जगन्नाथराय को जाऊँगा। आज रात्रि में मेरे को मानसी गंगा ने कहा है कि आज रात्रि को श्रीआचार्यजी पधारेंगे। तब तेरा सर्व मनोरथ सिद्ध करेंगे। तब आपने कहा कि आज तुम्हारा सभी का मनोरथ पूर्ण होगा। ऐसा कहकर कमंडलुका जल लेकर आपने सब वैष्णवों के नेत्रों पर छिड़का। उससे उन सभी के दिव्य चक्षु हो गये। तब सभी को मानसी गंगा का स्वरूप आधि दैविक दुग्धमय के दर्शन हुए। सब वैष्णवों ने दर्शन करके स्नान किया। सभी के मन में आविर्भाव हुआ। दो घड़ी रात्रि से लेकर आठ घड़ी दिन चढ़ने तक सभी को ऐसा दर्शन हुआ। उसके पीछे नेत्रों से लीला का तिरोधान किया। आपने जब तक श्री भागवत का पारायण किया तब तक चक्रेश्वर महादेवजी नित्यकथा श्रवण को आते। वहाँ महादेवजी का मुखिया था जो नित्य प्रतिपूजा करता था उसको नित्य दर्शन होते थे। एक दिन उसको मध्यान्हपर्यन्त दर्शन नहीं हुए। मध्यान्ह पश्चात् जब श्री भागवत की पारायण पूर्ण हुई तब श्रीमहादेवजी अपने देवालय में आए तब उसको दर्शन हुए। तब उस ब्राह्मण ने पूजा की और पूछा कि महाराज अब तक आप कहाँ गये थे। तब श्रीमहादेवजी ने कहा कि

हम नित्य श्रीमहाप्रभुजी के पास कथा सुनने को जाते हैं। इसलिए जब हम आयें तब तुम पूजा किया करना। एक मास तक (आप) श्री महाप्रभु जी वहाँ बिराजे वहाँ तक यमुनावतो तथा किलोल कुण्ड अडीग में स्नान करके आये। अब श्रीगोवर्धन में ब्रह्मकुण्ड, रिणमोचन, पापमोचन, धर्मरोचन, निवर्त कुण्ड इतने कुण्डो में स्नान करके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप परासोली पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने मानसी गंगा की बैठक मे प्रकट किया।

११. परासोली (परसराम स्थली) चन्द्र सरोवर, पोस्ट गोवर्धन, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश (श्री चन्द्रसरोवर)

परासोली में वंसीवट के रास के दर्शन किये। वहाँ चन्द्रसरोवर में चन्द्रकूप में स्नान किया। चन्द्रसरोवर से कुछ दूरी पर छोंकर के नीचे आपकी बैठक है। वहाँ (आप) श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्रीभागवत का पारायण किया तथा सात दिन बिराजे और भगवदीय जनों को रासलीला के दर्शन कराये। वहाँ एक वैष्णव ने आप से प्रार्थना की कि गिरिराजजी के दर्शन साक्षात् कैसे हों। तब आपने आज्ञा की कि श्रीगिरिराजजी की एक दिन में तीन परिक्रमा करें। बीच में कहीं बैठे नहीं। तब श्री गिरिराजजी निज स्वरूप का साक्षात्

दर्शन देंगे। वह वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभु को साष्टांग दंडवत् करके गया तथा उसने श्रीगिरिराजजी की तीन परिक्रमा की। तब उसने प्रथम तो एक श्वेत भुजंग (सर्प) देखा। उसने अशकुन जाना तथा एक घड़ी तक खडा रहा। उसके पीछे आगे चला सों पूंछरी की ओर एक ग्वालिया मिला। उसने कहा अरे वैरागी तू आगे मत जा। आगे सिंह खड़ा है। तब उसके मन में डर लगा। उसने श्रीआचार्यजी के स्वरूप का चिन्तन मन में किया। तब वह सिंह अंतर्ध्यान हो गया। उसके पीछे सुन्दर शिला के पास एक गाय खड़ी देखी उसकी परिक्रमा करके तत्काल वह श्रीआचार्यजी महाप्रभु के आगे खड़ा हुआ और श्रीआचार्यजी को दंडत करके प्रार्थना की कि महाराज आपकी आज्ञा से तीन परिक्रमा करके आया हूँ और मेरे को श्री गिरिराज जी के साक्षात् दर्शन हुए हैं तब आपने आज्ञा की कि वेद में श्रीगिरिराजजी के पाँच प्रकार के स्वरूप का वर्णन किया है। उसमे एक तो गौर भुजंग स्वरूप का वर्णन किया है। एक ग्वाल स्वरूप एक सिंह स्वरूप और एक स्थूल स्वरूप है। ऐसे पाँच स्वरूप है। जब तू यहाँ से चला तब प्रथम तो तेने एक भुजंग देखा। तब अशकुन जानकर खड़ा रहा। बाद में तेने ग्वाल देखा। उसके पीछे एक सिंह देखा फिर गाय का दर्शन हुआ। तेने मेरी आज्ञा से श्रीगिरिराजजी की तीन परिक्रमा की। इस कारण तेरे को श्रीगिरिराज के चारों स्वरूपों के दर्शन हुए। इस स्थूल स्वरूप का दर्शन तो सब कोई करते हैं। ऐसे कहकर मुस्कराकर आप चुप हो गये। इसके पीछे आपने दामोदर दास को आज्ञा की कि दमला श्री भगवान् साक्षात् दर्शन देते हैं। ज्ञान हो यह भगवत्द्च्छा जानना चाहिए। इसके बाद दिवाली का उत्सव जानकर सुन्दर शिलासे विजय की। तथा आप पेंठो गाम पधारे जहाँ श्रीनारायण ने तपस्या की है। तब व्रज लीला में प्रवेश हुआ है।

वहीं लक्ष्मी कूप है जहाँ श्रीलक्ष्मीजी ने तपस्या की है। आप ने वहाँ स्नान किया यह कथा सामवेद में है। इसके पश्चात् वहाँ से आन्योर में पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने परासोली (चन्द्रसरोवर) की बैठक में किया।

१२. आन्योर–सद्दूपांडे का घर, पो. आन्योर, मथुरा, उत्तरप्रदेश
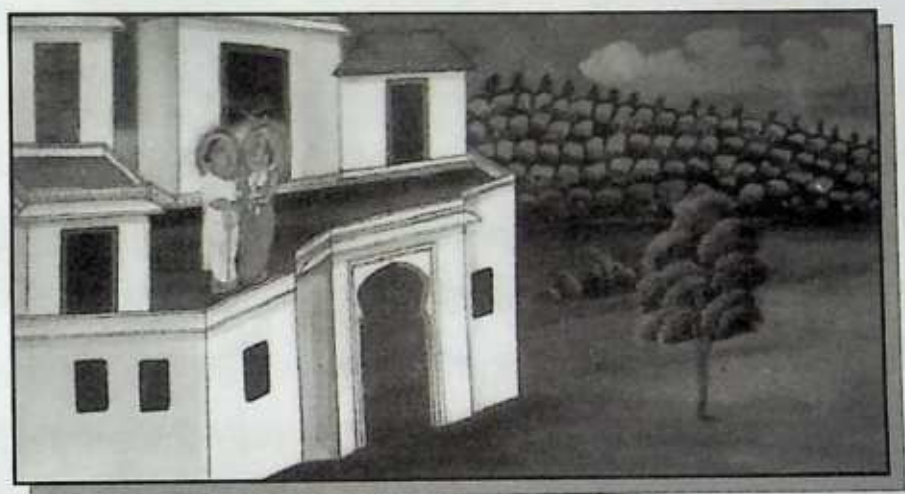
आन्योर में सद्दू पाण्डे के घर में (आप) श्रीआचार्यजी की बैठक है। वहाँ श्रीमहाप्रभुजी का तथा श्रीनाथजी का प्रथम मिलन हुआ है। तब आपने छोटा सा मन्दिर बनवाकर उसमें श्री नाथजी को पाट बैठाया है। इस कारण इस बैठक का चरित्र बहुत है। श्रीनाथजी को आपने प्रकट किया है। यह सब निज वार्ता में प्रसिद्ध है। इसलिये यहाँ नहीं कहा है। इसके बाद (आप) तीन दिन तक श्रीआचार्यजी महाप्रभु वहाँ बिराजे और श्री भागवत का पारायण किया। यह चरित्र आपने सद्दूपाण्डे के घर में प्रकट किया।

१३. गोविन्द कुण्ड–पोस्ट आन्योर, मथुरा, उत्तरप्रदेश

श्री गोविन्द कुंड पर बैठक है वहाँ श्रीआचार्यजी (आप) तीन दिन एक बिराजे और श्री भागवत का पारायण किया। उस समय कृष्ण दास मेघन ने प्रार्थना की कि महाराज श्री गिरिराज में व्यापि वैकुण्ठ सुनते हैं उसका दर्शन हमको करवाओ। यह सुनकर श्रीआचार्यजी चुप रहे। उसके बाद दो घड़ी शेष रही उस समय गोविन्द कुण्ड के समीप श्री गिरिराज के ऊपर आप बिराजे थे तब कृष्णदास मेघन को अंगुली का संकेत करके बताया कि जो यह शिला दिखती है उसको उठाओ उसके भीतर कंदरा निकलेगी। उस कन्दरा के भीतर तू चला जाना। वहाँ व्यापि वैकुंठ का दर्शन होगा। तब कृष्ण दास वहाँ जाकर देखते है तो एक कन्दरा है वह कन्दरा में चला गया सो तीन दिन तक चला तब वहाँ इनको व्यापि वैकुंठ का तथा लीला सामग्री का दर्शन हुआ। उसके पीछे ऊपर एक शुक को देखा। वह अष्टाक्षर मंत्र का उच्चारण कर रहा है। तब कृष्णदास मेघन ने तीन बार श्रीकृष्ण का स्मरण किया। तब उसने तीन बार जल में चोंच डुबाकर जल पिया। पुनः भगवद् नाम का उच्चारण करने लग गया इतने में कृष्णदास मेघन को निद्रा आ गयी तब गोविन्द कुंड ऊपर कृष्णदास आकर खड़े हुए। वे क्या देखते हैं कि दिन दो घड़ी चढ़ गया

है। कृष्णदास ने प्रार्थना कि महाराजाधिराज आपने लीला सामग्री के दर्शन करवाए हैं। तब आपने कहा कि तुमने लीला सामग्री की ही प्रार्थना की थी। ऐसा कह कर आप चुप हो गये। कृष्णदास मेघन ने पुनः पूछा महाराज वह पक्षी कौन था। तब आपने कहा वह पक्षी सारस्वत कल्प का शुक था। उसको श्रीस्वामिनीजी ने श्रीकृष्ण नाम पढ़ाया था। वह इतने दिनों से माधुरी के वृक्ष ऊपर बैठकर भगवतनाम ले रहा था। वह माधुरी कुण्ड है उसमें जल पान नहीं करता। वह सोचता था कि जल पान करूंगा तो भगवत्नाम में अन्तराय पड़ेगा। तेने तीन बार भगवत् स्मरण किया तब उसने तीन बार मन लगाकर जलपान किया। जीव की भगवन्नाम में ऐसी आसक्ति होनी चाहिए। उसको श्रीस्वामिनीजी का वरदान तथा कि जिस दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु का सेवक आकर श्रीकृष्ण स्मरण करेगा तब तेरा शुक स्वरूप छूटकर निज लीला में सहचरी होगा। इसलिए तेरे को वहाँ भेजा था। जब एक समय श्रीस्वामिनीजी को प्रभु के लिए वहाँ भेजा था तब एक क्षण एक युग के समान हुआ। ये "क्षणयुगसतविप्रमया सोनविरहाभवेत्" इस श्लोकार्थ में से कृष्णप्रेमामृत ग्रन्थ (आप) श्रीआचार्यजी ने किया उसमे से एक श्लोक है "एकदा कृष्ण विरहात् ध्यायन्ती प्रिय संगमम् मनो बाष्य निरासाय जलपन्तीदं मुहुर्मुहुः" इस ग्रन्थ में श्रीकृष्ण के एक सौ सोलह नाम कहे हैं। उसको श्री स्वामिनीजी जप करती। तभी प्रभु का समागम हुआ। तथा संयोग रस की प्राप्ति हुई। तब प्रभु से पूछा कि इस ग्रन्थ का दान किसको करूं। श्री ठाकुरजी ने आज्ञा की कि जो तुम्हारे बराबर हो उसको देना जो मेरे समान होगा वही पढेगा (बांचेगा)। तब यह ग्रन्थ श्रीस्वामिनीजी ने गिरिराज पर लिखा था। वहाँ से यह ग्रन्थ श्रीआचार्यजी के हाथ आया। उस समय वहाँ श्रीस्वामिनीजी के श्री हस्ताक्षर

आपने मन में पढकर सोचकर पाठ किया। उस समय कृष्ण चैतन्य गोड़िया तथा केशव भट्ट काश्मीरी श्रीआचार्यजी महाप्रभु के पास खड़े थे। उनसे ये श्रीस्वामिनीजी के हस्ताक्षर नहीं पढे गये तब उनको श्रीआचार्यजी ने श्रीस्वामिनीजी के श्री हस्ताक्षर पढ़कर सुनाये। तब कृष्ण चैतन्य ने आपसे प्रार्थना की। महाराज कृपा करके इस ग्रन्थ का दान हमको करो। उनने उस ग्रन्थ की प्रार्थना की तब वह ग्रन्थ आपने कृष्ण चैतन्य को दिया काश्मीरी को नहीं दिया। एक बार श्रीजगन्नाथरायजी ने आज्ञा की थी कि ग्रन्थ तुम अपने मार्गी को ही देना। उस बात को ध्यान में रखकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने वह ग्रन्थ कृष्ण चैतन्य को ही दिया। तब आपने गोविन्द कुंड से विजय की। इसके पश्चात् संकर्षण कुण्ड तथा गांधर्व कुंड में स्नान कर सघन कंदरा तथा अप्सरा कुंड होकर श्रीबलदेव जी के दर्शन करके ऐरावत कुण्ड पर बलदेव जी के दर्शन करके कदंब खण्ड होकर दंडोती शिला पर एक छोटे से मन्दिर के पास छोंकर का वृक्ष है वहाँ आप पधारे। वहाँ पर आप बिराजे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने गोविन्द कुंड की बैठक पर प्रकट किया।

१४. सुन्दर शिला–गिरिराजजी के सामने

बैठक चरित्र

सुन्दर शिला के सामने छोंकर के नीचे श्रीआचार्यजी आकर बिराजे। वहाँ प्रथम श्री गोवर्धन की पूजा कर दीपमालिका उत्सव और अन्नकूट का उत्सव किया। इस बैठक में श्रीआचार्यजी ने सवासेर भात का अन्नकूट किया था। उसका दर्शन श्रीगुंसाईजी ने श्रीगोकुलनाथजी तथा श्री शोभा बेटी जी को अद्भुत अलौकिक रूप से करवाया। यह वार्ता वचनामृत में प्रसिद्ध है। एक समय वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु भोजन करके छोंकर के नीचे बिराजे थे। दामोदर दास की गोद में श्री मस्तक धर कर पोढ़ रहे थे। उस समय श्रीनाथजी पधारे तब दामोदर दास जी ने बरजे (मना किया) कि आप मत पधारो। तब आपके नूपुर की आवाज सुनकर श्रीआचार्यजी जाग गये। उस समय श्रीनाथजी तो वहीं खड़े रहे तब (आप) श्रीआचार्यजी ने श्रीनाथजी को अपनी गोद में बैठाकर श्री कपोल का स्पर्शकर मुख चुंबन किया यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने सुन्दर शिला की बैठक पर प्रकट किया।

१५. गिरिराज की बैठक–पो. जतीपुरा, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश
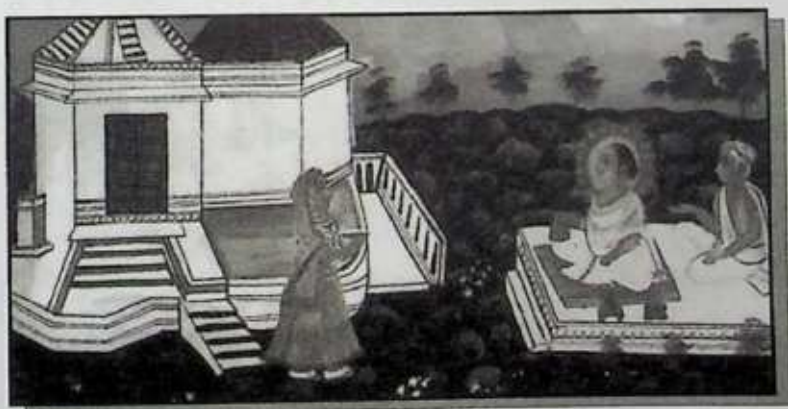
श्री गिरिराज के ऊपर श्रीनाथजी के मन्दिर में दक्षिण भाग में एक

चबूतरी थी। उस पर श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक है वहाँ सेवा के अवकाश समय में आप बिराजते थे। एक समय श्रीनाथजी का शृंगार करके उस चबूतरी पर बिराजे। क्योंकि उस समय सामग्री सिद्ध नहीं हुई थी। इसलिए गोषी वल्लभ में देरी हुई थी। इतने में ही श्रीस्वामिनीजी थाल लेकर पधार गई। नूपुर का शब्द सुनकर श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास से कहा कि दमला हमने तो विलम्ब किया।

किन्तु श्रीस्वामिनीजी गोपीवल्लभ का थाल लेकर पधार गयी। क्यों कि वे विलम्ब को कैसे सहे। इसलिए शृंगार होने के पश्चात् गोपी वल्लभ में विलम्ब नहीं करना। पीछे देव प्रबोधिनी पर्यन्त श्री गिरिराज में श्रीआचार्यजी बिराजे वहाँ दोपारायण श्रीभागवत के किये। एक प्रदशिणा (परिक्रमा) श्रीगिरिराज की। (कोई सातवीं लिखते हैं) बाद में गुलाल कुंड, बिल छू, परमंदरो श्री दामा सखा का गांव है वहाँ आप एक रात्रि रहे। वहाँ से दूसरे दिन विजय किया। जहाँ आदि बद्रिका स्वरूप घर कर श्रीजी ने अपने सखाओं को दर्शन दिये। वहाँ सघन वन है आप एक रात्रि बिराजे। उसके पीछे वहाँ से दूसरे दिन इन्द्र कूप में आचमन कर आगे कामवन पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने श्रीगिरिराजजी की बैठक में प्रकट किया।

(श्री गिरिराज ऊपर श्रीनाथजी के मन्दिर में वर्तमान में प्रकट नही है)

१६. कामवन की बैठक–श्रीकुण्ड, पो. कामा, जिला भरतपुर (राज.)
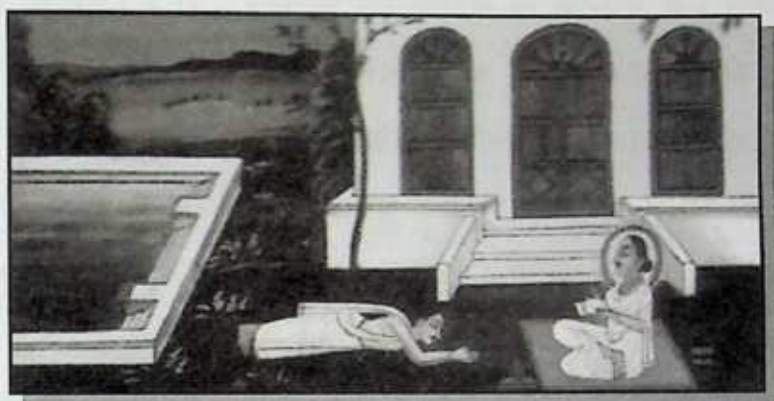
कामवन में सुरभी कुण्ड (श्रीकुण्ड) के ऊपर छोंकर के नीचे (आप) श्रीआचार्यजी की बैठक है। आप वहाँ सात दिन बिराजे और चौरासी कुण्ड में स्नान कर श्री भागवत का एक पारायण किया। एक दिन रात्रि में श्रीआचार्यजी महाप्रभु (आप) बिराजे हुए थे। वहाँ एक ब्रह्म पिशाच बहुत दिनों से सुरभी कुण्ड के ऊपर रहता था उसने कोई ऐसा पाप किया था इस कारण व्रज की रज से भी मुक्त नहीं हुआ। जो कोई रात्रि में सुरभी कुण्ड के ऊपर रहता उसको वह भक्षण कर जाता। इसलिए वहाँ के तीर्थ गुरु ने आपसे प्रार्थना की कि महाराज दिन में तो यहाँ सुख पूर्वक बिराजो किन्तु रात्रि में आप गांव में बिराजना। क्यों कि यहाँ ब्रह्म पिशाच दुःख देता है। यह सुन कर आप चुप रहे। कुछ भी उत्तर नहीं दिया। किन्तु रात को आप वहीं पर बिराजे। जब अर्धरात्रि हुई तब वह ब्रह्म पिशाच निकला। उस समय एक वैष्णव धोती धोकर अपरस में सुखा रहा था। उसने देखा। देखकर वैष्णव ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से निवेदन किया कि महाराज ब्रह्म पिशाच दूर दूर घूम रहा है। तब

श्रीआचार्यजी ने कहा यह अगले जन्म का तो ब्राह्मण था। यह कामवन का राज्य करता था। इसने ब्राह्मणों को बहुत भूमि दान की थी। बाद में इसने पुनः लेली थी। इस अपराध के कारण यह पिशाच हुआ है। दो सौ वर्ष इसको हुए हैं। इसकी व्रजरज से भी मुक्ति नहीं हुई है। वैष्णव ने प्रार्थना की कि महाराज आपके दर्शन से भी इसकी मुक्ति नहीं हुई? तब श्रीआचार्यजी ने उस पर अपरस की धोती का जल छिड़क वाया। उस जल के करने से वह मुक्त हो गया। तथा दिव्यशरीर धर कर वैकुण्ठ को गया। तब सुरभी कुंड पर निर्भयता हुई। पीछे श्रीआचार्यजी कदम खंड पर होकर चित्र विचित्र होकर ऊँचे गांव होकर भानोखरि प्रभृति में स्नान करके श्री लाडिलीजी के दर्शन किये तथा अष्ट सखियों के दर्शन करके आधे पर्वत के ऊपर बिराजे। वहाँ आपकी बैठक है। यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने कामवन की बैठक में प्रकट किया।

१७. गहवर वन–राधारानी के मन्दिर के आगे, मोर कुटी के नीचे पोस्ट बरसाना, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक बरसाना गहवर वन में कुंड के ऊपर है। वहाँ आप सात दिन बिराजे और श्री भागवत की एक सप्ताह की फिर एकदिन गहवर वन को देखने के लिए आप पधारे। वहाँ सिंह, याघ्र बहुत

देखे। उसके आगे देखते हैं तो एक अजगर पड़ा है। उसको चेंटा (मकोड़ा) बहुत काट रहे हैं। उसको देखकर श्रीआचार्यजी को दया आयी। तब आपने दामोदर दास से कहा। अरे दमला यह अजगर पूर्व जन्म में वृन्दावन का महंत था। इसने पेट भरने के लिए सेवक बहुत किये थे। धन भी बहुत संग्रह किया था। वह सब विषय के हेतु लगाया। भगवद् हेतु में कुछ भी नहीं लगाया। तथा इसने भगवद् भजन भी कुछ नहीं किया। इसलिए यह मर कर अजगर हुआ है। इसने जितने सेवक किये थे वे सभी मरकर (मकोड़े) चेंटा हो गये हैं। तथा इसको काट रहे है और इसको कह रहे हैं कि अरे अधर्मी! तेने हमारा जन्म व्यर्थ में किया। तेने हमको सेवक क्यों किया था। उद्धार तो दो बातों से होता है। एक भगवन्नाम से तथा भगवत्सेवा इन दोनों में से कुछ भी नहीं हुआ और इसने वृन्दावन में वास किया था। इसलिए यह ब्रज में ही रहा।

ब्रज के जीव अंत (अन्यत्र) नहीं जाता है। इसलिये दुःख सुख सब ब्रज में ही भोग रहा है। अब हमारी दृष्टि पड़ी है। इसलिए यह अपने सब सेवकों सहित मुक्त हो जायेगा। ऐसी आज्ञा करके श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपने अंगुष्ठ का चरणोदक अपने सेवकों द्वारा उस पर छिड़क वाया। तब उसी समय उसका अजगर शरीर छूटकर दिव्य शरीर हुआ। इसके पीछे शिष्यों सहित विमान में बैठकर पार गया। सीधा वैकुण्ठ चला गया। यह दृश्य सभी वैष्णवों को तथा सब बरसाने के व्रजवासियों को दिखाया। इस को देखकर सब वैष्णव प्रसन्न हुए। इस के पश्चात् आप बरसाने से पधारे। पीरी पोखर तथा प्रेमसरोवर में स्नान कर आप संकेत वट पधारे।

विशेष– प्रेम सरोवर ऊपर श्री महाप्रभुजी की बैठक एक वृक्ष के नीचे है। किन्तु इस बैठक स्थल का बैठक चरित्र का वर्णन हस्त लिखित पुस्तक में देखने में नहीं आता है। कितने ही इस बैठक को श्रीगुसांईजी की बैठक हैं

ऐसा भी कहते हैं। श्रीगुसांईजी की बैठक चरित्र में इस बैठक का चरित्र है।

१८. संकेतवन बगीचे में, कृष्ण कुण्ड, पोस्ट बरसाना
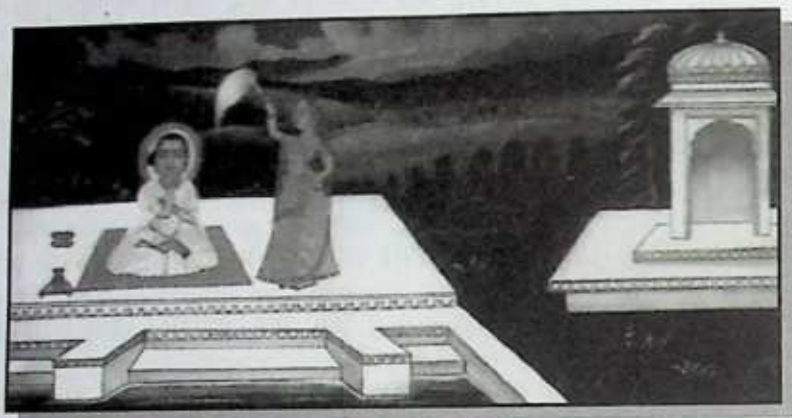
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक संकेत वट के समीप कृष्ण कुंड के ऊपर छोंकर के नीचे है। वहाँ पर सात दिन का भागवत पारायण किया। वहाँ एक स्त्री बहुत सन्दर षोडश वर्ष की अनेक आभूषणों से भूषित रत्नजटिल डांडी का चवंर हाथ में लेकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु के चवंर करने लगी। जहाँ तक श्रीभागवत का पारायण होता वहाँ तक खड़ी रहती। उसको वैष्णव मना करने लगे। तब श्रीआचार्यजी ने उनको मना किया। ऐसे सात दिन तक उसने चवंर किया। जब कथा का आरम्भ हो तब वह आवे तथा जब कथा संपूर्ण हो तब अंतर्ध्यान हो जावे। उसके बाद उसको कोई नहीं देखता था। एक दिन एक वैष्णव ने आप से पूछा महाराज यह स्त्री कौन है। कहाँ से आती है। तब मुस्कराकर चुप रहे। फिर आपने आज्ञा की। इस संकेत देवी को हमारे दर्शन की तथा सेवा की बहुत आरति थी। इस कारण इसको सेवा प्राप्त हुई है। इसके पश्चात् आप वहाँ से आगे पधारे। रीठोरा में चन्द्रावलीजी के दर्शन कर नंद गांव में पान सरोवर से कुछ दूरी पर नंद छोकर है वहां श्री नंदरायजी दशहरा के दिन पूजन करते हैं वहाँ आप पधारे। उसके नीचे श्रीआचार्यजी की

बैठक है। यह चरित्र आपने संकेत वट की बैठक में प्रकट किया।

१९. नन्दगांव–मान सरोवर, सड़क के उस पास, पो. नन्दगांव जिला मथुरा उत्तर प्रदेश

अब नंद गांव में मान सरोवर के ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की बैठक है। वहाँ आप छहमास तक बिराजे। पश्चात् पारायण किया तथा आपने आज्ञा की कि यहाँ उद्धव जी छहमास बिराजे हैं। इसलिए हम छहमास पर्यन्त रहकर श्रीनंदरायजी को भागवत सुनावेंगे। तथा यहाँ के क्रीडा स्थलों के दर्शन करेंगे। तब एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु (आप) पान सरोवर ऊपर बैठे थे। उस समय एक मुगल घोड़े को पानी पिलाने को लाया। वह पानसरोवर पर पानी पिलाकर चला। उस समय घोड़ा के पेट में कुरकुरी (दर्द) चली। इस से वह घोड़ा धरती पर लौटने लगा। तथा अन्त में वह घोड़ा मर गया। वह घोड़ा चतुर्भुज स्वरूप धर कर विमान में बैठकर वैकुण्ठ को गया। तब उसका सात्वकीय आविर्भाव हुआ। यह श्रीआचार्यजी ने देखा। तब मस्तक धुना। इससे वैष्णवों ने प्रार्थना की महाराज घोड़ा मरा हुआ देखकर आपने मस्तक धुना उसका क्या कारण है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सभी वैष्णवों को दिव्य दृष्टि दी। सभी वैष्णवों से कहा कि तुम ऊपर देखो। सभी वैष्णवों ने ऊपर की ओर

देखा तो वह घोड़ा विमान सहित वैकुण्ठ को चला जा रहा है। उसके पश्चात् दिव्य दृष्टि तो मिट गई। तब उस घोड़ा वाले मुगल ने सभी वैष्णवों से प्रार्थना की कि तुम मेरे को श्रीआचार्यजी महाप्रभु का सेवक करवाओ।

तब सभी वैष्णवों ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से प्रार्थना की। श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की तुम्हारा जन्म दूसरे जन्म में होगा। यह सुनकर वह मुगल फिर गया। परन्तु उसका ध्यान अष्टप्रहर श्रीमहाप्रभु में रहा। इस कारण देह छूटने पर उसने नवा नगर में मोची के घर जाकर जन्म लिया। उसका नाम संगजी भाई हुआ। उसको गन्दे मंत्र बहुत आते थे। उसने एक वैष्णव से झगड़ा किया। उसके पास वीर विद्या थी। उसने उसके ऊपर प्रयोग करके आधी रात के समय उस वैष्णव को मारने के लिए वीर भेजे। वीर उस वैष्णव के घर नहीं जा सके। पीछे आकर उससे कहा कि वह तो श्रीगुसांईजी का सेवक है। वे तो बड़े महापुरुष है उनके ऊपर हमारा प्रयोग नहीं चल सकता है। जब सवेरा हुआ तब वह मोची उस वैष्णव के चरणों पर गिरा और प्रार्थना करके कहा कि आप तो महापुरुष हो। आप हमको सेवक करो। तब उस वैष्णव ने कहा कि तुम मेले मंत्र यंत्र छोड़ दो तब तुमको सेवक करावें। उस मोची ने सब मेले मंत्र यंत्र छोड़ दिये। कितने दिनों पीछे श्रीगुसांईजी श्रीद्वारकाजी पधारे। तब नवा नगर के सभी वैष्णवों ने प्रार्थना की। महाराज इस पर कृपा कर शरण लो। आपने आज्ञा की इस को अंगीकार करने के लिए तो हम यहाँ पधारे हैं। तब श्रीगुसांईजी ने उस मोची को नाम देकर ब्रह्म सम्बन्ध करवाया। (दो सौ बावन वैष्णव की वार्त्ता १०८ में देखें)

कुम कुम वस्त्र पर धरकर अपने चरणार विन्द की सेवा पधरा दी वह उसी दिन से धोती, उपरना पहनने लगा और बड़ी अपरस में सेवा करता था।

वहाँ के स्मार्त ब्राह्मण थे वे सब उससे ईर्ष्या करने लगे। वहाँ का राजा जामंतक माची था वे सब ब्राह्मण उसके पास जाकर पुकार करने लगे। राजा सुनो यहाँ एक अतिशूद्र रहता है वह ब्राह्मण की तरह रहता है। यह सुनकर उस राजा ने उस मोची को बुलवाया और पूछा। तू ब्राह्मण की तरह क्यों रहता हैं तब उस मोची ने कहा कि मेरे को श्रीगुसांईजी ने अपना सेवक कर के ब्राह्मण किया है। राजा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा की ब्राह्मण भ्रष्ट हो जावे तो शुद्ध हो जाता है। किन्तु कहीं शूद्र भी ब्राह्मण हुआ है? दूध से छाछ तो होती हैं परन्तु कहीं छाछ से दूध हुआ है। तब संगजी भाई ने कहा कि राजाजी छाछ में से दूध हो जाय तो आप मानेंगे। राजा ने कहा कि यह बात तो अच्छी है। उसके पीछे राजा ने छाछ की चपटिया भरवाकर मंगवाई। उस समय सारी सभा इकट्ठी हुई बैठी थी। सभी ब्राह्मण बैठे थे। छाछ की चपटिया सभा के बीच में रखी थी। तब संगजी भाई ने सब सभा के देखते हुए कहा कि मेरे को श्रीगुसांईजी ने ब्रह्म सम्बन्ध कराके ब्राह्मण किया है। सो छाछ से दूध हो जाना। अगर में मोची का मोची हूँ तो छाछ की छाछ रहना। उसके पीछे मटकी को खोलकर देखा तो छाछ से दूध अलग हो गया है। तब जामंतक माची तथा सब ब्राह्मणचकित हो गये। तब सभी ने प्रमाणित किया कि श्रीगुसांईजी के ब्रह्म सम्बन्ध का बड़ा प्रभाव है। उसके पीछे जामंतक माची तथा सब ब्राह्मण श्रीगुसांईजी जब वहाँ पधारे तब आपके सेवक हुए। इसके बाद वे सभी अपरस से सेवा करने लगे।

तब उस मोची को कोई भी टोकता नहीं था। क्योंकि राजा का प्रमाण उसे हो गया। वहाँ केशवदास तथा गोविन्द दास दोनों भाई सारस्वत ब्राह्मण थे उनके संग से वह संगजी भाई वैष्णव हुआ था। श्रीआचार्यजी महाप्रभु की दृष्टि उस मुगल पर पड़ी थी इस कारण वह मुगल बड़ा भगवदीय हुआ था।

उस संगजी भाई के साथ से राजा जामंतक माची और सब ब्राह्मण भगवदीय हुए। तथा श्रीगुसांईजी के सेवक हुए। अनेक जीवों का श्रीगुसांईजी द्वारा उद्धार हुआ। संगजी भाई लीला में प्राप्त हुए। इसका विस्तार संगजी भाई की वार्ता में है। इस कारण यहाँ संक्षेप में वर्णन है।

यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने नंद गांव की बैठक में दिखाया इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी ने वहाँ से विजय की। वहाँ से करहला, अंजनोखरी, पिसाया, खिद्रवन होते हुए जाववट पधारे वहाँ से आपके किलावन पधारे। नंद गांव की बैठक का चरित्र समाप्त।

विशेष– श्री करहला इस कुण्ड के स्थल पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। वहीं श्रीगुसांईजी तथा श्री गोकुलनाथजी की ये तीनों बैठक साथ में है किन्तु महाप्रभुजी की बैठक का दर्शन नहीं है।

२०. कोकिला वन–पोस्ट, बठेन, जिला मथुरा, उत्तर प्रदेश

कोकिला वन में श्रीकृष्ण कुण्ड के छोंकर के नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की बैठक हैं वहाँ आप एक मासपर्यन्त बिराजे थे। वहाँ कोकिला वन में निंबार्क सम्प्रदाय का चतुरानागा कर के वैष्णव था। उसके संग हजार

नागा सदा रहते। उसने आकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु को दण्डवत् की और प्रार्थना की तथा कहा महाराज आप विष्णु स्वामी मत के आचार्य हो। जगत् को विजय किया है। मायामत का खण्डन किया हैं भक्ति मार्ग की स्थापना की है। इसलिए हमारे हजारों साधु हैं। उनको खीर का भोजन करवाओ। तब श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की बहुत अच्छा इनको भोजन करावेंगे तब आपने कृष्णदास से कहा कि कहीं से पांचसेर दूध लाओ। कृष्णदास नंद गांव में से पांचसेर दूध लाए।

तब (आपने) श्रीआचार्यजी ने वासुदेव दास छकड़ा से कहा। इसकी खीर करके इन हजारन बैरागियों को जिमा दे। उसने खीर सिद्ध की। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपनी दृष्टि से उसको देखा। तब देखने मात्र से वह क्षीर अक्षय हो गयी। उसके पीछे उन बैरागियों को कहा तुम अपनी पत्तल दोना लेकर अपनी पंगति में बैठो। तब वे नागा पंगति करके बैठे। वासुदेव दास छकडा जिमाने लगे। सब नागाओं को जिमा दिया। पीछे सब वैष्णव भली भांति भी भोजन कर चुके किन्तु खीर पांच सेर ज्यों की त्यों रही। समाप्त नहीं हुई। इसके बाद आपने आज्ञा की यहाँ के बंदरों को तथा मोरों को खिला दो। उनको खिला देने पर भी खीर उतनी की उतनी ही रही। समाप्त नहीं हुई। तब आपने आज्ञा की यह खीर मैंने दृष्टि से प्रसादी की है। इसलिए तेरे को बाधा नहीं है। तू लेजा छोड़े मत। तब एक हांडी लाकर उसमें उस खीर को ठलाय (खाली) के वासु देवदास छकडा ले गये। तब वह खीर समाप्त हुई। यह चरित्र देखकर चतुरा नागा दोनों हाथ जोड़कर गले में पट्का डालकर आकर के श्रीआचार्यजी महाप्रभु को दण्डवत् की और प्रार्थना की महाराजाधिराज आप तो पूर्ण पुरुषोतम हो। आपका स्वरूप मैंने जाना

नहीं। अब आप कृपा करके मेरे को अपना सेवक करिये। तब (आपने) श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की कि तुम सेवक ही हो। आगे हमारे नाती श्रीगोकुलनाथजी नाम के प्रकट होंगे वे तुमको सेवक करेंगे। तब चतुरानागा ने प्रार्थना की। महाराज वहाँ तक मेरे शरीर की यह स्थिति कैसे रहेगी।

तब आपने आज्ञा की कि तेरी डेढ़ सो वर्ष की आयु है। उसमें अभी चालीस वर्ष हुए हैं। शेष एक सो दस वर्ष के अन्दर तुम्हारा अंगीकार किया जायेगा। उसके बाद चतुनागा अच्छा भगवदीय हुआ। वह व्रज में पर्यटन करता। एक समय चतुरानागा चला जा रहा था उस समय एक वृक्ष में जटा उलंझ गई सो वह सुलझाने लगा। सुलझाते समय वृक्ष का पता टूट गया। तब तीन दिन तक वहीं खड़े रहे। और जटा सुलझी नहीं। उस समय में श्रीनाथजी ने आकर जटा सुलझाई। उसका श्रीनाथजी के शृंगार का नियम था। कितने ही दिन पीछे जब बादशाह ने सबकी माला उतरवाई थी। तब एक दिन श्रीगोकुलनाथजी मथुरा पधारे थे। मार्ग में चतुरानागा मिला। माला नहीं देखी। तब आपने चतुरानागा को आज्ञा की। अरे चतुरानागा! हम गृहस्थी होकर माला नहीं उतारते है और तूने बैरागी होकर के माला क्यों उतारी।

तेरा बादशाह क्या करता। तब वह चरणों में गिरा और आँखों में आँसू आ गये और प्रार्थना की महाराज आप कृपा करके माला पहनवाओ। तब पहरूं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु के वचन स्मरण करके उसको श्रीगोकुलनाथजी ने माला दी और उसको सेवक किया। तब से श्रीगोकुलनाथजी उसके ऊपर बहुत प्रसन्न रहते। उसने एक धमार बनाई हैं उसमें ऐसा कहा है कि–"सारंगी प्रतापतें पाए गोकुलनाथ" यह धमार श्रीगोकुलनाथजी के वहाँ गाई जाती है। पीछे जब एक सौ पचास वर्ष की अवस्था पूर्ण हुई तब उस चतुरानागा ने

जाकर के गोविन्द कुण्ड पर समाधि लगाई और लीला में प्राप्त हुए। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कोकिला वन की बैठक में प्रकट किया।

२१. भांडीर वन–(अप्रकट)

श्रीआचार्यजी कोकिला वन से विजय कर बड़ी बठेन, छोटी बठेन तथा कोटवन होकर शेष शाई पधारे। वहाँ पर एक रात्रि बिराजे। उसके पीछे वहाँ से रामघाट, गोपीघाट, गुंजावन, निवारन वन, ये सब उपवन के दर्शन करके चीरघाट, नंदघाट, होते हुए भांडीर वन पधारे। वहाँ आप की बैठक है। वहाँ पर आप बिराजे तथा सात दिन का श्री भागवत पारायण किया। वहाँ एक मध्वाचार्य संप्रदाय का व्यासतीर्थ स्वामी महंत था। उस का महास्थल था। उसने आकर के श्रीआचार्यजी से कहा कि मेरे लाखों तो सेवक हैं बड़ी गादी है वह मध्वाचार्य संप्रदाय की है मेरा घर दक्षिण में है और बड़े–बड़े राजा मेरे सेवक हैं। मेरे सेवक माधवेन्द्रपुरी हैं उनके सेवक कृष्ण चैतन्य हुए। अभी मेरे पास लाख रुपया है। वह सब मैं आपको देता हूँ। यह गादी आपके योग्य है। इसलिए आप बिराजें। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कहा कि इसका उत्तर मैं कल दूंगा। तब वह अपने आश्रम पर गया। पीछे अर्धरात्रि हुई तब कोई चार जने मुगदर लेकर आए। उनने उसको बहुत मारा। वे मारते तो जा रहे है

किन्तु दिखाई नहीं देते है। तब इसने कहा कि तुम कौन हो। उन मारने वालों ने कहा कि हम श्रीआचार्यजी महाप्रभु के दूत हैं। तेरी क्या सामर्थ्य है जो तू श्रीआचार्यजी महाप्रभु को गादी पर बिठावे। इसलिए तू अगर अपना भला चाहे तो श्रीआचार्यजी के चरणों में गिरना। नहीं तो हम तुझे ठोर (स्थान पर) मारेंगे। तब प्रातः काल वह महंत आकर के श्रीआचार्यजी के चरणों में गिरा और प्रार्थना की कि मेरे को आप अपना सेवक करें। मैंने आपके स्वरूप को नहीं पहचाना। अतः क्षमा करें। तब श्रीआचार्यजी ने उससे कहा कि तू तो सेवक है ही उस व्यास तीर्थ स्वामी ने प्रार्थना की। महाराज कृपा करके मेरे को शरण लीजिये। उसके पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उसको अंगीकार किया। इसके पश्चात् वेलवन तथा भद्रवन होते हुए मानसरोवर पधारे। यह चरित्र आपने भांडीरन की बैठक में प्रकट किया।

२२. मानसरोवर (माखन), पो. माट, जिला मथुरा उत्तरप्रदेश

मान सरोवर पर आप तीन दिन बिराजे। श्रीभागवत का पारायण किया। एकदिन अर्धरात्री के समय सब सेवक आपके साथ थे। तब दामोदरदास ने देखा तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु (आप) वहाँ पर नहीं है। एक प्रहर पश्चात् पुरुषोत्तम कांति स्वरूप का दर्शन दिया। दामोदर दास ने कहा महाराज आज

अनिर्वचनीय सुख मिला। अद्भुत दर्शन हुआ। पीछे आपने आज्ञा की दमला आज स्वामिनीजी ने गाढ़ा (खूब) मान किया था। वह मान मोचन कराकर श्रीस्वामिनीजी को श्रीनाथजी के पास पधराकर आया हूँ। वह दर्शन दामोदरदास को हुआ। अन्य वैष्णव तो निन्द्रा के अधीन थे। उसके पश्चात् श्रीआचार्यजी महाप्रभु लोहवन, रावल, श्री बलदेव जी, महावन, चिंताहरण घाट तथा ब्रह्माण्ड घाट स्नानकर रमण स्थल होकर गोपकूप में स्नान कर उतलेश्वर घाट, यशोदा घाट, गोविन्द घाट होकर बाद में श्री गोकुल की बैठक में आकर बिराज गये। जन्माष्टमी का उत्सव श्री गोकुल में किया। वृक्ष में चादर बांधकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्री नवनीतप्रियजी को पालने मे झुलाया था। सभी को रत्नजटित पालने में दर्शन करवाये। वहाँ गोपी, ग्वाल, श्री नंदरायजी तथा श्री यशोदाजी ने प्रकट दर्शन दिये। वहाँ बड़ा नंद महोत्सव हुआ। जब वे स्वरूप पुनः पधारने लगे तब श्री नंदरायजी और यशोदाजी ने श्रीआचार्यजी से कहा कुछ वरदान मांगो तब आपने कहा कि अभी तो आप साक्षात् पधारे हो। ओर समय हम भेष बनावेंगे उसमें आप अपना आवेश धरना। क्योंकि अभी तो आप साक्षात् पधारे हो। आगे अगर नहीं पधारोगे तो वैष्णवों को अभाव होगा। तब सभी स्वरूपों ने अस्तु कहा। श्रीमहाप्रभुजी ने प्रथम नंद महोत्सव का उत्सव काशी में सेठ पुरुषोत्तम दास के घर में किया। दूसरा नंद महोत्सव श्रीगोकुल में किया। कारण कि वह भगवद् जन्म भूमि है। वहाँ दर्शन किये। पीछे मथुरा पधारे वहाँ विश्रामघाट पर बिराज कर प्रथम परिक्रमा पूरी कर उजागर चोबे को एक सौ रुपया दिये। तीन बार श्रीआचार्यजी ने पृथ्वी परिक्रमा की उससमय तीन व्रजपरिक्रमा भी की। परन्तु विस्तार के लिए यहाँ पर मना किया है। जो प्राचीन स्वरूपों के मुख से सुना था वही लिखा है। व्रज वनयात्रा में तो श्रीआचार्यजी की २२ बैठक हैं वहाँ श्री आचार्यजी महाप्रभु ने अलौकिक चरित्र दिखाये हैं।

२३. सूकर क्षेत्र–सौरम घाट, पो. सोरों जिला अटोहा, उ.प्र.
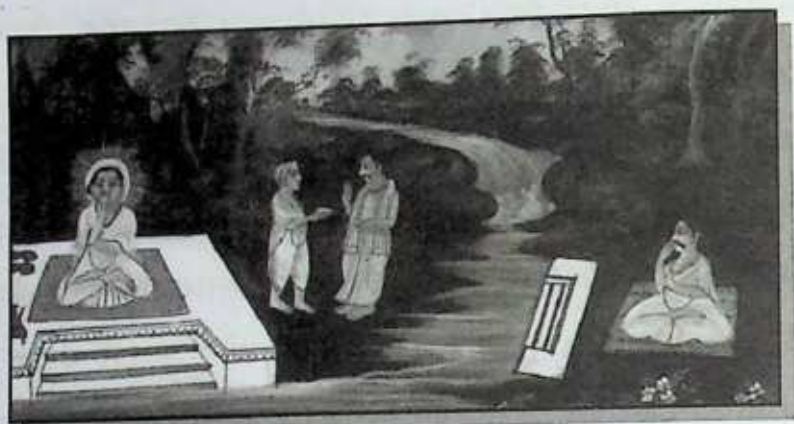
अबसूकर क्षेत्र सोरम जी में श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक है उनको सोरम घाट कहते हैं। एक समय श्री आचार्यजी महाप्रभु आप बिराज रहे थे। वहाँ कृष्णदास मेघन का उपदेष्टा गुरु था। उसके दर्शन को कृष्णदास श्रीआचार्यजी की आज्ञा बिना गये। तब उसने कृष्णादास जलती आग को हाथ में लेकर यह कहा कि जो श्री आचार्य जी महाप्रभु (आप) पूर्णपुरुषोत्तम हो तो यह आग मेरे को मत जलाना। और यदि नहीं हो तो यह आग मेरे को भस्म कर दे। ऐसा कहकर एक मुहूर्त तक आग हाथ में रखी। तब उनगुरु ने अग्नि हाथ से गिरवा दी। श्री आचार्य जी महाप्रभु का इस प्रकार महात्म्य दिखाया।

एक समय श्रीआचार्यजी श्री गंगाजी में स्नान कर रहे थे। वहाँ आपके बड़े भाई केशवपुरी पृथ्वी परिक्रमा करते हुए आकर मिले। श्रीगंगाजी के पार बिना नाव जाकर संध्यावंदन किये। पुनः वैसे ही आकर के श्री आचार्यजी के निकट खड़े रहे। इस प्रकार अपना सिद्धपना श्री आचार्यजी महाप्रभु को दिखाया। यह बात आपको अच्छी नहीं लगी। श्री आचार्यजी ने आज्ञा की कि सिद्धाई तो भगवतसेवा हो वह तो की कि नहीं। इस

सिद्धाई से क्या सिद्ध हुआ। तब दूसरे दिन उनकी सब सिद्धाई आपने हरण करली। जब दूसरे दिन फिर वे वैसी ही गंगा पार जाने लगे तब डूबने लगे। इस कारण श्रीआचार्यजी का नाम लेकर पुकारने लगे। उस समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु गंगा किनारे पर संध्यावंदन कर रहे थे। उस समय वहाँ से आपने अपनी भुजा फैलाकर श्री गंगा जी की मध्य धारा में से केशवपुरी को आप तट पर निकालकर लाए। यह चमत्कार देखकर केशवपुरी श्रीआचार्यजी महाप्रभु के चरणों में गिर गये और कहा कि आप तो ईश्वर के अवतार हो। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सोरम घाट की बैठक में प्रकट किया।

विशेष– छटी बैठक से २३ बैठक तक का वर्णनचौरासी कोश की परिक्रमा में सकला वर्णन आता है। इसके लिए श्री व्रजयात्रा वर्णन पुस्तक का अवलोकन करना चाहिए।

२४. चित्रकूट–कामलानाथ पर्वत, पोस्ट पीली कोठी, म.प्र.
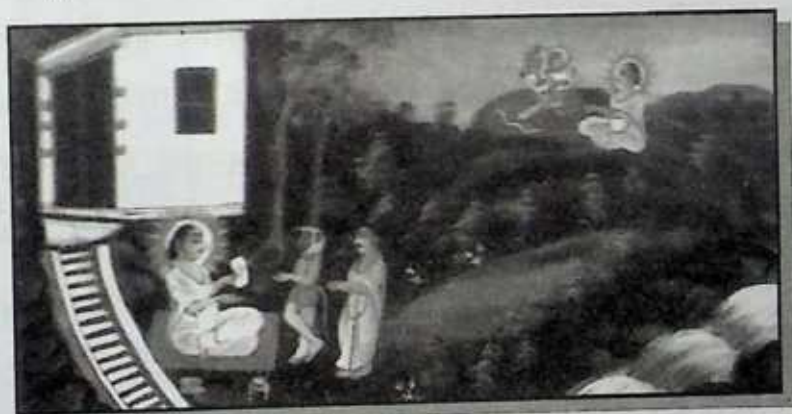
चित्रकूट पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। यह बैठक कान्तानाथ पर्वत के समीप है। वहाँ श्रीरामचन्द्रजी ने चतुर्मास किया था। श्रीआचार्यजी ने भागवत का पारायण किया तथा १६ दिन वाल्मीकि रामायण का पाठ किया।

उस समय श्रीहनुमानजी एक पेर पर खड़े रहे एवं श्रीआचार्यजी महाप्रभु से कथा श्रवण किया। आपने श्रीहनुमानजी को आज्ञा की कि तुम बैठकर कथा श्रवण करो। श्रीहनुमानजी ने कहा कि मेरे तो यही संकल्प है। श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की कि यहाँ जो कांतानाथ पर्वत है वह श्री गिरिराज का भाई है। इसलिए हमको इनके ऊपर पाँव नहीं धरना है। उस समय कांता नाथ पर्वत ने विचार किया कि मेरे ऊपर श्री आचार्यजी पधारें तो अच्छा तब एक ब्राह्मण का स्वरूप धरकर कांतानाथ पर्वत श्रीआचार्यजी के पास आया। आकरके प्रार्थना की महाराज श्री जानकीजी और श्रीरामचन्द्रजी मेरे ह्रदयशिखर पर बिराज रहे हैं। उनने आज्ञा की है तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी से जाकर कहो कि हमको भूख लगी है। कुछ सामग्री लेकर पधारो। उस समय श्री आचार्यजी श्री ठाकुरजी के भोग धरकर बिराजे थे। तब दामोदर दास से कहा कि केला की फली संवारो। पके पके केलाकी हर फली संवार के दामोदर दास से सिद्ध की। इसमें मिश्री तथा इलायची डालकर गुलाब जल पधराया। कृष्णदास मेघन ने प्रार्थना की महाराज गुलाब जलतो खासा श्री ठाकुरजी का है। उस समय श्री आचार्यजी मुस्करा कर चुप रहे। पीछे आज्ञा की कि श्रीरामचन्द्रजी मर्यादा आदि पुरुष है इसलिए कुछ चिन्ता नहीं है। उसके पीछे आपने एक कारिका कही –"सेतु बन्धन मात्रैकं चरितं हरि संमतम् दोष भावाय नारीणां लंकास्थानं निरूपितम्" इसके पश्चात् कान्तानाथ पर्वत के शिखर पर आप पधारे। वहाँ आपने देखा तो एक रत्नशिला के ऊपर श्रीरामचन्द्रजी और श्री जानकीजी बिराज रहे हैं और लक्ष्मणजी शेष रूप होकर के छाया कर रहे हैं तथा हनुमानजी हाथ जोड़कर खडे हैं। वहाँ आप पधारे उस समय श्रीरामचन्द्रजी श्रीआचार्यजी से मिले। हाथ पकड़कर रत्नशिला पर बैठाये। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने वह सामग्री आगे धरी उसको दोनों स्वरूपों ने अरोगी। उसमें से प्रसाद श्रीलक्ष्मणजी तथा श्रीहनुमानजी को दिया। इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी महाप्रभु और श्रीरामचन्द्रजी

ने एक मुहूर्त तक वार्ता की। उस समय बहुत आनन्द हुआ। श्रीरामचन्द्रजी ने कहा कि मेरे को आपके हाथ से अरोगना था इसलिए तुमको बुलाया। इसके बार श्रीआचार्यजी आज्ञा लेकर नीचे अपनी बैठक में पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने चित्रकूटकी बैठक में प्रकट किया।

२५. अयोध्या–गुसांई घाट (अप्रकट)

अयोध्या में सरयु के तीर पर गुसांई घाट पर श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक है। वहाँ आप बिराजे थे। पीछे एक समय आप अयोध्याजी में किसी स्थल के दर्शन करने के लिए पधारे थे। उस समय उस स्थल पर वाल्मीकि रामायण हो रही थी वहाँ श्रीहनुमानजी कथा श्रवण कर रहे थे। तब हनुमानजी ने कहा कि आप कृष्ण उपासक होकर श्री रामचन्द्रजी की पुरी में पधारे हो। उस समय श्रीआचार्यजी ने कहा कि हमतो अपने श्री ठाकुरजी की ससुराल जानकर आये हैं। श्रीआचार्यजी ने कहा हि तुम नग्न होकर कथा सुनते हो इसलिए लंगोटी लगाकर कथा सुनो तो अच्छा। उसी दिन से जहाँ रामायण होती है वहाँ आप एक वस्त्र बिछाते हैं। इसके बाद श्री हनुमानजी ने कहा कि आपने अयोध्या को श्रीकृष्ण की ससुराल कैसे बताया यह कहो। तब आपने कहा कि पूर्व में अयोध्या का राजा अग्निजित था उसकी बेटी श्री सत्याजी थी

वह श्रीकृष्ण को ब्याही थी। जब सात बैलों को नाथा तब अग्निजित ने श्रीसत्याजी से ब्याह किया इस कारण ससुराल कहा। इसके पश्चात् श्रीरामचन्द्रजी बैठक में श्रीआचार्यजी महाप्रभु से मिलने के लिए पधारे। श्रीआचार्यजी ने कहा "मर्यादापुरुषोत्तमायनमः" यह सुनकर श्री हनुमानजी को बड़ा संदेह हुआ। उसको अन्तः करण में ही रखा। किसी से कुछ कहा नहीं। श्रीरामचन्द्रजी अपने महल में पधारे तब श्री हनुमानजी का संदेह जानकर श्री रामचन्द्रजी ने उनको श्रीआचार्यजी के पास सामग्री देकर कहा यह आचार्यजी को दे आओ। तब हनुमानजी वहाँ से चले। वे क्या देखते हैं कि श्रीरामचन्द्रजी का स्वरूप धर कर श्रीआचार्यजी महाप्रभु बैठे हैं। श्रीहनुमानजी ने दंडवत की और वह सामग्री आगे धरकर पीछे हनुमानजी श्रीरामचन्द्रजी के पास आकर सर्व वृत्तान्त कहा। श्री रामचन्द्रजी ने कहा कि ये मेरा स्वरूप वे धर लेते हैं। परन्तु मैं उनका स्वरूप नहीं धारण कर सकता हूँ। इसका आशय यह है कि श्री रामचन्द्र जी तो श्री पुरुषोत्तम के हास्य अवतार हैं। श्रीसुबोधिनीजी (द्वितीय स्कन्ध क्री) के सातवें अध्याय में आपने कहा है कि हास्य तो श्रीमुख से प्रकट होता है। श्रीआचार्यजी तो पूर्ण पुरुषोत्तम के मुखारविन्द की अधिष्ठाता अलौकिक आनन्द समय की अग्नि रूप है यह निश्चित हुआ। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अयोध्याजी की बैठक में प्रकट किया।

२६. नैमिषारण्य–वेद व्यास आश्रम के सामने

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक नैमिषारण्य क्षेत्र में गोविन्द कुण्ड के ऊपर छोंकर के नीचे है। वहाँ आप सात दिन बिराजे और भागवत पारायण किया। एक दिन जप पाठकर के अदृश्य इठ्यासी हजार शौनकादिक ऋषि यज्ञ कर रहे थे वहाँ गुप्त रीति से उनके यज्ञ में पधारे। उस समय सभी

ब्राह्मणों ने आपकी प्रशंसा की और आसन पर पधाराकर श्रीआचार्यजी की बहुत पूजा की और एक श्लोक कहा–
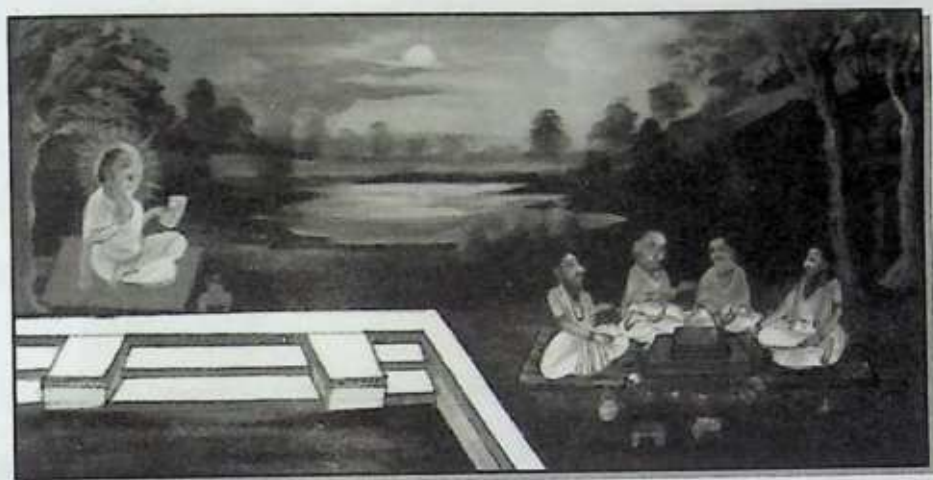
"नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाव वर्जितम् न शोभते ज्ञानमलं निरञ्जनम्।।

कुतः पुनः शश्वद भद्र मीश्वे न चार्पितं कर्म यदप्य कारणम्।।

(श्री भागवत प्र. स्कंध अ. ५ श्लोक १२) इस श्लोक की व्याख्या श्रीआचार्यजी ने तीन प्रहर तक की। पीछे सब वैष्णवों के पास आप बाहर पधारे। तब क्या देखते हैं कि सभी वैष्णवों को मूर्छा आ गयी है। आपने उसी समय कमंडलु में से जल लेकर छिड़का। तब सब सावधान हुए। सभी ने दण्डवत् करके पूछा कि महाराज तीन प्रहर से आप विना हमारे प्राण बहुत कष्ट पा रहे थे। आपने कहा कि यहाँ इठ्यासी हजार शौन कादि ऋषि हैं वे यज्ञ कर रहे हैं। उनके यज्ञ के दर्शन करने गया। वहाँ उनने श्री भागवत का प्रश्न किया उसकी व्याख्या करते करते तीन प्रहर व्यतीत हुए। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने नैमिषारण्य की बैठक में प्रकट किया।

२७. काशी की प्रथम बैठक, पुरुषोत्तमदासजी का घर, जतन बड़ चैतन्य रोड़, दूध हट्टी के पास, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
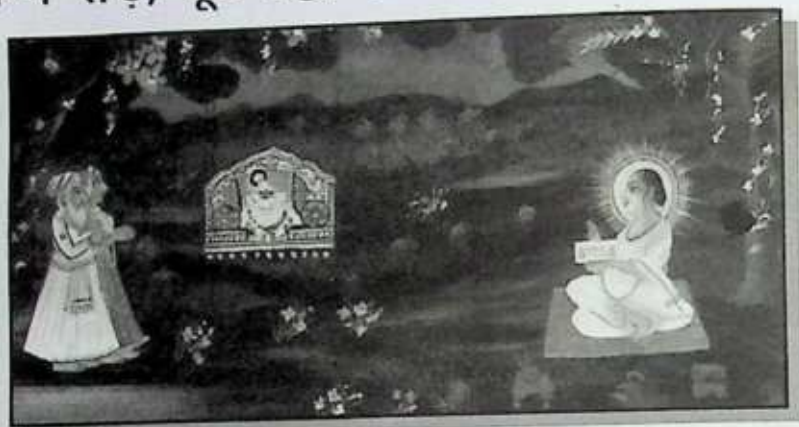
काशी में सेठ पुरुषोत्तम दास के घर पर श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक है। प्रथम आपने वहाँ नंद महोत्सव प्रकट किया। उस समय श्री नंदरायजी, श्री यशोदा जी, श्री वृषभानजी, उप नंदादि, गोप, ग्वाल तथा व्रजभक्त साक्षात् स्वरूपात्मक पधारे। नंद महोत्सव हुआ। वहाँ श्रीविश्वेश्वर जी महादेव जी दर्शन को पधारे थे। ये प्रसंग सेठ पुरुषोत्तम दास की वार्ता में विस्तार पूर्वक लिखा है। प्रभावलंबन ग्रन्थ श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने यहाँ ही प्रकट किया और वहाँ श्रीकृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम की स्थापना की और माया मत का खण्डन किया। काशी में मत मातंग पंडित थे उन सभी को निरूत्तर किया। काशी में मत मातंग पंडित थे उन सभी को निरुत्तर किया। वे कहते थे कि भाष्य तो तीन है। चौथा भाष्य का विवेचन नहीं है। उनको जीतकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अणु भाष्य का निरुपण किया। शंकर के विरुद्ध मत काखण्डन किया। उस प्रभावलम्बन से तीस श्लोकों में मायावादी पंडितों को निरुत्तर किया। उस समय वे महादेव जी के द्वार पर मरने बैठे और कहा कि आपने शंकराचार्य का स्वरूपघर कर ब्रह्म के निराकार स्वरूप का वर्णन किया हैं उस मत को श्री वल्लभाचार्य जी ने खण्डन करके साकार ब्रह्म की स्थापना

की है। तब (आपने) श्री महादेव जी ने स्वप्न में आज्ञा की कि जो श्रीआचार्यजी ने कहा है वह सत्य है। विश्वेश्वरजी की प्रतिमा से यह शब्द हुआ– "सत्यं सत्यं सत्यं च सत्यं श्रीवल्लभोदितम्" प्रवर्ता च प्रवर्त्य च प्रवर्तेत पुनः पुनः।।१।। प्रवर्तय शंकर प्रति" इसका आशय कहा कि जो श्री वल्लभाचार्य जी ने कहा वह सत्य है। उसी प्रमाण पर चलना। पद्मपुराण में श्री महादेव जी के जीवन को बहिर्मुख करने की आज्ञा की "त्वंच रुद्र महाबाहो मोहशास्त्रं प्रकाशय।' प्रकाशं करु चात्मानम् प्रकाशं च मां कुरु" आप काशी में बहुत दिन तक बिराजे। वहाँ यज्ञोपवीत, ब्याह सब काशी में किया। यह चरित्र आपने काशी में सेठ पुरुषोत्तमदास के घर की बैठक में प्रकट किया।

२८. काशी की दूसरी बैठक–पंच घाट (भावनात्मक)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की दूसरी बैठक काशी में हनुमान घाट के ऊपर है। वहाँ आपने संयास ग्रहण किया है। वहाँ एक मास तक श्रीआचार्यजी एक शिला पर बिराजे। अन्नजल सब त्याग दिया। उस समय बहिर्मुख ब्राह्मण ने पूछा कि तुमने सन्यास ग्रहण उपदेश किससे लिया है। तब आपने संन्यास निर्णय ग्रन्थ लिखकर दिया। उसको बांचकर वे निरुत्तर हो गये।

इसके पश्चात् पुनः बहुत पंडित इकट्ठे होकर आए। तब आपने

भयंकर झल झलाय मान अग्नि का दर्शन दिया। उस समय सब भयभीत होकर पीछे लौट गये। "रोषदृक्पात सम्प्लुष्ट भक्त द्विड्" यह नाम श्रीसर्वोत्तमजी में निरुपण किया है। उसके पीछे पुष्य नक्षत्र के समय अभिजित काल में आषाढ सुदी २ उपरान्त ३ के दिन श्रीगंगाजी के जल में कटि तक बिराजे। उस समय चालीस हाथ में तेज के पुंज का हुआ वह आकाश तक छा गया उसको दो मुहूर्त्त तक काशी के वासी सभी जनों ने देखा। तब वे कहने लगे हमने आज तक श्रीआचार्यजी के स्वरूप को जाना नहीं ये तो ईश्वर हैं। उसके बाद सभी जनों के देखते देखते श्रीआचार्यजी स्वधाम पधारे। यह चरित्र काशी में हनुमान घाट की बैठक में दिखाया।

२६. हरिहर क्षेत्र–महादेव जी के मन्दिर के पास मगर हट्टा चौक वैधनाथधाम जिला वैशाली बिहार हाजीपुर

हरिहर क्षेत्र में श्री गंगाजी और गल्ल की नदी का समागम हुआ हैं वहाँ भगवानदास के घर में (आप) श्रीआचार्यजी महाप्रभु अखण्ड विराजमान है। काशी में आपने आसुर व्यामोह लीला दिखलाई। उस समय वैष्णवों को बहुत दुःख हुआ। सभी मिलकर भगवानदास के घर आये और सारा वृत्तान्त कहा। उसी समय भगवान दास ने बैठक का टेरा खोला तब सभी को साक्षात्

श्रीआर्चाजी का दर्शन हुआ। यह भगवान दास की वार्ता में लिखा है। जब भगवान दास के घर से श्रीआचार्यजी चलने का नाम लेते उसी समय भगवान दास को मूर्छा आ जाती। उसका जगन्नाथजी तक आपका संग रहा। तब आपने कहा कि तुम घर जाओ। इस कारण मेरी लौकिक में निंदा होगी। इसलिए मेरी पादुकाजी ले जाओ। जिस चोंतरा पर तुम जप करते हो वहाँ तुम को दर्शन होगा। तब भगवान् दास घर आए उनको उस चोंतरा पर श्रीआचार्यजी का नित्य दर्शन होता। इस चरित्र को आपने हरिहर क्षेत्र की बैठक में प्रकट किया।

३०. जनकपुर–(अप्रकट) माणिकतालाब
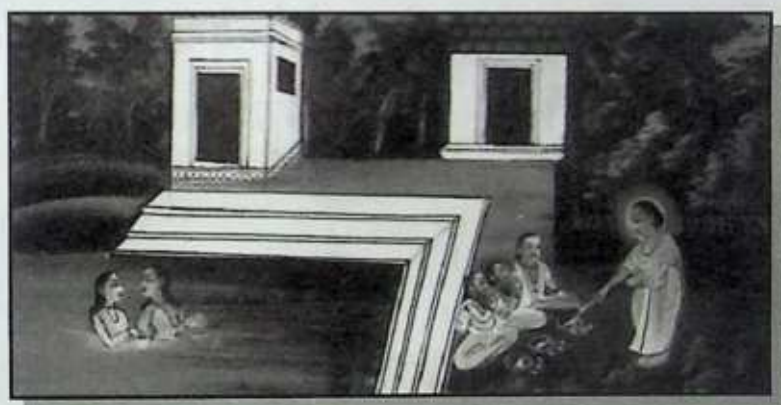
श्रीआचार्यजी की बैठक जनकपुर में मानिक तलाब के ऊपर भगवान्दास के बाग में है। वहाँ श्री रामचन्द्र जी श्री सीताजी गठ जोरे स्नान किया और श्री रामचन्द्र जी की बरात वहाँ उतरी थी। भगवान दास के बाग की बैठक में आप ने सप्ताह की। उसके पीछे केवल राम नागा विष्णुस्वामि सम्प्रदाय था। उसके साथ पाँच सौ नागा जनकपुरी की यात्रा को आये थे। उनने आकर श्रीआचार्यजी को दण्डवत् की और कहा कि महाराज मेरे को सेवक करो। तब आपने नाम सुनाया। आपने आज्ञा की तेरे वैष्णवों को यही नाम सुनादे।

उसके पीछे केवल राम नागा ने प्रार्थना की महाराज मेरे को आप अपना प्रसाद दो। उस दिन राम नवमी का दूसरा दिन था। बासोंधी का डबरा बचा हुआ था। उसी बासोंधी में से पाँच सौ नागाओं को भोजन करा दिया। उसके बाद भी और बासोंधी बच रही। यह माहाम्त्य देखकर केवल रामनागा बहुत प्रसन्न हुआ। पीछे दंडवत् करके चला गया। आपने उस समय आज्ञा की कि यह बैरागियों की उच्छिष्ट है। अतः वैष्णव नहीं लेंगे। वह मालियों को पिलवादी। उसके बाद बची हुई गांव के लोगों को पिलादी। यह चरित्र देखकर मालीने जाकर भगवान दास से कहा। तब भगवान दास ने आकर श्रीआचार्यजी को दण्डवत् की। इसके बाद भगवान् दास श्रीआचार्यजी के सेवक हुए। (उनका) श्रीआचार्यजी को अपने घर पधराये। वे वर्ष भर बिराजे। यह चरित्र श्री जनकपुरी की बैठक में आपने दिखाया।

३१. गंगा सागर, कपिल कुण्ड पर (अप्रकट)

गंगा सागर पर कपिला श्रम कपिला वन में कपिल कुण्ड के ऊपर एक छोंकर के नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक है। उसके आसपास महाभयंकर वन है। वहाँ सिंह, गेंडा, गजराज, सारस, हिरणी, भैंसा, आदि अनेक तामसी जीव बहुत है। वहाँ मनुष्य गम्य नहीं है। वहाँ षट्मास श्रीआचार्यजी महाप्रभु

(आप) बिराजे। वहाँ तृतीय स्कंध की श्री सुबोधिनी संपूर्ण करके आप पध ारे। वहाँ धान के मुरमुरा कृष्णदास मेघन अलौकिक रीति से लाये थे। उनको आपने अंगीकार कर कृष्णदास को वरदान दिया। एक समय श्रीआचार्यजी सूर्योदय के समय गंगा सागर में स्नान करके अपनी बैठक में बिराज रहे थे। तब आपने विचार किया कि दैवीजीवों का उद्धार भगवत आज्ञा से करना है। जीव तो तामसी योनि में पड़े हैं। उनको उत्तम योनि देना है। तभी भगवद् भजन का अधिकार होता है। भक्ति के संबंध बिना तो तामसी योनि की निवृत्ति नहीं हो सकती है। इसलिए जीवों का भक्ति से संबंध कराना है। इनकी प्रमेय बल करके तामसी योनि की निवृत्ति हो तब उत्तम योनि की प्राप्ति हो सकती है।

"अविद्या पूतना नष्ट गन्ध मात्रा व शेषतः" संपूर्ण अविघा पूतना के वध से गंध राशि उसके संबंध से निवर्त्त हुई। मूल अविद्या है। स्वरूप ज्ञान विस्मृत कराने वाली है। पूतना के शरीर में चंदन जैसी सुगंध उठी उसको सब ब्रजवासियों ने लिया। इससे नासिका द्वारा अविद्या का प्रवेश हुआ। चार्यो पर्व विद्यमान रहे उनको प्रमेय ब्रह्म से निवर्त किया। देहाध्यास धेनुक का वध कर, इन्द्रियाध्यास कालीका दमन कर, अंतकरणाध्यास केशी प्रलंब का वध, प्राणाध्यास दावानलका पान, प्राणाध्यास द्विधा प्रकार से किया है। इसलिए दावानलका दो बार पान किया है। ऐसा प्रमेय संपूर्ण अविद्या पर्वों सहित निवर्तकर साधन प्रकरण में अविद्या का दान किया पर्वत सहित संपूर्ण भक्ति देने का संबंध कराया।

"वैराग्यं सांख्य रूपयोगं च तपो भक्तिश्च केशवे,

बैठक चरित्र

पंच पर्वतिविज्ञेयं यथा विद्या हरि विषेत्।।9।।

इसलिए चरणारविन्द है वे भक्ति रूप है। इसलिए इनका भक्ति के गंध का संबंध कराने से इनकी तामसी योनि निवर्त हो जायेगी। इससे इनकी मनुष्य योनि सिद्ध होगी। ऐसा विचार कर वहाँ से उठकर आप गहन वन था वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे।

उस समय पाँच वैष्णव अंतरंग आपके साथ थे। तब एक छोटा सा पर्वत था उसकी एक टेकरी थी उसके नीचे आपके चरणारविंद उपड़ आये। उसी समय आप सब वैष्णवों के सहित उस पर्वत की टेकरी ऊपर जाकर विराजगये। वहाँ आपके चरणार विन्द में से अलौकिक भांति भांति की सुगन्ध निकली। उस गंध का ग्रहण तामसी जीवों ने किया। उससे सर्प (तुरत) शरीर (तामसीदेह) छोड़ते गये। पीछे कस्तुरी की सुगंध निकलीउसको अनेक मृगों ने ग्रहण करके शरीर को छोड़ दिया। इस प्रकार जिसको सुगंध ा प्रिय थी उसका ग्रहण करके तामस योनि निवर्त हुई। तब वे मनुष्य योनि को प्राप्त हुए। तभी वे भगवद् भजन के अधिकारी हुए। यह अलौकिक चरित्र देखकर गंगा सागर पर वैष्णवों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उस समय आपने ऐसी आज्ञा की उसको गोपालदास जी ने गाया है–''ए तामसनां अघहर्या परताप पद रज गंध'' यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने गंगासागर की बैठक में प्रकट किया।

३२. चंपारण्य की प्रथम बैठक, राजिम जिला रायपुर छत्तीसगढ़

श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप निजधाम में अखंड विराजमान है और आपकी लीला नित्य है। भक्तों सहित सदैव रमण करते हैं। जो दैवी सृष्टि बहुत काल से बिछुड़ी हुई थी उसके विषय में गोपालदास जी ने सप्तम वल्लभाख्यान में गाया है–"पर पोतानी व्यक्ति करेवा सृष्टि ते द्विधा प्रकार दैवी आसुरी बे ऊपजावी प्रभुमन करी विचार"।

अतः कृपा कटाक्ष से तो दैवी सृष्टि हुई और माया कटाक्ष से आसुरी हुई। अब दैवी जीवों का उद्धार करना है। इसलिए लीला सृष्टि सहित भूतल पर आपका प्रादुर्भाव होगा। तब सेवा रूप होंगे और भगवत् उपयोग होगा। भगवत् सेवाकर के भगवान् की लीला में प्राप्ति होगी। श्रीगुसांईजी ने श्री वल्लभाष्टक में निरुपण किया है– "सृष्टि व्यर्था च भूयान्निज फल रहिता देव वैश्वानरैषा" और सर्वोत्तमजी में भी आपका नाम है– *"दैवोद्धार प्रयत्नात्मा"* श्री गोवर्धननाथजी ने आपको आज्ञा की कि तुम व्रजभक्त गोपग्वाल सहित चौरासी, दो सोबावन, और अन्तरंग आपके कृपापात्र सेवक सब भूतलपर

प्रादुर्भाव हुए हैं। 'तब आपने इच्छा की कि जो दैवी सृष्टि तो भूतल पर चारों वर्णों में है। उनको शरण उपदेश देकर पांचवा वर्ण प्रकट कर भक्तिमार्ग का प्रवर्तन करना। कृष्णदासजी ने गाया है-"अन्य दीनों लेख हरिदास वर्य भेख कृष्णदास पंचवरण छाप छापी" तब आपने विचार किया कि उत्तम कुल में प्रादुर्भाव होकर के संप्रदाय प्रकट करना। दक्षिण में कांकरवाड गांव में रामानुजा चार्य नारायण भट्ट साक्षात् वेद के अवतार हुए है। चारों वेद, षट्शास्त्र जिनके मुखाग्र थे। बड़े बड़े राजा, साहूकार उनके शिष्य थे बड़े धनाढ्य थे। उन नारायण भट्टजी ने बत्तीस सोम यज्ञ किए तब यज्ञ कुंड में से वाणी हुई। नारायण भट्ट तुमको धन्य है। तुम्हारे यज्ञ साक्षात् श्रीपुरुषोत्तम ने भोग किये हैं। अतः तुम्हारे कुल में साक्षात् पुरुषोत्तम का प्रादुर्भाव होगा। कुण्ड में से श्रीमदनमोहनजी का स्वरूप भी प्राप्त हुआ। वे अब सात स्वरूपों में श्रीगोपाललालजी महाराज के माथे कामवन में बिराज रहे हैं। वही भगवदीयों ने गाया है- "कुंड ते हरि कही बानी जन्मकुल तिहारे अबे, चक्रत तत छिनभए सबहारे जनऐसी अबलों भई कबें, सुनत ही मन हर्ष कीनो धन्य धन्य कहे सबे" तब नारायण भट्ट को बहुत प्रसन्नता होने लगी। सभी ने कहा यह सब वेद का स्वरूप है। उन्होंने हजारों पंडितों को वेद पढाया। तब किसी एक पंडित ने कहा कि मनुष्यों को तो सब कोई पढ़ाता है इसमें बड़ी बात क्या है। तब नारायण भट्ट ने भैंसा को छड़ी लगाई तब वह भैंसा वेद पढ़ने लग गया। यह देखकर सारी सभा चकित हो गयी। पीछे नारायण भट्ट के पुत्र गंगाधर भट्ट हुए वे भी बड़े सामर्थ्यवान थे। नित्य ब्राह्मणों को भोजन कराते थे और दान दक्षिणा बहुत देते थे। उन गंगाधर भट्टजी ने अट्ठाइस सोमयज्ञ किये। उनका इस कारण बहुत यश हुआ। सब कोई कहने लगे कि यह तो

शिव का अवतार है। तब एक पंडित ने कहा कि शिवजी ने तो जटा में गंगाजी धारण किये हैं गंगाधर भट्ट ने जटा के जूड़े को झटका तब उसमें से गंगाजी की धारा बह चली। इसके पीछे उनके पुत्र गणपति भट्ट हुए वे बड़े उदार थे उन गणपति भट्ट ने तीस सोमयज्ञ कीये। हजारों विद्यार्थियों को पढ़ाया। उनका बहुत यश फैला। तब किसी ने कहा कि यह तो गणपतिजी का अवतार है। तब एक पंडित बोला कि गणपति का क्या काम है वे तो हुंड की वर्षा करे तब हम जाने। तब गणपति भट्ट ने एक योजन के बीच सवा प्रहर तक हुंड बरसाये। वे ऐसे सामर्थ्यवान हुए। उनके सुत वल्लभ भट्ट हुए वे बड़े ही तेजस्वी हुए। उनने पाँच सोमयज्ञ किये। सभी उनसे कहने लगे ये तो सूर्य नारायण के अवतार हैं। तब किसी ने कहा कि ये रात्रि में दोपहर करें तब हम सूर्यनारायण का अवतार जाने। उनने बारह कोश के बीच मे अर्धरात्रि के समय दुपहर कर दी। उनके पुत्र शुद्ध सत्व श्रीवसुदेवजी का अवतार श्रीलक्ष्मणभट्ट परम का उदय हुआ। उन श्री लक्ष्मण भट्ट जी ने पाँच सोमयज्ञ किये। तब आकाशवाणी हुई लक्ष्मण भट्ट तुम धन्य हो। तुम्हारे यज्ञ को श्रीपुरुषोत्तम ने भोग किया है। अब तुम्हारे तक १०० सोम यज्ञ हुए। अब अच्छा मुहूर्त्त देखकर पूर्णाहुतिकरो। जिसके कुल में सो सोमयज्ञ होते हैं उसके कुल में साक्षात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तम का अवतार होता है। अब तुम्हारे तीन पुत्र होंगे। उनमें श्री पूर्णपुरुषोत्तम प्रकट होंगे। उनका तुम अच्छी प्रकार ये यत्न करना। आकाशवाणी से ऐसी आज्ञा सुनकर लक्ष्मण भट्ट को परम आनन्द हुआ। तब अच्छा मुहूर्त्त देखकर पुण्याह वाचन किया और दस हजार ब्राह्मणों को भोजन करवाया। पीछे यज्ञ की पूर्णाहुति की। उसके बाद कितने ही दिनों पीछे प्रथम पुत्र हुआ उनका नाम केशव पुरी रखा। पीछे एक दिन लक्ष्मण भट्टजी को स्वप्न में युगल

स्वरूप का दर्शन हुआ। और आज्ञा हुई कि अब थोड़े ही दिन में आपके यहाँ श्रीपूर्णपुरुषोत्तम का प्राकट्य होगा। तुम अब कांकर वाड़ में मत रहो। क्यों कि आप की लीला सृष्टि उस चंपारण्य में प्रकट हुई है। इस कारण प्रादुर्भाव चंपारण्य में होगा। ऐसे कहकर श्री ठाकुरजी ने एक उपरणा में उगार बांध दिया। दो मालाएं दी। उसमें एक छोटे मणिका की और एकबड़े मणिका की थी। और आज्ञा दी यह छोटे मणिका की माला तो जब बालक प्रकट हो तब पहनाना और बड़े माणिका की माला जप करने के लिए रखना। यह उपरणा ओढ़ा कर यह उगार मुख में देना। तुम कांकरवाड से शीघ्र चलो ऐसी आज्ञा करके युगल स्वरूप तो पधार गये। तब लक्ष्मण भट्ट जग गये। स्वप्न में जो वस्तु मिली थी वह सब ज्यों की त्यों धरी हुई है। लक्ष्मण भट्ट ने कहा कि ओर का स्वप्न तो मिथ्या होता है किन्तु मेरा स्वप्न तो सत्य हुआ है।

तब स्वप्न के सब समाचार लक्ष्मण भट्ट जी ने अपनी स्त्री इल्लमागारुजी के आगे कहे। यह सुनकर इल्लमागारु ने प्रसन्न होकर कहा कि अब यहाँ से जल्दी चलो। लक्ष्मण भट्टजी ने सारे कुटुम्ब को साथ लेकर यात्रा के मिष (बहाने) करके चले। कुछ ही दिनों में प्रयागराज आये। वहाँ तीर्थ स्नान किया। ब्राह्मण भोजन करा दक्षिणा देकर आगे काशी को चले। कुछ दिनों में काशी जा पहुंचे। वहाँ कुछ दिन रहे। उसके बाद म्लेच्छों का उपक्रम उठा तब फिर वहाँ से चले जो भगवद् इच्छा से चंपारण्य आये। उस चंपारण्य में चंपक के वृक्ष का बड़ाभारी वन है। महाअरण्य एक योजनके बराबर है। इसी कारण उसका नाम चंपारण्य हुआ है। वहाँ सिंह, गेंडा, मृग आदि अनेक तामसी जीव रहते। वहाँ भीमरथी नदी है। लक्ष्मण भट्टजी आप वहाँ जा

निकले। तामसी जीवों के डर से वे बहुत डरे और घबरा गए। इस कारण वहाँ से छः कोस दूर नगर चोड़ा ग्राम है। उसमें रात्रि विश्राम किया। तब इल्लमागारु को ऐसा लगा कि गर्भ स्रवित हुआ है। तब लक्ष्मण भट्ट जी को इल्लमागारुजी ने सर्व समाचार कहे। तथा आपको श्री ठाकुरजी की आज्ञा हुई थी कि पूर्ण पुरुषोत्तम प्रकटेंगे किन्तु गर्भ तो स्रवित हो गया है। यह सुनकर श्रीलक्ष्मण भट्टजी ने विचार किया कि श्री पूर्ण पुरुषोत्तम तो किसी के गर्भ में आते नहीं हैं। आपकी आज्ञा हुई तो आप स्वइच्छा से प्राप्त होंगे। श्री लक्ष्मण भट्टजी तो ज्योतिष विद्या में निपुण थे। इस कारण समय देखकर बोले कि अब यह समय श्री पुरुषोत्तम के प्रादुर्भाव के सब चिह्न दीख रहे हैं। दिशाएं सभी प्रफुल्लित हो रही है। वन में सब और हरियाली दिखाई पड़ रही है। सभी प्राणी कल्लोल कर रहे हैं। यहां का राजा महादुष्ट था वह भी स्वागत कर रहा है। अपने को हर्ष हो रहा हैं इस कारण से श्री पुरुषोत्तम निश्चय ही प्राप्त होंगे। ऐसा कहकर फिर सो गये। पुनः भट्ट जी को आज्ञा हुई कि मेरा प्राकट्य तो मेरी स्वइच्छा से होगा। तुम और इल्लमागारुजी पुनः चंपारण्य में आना। तब मे अग्नि कुंड में से प्राप्त होऊंगा। यह सुनकर लक्ष्मण भट्ट जाग गये। इल्लमागारु जी को जगा कर वे सब समाचार कहे। लक्ष्मण भट्टजी ने कहा कि अब सुनते हैं कि काशी में यवन उपद्रव का समाधान हो गया है। सारे परिवार से कहा कि तुम सब काशी जाओ। हम कुछ दिनों बाद आयेंगे। इस प्रकार कह कर सभी को विदा किया। पुनः चंपारण्य आए तो वहाँ देखते हैं तो भीमरथी नदी के तीर पर एकयोजन के बीच ४० हाथ का एक अग्नि कुण्ड आपकी इच्छा से हो गया है। उसके मध्य में चार हाथ का गोलचोंतरा भीम रथी की वालुका का बन गया है। उसके मध्य कोटि कंदर्प लावण्य सुन्दर

एक बालक खेल रहा है। संवत् १५३५ मधुमास कृष्ण एकादशी मध्याह्नकाल समय में ज्येष्ठा नक्षत्र वृषभ लग्नरविवार के दिन आपका प्रादुर्भाव हुआ।

उस समय शेषजी सहस्र फणों द्वारा छत्र की तरह छाया कर रहे थे। मंद मंद मेघ फुहारें बरसा रहे थे। सिंह गर्जना कर रहे थे। उसी दिन, उसी लग्न में श्री गोवर्धन नाथ जी का प्राकट्य भी श्रीगिरिराज पर हुआ। उस समय भूमण्डल पर चारों ओर जय जय कार होने लगा। उस समय चम्पारण्य में लक्ष्मण भट्टजी और इल्लमागारुजी का पदारपण हुआ। उनको उस चोंतरा पर कोटिकंदर्प लावण्य का दर्शन हुआ। उस समय इल्लमागारुजी को अत्यन्त आतुरता हुई। अब मेरा पुत्र मेरे को प्राप्त होगा। किन्तु आसपास अग्नि ने घेर रखा है। मध्य चोंतरापर सुन्दर बालक खेल रहा है। उस समय आकाशवाणी हुई कि तुमको अग्निबाधा नहीं करेगी और मार्ग देगी। यह सुनकर इल्लमागारुजी ने अग्नि कुंड के भीतर जाकर अत्यन्त प्रीति पूर्वक बालक को गोद में लिया। तब लक्ष्मण भट्टजी ने दोड़कर बालक को अपने कंठ से लगाया। उस समय देवताओं ने दुंदुभी बाजे आदि बजाये। आकाश से पुष्प वृष्टि होने लगी। तब उस समय श्री कृष्ण जन्म उत्सव जैसा महोत्सव होने लगा। यह सब भगवत् इच्छा से देवताओं ने किया। अतिशयोक्ति जानने में आती है। इसलिए यहाँ अधिक नहीं कहा है। बंदी जन, मागध, भाट, चारण सभी स्तुति कर रहे थे। अब भीमरथी के विषय में कहते है। रत्न जटितमोतियों के, सोने, रूपादिके भांति भांति के खिलोने संमुख धरकर श्री लक्ष्मण भट्ट जी खिला रहे हैं। स्वप्न में जो उपरणा श्रीठाकुरजी ने दिया था वह श्री अंगपर ओढाया और वही ओगार श्रीमुख में दिया। श्रीकंठ में माला पहराई। उस समय श्रीमहाप्रभुजी का

बैठक चरित्र

कोटि कंदर्प लावण्य मुखार विन्द निरख कर सब तन, मन धन वार रहे हैं। सभी जन दूध, दही की गागर ले ले झांझ, मृदंग बजा रहे हैं नाच रहे हैं कूद रहे है। वहाँ पर एक कूप है उसमें से श्रीनंदरायजी, श्री वृषमानजी प्रकट होकर सब मिलकर श्रीलक्ष्मणभट्टजी को उस चम्पारण्य में मंगल स्नान करवाया और वेद विधि से जाति कर्म करवाया। उस समय श्रीलक्ष्मण भट्टजी बड़ी उदारता पूर्वक दान देने के लिए बिराजे। वहाँ आस पास हजारों गायों के झुण्ड के झुण्ड इकट्ठे हो रहे थे। उनमें जिसको जैसा जचा लक्ष्मण भट्टजी ने उसको वैसा ही दिया। वहाँ पर नन्द महोत्सव अलौकिक रूप से हुआ। दूध, दही की कीच मच गई। ऐसा लगा मानों सरिता बही हो। उस समय किसी को देहका भान नहीं था। सभी प्रेम के वशीभूत हो गये। भगवदियों ने गाया है – "नाचत गावत प्रेम विवस व्है छांडि लोक कुल लाज़। भूतल महामहोत्सव आज" श्री लक्ष्मण घर प्रकट भये हैं श्री वल्लभ महाराज। भयोजगतीपर जेजे कार" इस प्रकार से अनेक पद्भगवदीयजनों ने गाये। उस समय का सुख देखते ही बनता है। उस समय अनिर्वचनीय सुख हुआ। आचार्य से यथा शास्त्रनामकरण करवाया। श्रीलक्ष्मणभट्टजी से कहा आपके पुत्र के अपार गुण हैं उनको मैं कहाँ तक कहूँ। श्रीमहाप्रभुजी की जन्मपत्रिका लिखकर कहा कि तुम्हारे पुत्र का अपार यश होगा। यह माया वाद का खंडन कर भक्तिमार्ग की स्थापना करेगा। दैवी जीवों का उद्धार करेगा। तथा सकल तीर्थों को सनाथ करेगा। ये विष्णुस्वामी मार्ग के आचार्य होंगे तथा सभी को प्रिय होंगे। इसलिए इनका जगत् प्रसिद्ध नाम तो श्री वल्लभाचार्यजी होगा। ये सरस्वती कल्प की लीला प्रकट करके सेवा मार्ग प्रकट करेंगे। इनके वंश में जो प्रकट होंगे वे बहुत दिन तक भूतल पर आचार्य पदवी से क्रीडा करेंगे।

बैठक चरित्र

इस जगत् में तीन कुल हुए हैं। रघुकुल में श्री रामचन्द्रजी प्रकट हुए। यदुकुल में श्रीकृष्णचन्द्र प्रकटे और तैलंगकुल में श्रीआचार्यजी प्रकट हुए। इसलिए इनका श्रीवल्लभ कुल के नाम से जाना जायेगा। वे तीनो कुल शुद्ध कुल हुए हैं। जो कोई इनका स्मरण भजन करेगा उनको साक्षात् श्रीपुरुषोत्तम की लीला की प्राप्ति होगी। आपका अरण्य वन में प्रादुर्भाव है उसका कारण यह है कि देवतादिकों का शहर में आना नहीं होता है। इस कारण आपका प्रादुर्भाव जंगल में हुआ है। चंपारण्य जो अनेक लक्षावधी दैवी जीव है उनका आपने प्रकट होकर कटाक्ष द्वारा लीला में प्राप्त किये। श्रीगुसांईजी का प्रादुर्भाव चरणाट में श्रीगंगाजी के तट पर होगा वहाँ पर भी ऐसा ही सुख होगा। यह जन्म पत्रिका श्रीआचार्यजी महाप्रभु की विधि पूर्वक लक्ष्मण भट्ट जी को सुनाई। इसके पश्चात् महा महोत्सव के दर्शन करके अपने अपने स्थल को गये। उसके पीछे लक्ष्मण भट्ट जी सब ब्राह्मणों को बुलाकर सभी का सम्मान कर विदा किये। तब श्री नंदरायजी ओर श्री वृषभानजी ने श्री लक्ष्मण भट्टजी से कहा ये पूर्ण पुरुषोत्तम तुम्हारे घर प्रकटे हैं। इनको यतन से रखना। यह आज्ञा कर सब गोपों सहित धाम को पधारे। श्री इल्लमागारुजी बालक को गोद में खिलाती हैं और श्री लक्ष्मण भट्टजी आगे बैठे हुए हैं। आस पास अग्नि कुण्ड है। तब श्री लक्ष्मण भट्टजी ने श्री इल्लमागारुजी से कहा कि ये तो साक्षात् ईश्वर हैं। इनकी लीला अपार है। ये तो अपने ऊपर अनुग्रह करने के लिए पधारे हैं। इसलिए इनकी सेवा जितनी बने करनी चाहिए इनको पुत्र मानकर मत जानना। पीछे कहा कि अब यहाँ से छट्ठी पूजन करके घर चलेंगे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने चंपारण्य निज धाम की बैठक में प्रकट किये हैं।

३३. चंपारण्य की दूसरी बैठक
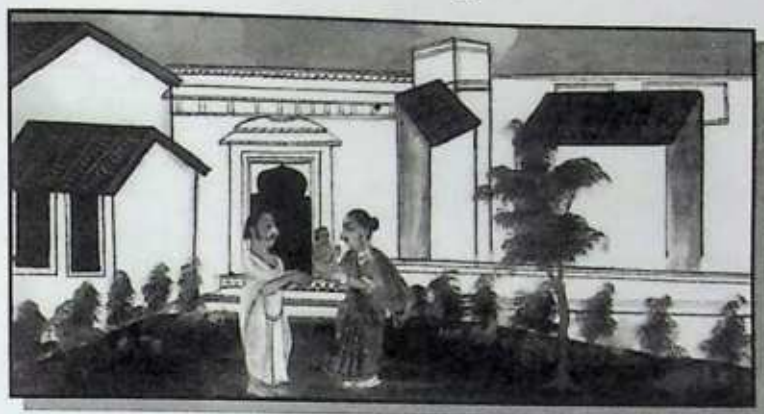
दूसरी बैठक श्रीआचार्यजी महाप्रभु की चंपारण्य में है। वहाँ छट्टी पूजन किया है। माधवानन्द नाम के ब्रह्मचारी काशी में गंगाजी के तट पर तपस्या करते थे। उनने अट्ठाइस वर्ष तक तपस्या की थी। उस समय श्री गंगाजी में से वाणी हुई थी कि तुम को जो चाहिए सो मांग लेओ। तब माधवानन्द ब्रह्मचारी ने कहा कि मेरे को तो ब्रज लीला का दर्शन करवाओ उनको आज्ञा हुई कि अभी तुम चंपारण्य को शीघ्र जाओ। वहाँ पूर्ण पुरुषोत्तम का आविर्भाव हुआ है। वहाँ तुमको लीला के दर्शन होंगे।

मुकुन्द दास संन्यासी पुष्करजी में थे वेनित्य श्री भागवत का पाठ करते थे उनको भी आज्ञा हुई कि तुम वर मांगो। तब उनने कहा कि मेरे को तो ब्रज लीला के दर्शन कराओ। उनको भी आज्ञा हुई कि लक्ष्मण भट्टजी के घर श्री पुरुषोत्तम का प्रादुर्भाव हुआ है। इसलिये चंपारण्य को जल्दी जाओ वे भी शीघ्र चंपारण्य को आये। उस समय नंद महोत्सव तो हो गया था। पीछे माधवानंद ब्रह्मचारी ने श्रीलक्ष्मण भट्टजी के आगे ज्योतिष विद्या पढ़ाई पीछे

बैठक चरित्र

माधवानंद ब्रह्मचारी और मुकुन्ददासजी ने अपना सब वृत्तान्त कहा कि प्राकट्य समय में अनिर्वचनीय आनंद हुआ था। अब छट्टी पूजन होगा। तब तुम आपसे निवेदन करना। अगर आपकी इच्छा होगी तो दर्शन करावेंगे। छट्टी पूजन के समय लक्ष्मण भट्टजी चंपारण्य कुंड पर एक चंपाके वृक्ष के नीचे इल्लमागारुजी सहित पूजन किया। उस समय माधवानंद और मुकुन्ददास दोनों आये। उनने श्रीआचार्यजी को दंडवत किया। उस समय श्री इल्लागामरुजी की गोद में कोटि कदर्प लावण्य बिराज रहे थे। आपने उन दोनों की इच्छा जानकर इन दोनों को व्रज लीला के दर्शन करवाये। गोप गायों सहित श्री गिरिराज, श्रीयमुनाजी श्री वृन्दावन और व्रजलीला स्थलों के वहाँ छट्टी के बैठक में दर्शन करवाये। तब माधवानंद और मुकुन्ददास दोनों लीला में प्राप्त हुए। उसके पीछे लक्ष्मण भट्टजी और माता श्री इल्लमागारुजी श्रीआचार्यजी महाप्रभु को पधराकर नगर चोड़ा में पधारे। उस समय राजाओं ने बहुत सन्मान किया। तथा प्रार्थना की कि दो चार दिन यहाँ पर बिराजो। श्री लक्ष्मण भट्टजी ने कहाकि मेरे काशी आने की इच्छा है। इसकी व्यवस्था कर दो सो ठीक हैं तब राजा ने म्यांना, असवारी गाड़ी, दो पहरेदार साथ में कर दिये। जापता वालों से यह कह दिया कि काशी पहुंचाकर श्री लक्ष्मण भट्टजी से पत्र लिखवाकर लाना। तब लक्ष्मण भट्ट श्री महाप्रभु को लेकर काशी पधारे। कुछ ही दिनों में काशी पहुंच गये। उस समय परमआनन्द एवं जय जय कार हुई। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने चंपारण्य की दूसरी बैठक में प्रकट किया।

३४. जगन्नाथ पुरी–हजारी मल, दूध वाले की धर्मशाला के पास ग्राण्ड रोड़ पुरी ७५२००१ उड़ीसा
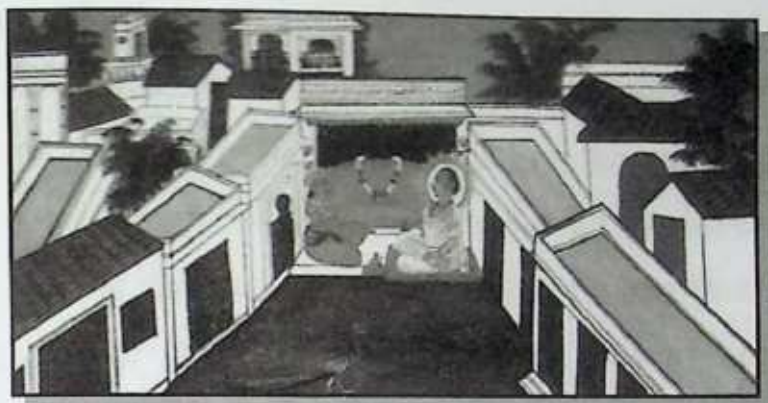
श्रीआचार्यजी महाप्रभु (आप) श्री जगन्नाथ देव के दर्शन करने को पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारे। वहाँ पुरुषोत्तम क्षेत्र में दक्षिण दरवाजे के पास आपकी बैठक है। वहाँ आप एक वर्ष तक बिराजे। तब वहाँ के राजा विष्णुदेव के पंडित वहाँ बहुत रहते थे। उनसे उसने प्रश्न किया कि सब देवों में मुख्यदेव कौन हैं मंत्रों में मुख्य कर्म मंत्र कौन सा है। शास्त्रों मुख्य शास्त्र कौन सा है ऐसे चार प्रश्न किये उस समय जो जीव जिस देवता का उपासक था वह उसी को मुख्यबताता मंत्र वाला अपने मंत्र को मुख्य बताता। इस कारण उस राजा का संदेह दूर नहीं होता। कोई भी पंडित एक बात निश्चय करके नहीं कहता था। इस कारण राजा अपने पंडितों को लेकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु के दर्शन को आया। आकर राजा ने दण्डवत् की और बैठकर प्रार्थना की कि महाराज आप तो साक्षात् ईश्वर हो। आपने मायामत का खण्डन किया है। दिग्विजय भी आपने की है। मेरा एक संदेह है उसको आप कृपा कर निवृत्त करो। ये पंडित तो सभी अपने अपने मत के अनुसार कहते हैं। अतः आप निश्चित सिद्धान्त पूर्वक बतावें कि कौन मुख्य है तब उस राजा के वचन सुनकर श्रीआचार्यजी ने

अपने मत में विचार किया कि इसको शास्त्र सिद्धान्त कहेंगे तो मन में नहीं लायेगा न जानेगा। क्योंकि यह विष्णु उपासक हैं इस कारण विष्णु का उत्कर्ष कहते हैं। जैसे अन्य पंडित अपने मत के अनुसार कहते हैं। वैसे यह भी अपने मत के अनुसार कहता है। वैसे तो इस राजा का संदेह निवारण नहीं होगा। इसको श्रीजगन्नाथरायजी का विश्वास है। इस कारण इसको श्रीजगन्नाथरायजी के मुख से कहलाना। तब यह प्रमाण मानेगा। ऐसा निश्चय कर श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उस राजा को आज्ञा की। श्रीजगन्नाथरायजी के आगे एक कोरा कागज कलम और दवात धरो। श्री जगन्नाथरायजी जो लिख दें वही प्रमाण होगा। यह सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ। तब उसने श्रीजगन्नाथरायजी के आगे एक कोरा कागज कलम एवं दवात धर कर प्रार्थना की। महाराज कर्म और मंत्र, शास्त्र एवं मुख्यदेव हो आप कृपाकर लिख दो। ऐसे कहकर मंदिर का ताला बंद कर बाहर आकर बैठ गया। तब श्रीमहाप्रभु की आज्ञा जानकर श्रीजगन्नाथरायजी ने एक श्लोक लिख दिया –

"एकं शास्त्रं देवकी पुत्र गीतं,
एको देवो देवकी पुत्र एव।
मंत्रा येकं तस्य नामानियानि,
कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा।।

जब श्री जगदीश लिख चुके तब श्रीआचार्यजी ने यह जानकर राजा से कहा कि अब कागज उठाकर ले आओ। तब राजा ने मंदिर का ताला किंवाड़ खोलकर उस कागज को उठा लाया। पंडितों से पढ़वाया और राजा ने पढ़ा तब सभी का संदेह मिट गया। तब राजा ने कहा। श्रीवल्लभाचार्यजी धन्य हैं जिनके कहने में श्रीजगन्नाथरायजी हैं। जैसे आपने कहा वैसे श्रीजगदीश ने

लिख दिया है। ब्राह्मणों में एक बहिर्मुख था वह निराकार मायावादी था। उसने अनेक प्रश्न किये। उसके बाद उसने कहा कि श्री जगन्नाथरायजी के हाथ नहीं है। उनने पत्र कैसे लिखा होगा। इसलिए यह हमारे लिए प्रमाण नहीं है। यह सुनकर श्रीआचार्यजी ने कहा कि यह बड़ा मूर्ख हैं श्रीजगन्नाथदेवजी के हाथ नहीं है तो आप कैसे अरोगते हैं। इस प्रकार उसको समझाया परन्तु वह नहीं माना और पूर्व पक्ष की ही चर्चा करता था। तब राजा ने श्रीआचार्यजी से प्रार्थना की महाराज और सभी का तो संदेह निवृत्त हो गया है किन्तु इसका संदेह निवृत्त नहीं हुआ हैं श्रीआचार्यजी ने कहा कि अब पुनः श्रीजगन्नाथजी के आगे दवात्, कमल, कागज धरो। आप लिख देंगे। तद्नुसार श्री जगदीश के आगे धरे और किंवाड लगा दिया। श्री जगन्नाथरायजी ने पूर्ववत् आधा श्लोक लिख दिया।–"यः पुमान् भगवद् द्वेषी तंविद्यादन्यरेतसम्" क्षण मात्र पीछे मंदिर खुलवाकर श्रीआचार्यजी ने वह कागज मंगवाकर राजा से पढ़वाया। उसमें यह लिखा था जो पुरुष भगवान् का द्वेषी हो वह ओरके वीर्यका जानना। वह अपने पिता से उत्पन्न नहीं हुआ है। उसके पीछे राजाने उस ब्राह्मण की माता को बुलवाया। उसको एकान्त में ले जाकर डराकर पूछा कि तू सच बता तेरा यह पुत्र किससे उत्पन्न हुआ है। तब उसने उसको सब बात कह दी। यह एक म्लेच्छ से पैदा हुआ है। यह सुनकर उस राजा ने उस ब्राह्मण को पुरी से बाहर निकलवा दिया। क्योंकि उसने भगवद् आज्ञा नहीं मानी। तब पुरुषोत्तमपुरी में जय जय की ध्वनि होने लगी। श्रीआचार्यजी महाप्रभु की दिग्विजय विख्यात हुई। पुरुषोत्तम क्षेत्र की बैठक में श्रीआचार्यजी ने यह चरित्र दिखाया। इसके पश्चात् तीन बार श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्री जगन्नाथपुरी पधारे। तीनों बार आपने पृथक् पृथक् चरित्र दिखाये हैं।

३५. पंढरपुर–चन्द्रभागा नदी के उस पार महाराष्ट्र

पंढरपुर क्षेत्र में भीमरथी के तीर पर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है। वहाँ एक समय श्रीआचार्यजी पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथजी के दर्शन करने को पधारे। तब भीमरथी के तीर पर आप बिराजे। सेवकों को आज्ञा दी की एक नाव किराये करके लाओ उस पार चलेंगे। तब इतने में श्री विट्ठलनाथजी आप पांच वर्ष के एक ब्राह्मण बालक का स्वरूप धरकर पुंडरीक भक्तको साथ लेकर भीमरथी के पार आकर आप श्रीआचार्यजी के निकट आकर मिले। उस समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु उठकर मिले। फिर एक पट्टा बिछादिया उसपर आप विट्ठलनाथजी बिराजे। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि आप को बहुत श्रम हुआ है। मैं तो आपके दर्शन को आता ही था। तब श्रीविट्ठलनाथजी ने कहा मैंने तो मित्रता को प्रथम प्रकट किया है। जो मित्र आये तो उसके सामने जाकर मिलना चाहिए। यह सुनकर श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न हुए और निकट की मिश्री भोगधरकर अबीरसों खिलाए। पांडुरंग माहात्म्य में कथा है और भविष्योत्तर पुराण में भी कहा है कि पुंडरीक नाम करके एक ब्राह्मण था। वह अपने माता पिता को बहुत दुःख देता था। तब एक संघ उसके गांव से श्री गंगाजी नहाने के लिए चला। उस संघ में यह पुंडरीक भी चोरी के लालच से चला। तीन

मंजिल (स्थान) तक सो वह चला। मार्ग में वह संघ से बिछुड़ गया। एवं भूल गया। रात्रि पड़ गई तो वह वहाँ ही सो गया। चार घड़ी रात्रि शेष रही तब वह जगा। एक स्थल पर बैठा हुआ वह क्या देखता है कि दो दो स्त्रियां नख से शिख तक आभूषण से भूषित सोने के कलश भरकर उसके सामने से निकली। तब उसने उनसे पूछा तुम कोन हो और कहाँ जाती हो। उनमें से एक बोली हम श्रीगंगाजी हैं और यह श्री यमुनाजी है। एक ब्राह्मण माता पिता की सेवा करता है। उसको सेवा से गंगा स्नान का अवकाश नहीं है। इसलिए उसको स्नान कराने के लिये वहीं जा रही हैं। जो माता पिता की सेवा करते हैं उसको घर में ही गंगाजी का स्नान का फल प्राप्त होता है, उसका प्रमाण बताया है–

"माता गंगा समं तीर्थं पिता पुष्कर मेव च।
गुरुः केदार तीर्थं च माता तीर्थं पुनः पुनः"

इतना कहकर श्री गंगा यमुनाजी तो अन्तर्ध्यान हो गई। तब उस पुंडरीक को ज्ञान हुआ। उसने विचार किया कि माता पिता की सेवा का ऐसा प्रताप है तो अब में भी माता पिता की सेवा करुंगा। ऐसा सोचकर वह पुनः अपने घर आया। उसके माता पिता उसको देखकर बहुत दुःखी हुए। उनके मन में आया कि यह दुष्ट दुःख देने के लिए पुनः आ गया है। यह दुष्ट दो दिन कहीं गया तो हम सुखी थे। उस समय उस पुंडरीक ने अपने माता, पिता को दंडवत की पीछे चरणस्पर्श किये। उसके बाद माता, पिता की परिक्रमा करके माता पिता से कहा आज तक के मेरे सभी अपराध क्षमा करो। अब मैं आपकी सेवा करुंगा। उसके पीछे उसने बहुत वर्ष पर्यन्त अपने माता पिताकी सेवा अनन्य भाव से की। दीनतापूर्वक सेवा करते बारह वर्ष व्यतीत हो गये।

बैठक चरित्र

तब एक दिन श्री भगवान ने व्यापि वैकुण्ठ में श्रीलक्ष्मीजी से कहा कि मेरा एक भक्त भूमि ऊपर हुआ है उसको दर्शन देने को जाता हूं। वह माता पिता की सेवा बहुत दिनों से कर रहा है। उसको आने का अवकाश नहीं हैं तब श्रीलक्ष्मीजी ने कहा कि उसभक्त के दर्शन मैं भी करुंगी। श्रीठाकुरजी एवं श्रीलक्ष्मीजी युगल स्वरूप से आप भूलोक पर पंढर पुर पधारे। वहाँ वह पुंडरीक माता पिता की सेवा करता था उसके घर के द्वार पर पधार कर खड़े रहे और उसका नाम लेकर आप ने कहा कि जो तेने अपने माता पिता की सेवा बहुत की है इस कारण तेरे को दर्शन देने हम वैकुण्ठ से यहाँ आए हैं। तू हमारा दर्शन कर। तब उसने भीतर से ही कहा कि महाराज एक चरण पिता का मैं दबा चुका हूँ। दूसरा चरण दबाकर आपके दर्शन करुंगा। ऐसा कहकर उसने दूसरे हाथ से एक ईंट फेंकदी और कहा कि महाराज आप इस पर बिराजो। पीछे माता, पिता की सब सेवा कर आज्ञा लेकर उस पुंडरीक ने आकर श्रीठाकुरजी को दंडवत की। तब श्री ठाकुरजी ने कहा मैं तेरी भक्ति देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। इसलिए तू कुछ वरदान मांग। उसने कहा कि महाराज मेरे पर कृपा की है तो मेरे को तीन वरदान दो। १. आप मेरे घर सदा बिराजो। २. पहले मेरा नाम हो पीछे आप का नाम हो। ३. श्री गिरिराज तथा श्री गोकुल चौरासी कोस व्रजमंडल में आप क्रीडा करते हो उस बाल लीला के दर्शन मेरे को हो। ऐसी तीन बातें उसने मांगी। तब श्री विट्ठलनाथजी ने आज्ञा की 'तथास्तु' एक मन्वन्तर तक में तेरे घर बिराजूंगा। पहले तेरा नाम होगा। पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथजी नाम जगत में प्रसिद्ध होगा। जो कोई तेरी पुरी में आयेगा और मेरे से मिलेगा वह कैसा भी पापी होगा वह यमकी पुरी नहीं जायेगा। गोपमंडली में उसका स्थापन होगा। व्रत लीला का दर्शन तेने

मांगा वह अट्‌ठाइस चौकड़ी पीछे श्रीवल्लभाचार्यजी यहाँ पधारेंगे तब उनसे मैं कहूंगा तब तेरे को वे व्रजलीला के दर्शन करायेंगे। ऐसा आपने पुंडरीक को वरदान दिया। इसलिए वहाँ अब तक लोग गान करते हैं – "पुंडरी के वरदा हरिविठ्ठल" उसके पीछे पुंडरीक भक्त के माता पिता को सदेह वैकुण्ठ श्री विठ्ठलनाथजी ने भेज दिया तथा आप श्री लक्ष्मीजी सहित उसके घर पधारे तथा उसके घर ही में बिराजे। पुंडरीक ब्राह्मण सेवा करता था वह अब अट्‌ठाइस चौकड़ी पीछे श्रीआचार्यजी पधारे तब श्री विठ्ठलनाथजी ने कहा कि यह मेरा भक्तपुंडरीक है इसको व्रजलीला के दर्शन करने की अभिलाषा है। इसको मैंने प्रथम वर दिया। तेरे को श्रीवल्लभाचार्यजी व्रजलीला के दर्शन करायेंगे इसलिए अब आप इसको व्रज लीला के दर्शन कराओ।

तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि आप ही ने इस को व्रजलीला के दर्शन क्यों नहीं कराये। श्री विठ्ठलनाथजी ने कहा यह अधिकार तो हमने आपको दिया है। व्रजलीला के अधिष्ठाता तो आप हैं। आपकी कृपा बिना व्रजलीला के दर्शन नहीं हो सकते हैं। जब आप अनुग्रह करो तब ही संभव हो सकता है। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने मुस्कराकर कहा कि आपकी आज्ञा है वही करेंगे। इसके बाद श्रीविठ्ठलनाथजी पुंडरीक सहित अपने मंदिर पधारे। तब श्रीआचार्यजी श्री विठ्ठलनाथजी पुंडरीक सहित अपने मंदिर में पधारे। तब श्रीआचार्यजी श्री विठ्ठलनाथजी के मंदिर में पधारकर सेवा शृंगार किया। सात मोहर जो कृष्णदेव राजा की भेंट में से दैवी द्रव्य लिया था उसके नूपुर अंगीकार करवाये। इसके बाद श्रीआचार्यजी आप पुंडरीक भक्त को साथ लेकर पाँच वैष्णव जो आपके साथ थे उन सहित आप पुरी के बाहर एक योजनके बीच में अरण्य वन था वहाँ पधारे। वहाँ एक पीपल का वृक्ष था उसके

नीचे आपने आसन बिछाया और बिराज गये थे। पुंडरीक के नेत्रो में संद योपासन के जल के छींटा लगाये। इससे उसके दिव्य नेत्र हो गये। तब उसको व्रज लीला के दर्शन होने लगे। श्री यमुनाजी, श्री गिरिराज, श्री गोकुल, श्रीवृन्दावन, श्रीमथुरामंडल, व्रज चौरासी कोस, बारह वन और बारह उपवन, श्रीनंदरायजी, श्री यशोदाजी, गोपी, ग्वाल संपूर्ण व्रजलीला के दर्शन हुए। दो मुहूर्त्त तक उसको दर्शन करवाये। बाद में श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उसके दिव्य नेत्र थे उनको तिरोधान करा दिया। तब सारी लीलाएं अदृश्य हो गयी। उसने पुनः प्रार्थना की कि मैं तो बड़े सुख में था आपने मेरे को उस सुख से क्यों निकाला। तब श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की कि तेरे को श्री विट्ठलनाथजी की सेवा करनी हैं तेरे को केवल दर्शन कराने की आज्ञा थी इसलिए तेरे को दर्शन कराये। अब (आप) श्रीविट्ठलनाथजी इकत्तर चोकड़ी तक इस क्षेत्र में बिराजेंगे। तब तक तेरा ऐसा ही स्वरूप रहेगा। पश्चात् उन के साथ उस लीला में आयेगा। ऐसा कहकर आपने उसको श्री विट्ठलनाथजी के निकट भेजा। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्री पंढरपुर बैठक में दिखाया।

३६. नासिक–परसराम पुरिया मार्ग, पूसा, पंचवटी नासिक
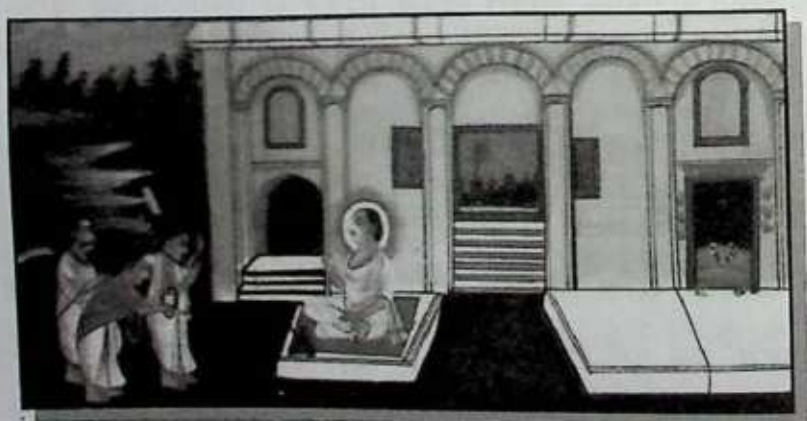
बैठक चरित्र

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक नासिक के तपोवन में पंचवटी में है। वहाँ श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास से आज्ञा की कि यहाँ श्री रामचन्द्रजी ने तपस्या की है। तथा श्रीसीताजी का हरण यहीं से हुआ हैं इसलिए यहाँ श्री भागवत सप्ताह करेंगे। इस गांव में मायावादी बहुत हैं। इसलिए माया मत का खंडन करके भक्तिमार्ग की स्थापना करेंगे। ऐसे कहकर आप वहाँ कुछ दिन बिराजे। जब सब पंडितो ने सुना कि यहाँ तपोवन में श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं उनने दक्षिण तथा काशी में मायामत का खंडन करके भक्तिमार्ग का स्थापन किया हैं तथा विष्णु संप्रदाय को अंगीकार किया है। सुनते है कि आपका प्रादुर्भाव अग्निकुंड से हुआ है। इस कारण अग्नि से अधिक तेज आप में हैं चलकर दर्शन तो करें। बिना दर्शन परिचर्चा कैसे होगी। तब उन पंडितों में एक पंडित ने कहा अपने में से चार पंडित एक मत करके चलेंगे तब मायावाद का स्थापन होगा और भक्तिमार्ग असत्य होगा। कदाचित मायावाद का खंडन हुआ और भक्तिमार्ग की स्थापना हुई। क्योंकि वे बड़े बड़े देशों में दिग्विजय करके पधारे हैं। यह कार्य साक्षात् ईश्वर विना नहीं हो सकता है। ईश्वर के आगे पराजय की कुछ चिंता नहीं है। इसलिए तुम डरो मत। यह सुनकर वे मायावादी। श्रीआचार्यजी के पास आये। श्रीआचार्यजी उस समय सप्ताह कर चुके थे। तब वे नासिक के पंडित आये। श्रीआचार्यजी ने उनका सत्कार करके बैठाये। उन पंडितों ने कहा कि महाराज हमारा भाग्य धन्य है कि आपके दर्शन हमको हुए। इसके बाद आपकी उनसे चर्चा हुई। चार घड़ी में श्रीआचार्यजी ने उन सब पंडितों को निरुत्तर कर दिये। तब सभी पंडितों ने आपस में कहा ये तो वेद शास्त्रों का निरुपण करते हैं

ये तो ईश्वर हैं। इसलिए उनने प्रार्थना की कि हम धन्य हैं जो ईश्वर के दर्शन हमको हुए हैं। अब आप कृपा करके हमको शरण लें श्रीआचार्यजी ने कहा तुम रुद्राक्ष उतारकर श्रीगंगाजी में स्नानकर आओ क्योंकि हमारे संप्रदाय में तुलसी माला धारण की आवश्यकता है। तब सभी ने रुद्राक्ष उतारकर स्नान किया। श्रीआचार्यजी ने सब को नाम सुनाये। तुलसी की माला पहनाई। इस प्रकार मायावाद का खंडन कर भक्तिमार्ग की स्थापना की। इस कारण नासिक क्षेत्र में जय जय कार हुई। इसके पश्चात् सभी पंडित दंडवत करके अपने घर को गये। उसके पीछे श्रीआचार्यजी ने कटाक्ष द्वारा अनेक तामसी जीवों को अंगीकार किया। कुछ दिन वहाँ बिराज कर वहाँ से विजयकर दक्षिण को पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने नासिक पंचवटी की बैठक में प्रकट किया।

३७. पन्ना नृसिंह जी की बैठक, मंगलगिरी स्टेशन, विजय वाड़ा (अप्रकट)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक पन्ना नृसिंहजी में है। वहाँ एक छोंकर के नीचे आप बिराजे थे। वहाँ श्रीआचार्यजी के पास श्रीनृसिंह जी पधारे उस

समय आपने खड़े होकर नमस्कार किया और कहा–''नृसिंहाय नमः'' और आपने प्रार्थना की कि आप परिश्रम कर यहाँ क्यों पधारे। मैं तो आपके दर्शन के लिए ही आया हूँ। मैं अभी मंदिर में आता ही था तब श्री नृसिंहजी ने कहा कि मित्र का यही धर्म है जो मित्र पधारे पीछे धैर्य कैसे रह सकता हैं आप तो हमारे सर्वस्व हो। आपका प्राकट्य तो दैवी जीवों के उद्धारार्थ एवं सकल तीर्थों के सनाथ करणार्थ हुआ है। इसलिए मेरी आज्ञा है आप शीघ्र मन्दिर में पधारिये। यह आज्ञा करके श्री नृसिंह जी आप मंदिर में पधारे। तब श्रीमहाप्रभुजी ने कृष्णदास मेघन को आज्ञा की कि मिश्री का पणा सिद्ध करो। उस में सुगन्ध गुलाब जल पधराओ। तब दामोदर दास ने प्रार्थना की महाराज श्रीनृसिंहजी पणा ही अरोगते हैं उसका क्या कारण हैं। तब श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की कि श्रीनृसिंहजी ने प्रकट होते ही युद्ध कर हिरण्याक्षको मारा। इस कारण आपको बहुत श्रम हुआ। पना श्रम निवारक है। इसलिए आपने अरोगा यह आज्ञा कर श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने पना सिद्ध करवाया। उसके बाद आप सभी सेवकों सहित मन्दिर में पधारे। उस समय वहाँ एक पण्डा श्रीनृसिंहजी का कृपा पात्र था उसको श्रीनृसिंहजी ने आज्ञा की कि श्रीआचार्यजी पधारे हैं वे साक्षात् श्री पूर्णपुरुषोत्तम का अवतार है। इसलिए भक्ति रीति से उनको मन्दिर में पधराकर लाओ। तब उस पण्डा ने जाकर साष्टांग दण्डवत कर और विनय की कि आप मंदिर में पधारो। श्रीआचार्यजी मन्दिर में पधारे। श्रीनृसिंहजी के दर्शन किये पणा अरोगाया। श्रीनृसिंहजी ने आधा अरोगा और आधा रहने दिया। श्रीआचार्यजी प्रार्थना की कि मित्रता की अधिकता क्या? श्रीनृसिंहजी ने और अरोगा। पीछे थोड़ा सा रह गया वह आपको दिया। इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीनृसिंहजी की आज्ञा लेकर अपनी बैठक में पधारे।

वहाँ आपने सप्ताह की। श्री नृसिंहजी सुनने को पधारे। श्रीआचार्यजी ने कहा आप परिश्रम कर क्यों पधारे। तब श्री नृसिंहजी ने कहा कि आपके मुखसे कथा सुनने की बहुत अभिलाषा थी। इसलिए अब समय आया है। यह वचन सुनकर श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न हुए आपने कृष्ण दास मेघन को आज्ञादी कि एक पट्टा पास बिछा दो। तब कृष्णदास ने एक पट्टा बिछा दिया। उस पर श्री नृसिंहजी बिराजे। जब तक सप्ताह हुई वहाँ तक श्री नृसिंहजी नित्य पध ारते। वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपने चरणारविन्दकी रज से अनेक तामसी जीवों का उद्धार किया। इसके पश्चात् आप श्री नृसिंहजी की आज्ञा लेकर वहाँ से विजय की और दक्षिण में पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभुने श्रीपन्नानृसिंह जी की बैठक में प्रकट किया।

३८. लक्ष्मण बालाजी–कर्नाटक धर्मशाला (छत्रम) के बाजू में तिरुपति, आंध्र प्रदेश

श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप लक्ष्मण भट्टजी सहित काशी में बिराजते थे। उस समय वहाँ बहुत से पंडित श्रीआचार्यजी से चर्चा करने को आते थे। उन सभी को आप निरुत्तर कर देते थे। श्रीलक्ष्मण भट्टजी ब्राह्मण भोजन को

बुलाते थे तब वे श्रीआचार्यजी से वाद झगड़ा करते थे। श्रीआचार्यजी सभी के मायावाद का निरासकर भक्तिमार्ग की स्थापना करते थे। एक दिन श्रीआचार्यजी ने विचार किया कि अब दक्षिण में चले तो ठीक है। किन्तु श्रीआचार्यजी महाप्रभु पर लक्ष्मण भट्टजी का बहुत स्नेह था वे क्षण मात्र भी बिना देखे नहीं रह सकते थे। तब श्रीआचार्यजी ने मन में विचार किया कि पृथ्वी परिक्रमा के बहाने से सकलतीर्थ सनाथ करने हैं और दशों दिशाओं में दिग्विजय कर ब्रह्मवाद का स्थापन करना है। यह कार्य बिना स्वतंत्रता के नहीं हो सकता है। पिता का स्नेह तो बहुत है। इसलिए अकेले परदेश जाने की वे आज्ञा नहीं देंगे। इसलिए श्री लक्ष्मणभट्ट जी अब स्वधाम पधारें तो अच्छा तब एक दिन श्रीआचार्यजी ने पितृचरण श्री लक्ष्मणभट्टजी से कहा कि पिताजी श्री लक्ष्मण बालाजी हो कर अब कांकरवाड़ को चलें तो ठीक है। श्री लक्ष्मण भट्टजी बहुत प्रसन्न होकर कुछ दिनों बाद सब कुटुम्ब सहित श्री लक्ष्मण बालाजी में आये। वहाँ एक सुन्दर स्थान देखकर बिराजे। वहाँ श्री लक्ष्मण भट्टजी ने स्नान कर श्री इल्लमागारुजी सहित आचार्यजी को लेकर श्री लक्ष्मण बालाजी के दर्शन करने को पधारे। तब श्रीआचार्यजी ने श्री लक्ष्मण भट्टजी से प्रार्थना की कि आप श्री लक्ष्मण बालाजी का शृंगार करो। श्री लक्ष्मण भट्टजी ने शृंगार किया उस समय श्री लक्ष्मण बालाजी को उपासी (जंभाई) आयी श्री लक्ष्मण भट्टजी तो मुख में लीन हो गये। श्री इल्लमागारुजी ने बहुत खेद किया। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपनी मातृचरण इल्लामागारुजी का बहुत प्रकार से समाधान किया। तथा कहा कि हमारे पिता तो अक्षर ब्रह्म का स्वरूप थे। इस कारण वे अक्षर ब्रह्म को प्राप्त हुए। उसके पीछे आप पिता के वस्त्र लेकर बाहर पधारे। वेदमार्ग प्रणीत उन वस्त्रों का अग्नि संस्कारादि क्रियाकर के

बैठक चरित्र

कुछ दिन बीते। तब आपने माताजी से प्रार्थना की अब आप रामकृष्ण को लेकर विद्यानगर में मामा के घर पधारो। मैं भी कुछ दिन बाद आऊंगा। केशवपुरी को आज्ञा की तुम भी कृपाकर घर पधारो! इस प्रकार सूतक निवृत्त हुए बाद सब से विदा हुए। उसके बाद आप एक ब्रह्म छोंकर के नीचे बिराजे। (आपने) श्रीआचार्यजी ने सप्ताह का प्रारम्भ किया। वहाँ श्री लक्ष्मण बालाजी नित्य कथा सुनने को पधारते। उनको श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने नमस्कार कर आसन बिछाकर अपने पास पधया। आपने कहा कि आप श्रम करके कैसे पधारे। तब श्री लक्ष्मण बालाजी ने आज्ञा की तुम्हारे मुख से कथा सुनने की बड़ी अभिलाषा थी। वह समय आज आया है। तब श्रीआचार्यजी ने भागवत सप्ताह की। वहाँ महा अलौकिक आनंद हुआ। उस सप्ताह की समाप्ति कर श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्री लक्ष्मण बालाजी के मन्दिर में पधारे। वहाँ सब सेवा शृंगार किये। पंडा को पच्चीस रुपया सामग्री के दिये। तब श्री लक्ष्मण बालाजी से आपने पूछा आपको कौन सी सामग्री प्रिय है। श्री लक्ष्मण बालाजी ने कहा मनोहर के लड्डू करा ओ। उनकी आज्ञानुसार वही सामग्री सिद्ध करवाई। थाल में साज कर पंडा ने श्रीआचार्यजी से प्रार्थना की आप हाथ से भोग धरिये। तब श्रीआचार्यजी ने अपने श्री हस्त से भोग धरा। तब श्री लक्ष्मणबालाजी ने कहा कि आप भी भोजन को बिराजिये। ऐसा कहकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बांह पकड़कर अपने साथ भोजन को बैठाया। परस्पर भोजन किया उस समय बड़ा अनिर्वचनीय आनंद हुआ। उसके पश्चात् आचमन कर मुख वस्त्रकर बीड़ी अरोगाय आरती की। पश्चात् श्री लक्ष्मणबालाजी की आज्ञा मांग कर श्रीआचार्यजी अपनी बैठक में पधारे। पीछे वहाँ से विजय की। इस प्रकार तीन बार आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्री लक्ष्मण बालाजी पधारे। तीनों ही बार अलग–अलग चरित्र किये।

३६. श्री रंग–त्रिचनापल्ली (अप्रकट) कावेरी में बहगई

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक श्रीरंग में कावेरी नदी के किनारे छोंकर के वृक्ष के नीचे है। वहाँ आप बिराजे। तब आपने दामोदर दास को आज्ञा की कि श्री रंगजी वैकुण्ठ से पधारते हैं। श्रीरंगजी श्रीआचार्यजी से मिलने को पधारे। तब आप रंगजी को देखकर उठ खड़े हुए और प्रणाम कर आसन पर पधराये। आपने कहा कि आप परिश्रम करके यहाँ क्यों पधारे हो। मैं तो आपके लिए यहाँ आया ही था मंदिर में अभी आता ही था। तब श्री रंगजी ने कहा कि आप परिश्रमकर इतनी दूर से आए हो और हम इतनी दूर से आये इसमें क्या बड़ी बात है। आप क्यों भूतल पर पधारते। ये तो आप दैवी जीवों के उद्धारार्थ पधारे हो। श्रीनाथजी के प्राकट्य के सर्व समाचार श्री रंगजी ने आप से पूछे। किस विधि से श्रीनाथजी प्रकट हुए हैं और क्या चरित्र किया है। किस भांति से बिराज रहे हैं। आप सब विस्तार पूर्वक कहिये। तब श्रीआचार्यजी ने श्रीनाथजी के प्राकट्य की सर्व वार्ता श्री रंगजी को सुनाई। यह सुनकर श्रीरंगजी बहुत प्रसन्न हुए। इसके पश्चात् श्री रंग जी ने कहा कि अब मंदिर में पधारिये। श्रीआचार्यजी ने कहा आप पधारिये मैं भी पीछे आता हूँ। तब (आप) श्री रंगजी के मंदिर में पधारे और मुखिया आनन्दराय को आज्ञा की कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु साक्षात् पुरुषोत्तम के अवतार हैं पधार रहे हैं

इसलिए तुम भक्तिभाव की रीति से विनती करके उनको मंदिर मैं पधरा लाओ। सेवा श्रृंगार सब वे ही करेंगे। तब आनंदराम मुखिया ने जाकर श्रीआचार्यजी को साष्टांग दण्डवत् की और प्रार्थना की महाराज आप कृपाकर मंदिर में पधारिये। तब श्रीआचार्यजी मंदिर में पधारे। मुखिया ने विनती की सेवा श्रृंगार आप ही करिये। श्री ठाकुरजी की आज्ञा है। श्रीआचार्यजी ने श्रीरंगजी का श्रृंगार किया। वह श्रृंगार बड़ा ही अद्‌भुत हुआ। आनन्दराम मुखिया को महा अलौकिक दर्शन हुए। तब मुखिया ने विनती की महाराजाधिराज मेरे को भी शरण लीजिये। श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की तुम तो श्री रंगजी के कृपा पात्र हो। श्रीरंगजी ने भी कहा यह दैवी जीव है इसलिए आप इसको सेवक करिये। श्रीआचार्यजी ने उस मुखिया को नाम सुनाये। इसके बाद इनको दस रुपया सामग्री के दिये और आज्ञा की अभी शीघ्र सामग्री साजकर ले आओ। वह सामग्री सिद्धकर थाल साज कर लाया श्रीआचार्यजी ने श्री हस्त से भोग समर्पित किया। तब श्री रंगजी ने आज्ञा की आप भी अरोगिये। श्रीआचार्यजी ने कहा आप भोजन करिये। श्री रंगजी ने आज्ञा की कि मुखार विन्द रुप तो आप हो और भोजन तो मुखार बिन्द से होता है। श्री रंगजी ने आग्रह करके आपका श्री हस्तकमल पकड़कर अपने पास श्रीआचार्यजी को बैठाया। तब परस्पर भोजन किया। उस समय अनिर्वचनीय सुख हुआ। उसके पीछे अचवायकर बीड़ा अरोगाया। तब श्री आनंदराम मुखिया को श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की आरती लाओ। मुखिया आरती प्रकट कर लाया। पीछे श्री रंगजी की आरती कर आज्ञा ले श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अपनी बैठक में पधारे। पीछे आपने सप्ताह की तब महा अलौकिक आनंद हुआ। श्री रंगजी में मायावादी थे वे सब इकट्‌ठे होकर आये। चर्चा करने लगे। श्रीआचार्यजी ने सभी का सत्कार कर उनको बैठाया। पीछे चर्चा हुई दो घड़ी में श्रीआचार्यजी ने सबको निरुत्तर कर दिया। तब आपने माया मत का खंडनकर भक्ति मार्ग

का स्थापन किया। श्री रंगजी नें जय-जयकार हुआ। ऐसा माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभु के शरण आए। इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी ने श्री रंगजी से विदा होकर विजय की। तथा विष्णु कांची पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्री रंगजी की बैठक में प्रकट किया।

४०. विष्णु कांची कांचीपुरम् (तमिलनाडु)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक सुरभिनदी पर छोंकर के नीचे है वहां आप बिराजे उस समय आपने दामोदर दास को आज्ञा की कि सात पुरी है उसमें साढे तीन तो शिवजी की है और साढ़े तीन विष्णु की है। अब विष्णु की पुरी कहते हैं १. मथुरा पुरी २. अयोध्यापुरी ३. द्वारकापुरी और आधी विष्णुकांची। उसमे विष्णुकांची के स्वामी वरदराज स्वामी है। वहाँ वरदराज स्वामी के अलौकिक दर्शन हैं। दर्शन के लिए यहाँ आये हैं। किन्तु मन्दिर में जाना नहीं होगा। तब दामोदर दास ने विनती की कि आपने मंदिर में पधारने की मना की है उसका क्या कारण है। श्रीआचार्यजी ने कहा कि जयदेवजी कवि हुए हैं वे यहीं पर हुए थे। वे वरदराज स्वामी के कृपा पात्र थे। उनने २४ अष्टपदी की रचना की है। निज मंदिर की सीढ़ी भी चौबीस हैं। एक एक

सीढ़ी पर अष्टपदी लिखी है। इस कारण भगवन्नाम पर पांव कैसे धरा जाय। इसलिए पधारना नहीं होगा। तब दामोदर दास ने प्रार्थना की कि वरदराज स्वामी पधरावेंगे। यह बात श्री वरदराज स्वामीजी ने मंदिर में जान ली। आपने विचार किया कि श्रीआचार्यजी मंदिर में नहीं पधारेंगे तो मेरे को इनके श्री हस्त का स्पर्श नहीं होगा। इस कारण श्री वरदराज स्वामी श्रीआचार्यजी महाप्रभु को पधारने के लिए आप सामने पधारे। श्रीआचार्यजी से मिलकर आपने आज्ञा की कि आप निजमंदिर में क्यों नहीं पधारे। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि आपके दर्शन से तो जीव कृतार्थ हो जाता है। किन्तु भगवन्नाम के ऊपर पांव कैसे दिया जाय। तब श्री वरदराज स्वामी हाथ पकड़कर श्रीआचार्यजी को अपने मन्दिर में ले चले। मंदिर में जाकर आपने सिंहासन पर गादी तकिया पधराए वहाँ एक हस्त सिंगार नाम का मुखिया था उससे श्री वरदराज स्वामी संभाषण करते थे। इसलिए आपने उस को आज्ञा की कि अब तुम सब पंडाओं को लेकर बाहर निकल जाओ। तब पंडामुखिया सब बाहर निकल गये। पीछे दो मुहूर्त्त तक श्री वरदराज स्वामी ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से वार्त्ता की। उसके बाद श्री वरदराज स्वामी ने कहा कि अब श्रीगोवर्धन नाथजी का प्राकट्य कहिये। तब श्रीआचार्यजी ने श्री गोवर्धन नाथजी का प्राकट्य सर्वप्रकार से श्रीवरदराज स्वामी को कहा। सुनकर श्री वरदराज स्वामी बहुत प्रसन्न हुए। दो मुहूर्त्त पश्चात् हस्त सिंगार मुखिया को बुलाया। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उसको सात मुद्रा भेंट दी और कहा कि इसकी सामग्री लेकर श्री वरदराज स्वामी को अंगीकार करवाओ। तब मुखिया ने पूछा कि महाराज क्या सामग्री अंगीकार करवावें। श्रीआचार्यजी ने कहा कि जो श्रीवरदराजजी की इच्छा हो वह करो। तब श्री वरदराजजी की आज्ञा हुई कि ढोकला की सामग्री

सिद्ध करो। सामग्री सिद्ध करके धरी। भोग धरने के बाद समय होने पर हस्त सिंगार मुखिया भोग सरा ने गया तब श्री वरदराज स्वामी ने आज्ञा की तुम भोग मत सराओ। श्रीआचार्यजी आप भोग सरवाने गये तब श्री वरदराज स्वामी ने आज्ञा की कि आप यहाँ प्रसाद लो। तब श्रीआचार्यजी और श्री वरदराज स्वामी दोनों ने साथ मिलकर भोजन किया। उस समय महा अलौकिक सुख हुआ। उस समय में श्री वरदराज स्वामी का मुखिया बड़ा ही कृपा मात्र था वहाँ खड़ा था। उसने यह सुखदेखा। हस्त सिंगार मुखिया यह सुख देखकर मूर्छित हो गया। तब श्रीआचार्यजी और श्रीवरदराज स्वामी भोजन कर चुके पीछे जल पानकर बीड़ा अरोगा। इसके पश्चात् आपने हस्त सिंगार मुखिया को सावधान किया। मुखिया ने विनती की कि महाराज में बड़े सुख में था। श्री यमुनाजी तथा श्री गिरिराज के दर्शन करता था। उस सुख में से मेरे को क्यों निकाला। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि जितना अधिकार होता है उतने समय तक सुख की प्राप्ति होती है। कितने ही दिनों तक तुम श्री वरदराज स्वामी की सेवा करो। इसके पश्चात् इनकी आज्ञा हो वैसे करना। तब तुमको यह सुख प्राप्त होगा। व्रज लीला का दर्शन होगा। पीछे कालान्तर पश्चात् उसको व्रजलीला का संबंध हुआ। जैसे पुंडरीक ब्राह्मण को इसी देह से व्रजलीला का दर्शन कराया। उसको श्री विट्ठलनाथजी की आज्ञा से उसका अधिकार विशेष था और इसका अधिकार नहीं था। इस कारण जन्मान्तर करके इसका व्रजलीला का सम्बन्ध हुआ। यह व्रज लीला में प्राप्त हुआ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्री वरदराज स्वामी की आज्ञा से अपनी बैठक में पधारे। वहाँ पर आपने सात दिन तक श्री भागवत सप्ताह पारायण किया। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने विष्णु कांची की बैठक में प्रकट किया।

४१. सेतु बन्ध रामेश्वर (अप्रकट)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप विष्णु कांची से विजय कर सेतु बंध रामेश्वर पधारे। वहाँ सेतु बंध रामेश्वर में एक छोंकर के वृक्ष के नीचे आप बिराजे। वहाँ आपने कृष्णदास मेघन को आज्ञा की कि श्री रघुनाथजी आप लंका पध ारे उस समय समुद्र पर सेतु बांध उस समय यहाँ श्री रामेश्वरजी की स्थापना की। इस कारण श्रीरामेश्वरजी श्री रामचन्द्रजी का स्वरूप है। इसलिए विभीषण नित्य दर्शन को आते हैं। ऐसा कहकर आप वहाँ पर बिराजे। पीछे दूसरे दिन वहाँ श्री भागवत की सप्ताह प्रारम्भ की तब श्री रामेश्वरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभु की कथा सुनने को पधारे। श्रीआचार्यजी ने कहा आप परिश्रम कर क्यों पधारे। तब श्री रामेश्वरजी ने कहा कि आपने जीवों पर बड़ा अनुग्रह किया है। आपका दर्शन यहाँ कहा हो। इसलिए आप हमको श्रीभागवत श्रवण कराइये। यह मेरा मनोरथ है। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि सप्ताह तो होगी कृपा करके सुनिए। जहाँ तक श्री भागवत की कथा होती वहाँ तक श्रीरामेश्वरजी कथा सुनने को पधारते। श्री रामेश्वरजी श्रीआचार्यजी के निकट विराजते। कथा समाप्ति होने पर मंदिर को पधारते। वहाँ एक श्री रामेश्वरजी का कृपा पात्र भक्त था उनको श्री रामेश्वरजी साक्षात् दर्शन देते थे। उसके पश्चात् वह

खाना पीना करता था। एक दिन तीन प्रहर तक मन्दिर में वह बैठा रहा किन्तु उसको श्री रामेश्वरजी के दर्शन नहीं हुए। पीछे जब आप पधारे तब उस भक्त ने विनती की महाराज अब तक आपका दर्शन नहीं हुआ। उसका क्या कारण है। तब श्री रामेश्वरजी ने कहा श्रीआचार्यजी महाप्रभु यहाँ पधारे हैं उनकी कथा सुनने को गया था। इस कारण अभी ही आया हूँ। तब तेरे को दर्शन हुए है। इसलिए तू अब प्रातः काल आया कर नहीं तो फिर तीसरे प्रहर आना। तब तेरे को दर्शन होंगे। नहीं तो नहीं होंगे। जहाँ तक श्रीआचार्यजी महाप्रभु वहाँ पारायण करते वहाँ तक श्री रामेश्वरजी वहाँ बिराजते। पीछे श्री आचार्यजी महाप्रभु सप्ताह समाप्त कर चरणारविन्द की रजद्वारा अनेक तामसी जीवों को अंगीकार किया। पश्चात् पुरोहित को बुलाकर तीर्थ क्षेत्र में विधि पूर्वक स्नान कर श्री रामेश्वरजी की आज्ञा मांगकर वहाँ से मलयाचल पर्वत पर पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सेतु बंध श्री रामेश्वर की बैठक में प्रकट किया।

४२. मलय पर्वत–उटक मंड के पास (अनिश्चित)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक मलया चल पर्वत पर है वहाँ आप

बिराजे। वहाँ आस–पास चंदन का वन है। तामसी जीवों के उद्धारार्थ आप पधारे। वहाँ एक चंदन के वृक्ष के नीचे बिराजकर कृष्णदास से कहा कि यहाँ हेमगुपाल ठाकुरजी बिराजते हैं। जब हेम गुपालजी ने जाना कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं। तब वे मिलने के लिए आये। श्री हेमगुपालजी और श्री आचार्यजी परस्पर मिले तब अनिर्वचनीय सुख हुआ। पीछे हेम गुपालजी ने कहा तुम ऐसी विकट जगह पधारे हो यहाँ तामसीजीव बहुत हैं। वे आपस में बहुत लड़ते हैं। इस कारण आप के लिए फलाहार मैं लाऊँगा। आप वैष्णव को मत भेजना। क्योंकि यहाँ के तामसी जीव बहुत जहरीले (विषेले) हैं। तब श्रीआचार्यजी ने विनती की कि आप प्रसन्न रहिए। आपके प्रताप से मेरे सेवकों का कोई नाम नहीं लेगा। हम यहाँ महिने भर रहेंगे। ऐसे श्री मुखसे वचनसुनकर श्री हेमगुपालजी बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि यहाँ आसपास चंदन का वन है। तब भी मेरी गर्मी नहीं मिटती है। परन्तु आपके दर्शन मात्र से मेरे रोम रोम शीतल हो गये हैं। आपका पधारना यहाँ कहा से हुआ है। आप तो केवल दैवी जीवों के लिए पधारे हो और उनके लिये ही आपका भूतल पर पधारना (प्राकट्य) हुआ है। माया मत का खंडन और भक्ति मार्ग की स्थापनार्थ है। पृथ्वी परिक्रमा का मिष कर सकल तीर्थ सनाथ करने हैं। फिर आपने पूछा कि श्रीगोवर्धननाथजी का प्राकट्य सब लीला सहित श्री गिरिराज में हुआ है यह समाचार विधि पूर्वक हमको सुनाइये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सर्व समाचार विस्तारपूर्वक श्री हेमगुपालजी को सुनाये। तब श्री हेमगुपालजी बहुत प्रसन्न हुए। तथा कहाकि आप मन्दिर में पधारिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने विनती की कि आप पधारो। मैं अरगजा सिद्ध करवा कर आपको

आकर समर्पित करूंगा। श्री हेमगुपालजी अपने मंदिर में पधारे। पीछे श्रीआचार्यजी ने कृष्ण दास मेघन को आज्ञा की कि तुम अरगजा सिद्ध करो। दामोदर दास को आज्ञा की तुम केला और नारियल संमारो। सामग्री और अरगजा। सिद्ध होने पर श्रीआचार्यजी सब सेवकों सहित श्री हेमगुपालजी के मंदिर में पधारे।

श्री हेमगुपालजी को अरगजा समर्पित किया और सामग्री अरोगाई। पीछे आज्ञा मांगकर श्रीआचार्यजी अपनी बैठक में पधारे। दूसरे दिन श्रीआचार्यजी ने श्रीभागवत का पारायण आरम्भ किया। तब श्री हेम गुपालजी ठाकुरजी कथा सुनने को पधारे। श्रीआचार्यजी ने आपको आसन पर पधराया तब श्री हेम गुपालजी ने आज्ञा की कि आपके मुख से कथा सुनने की बहुत इच्छा थी। वह समय मिल गया है। जहाँ तक कथा होती श्रीहिमगुपालजी बिराते। पीछे मंदिर को पधारते। जिस दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कथा की समाप्ति की उस दिन इन्द्र श्रीहिमगुपालजी के दर्शन को आया। उस दिन उसको दर्शन नहीं हुए। तब इन्द्र वहाँ ही बैठा रहा। जब श्री हिम गुपालजी ठाकुरजी कथा की समाप्ति पीछे मन्दिर में पधारे। तब इन्द्र को दर्शन हुए। इन्द्र ने साष्टांग दण्डवत् करके विनयपूर्वक पूछा कि महाराजाधिराज अब तक आप कहाँ पधारे थे। आपका दर्शन नहीं हुआ। इसका क्या कारण है। तब श्री हिमगुपालजी ने आज्ञा की कि यहाँ श्री वल्लभाचार्यजी पधारे हैं। उनके मुख से कथा सुनने की बहुत इच्छा थी वह समय आ गया। उनने भागवत की सप्ताह की है सो कथा सुनने को गया। अभी ही आया हूँ। तब इन्द्र ने साष्टांग दंडवत् करके प्रार्थना की और पूछा श्रीआचार्यजी महाप्रभु का स्वरूप कैसा है। आप कृपाकर कहिए। श्री हिम गुपालजी ठाकुर जी ने कहा कि साक्षात् श्री पूर्ण पुरुषोत्तम

के मुखार विन्द रूप हैं। तेरा यज्ञ मिटाकर श्री गिरिराज का प्रत्यक्ष रूप धरकर सहस्र भुजा धारण करके यज्ञ भोजन किया और गिरिराज उठाकर गोप, गो तथा व्रज भक्तोंका रक्षण किया। उस समय तू शरण जाकर पड़ा। तेरी पीठ को थपथपाकर तेरे को स्वर्ग भेजा।

वही साक्षात् भावात्मक पुरुषोत्तम दैवी जीवों के उद्धारार्थ भूतल पर प्रकट हुए हैं। इनने मायामत का खंडन कर भक्तिमार्ग का स्थापन किया है। इस कारण अपना नाम श्री वल्लभाचार्य रखा है। चंपारण्य में आपका प्राकट्य हुआ है। तब तुम और ब्रह्मादि सब दर्शन को गये थे। उनको ही तू भूल गया है। वे ही श्री वल्लभाचार्यजी पधारे हैं। ऐसे श्री मुख के वचन सुनकर इन्द्र ने दण्डवत् की और आज्ञा मांगी कि मैं महाराज वहाँ श्रीआचार्यजी के दर्शन को जाऊँ। तब श्री ठाकुरजी ने कहा सुखपूर्वक जाओ। तब इन्द्र पावों से चलकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु जहाँ बिराजे थे वहाँ आकर साष्टांग दण्डवत् की और गदगद् कंठ होकर प्रार्थना की कि महाराज आपके दर्शन कहाँ। ये तो श्री हिमगुपालजी की कृपा से दर्शन हुए। श्रीआचार्यजी ने इन्द्र का समाधान कर स्वर्ग को भेजा। पीछे कृष्णदास मेघन को आपने आज्ञा की कि इन्द्र दर्शन को आया था। इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सप्ताह की समाप्ति कर चरणारविन्द की रज द्वारा तामसी जीवों का उद्धार किया। पीछे कुछ दिन और बिराजकर श्री हिमगुपालजी की आज्ञा लेकर आगे दक्षिण को पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने मलयाचल की बैठक में प्रकट किया।

४३. लोहागढ़ (हरी) फाल के सामने पणजी, गोवा

मलाबार देश में लोहगढ़ जिसको अब कोंकण गोवा कहते हैं वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु अच्छी रमणीय स्थान देखकर बिराजे। वहाँ छोंकर का वृक्ष है। उसके नीचे एक शिला है। वहाँ हाथी के पांव का चिन्ह है और आसपास बहुत गहनवन है। वहाँ हजारों तामसी जीव रहते थे। वहाँ आपने दामोदरदास से कहा यह स्थल बहुत रमणीय है। इसलिये यहाँ सप्ताह करके अनेक तामसी जीवों को तथा दैवी जीवों को अंगीकार करेंगे। तब कृष्णदास मेघन ने प्रार्थना की कि महाराजाधिराज यहाँ कोई जल का स्थल नहीं दिखता है। आपने कहा कि इसपर्वत के ऊपर झरना बहुत झरते हैं। मेरे समीप एक पर्वत की टेकरी है उसके कुछ दूर ही एक बड़ा तालाब है और शिलापर हाथी के पांव हैं उसके पास एक बड़ी शिला है उस शिला के नीचे एक बड़ी गुफा है। उसमें तीन कुण्ड हैं एक तो अप्सरा कुंड है वहाँ नित्य अप्सरा स्नान करने को आती है। एक गंधर्व कुण्ड है वहाँ गन्धर्व स्नान करने को आते हैं। एक देवता कुण्ड है। इन्द्र सवेरे देवताओं सहित पूर्णमासी के दिन स्नान करने को आते है। ऐसा कहकर आपने वहाँ श्री भागवत की पारायण प्रारम्भ की उसकी समाप्ति सात दिन में की तब महा अलौकिक

आनन्द हुआ। इसके बाद श्रीआचार्यजी ने अपने चरणारविन्द की सुगन्ध फैलाई। उस सुगन्ध लेने मात्र से ही हजारों तामसी जीवों की पशुयोनि छूट गई। गोपालदासजी ने श्री वल्लभाख्यान ने गाया है–''ते तामसनां अहर्या परताप पदरज गंध'' यह महाअलौकिक माहात्म्य देखकर सब भगवदियों ने दण्डवत् करके प्रार्थना की कि महाराज यह सामर्थ्य आपकी है। जो एक क्षण में हजारों जीवों का उद्धार किया। उसके पीछे कुछ दिनों बाद आपने वहाँ से विजय (प्रस्थान) किया। आगे पधारे। यह चरित्र अपने लोहगढ़ की बैठक में दिखाया।

४४. ताम्रपर्णी नदी की बैठक–तिरुनेल्वेली रेलवे स्टेशन के पास (भावनात्मक)
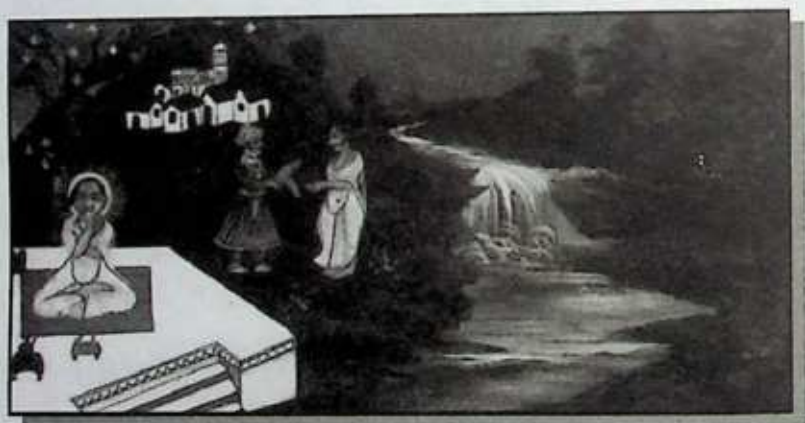
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक ताम्रपर्णी नदी के तीर पर छोंकर के नीचे है। वहाँ पर श्री आचार्यजी ने श्री भागवत का पारायण किया। वहाँ से तीन कोस पर एक बड़ा शहर है। उस शहर का राजा बहुत बीमार था। तब उस राजा ने पंडितों से तथा ज्योतिषियों से पूछा कि मेरा शरीर अच्छा हो ऐसा उपाय बताओ। तब ज्योतिषियों ने कहा कि राजा जी तुम्हारे तो सब ग्रह बिगड़े हैं। इसलिए विचार कर कहेंगे ऐसा कहकर सभी पंडित अपने घर गये। एक पंडित वहीं बैठा रहा। उसने कहा राजाजी मैं कहता हूँ तब बचोगे। तब

राजा ने कहा तुम कहो। वही मैं करूंगा। उस पंडित ने कहा कि एक सोने का पुतला अपने बराबरी का बनवाओ तथा उसको तुम्हारे आभूषण एवं वस्त्र आदि सब पहराओ। फिर उस पुतला का दान ब्राह्मण को करो। जो ब्राह्मण दान लेगा वह मर जायेगा और तुम बच जाओगे। यह सुनकर उसी समय उस राजा ने दो मन सोना मंगवाकर सुनार को एक पुतला बनवाया। इसको अपना गहना, वस्त्र सब पहनाये। तब अपने पुरोहित समेत सब पंडितों को बुलाकर कहा कि पुतला का दान लो। जो ब्राह्मण दान लेने को जावे उसके संमुख काल ज्वर आता। तब सभी पंडितों ने कहा कि यह हमको दान नहीं चाहिए। राजा ने अपने पुरोहित को बुलाकर कहा कि यह दान तुम्हारे बिना कौन ले सकता है। तब वह पुरोहित दान लेने को खड़ा हुआ सो वह गिर पड़ा।

पुरोहित ने कहा मेरे को यह दान नहीं चाहिए। इसके बाद जिस पंडित ने यह दान बताया था उसी को राजाने बुलवाया और कहा कि तुम्ही यह दान लो। तब उस पंडित ने उस पुतले के सामने देखा वह महा विकराल काल स्वरूप में दिखाई पड़ा। वह पंडित थर थर कांपने लगा। राजा से कहा तुमको मारना हो तो वैसे ही मार डालो किन्तु हमको यह दान नहीं चाहिए। राजा उसास लेकर चुप रहा। थोड़ी देर बाद बोला अब किसी में ब्रह्म तेज नहीं रहा। मेरी मृत्यु निश्चय होगी। यह निश्चय कर राजा ताम्रपर्णी नदी के किनारे गया। वहाँ कोटि कंदर्प लावण्य श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराज रहे थे। उससमय राजा ने कहा कि–"निर्विप्र मुर्वी तलम्" इस काल में ब्राह्मणों में ब्रह्मतेज नहीं रहा है। यह सुनते ही तत्काल श्रीआचार्यजी ने उस राजा से कहा अरे राजा यह क्या बात करते हो। क्या जगत् नास्तिक हो गया है। तब उस राजा ने श्रीआचार्यजी से प्रार्थना की कि महाराज आप तो साक्षात् ईश्वर दिखते हो। राजा का दान करना और ब्राह्मण का दान को लेना यह धर्म है।

मैं दान देता हूँ किन्तु कोई नहीं लेता है। श्रीआचार्यजी ने राजा से कहा कि इस समय तो तुम अपने घर जाओ। सवेरे हम वहाँ आकर तुम्हारा दान लेंगे। तब राजा प्रसन्न होकर अपने घर गया। पीछे प्रातः काल श्री महाप्रभुजी आप सब सेवकों के साथ वहाँ पधारे। तब वहाँ राजा ने खबर (सूचना) करने वाले तैयार रखे थे। उनने खबर दी। राजा ने श्रीआचार्यजी को उस पुरोहित के निकट पधराये और संकल्प किया। उस समय पुतला ने श्रीआचार्यजी के संमुख एक अंगुली बताई। तब आपने हस कर तीन अंगुलिया दिखाई। यह देखकर पुतला ने अपना सिर नीचे कर लिया। इसके बाद श्रीआचार्यजी ने सुनार को बुलाकर उस पुतले के टुकडे करवाये। उस दृश्य को देखने के लिए हजारों ब्राह्मण आये थे। उनको सब सुवर्ण के टुकडे बांट दिये। इसके बाद राजा ने श्रीआचार्यजी से विनती की महाराज उस पुतले ने एक अंगुली ऊंची की थी और आपने उसके सामने तीन अंगुली ऊंची की इसका क्या कारण है। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि राजा तुम बड़े साहसी हो तुमने अपने प्राण बचाने के लिए ब्रह्म हत्या से नहीं डरे। यदि ब्राह्मण मर जाता तो तुमको ब्रह्म हत्या लग जाती। तुम महापातकी होते। पुनः आपने कहा कि पुतलाने जो एक अंगुली बताई उससे उसने पूछा कि तुम एक काल गायत्री साधते हो। तब हमने तीन बतायी। हमने त्रिकाल गायत्री बताई। तब उसने शिर नीचा कर लिया। ऐसा कठिन दान कभी भी नहीं करना। यदि और कोई ऐसा दान लेता तो मर जाता। हमने तो न्यारे न्यारे टूक करवाकर बांटे हैं। ब्राह्मण सब थोड़ा थोड़ा भुगत लेंगे। परन्तु कोई मरेगा नहीं। तब राजा ने दंडवत् करके प्रार्थना की कि कृपानाथ मेरे को शरण लीजिये। राजा को आपने शरण लिया यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभु के शरण आये

इसमे पंडितों को बताया कि प्रतिग्रह लेना अत्यन्त कठिन है। उसके बाद राजा ने बहुत भेंट की। पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपनी बैठक में पधारे। वहाँ पर आपने तीन दिन तक गायत्री जाप किया। सब सेवकोंने विनती की कि महाराजा धिराज आप तो ईश्वर हो इस कारण आपने राजा और ब्राह्मण दोनों को बचाये। तब आपने कहा कि हमारे देखा देखी ऐसा कोई दान लेगा तो निश्चय ही उसकी मृत्यु होगी। उसके पीछे वहाँ के पंडित सभी श्रीआचार्यजी के सेवक हुए। यह चरित्र ताम्रपर्णी नदी पर श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने दिखाया।

४५. कृष्णा नदी की बैठक–(अनिश्चित)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक कृष्णा नदी के तटपर पीपल के वृक्ष के नीचे है। वहाँ आप बिराजे तब श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास को आज्ञा की कि यहाँ तैलंग ब्राह्मण माया वादी बहुत हैं। उनसे वाद विवाद कर मायावाद का खंडन कर भक्ति मार्ग का स्थापन करेंगे। पहले यहाँ सप्ताह करेंगे। यह सुनकर मायावादी सब अपने आप यहाँ चले आयेंगे। इसलिए यहाँ सहज में ही चर्चा हो जायगी। ऐसी इच्छा आपने व्यक्त की। श्रीआचार्यजी ने वहाँ भागवत का पारायण आरम्भ किया। यह समाचार मायावादी पंडितो ने सुना

बैठक चरित्र

कि श्री वल्लभाचार्यजी दिग्विजय करते हुए यहाँ पधारे हैं। कृष्णा नदी के तीर पर बिराजते हैं। आसपास के सब पंडितों को बुलाया विचार किया कि आपका तेज बड़ा भारी सुनते हैं। उनके सामने किसी से बोला नहीं जाता है। इसलिए सब मायावादी पंडितों ने विचार कर एक मत होकर चले और कृष्णा नदी पर आये। वहाँ चारों सम्प्रदाय के वैष्णव भी सब आपके दर्शन को आये। उन सब ने प्रार्थना की महाराजा धिराज ये मायावादी हमें बड़ा दुःख देते हैं। यहाँ मायावादी का बड़ा जोर है। आप विष्णु स्वामी संप्रदाय के आचार्य हो इसलिए आप हमारी रक्षा करके मायामत का खंडन करिये। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि इसके लिए ही यहाँ आये हैं। आज सप्ताह की समाप्ति हो चुकी है। यह मायावादी भी जानते हैं। पीछे थोड़ी देर में मायावादी पंडित भी सब आ पहुंचे। उन सबको श्रीआचार्यजी ने आदर पूर्वक बैठाया। पीछे चर्चा प्रारंभ हुई। एक प्रहर में श्रीआचार्यजी ने सेंकड़ों पंडितों को निरुत्तर कर दिया। तब माया मत का खंडन करके भक्तिमार्ग का स्थापन किया। चारों संप्रदाय के वैष्णव बहुत प्रसन्न हुए। पीछे उनने प्रार्थना की महाराजा धिराज कृपा करके हमको शरण लीजिये। वहाँ श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की कि रुद्राक्ष उतारकर कृष्णानदी में स्नान कर आओ। मायावादी रुद्राक्ष उतारकर कृष्णा नदी में स्नान करके आये। आपने कृपा कर सभी को नाम सुनाया और तुलसी की माला पहनाई। उस समय कृष्णा नदी के तीर पर जय जयकार हुआ। तब सब पंडित दंडवत् करके अपने अपने घर को गये। इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कृष्णा नदी तीर से विजय किया। श्रीकृष्णानदी के तीर की बैठक पर यह चरित्र किया

४६. श्री पंपा सरोवर (अनिश्चित) हासपेट

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक पंपा सरोवर पर वट वृक्ष के नीचे है। वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजे। आप श्री हस्त से पाक करते थे। तब कृष्णदास मेघन को आज्ञा की कि ढाक के पत्ते लाओ। कृष्णदास मेघन पत्ते लेने को गये तो बहुत दूर निकल गये। रास्ते में एक भयंकर पक्षी पड़ा हुआ था उसको कृष्णदास ने देखा। तब मन में विचार की यह पक्षी कोई कालान्तर का दीखता है। उसके पास ही ढाक का वृक्ष है वहाँ जाकर ढाक के पत्ते तो ले आऊं। ऐसा विचार कर कृष्णदास वहाँ गये। तब वह पक्षी बोला कि मैं रामावतार से बैठा हूँ और दुःख पा रहा हूँ। इसलिए तुम श्रीमहाप्रभुजी से प्रार्थना करो तब मेरा उद्धार होगा। यह सुनकर कृष्णदास ने कहा कि मैं विनती करूंगा। पीछे इच्छा आपकी। इसके बाद कृष्ण दासजी पत्ता लेकर गये उनने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से प्रार्थना की। महाराज एक पक्षी रामावतार का बैठा है। उसने विनती की है कि मेरा उद्धार करो। मैं बहुत दुःखी हो रहा हूँ। श्रीआचार्यजी महाप्रभु तो परम दयालु हैं। आपने आज्ञा की कि चरणोदक का जल लेकर उसके ऊपर छिड़क दो। तब कृष्णदास ने चरणोदक का ज़ल लेकर वहाँ जाकर उसके ऊपर छिड़का। उसी समय उसकी पक्षीयोनि छूट

गई और दैवी स्वरूप हो गया। उसी समय वैकुंठ से विमान आया उस विमान में बैठकर वह पक्षी वैकुंठ में गया। तब आपने कहा कि इसका उद्धार तेरे द्वारा हुआ है। इसके लिए ही तुझ को पत्ते लेने के लिए भेजा था। श्रीआचार्यजी ने फिर वहाँ पर सप्ताह की। तब वहाँ महाअलौकिक आनन्द हुआ। इसके पश्चात् आपने कृपा कटाक्ष द्वारा तामसी जीवों का उद्धार किया। पीछे एक दिन बिराजकर पंपा सरोवर से विजय किया। यह चरित्र श्री महाप्रभु जी ने पंपासरोवर की बैठक पर प्रकट किया।

४७. पद्मनाभ–पौढानाथ
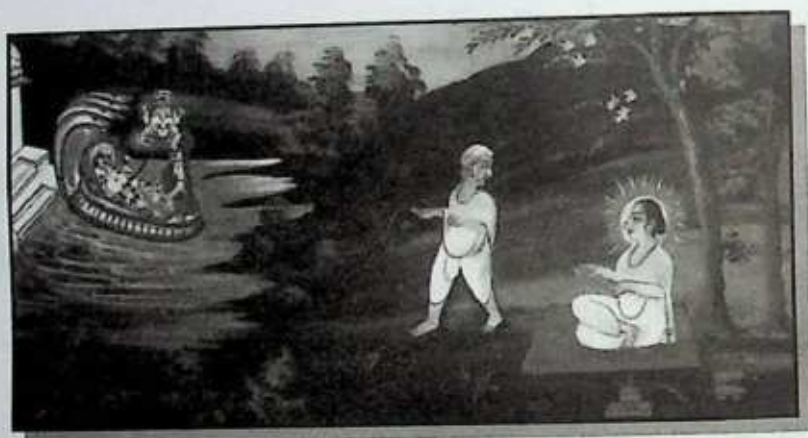
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक श्री पद्मनाभ जी में है। वहाँ एक रमणी स्थल देखकर छोंकर के नीचे आप बिराजे। तब दामोदर को आज्ञा की कि पद्मनाभजी के नाभी कमल में से ब्रह्म उत्पन्न हुए है ही पोढ़ानाथ का स्वरूप यहां है। शेषशायी शेष की शैय्या पर पोढ़े हैं यह कहकर आप बिराजे। इतने में पद्मनाभजी पधारे। तब आचार्यजी खड़े हो गये एवं प्रणाम किया। "श्री पद्मनाभाय नमः" पीछे पद्मनाभजी को आसन पधराया। आप भी आसन पर बिराजे। श्रीआचार्यजी ने विनती की कि आप परिश्रम करके यहाँ तक क्यों पधारे। मैं तो आपके दर्शन के लिए आया हूँ। मन्दिर में दर्शन करने को आता

ही था। तब पद्मनाभजी ने कहा आप दक्षिण से यहाँ तक पधारे हैं मैं तो यहाँ तक ही आया हूँ इस में क्या बड़ी बात हैं आप जिस पर कृपा कटाक्ष करते हो उसके मनोरथ पूर्ण होते हैं। पीछे श्रीआचार्यजी ने कहा कि मैं सवेरे मन्दिर में आऊंगा। तब पद्मनाभजी मंदिर में पधारे। इसके बाद श्रीआचार्यजी कथा कहकर अपनी बैठक में पोढ़े। सवेरे उठकर स्नान कर नित्य नियम से निवृत्त हुए। श्रीपद्मनाभजी का मुखिया आनन्दराम बड़ा कृपा पात्र था। उससे श्री पद्मनाभजी भाषण करते थे। उस मुखिया से आपने कहा श्रीआचार्यजी यहाँ पधारे हैं। उनको भक्तिमार्ग की रीति से विनय कर मन्दिर में पधरा लाओ। तब मुखिया ने आकर श्रीआचार्यजी को दण्डवत् करके प्रार्थना की आप मन्दिर में पधारिये। श्रीआचार्यजी मंदिर में पधारे। मुखिया ने विनती की महाराज सेवा शृंगार अब आप ही कीजिये तब आपने श्रीपद्मनाभजी का शृंगार किया। श्री पद्मनाभजी का अद्भुत दर्शन हुआ। पीछे श्रीआचार्यजी ने दस रुपैया सामग्री के दिये इसका जल्दी थाल सजाकर लाओ। तब मुखिया थाल सजाकर लाया। तब श्रीमहाप्रभुजी ने भोग समर्पित किया। श्री पद्मनाभजी ने आज्ञा की आप प्रसाद लेओ। तब आपने परस्पर भोजन किया। उस समय अनिर्वचनीय सुख हुआ। अलौकिक दर्शन आनन्दराम मुखिया को हुआ। वह मूर्छित हो गया। उस समय उसको व्रजलीला के दर्शनहुए। श्री गिरिराजजी, श्री यमुनाजी तथा श्रीवृन्दावन के दर्शन हुए। वहाँ श्रीआचार्यजी ने भोजनकर आचमनकर बीड़ा अरोगा। उसके बाद सिंघासन पर बिराजे। आपने पद्म नाभजी को श्री गोवर्धन नाथजी के प्राकट्य के समाचार कहे। श्रीआचार्यजी ने मुखिया को सावधान किया तब उस मुखिया ने कहा महाराज आपकी कृपा से महा अलौकिक दर्शन हुआ। अब कृपा करके मेरे को शरण लीजिये। श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की कि तुम तो श्रीपद्मनाभजी के कृपापात्र हो।

श्रीपद्मनाभजी की सेवा से तुमको सुख प्राप्ति होगी। श्रीआचार्यजी के ऐसे वचन सुनकर मुखिया अपने मन में बहुत प्रसन्न हुआ। तब श्रीपद्मनाभजी ने श्रीआचार्यजी को आज्ञा की यह जीव दैवी है। आप इसको नाम सुनाओ। श्रीआचार्यजी ने उस मुखिया को नाम सुनाए। पीछे मुखिया को आज्ञा की आरती लाओ। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुने श्रीपद्मनाभजी की आरती की। पीछे श्रीठाकुरजी की आज्ञा लेकर अपनी बैठक में पधारे। श्रीआचार्यजी ने वहाँ सप्ताह की। श्रीपद्मनाभजी नित्य कथा सुनने को पधारते थे। इसके बाद सप्ताह की समाप्ति कर तामसी जीवों को अंगीकार किया। पीछे कुछ दिन बिराजकर श्रीपद्मनाभजी की आज्ञा लेकर कर वहाँ से आगे पधारे। यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने पद्मनाभ जी की बैठक में प्रकट किया।

४८. श्री जनार्दन जी की बैठक–पो. बरकला (केरल राज्य)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक जनार्दनजी में कुण्ड के पास है। वहाँ आप एक छोंकर के नीचे बिराजे। दूसरे दिन आप जनार्दनजी के दर्शन के लिए पधारे। तब सब सेवको सहित आपने दर्शन किये। श्री जनार्दनजी ने आज्ञा की आप भीतर पधारिये। तब श्रीआचार्यजी भीतर पधारे। वहाँ जनार्दनजी

का कृपापात्र एक पंडा था। उस पंडा को आपने आज्ञा की कि वस्त्र आमूषण सब श्री महाप्रभुजी को सौंपो। शृंगार श्री महाप्रभुजी करेंगे। तुम जाकर रसोई सिद्ध करो। तब वहा पंडा रसोई, बालभोग में गया श्री आचार्य जी ने शृंगार किया। वह शृंगार बड़ा अद्भुत हुआ। श्रीजनार्दनजी ने कहा कि शृंगार का मिष कर आपके श्रीहस्त का स्पर्श हुआ। नहीं तो आपके श्री हस्त का स्पर्श कैसे होता। पंडाने विनती की महाराजाधिराज सामग्री सिद्ध हो गयी है। तब श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की थाल सजाकर लाओ। पंडा थाल साजकर लाया। श्री महाप्रभुजी ने भोग समर्पित किया। श्री जनार्दनजी ने आज्ञा की कि मुखारविन्द रूप तो आप हैं इसलिए आप बिना भोजन कैसे करें। आप भोजन को बिराजो। तब श्रीआचार्यजी ने विनती की ऐसे कैसे बने। श्री जनार्दन जी ने बहुत आग्रह करके कहा। श्रीआचार्यजी ने मन में विचार किया कि भगवद् आज्ञा सर्वोपरि है। अतः उल्लंघन नहीं करना चाहिए। तब परस्पर भोजन किया। उस समय अनिर्वचनीय सुख हुआ। उस समय का दर्शन पंडा को हुआ। पंडा को तो मूर्छा आ गयी। पीछे श्रीआचार्यजीने अचवाईकर परस्पर बीड़ा अरोगा। तब श्री जनार्दनजी ने आज्ञा की कि श्रीगोवर्धननाथजी के प्राकट्य की सब वार्ता कहिए। मेरे को सुनने की बहुत अभिलाषा है। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्रीजी के प्राकट्यकी सब वार्त्ता कह सुनायी। श्रीजनार्दनजी की आरती कर आज्ञा लेकर अपनी बैठक में पधारे। वहाँ सप्ताह का आरम्भ किया। श्री जनार्दनजी कथा सुनने को पधारे। तब श्रीजनार्दनजी ने कहा मेरेको आपके श्री मुख से कथा सुनने की बड़ी अभिलाषा थी वह समय आज मिला। श्रीआचार्यजी श्री ठाकुरजी के वचन सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। पीछे आपने सप्ताह की समाप्ति की वहाँ महा अलौकिक आनंद हुआ।

श्रीआचार्यजी ने अपने चरणारविन्द की रज से अनेक तामसी जीवों का उद्धार किया। वहाँ सहज में मायामत का खंडन कर भक्तिमार्ग का स्थापन किया। श्रीजनार्दनजी में जय जयकार हुआ। यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव शरण आये। इसके बाद आप श्री जनार्दनजी से आज्ञा लेकर आगे पधारे। श्रीजनार्दनजी की बैठक का चरित्र समाप्त।

४६. श्री विद्यानगर की बैठक (अप्रकट)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक विद्यानगर में विद्या कुंड के ऊपर है। वहाँ प्रथम आपने इस रीति से माया मत का खण्डन किया है। एक समय में श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने विचार किया कि दक्षिण में कृष्णदेव राजा महापंडित है। उसके यहाँ चारों संप्रदाय के आचार्यों से मायावादी झगड़ा करते हैं। वहां मायावादी प्रबल हो रहे हैं। ऐसा विचार कर आप वहाँ पधारे। बीच में दामोदर दास का गांव था। उसमें उनके घर के नीचे होकर जाने का मार्ग था। वे दामोदर दास पूर्व के बिछुड़े हुए थे। गौरव में बैठे बैठे श्रीआचार्यजी के दर्शन का विरह कर रहे थे। उनके पिता भगवद् चरणारविन्द को प्राप्त हो गये थे। उन दामोदर दास के तीन बड़े भाई थे। उनने विचार किया कि द्रव्य क्लेश का मूल हैं। इसलिए इसको बांट लें तो भाइयों के हित में रहेगा। ऐसा विचार

कर अपने द्रव्य के चार भाग किये। तब दामोदर दास से कहा कि तुम अपना भाग लो। दामोदर दास ने कहा तुम को अच्छा लगे वह करो। वे तो यही विचारते थे कि कब श्री महाप्रभु पधारें और कब मेरे को दर्शन दें। उसी समय श्रीआचार्यजी आप राजमार्ग से दामोदर दास के गौरव के नीचे से होकर पधारे तब दामोदर दास को श्रीआचार्यजी का दर्शन कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप में हुआ। यह देखकर दामोदर दास गोरव से नीचे उतरकर दौड़कर श्रीआचार्यजी को साष्टांग दण्डवत् की। तब आपने श्रीमुख से कहा कि दमला तू आया। पीछे आप शहर के बाहर पधारे। दामोदर दास भी आपके चरणार विन्द के पीछे पीछे चले। वहाँ एक सुन्दर चबूतरा था उसके ऊपर जाकर आप बिराजे। दामोदर दास दण्डवत् कर सामने बिराजे। प्रार्थना की कि महाराज अब शीघ्र मेरे को अपना करो। तब श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास को नाम सुनाए। पीछे दामोदर दास को साथ लेकर विद्यानगर पधारे। वहाँ प्रथम (आप) श्रीआचार्यजी अपने मामा के घर पधारे। तब मामा ने बड़े हर्ष से पधराये और कहा कि इस राजा के हम दानाध्यक्ष है। यहां इस समय संप्रति। बहुत मत वाले मिले है। तुम भी बहुत पढ़े लिखे हो इसलिए तुम्हारा मिलाप राजा से कराऊँगा। तब आप मुस्कराकर चुप रहे। पीछे रात्रि को मामा ने विनती की उठो भोजन करो। श्रीआचार्यजी ने कहा हम तो स्वयं पाकी हैं। हमारे हाथ से बनाकर लेते हैं। यह बात सुनकर मामा को बहुत बुरा लगा। मामा ने कहा तुम्हारे से बड़े बड़े भोजन लेते हैं। तुम ऐसे बढ़के बोल रहे हो। श्रीआचार्यजी तो साक्षात् ईश्वर हैं इस कारण सब सहन किया और कुछ भी उत्तर नहीं दिया। उसी समय मामा ने राजद्वार में जाकर राजा से कहा कि कल कोई नया ब्राह्मण आ नहीं पावे और नए ब्राह्मण से चर्चा न हो क्योंकि बहुत दिनों से मायावादी और वैष्णवों का झगड़ा हो रहा है। बारह वर्ष से सरकार खर्च

वहन कर रही हैं मायावादी अति प्रबल हैं इस लिए अब वैष्णव संप्रदाय का खंडन हो गया है और माया मत का तिलक होगा। राजा ने खवास से कहा कि कल कोई नया ब्राह्मण को मत आने देना।

दरवान से कह दो कल कोई नया ब्राह्मण न आ पाये। मामा सब व्यवस्था कर अपने घर आया। तब इल्लमाजी ने आपसे बहुत कहा सब तैयारी करादूं तुम अपने श्रीहस्त से रसोईकर भोजन करो। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि अब तो सवेरे बात करेंगे इससमय तो कुछनहीं खायेंगे। इसके बाद आप तो पोढ़ गये। अर्धरात्रि के समय श्री गोवर्धननाथजी वहाँ पधारे श्रीआचार्यजी को जगाकर के कहा कि तुम ऐसे गर्व के वचन सुनकर इसके घर में क्यों रहे। मैं तो तुम्हारे पीछे पीछे फिरता हूं। ऐसे करोड़ों राजा आपके चरणारविन्द की अभिलाषा करते हैं। ऐसा कौन है जो आपको राजा से आपको मिलायेगा। इसलिए आप विद्याकुंड पर पधारिये। ऐसा कहकर श्रीगोवर्धननाथजी तो पधारे। उसी समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु उठकर कृष्णदास और दामोदर दास को साथ लेकर आप विद्याकुंड ऊपर पधारे। देह कृत्य कर स्नान कर नित्य नियम किया। पीछे आपने प्रातः काल अपने कमण्डलु को आज्ञा की कि तुम राजा कृष्ण देव की सभा में खबर करो। तब कमंडलु उसी समय अन्तरिक्ष से गया। तब राजा सभी सभासहित उठकर खड़ा हो गया। कमंडलु को साष्टांग दण्ड वत की। कमंडलु के तेज को देखकर राजा ने विचार किया कि यह तो साक्षात् ईश्वर का कमंडलु है। पीछे राजा ने उस कमंडलु से विनय की कि तुम अपने स्वामी को शीघ्र पधराकर लाओ। तब कमंडलु ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु के पास आकर कहा कि महाराज आप पधारिये। तब श्रीआचार्यजी सब सेवकों को साथ लेकर राजा कृष्ण देव की सभा में पधारे। राजा कृष्ण देव ने सौंमण सुवर्ण का सिंघासन करवाके रखा था। उस राजा के मन में यह

अभिलाषा थी कि जो मायामत का खंडन कर ब्रह्मवाद का स्थापन करेगा उसको इस सिंघासन पर पधराकर कनकाभिषेक करुंगा। इतने में श्रीआचार्यजी आप स्वयं दरवाजे के पास पधारे। करोड़ो सूर्य के तेज को देखकर पोरिया दौड़कर उनने राजा से जाकर कहा कि साक्षात् ईश्वर पधारे हैं। यह सुनकर राजा उठकर दौड़ा और श्रीआचार्यजी महाप्रभु का तेज देखकर साष्टांग दण्डवत की एवं विनती की कि महाराजाधिराज कृपाकरके पधारिये मायामत का खण्डन कीजिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु (आप) गजगति की चालसे शीघ्र पधारे। उस समय सारी सभा उठकर खड़ी हो गयी। तब राजा ने बिना ही वाद किये प्रार्थना की महाराज कृपा करके सिंघासन पर बिराजिये। श्रीआचार्यजी ने कहा बहुत अच्छा पीछे आप सिंहासन पर बिराजे और कहा राजा यह क्या झगड़ा है। तब राजा ने विनय की महाराज वैष्णवों की और मायावादियों की चर्चा हो रही है। श्रीआचार्यजी ने कहा कि वैष्णव धर्म तो हमारा है। जिसको चर्चा करनी हो वह हमारे पास आकर बैठो। तब राजा ने मायावादियो से कहा अब तुम सब बैठकर चर्चा करो। मायावादियों ने प्रश्न किये। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने एक उत्तर में सब मायावादियों को निरुत्तर कर दिये। तब सब पंडितो ने हाथ जोड़कर कहा महाराजा धिराज आप तो साक्षात् ईश्वर हो! आपका दर्शन हमको आज हुआ है। इस प्रकार आपने विद्या नगर में माया मत का खंडन कर ब्रह्मवाद का स्थापन किया। तब वहाँ जंय जयकार हुआ। इस कारण राजा ने बहुत सेवक कराये। और स्वयं भी सेवक हुआ। श्रीकृष्णदेव राजा ने श्रीआचार्यजी का कनकाभिषेक कराया और प्रार्थना की महाराजाधिराज यह सब द्रव्य आपका है। तब आपने आज्ञा की यह तो स्नान का जल हुआ। आप सोनी को बुलाकर टूट टूक करवाकर हजारों ब्राह्मण आये हैं उन सबको बांट दो। यह सुनकर सब ब्राह्मण कहने लगे ये तो ईश्वर

बिना कौन करता है। तबसौ मण स्वर्ण बांट दिया। सभी ब्राह्मण प्रशंसा करते हुए सब ब्राह्मण अपने घर गये। कृष्ण देव राजा ने विनती की महाराजाधिराज कृपा करके हमको शरण लीजिए। तब आपने राजा कृष्ण देव को नाम सुनाया। राजा ने मोहर का थाल भरकर आपके संमुख रखा। आपने उसमे से सात मोहर निकाल ली। राजा ने विनती की महाराज आपने केवल सात मोहर ही क्यों उठाई। ये सब मोहरें तो आपकी हैं। आपने आज्ञा की इस मोहरों से हमारी ओर से कटि मेखला बनवाकर श्रीजगन्नाथरायजी को अंगीकार करवाओ। ऐसा माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभु की शरण आये। पीछे आप विद्या कुंड पर पधारे। वहाँ सायं काल माधवाचार्य और रामानुजाचार्य ने आकर विनती की महाराज आपने हमारे धर्म की रक्षा की है। इसलिए आप भक्ति मार्ग के रक्षक हुए हैं। अतः आप हमारी गादी पर बिराजो। हम सब आपकी आज्ञा में रहेंगे। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने विचार किया चारों संप्रदाय के मूर्द्धन्य विष्णु स्वामी हैं। इसलिए विष्णुस्वामीसंप्रदाय के लिए ही हमारा प्राकट्‌य हुआ है। विष्णु स्वामी के शिष्य बिल्वमंगल हुए हैं। इतने में बिल्व मंगल भी आये। आकर श्रीआचार्यजी को नमस्कर किया और कहा कृपा सागर विष्णुस्वामी सेवामार्ग प्रकट कर बहुत समय तक वे भूतलपर बिराजे। किन्तु कोई ऐसा शिष्य नहीं हुआ जो वो मार्ग चलावे। इस बात का विष्णु स्वामी को बहुत दुःख हुआ। पीछे आप तो स्वधाम पधारे तब मेरे को आज्ञा की कि मेरे शिष्य तो सब ऐसे हुए जो अपने अपने देह सुखार्थी हुए हैं। नहीं प्रभु का विचार करते हैं और नहीं संप्रदाय के ग्रन्थों का ही अवलोकन किया। सेवकों का मुख्य धर्म यह है कि स्वामी जिससे प्रसन्न हो वह करना। इस प्रकार विष्णु स्वामी को बहुत विरह हुआ तब स्वप्न में उनको भगवद् आज्ञा हुई कि दक्षिण

तैलंग कुल में साक्षात् श्री पुरुषोत्तम का प्राकट्य होगा। वे बहुत काल से जो दैवी जीव बिछुड़ गये हैं उन दैवी जीवों के उद्धारार्थ और भक्तिमार्ग धर्ममार्ग स्थापनार्थ आप पधारेंगे। उनका भूतलपर १५३५ माधवमास कृष्ण ११ मध्यान्ह काल के समय ज्येष्ठा नक्षत्र रविवार के दिन स्व इच्छा से चंपारण्य में अग्निकुंड में से प्रादुर्भाव होगा। उनका नाम श्री वल्लभाचार्य होगा। वे सेवा मार्ग प्रकट करेंगे। ऐसी भगवद् आज्ञा हुई। तब मेरे से (आप) विष्णु स्वामी ने कहा कि मैं तो स्वधाम को जाता हूँ। परन्तु तुम रहना। तुमको काल बाधा नहीं पहुंचायेगा। जब श्री वल्लभाचार्यजी प्रकट होकर विद्यानगर पधारेंगे। वे सभाजीत कर जब दिग्विजयकर भक्ति मार्ग की स्थापना करेंगे और मायामत का खण्डन करेंगे तब तुमको अनुभव होगा इसलिए तुम विद्यानगर में विद्याकुण्ड पर जाना। वहाँ तेरे को श्रीआचार्यजी महाप्रभु का दर्शन होगा। उस दिन तू उनसे विनती कर विष्णु स्वामी के मार्ग को अंगीकार कराना। यह मेरे को आज्ञा कर श्री विष्णु स्वामी निजधाम पधारे हैं। यह वृत्तांत कहकर विल्वमंगल ने अपना वृत्तांत कहा कि महाराज में श्री विष्णुस्वामी जी की आज्ञा से वृन्दावन में ब्रह्मकुण्ड के ऊपर इमली के वृक्ष के नीचे बैठक में आपका स्मरण करता था। इस तरह मेरे को बैठे–बैठे साढे सात सौ वर्ष हुए हैं। अब मेरे को भगवद् आज्ञा हुई है कि तू विद्यानगर जा तेरे को श्रीआचार्यजी का दर्शन होगा। इस कारण मैं यहाँ आया हूँ। ऐसा बिल्व मंगल का वृत्तान्त सुनकर श्रीआचार्यजी श्रीबिल्वमंगलजी के ऊपर बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि श्रीविष्णु स्वामी के लिए तो मेरा प्राकट्य है तब विष्णु स्वामी की ओर से श्रीविल्वमंगल जी ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु के तिलक किया। पीछे चारों सम्प्रदाय के आचार्यों ने मिलकर "श्री वल्लभाचार्यजी" नाम रखा और प्रार्थना

की कि महाराज चारों सम्प्रदाय आपकी है और हम आपके आज्ञा धारी हैं। आप हमारे सम्प्रदाय के दीक्षित हो। तब बिल्वमंगल ने विनती की अब में स्वधाम को जाता हूँ। ऐसा कहा। उसी समय बिल्वमंगल स्वधाम को पधारे। विद्यानगर में जय जयकार हुआ। यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव शरण आये। पीछे चारों संप्रदाय के आचार्य अपने अपने घर को गये। श्रीआचार्यजी कुछ दिन बिराजकर विद्यानगर से विजय की। विद्यानगर की बैठक का चरित्र समाप्त।

५०. त्रिलोक भानजी की बैठक (अप्रकट)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक त्रिलोकभानजी में है। वहाँ एक रमणीय स्थल देखकर छोंकर के नीचे आप बिराजे। वहाँ मायावादी बहुत थे। वे सब शक्ति के उपासक थे। तब श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास को आज्ञा की कि यहाँ मायावादी बहुत प्रबल हैं। इसलिए मायामत का खण्डन कर भक्तिमार्ग का स्थापन करेंगे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने वहाँ भागवत सप्ताह आरम्भ की। तब महा अलौकिक आनन्द हुआ। यह मायावादियों ने सुना कि श्री वल्लभाचार्यजी यहाँ पधारे हैं। तब वे सब मिलकर श्रीआचार्यजी के पास आये। तब आपने सभी का सत्कार किया एवं बिठाया। उसके

पश्चात् चर्चा हुई। एक घड़ी में श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सब मायावादियों को निरुत्तर कर दिया। इस प्रकार सहज में मायामत का खण्डन कर भक्तिमार्ग का स्थापन किया। तब वहाँ जय जयकार होने लगा। पंडाओं ने विनती की महाराज कोई मनुष्य हो तो उसको जीता जा सकता है आप तो साक्षात् ईश्वर हो। अब कृपा कर के हमें शरण में लीजिए। जब आप उद्धार करो तब होगा। महाराज अब हम आपके शरणागत हैं। श्री महाप्रभुजी परम दयालु हैं। इसलिए आज्ञा की कि स्नान करके आओ वे सभी स्नान करके आ गये। तब सभी को नाम सुनाया। तुलसी की माला पहनायी। उस समय वहाँ जय जयकार हुआ। पीछे दण्डवत् कर सब अपने घर को गये। तब श्रीलोकभानजी ठाकुरजी श्रीआचार्यजी के पास पधारे। श्रीआचार्यजी ने खड़े होकर दर्शन किये। प्रणाम किया, प्रार्थना की महाराज आप पट्टा पर बिराजिये। तब श्री ठाकुरजी वहाँ बिराजे। श्री ठाकुरजी ने कहा कि मायावाद का तो आपने खंडन किया हैं श्रीआचार्यजी ने कहा यह तो सब आपका प्रताप हैं जिस पर आप कृपा कटाक्ष करो वह सनाथ हो जाता हैं। श्रीआचार्यजी ने श्री ठाकुरजी से प्रार्थना की आप मन्दिर में पधारिये। मैं भी पीछे आता हूँ। इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी ने कृष्ण दास मेघन से कहा हरा मेवा सिद्ध करो। तब सामग्री सिद्ध करके कृष्णदास मेघन ने श्रीआचार्यजी से प्रार्थना की महाराज पधारिये सामग्री सिद्ध हो गयी है। श्रीआचार्यजी सभी सेवकों के साथ पधारे तथा श्रीत्रिलोकभान जी के दर्शन किये। तब श्रीत्रिलोकभानजी ने आज्ञा की आप शृंगार कीजिये। श्रीआचार्यजी ने शृंगार किये। उस समय सभी को अद्भुत दर्शन हुए। इसके पश्चात् आपने श्री

ठाकुरजी को सामग्री अरोगाई। पीछे श्री ठाकुरजी की आज्ञा लेकर (आप) श्रीआचार्यजी अपनी बैठक मे पधारे। वहाँ कुछ दिन बिराजकर वहाँ से विजय की तथा तोता चल पर्वत पर पधारे। श्रीत्रिलोकभानजी की बैठक का चरित्र समाप्त।

५१. तोताद्रि पर्वत की बैठक, नागनेरी तिरुनेल्वेली, रेलवे स्टेशन (अप्रकट)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक तोता चल पर्वत के पास बहुत सा बन है वहाँ वट वृक्ष के नीचे आप बिराजे। वहाँ कृष्णदास मेघन ने प्रार्थना की महाराज जल का स्थल कहीं दिखाई नहीं पड़ता है। तब श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की मेरे समीप यह कदंब का वृक्ष है उस कदंब के दक्षिण की ओर एक बड़ी शिला है उस शिला को उठाओ। उसके नीचे एक कुंड निकलेगा। उस कुण्ड में बहुत जल है। तब कृष्णदास ने जाकर वह शिला उठाई। उसके नीचे एक बड़ा कुण्ड निकला। उसमे सीढी बहुत सुन्दर बनी बनी हुई थी। तब सब सेवकों ने उस कुण्ड का नाम वल्लभकुण्ड रखा। ये समाचार सब मायावादियों ने सुना। श्री वल्लभाचार्यजी यहाँ पधारे हैं। उन्होंने दक्षिण के विद्यानगर में तथा काशी में मायामत का खंडनकर भक्तिमार्ग का स्थापन किया

है। सुना है उनका अग्नि कुण्ड से (आपका) प्राकट्य हुआ है। इस कारण अग्नि के समान आपका तेज है। अपने में से दो पंडित जाकर देख आवे कि आपका डेरा कौन सी जगह है। ऐसा विचार कर उनमें दो पंडित गये उन्होंने देखा किये वट वृक्ष के नीचे बिराज रहे हैं। वहाँ आकर उनने दर्शनकर विनती की महाराज यहाँ निर्जल स्थल में कहाँ आकर बिराजे हो। यह सुनकर श्रीआचार्यजी के सेवक कृष्णदास ने कहा। तुम उस कदंब के नीचे जाकर देखो तो सही कैसा सुन्दर कुंड जल का भरा हुआ है। तब वे मायावादी मन में अचंभित हो नमस्कार कर अपने स्थल को गये आकर उनने सब समाचार अपने साथियों से कहे। वे तो साक्षात् ईश्वर है। यह सुनकर सब पंडित वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु के दर्शन को आये।

वहाँ नया कुण्ड देखकर बहुत प्रसन्न हुए। उस समय सब ने विचार किया कि इन पत्थरों में जल कहाँ से हुआ है। हमने तो कभी देखा नही और बड़ों के मुखसे सुना भी नहीं कि यहाँ जल है। इस कारण ये तो ईश्वर का अंश हैं। पीछे श्रीआचार्यजी के पास आकर आपको साष्टांग दण्डवत् करके प्रार्थना की महाराज हमको शरण लीजिये। तब श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की तुम रुद्राक्ष उतारकर स्नान करके आओ। तब उन्होंने रुद्राक्ष की माला उतारदी और स्नान करके आये। तब श्रीआचार्यजी ने उनको नाम सुनाए। तुलसी की माला पहरायी। तब तोता चल पर्वत पर जय जयकार हुआ। वहाँ आपने माया मत का खण्डन कर भक्ति मार्ग का स्थापन किया। इसके पश्चात् सभी पंडितों ने दण्डवत् की और अपने अपने घर को गये। वहाँ श्रीआचार्यजी ने भागवत सप्ताह की तब वहाँ महा अलौकिक आनन्द हुआ।

५२. दरवसेन–आरिसेतु रामनाथ पुरम् (तमिल)

श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की बैठक दरवसेनजी में है। वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे। वहाँ बहुत विकट स्थान है। वहाँ सर्वव्याघ्रादि तामसी जीव बहुत रहते थे। आसपास में झाड़ियां भी बहुत थी। वहाँ एक रमणीय स्थल देखकर आप बिराजे। तब वहाँ श्री दरवसेनजी ठाकुरजी पधारे। तब श्रीआचार्यजी ने श्री ठाकुरजी को प्रणाम किया। आसन पर पधरा कर प्रार्थना की महाराज आप परिश्रम करके यहाँ क्यों पधारे। श्री ठाकुरजी ने कहा कि ऐसी विकट स्थान पर आप जीवों के उद्धारार्थ पधारे हो अन्यथा आपका दर्शन कहाँ होता। किन्तु यहाँ विकट जगह है मेरी विनती है यहाँ जितने दैवी जीव हैं वे वन में आते नहीं है। उसका कारण है आपके वंश में सभी पुरुषोत्तम होंगे। यदि यहाँ दैवीजीव होतो उनके उद्धार के लिए आपके वंश के बालक पधारें उसमे मेरे को दर्शन का लाभ हो। किन्तु आपको परिश्रम हो यह ठीक नहीं। ऐसी आपने श्री ठाकुरजी की वात्सल्यता देखकर बहुत प्रसन्न हुए। इसलिए यहाँ चरणारविन्द की रजद्वारा हजारों जीवो का उद्धार किया। पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने भागवत सप्ताह की। श्री ठाकुरजी नित्य पधारते। जिस कारण अनिर्वचनीय सुख हुआ। श्रीआचार्यजी बाद में सूरत पधारे। श्रीदरवसेनजी की बैठक का चरित्र समाप्त।

५३. सूरत, अश्विनी कुमार घाट सूरत (गुजरात)
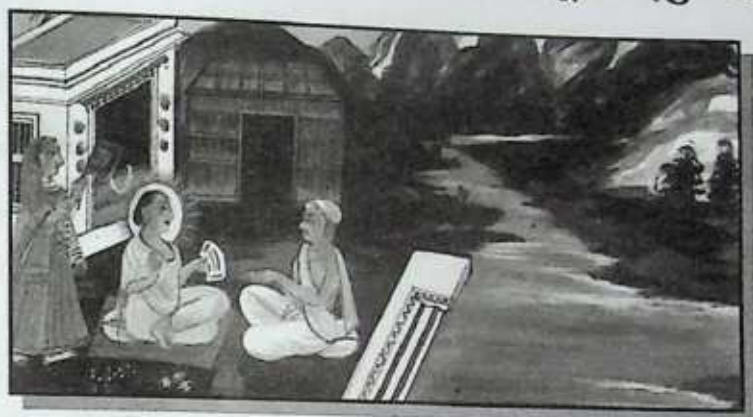
श्रीआचार्यजी महाप्रभु कांकरखाड़ होकर पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथजी के दर्शन करके पंचवटी होते हुए सूरत पधारे। वहाँ तापी के किनारे अश्विनी कुमार के आश्रम के पास आप बिराजे। तापी में स्नान किया। पीछे वहाँ भागवत का पारायण किया। तब वहाँ एक स्त्री अकस्मात् आयी। उसने तापी में स्नान किया और श्रीआचार्यजी को दण्डवत् की और वामभुजा की ओर खड़ी होकर पंखा की सेवा करने लगी। तब उसको कृष्णदास ने मना किया। श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास को मना किया। जहाँ तक कथा हो वहाँ तक वह पंखा करती और आपका श्रीमुखनिरखती रहती थी जब कथा हो चुके तब दण्डवत् कर अपने आश्रम में जाती। कृष्ण दास ने उसकी बहुत चौकसी की परन्तु निश्चय नहीं हुआ कि वह स्त्री कहा से आती है और कहाँ जाती है। इस प्रकार उसने सात दिनों तक सेवा की जब पारायण समाप्ति हो चुकी तब वह श्रीआचार्यजी महाप्रभु कोदण्डवत् कर चरणोदक लेकर अपने आश्रम पर गई। तब कृष्णदास ने श्रीआचार्यजी से विनती की महाराज यहाँ जो वह स्त्री आकर के कथा में पंखा की सेवा करती थी वह लौकिक स्त्री तो नहीं थी। वह तो अलौकिक स्त्री थी। वह कौन थी कृपाकर के

कहिए। तब श्रीआचार्यजी ने मुस्कराकर कहा कि वह तो तापीजी नदी थी। वह श्री सूर्यनारायण की पुत्री है। इनको सप्ताह श्रवण की महा अभिलाषा थी। इस लिए यहाँ सप्ताह सुनने को आती थी। यह सुनकर सभी सेवकों ने साष्टांग दण्डवत् की और विनती की महाराज आपका अभिप्राय तो आप कृपा करके बताओ तभी जाना जा सकता है। यह माहात्म्य देखकर वहाँ अनेक जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभु के सेवक हुए।

५४. भरुंच–पावर हाउस के पास, कचहरी के पीछे, भरुंच (गुजरात)
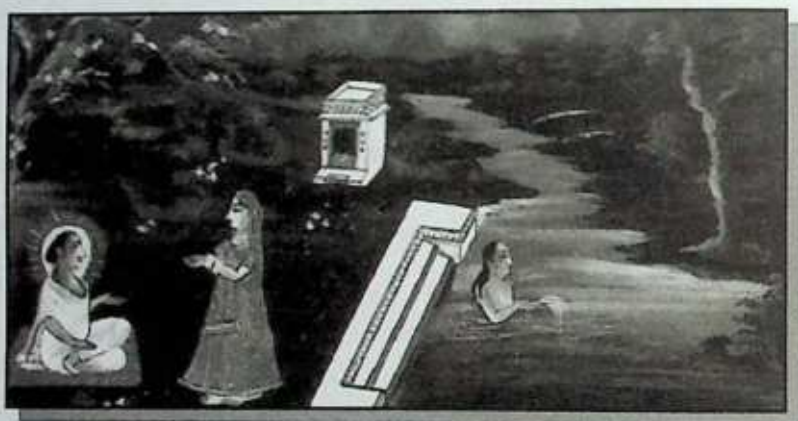
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक भडोच में नर्मदा नदी के किनारे भृगु क्षेत्र में है। वहाँ छोंकर के नीचे आप बिराजे। वहाँ अकस्मात् एक स्त्री आयी। नख से शिखा तक हीरा मोती के आभरण पहरे थी। उसने अति हर्ष के साथ आपको साष्टांग दण्डवत् की तथा प्रार्थना की महाराजाधिराज आपका प्राकट्य दैवी जीवों के उद्धारार्थ, मायामत खण्डनार्थ और सकल तीर्थ सनाथ करणार्थ है। इस लिए आप कृपा कर नर्मदा स्नान करने के लिए पधारिये। तब श्रीआचार्यजी ने कहा बहुत अच्छा। हम अभी स्नान करने को आते हैं। वह स्त्री दंडवत् कर अपने स्थान को गई। तब दामोदर दास ने विनती करके पूछा वह

कौन है तब आपने कहा वह श्री नर्मदा नदी थी वह विनयकर के गई है। पीछे आप नर्मदा में स्नान को पधारे तब नर्मदा नदी बहुत प्रसन्न हुई। वहाँ आपने स्नान किया पीछे सप्ताह पारायण किया। तब महा अलौकिक आनन्द हुआ। इसके बाद वहाँ मायावादी सभी इकट्ठे होकर आये। उनसे चर्चा हुई। एक घड़ी में श्रीआचार्यजी ने सभी को निरुत्तर कर दिये। वहाँ मायामत का खण्डन करके भक्तिमार्ग का स्थापन किया। तब भडोंच में जय जयकार हुआ। पीछे आपने वहाँ से प्रस्थान किया तथा मोरवी पधारे।

५५. मोरवी–मच्छुनदी के सामने का घाट, काला बड़ गेट रोड़ जामनगर
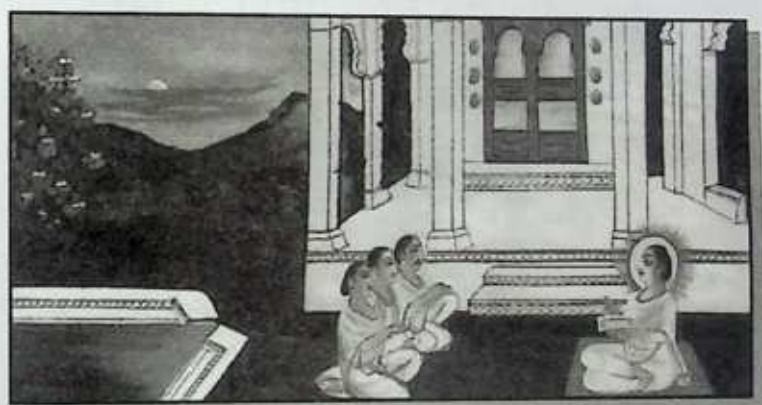
श्रीआचार्यजी महाप्रभु मोरवी पधारे। वहाँ कुण्ड के ऊपर छोंकर के वृक्ष के नीचे बिराजे। कृष्णदास मेघन को आज्ञा की यह राजा मथूर ध्वज का गांव है। वह राजा बड़ा सत्यवादी हरिभक्त था। यहाँ श्रीकृष्ण चन्द्र अर्जुन सहित पधारे थे। इसलिए यहाँ सप्ताह होगी। इसके पीछे वहाँ सप्ताह की। वहाँ बाला और बादा नाम के दोनों भाई पुष्करणा ब्राह्मण थे। वे बड़े भगवदीय थे। दोनों श्रीआचार्यजी के दर्शन को आये। उनको साक्षात् दर्शन हुआ। तब उन दोनों भाइयों ने आपसे विनती की महाराज हम बहुत काल से भटक रहे हैं। आप परम दयालु हैं हमारा उद्धार कीजिये तब आपने आज्ञा की तुम स्नान करके आओ।

तब वे स्नान करके आये। पीछे आपने कृपा करके दोनों को भगवत्नाम सुनाएं। पीछे ब्रह्मसम्बन्ध करवाया। आपने बाला का नाम बालकृष्ण और बादा का नाम बादरायण दास रखा। उनको श्रीआचार्यजी ने एतन्मार्गीय ग्रन्थ पढाए। पीछे उन्होंने प्रार्थना की महाराज कृपा करके हम को भगवत्नाम सुनाएं। पीछे ब्रह्म सम्बन्ध करवाया। आपने बाला का नाम बालकृष्ण और बादा का नाम बादरायणदास रखा। उनको श्रीआचार्यजी ने एतन्मार्गीय ग्रन्थ पढाए। पीछे उन्होंने प्रार्थना की महाराज कृपा करके हमको सेवा पधारा दीजिये। तब श्री महाप्रभुजी ने उनको सेवा पधरा दी। उनका विस्तार चौरासी वैष्णव की वार्त्ता मे लिखा है।

५६. नवानगर नागमती नदी का घाट काला बडगेट रोड़, जामनगर
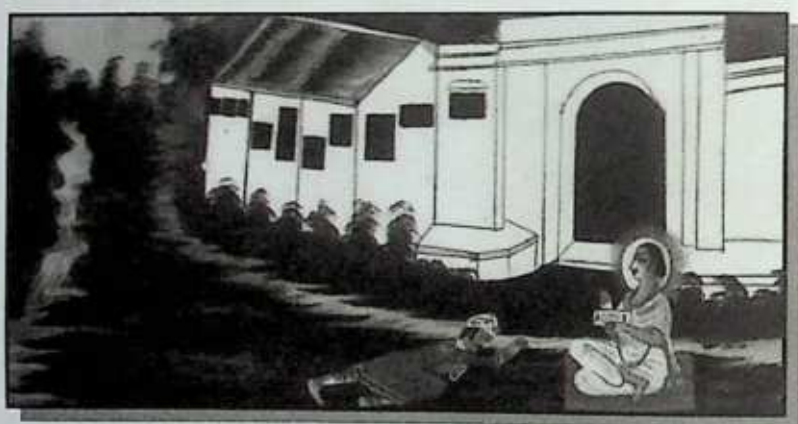
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक नवानगर में नागमती नदी के तट पर है। वहाँ एक रमणीय स्थल देखकर छोंकर के नीचे आप बिराजे। वहाँ श्रीभागवत् का पाठ किया। उस समय राजा जामतमांची ने आकर साष्टांग दण्डवत् की। तथा विनय की महाराजाधिराज मेरे भाग्य धन्य भाग है। आपके दर्शन मेरे को हुए। जिनका साक्षात् वेद, शास्त्र निरुपण करते हैं उनके दर्शन मेरे को हुए। आपके दर्शन मात्र से मेरी बुद्धि निर्मल हो गयी। अब कृपा करके मेरे को शरण लीजिये। हम बहुत काल से भटक रहे हैं। तब राजा की आरती देखकर श्रीआचार्यजी ने

आज्ञा की कि स्नान कर आओ। राजा स्नानकर आया। तब श्री महाप्रभु जी ने कृपाकर उस राजा को नाम सुनाया। पीछे ब्रह्म संबंध कराया। तुलसी की माला गले में डाली। तब राजा ने विनती की महाराज मेरे को यहाँ नगर बसाना है। आप आज्ञा दे वहाँ बसाऊँ। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कहा इसी समय अच्छा मुहूर्त हैं इसलिए अभी जाकर नगर बसाने का मुहूर्त करो। जिससे तुम्हारा राज्य निर्भय होगा। तब राजा दण्डवत् करके अपने घर जाकर के नगर का मुहूर्त किया। वह नगर अभी तक बसा हुआ है। पीछे आचार्यजी ने वहाँ से विजय की तथा खंभालिया पधारे यह चरित्र श्रीआचार्यजी ने नवा नगर की बैठक में प्रकट किया।

५७. खंभालिया, स्टेशन रोड़ कुंड के ऊपर खंभालिया, जिला जाम नगर वाया द्वारका
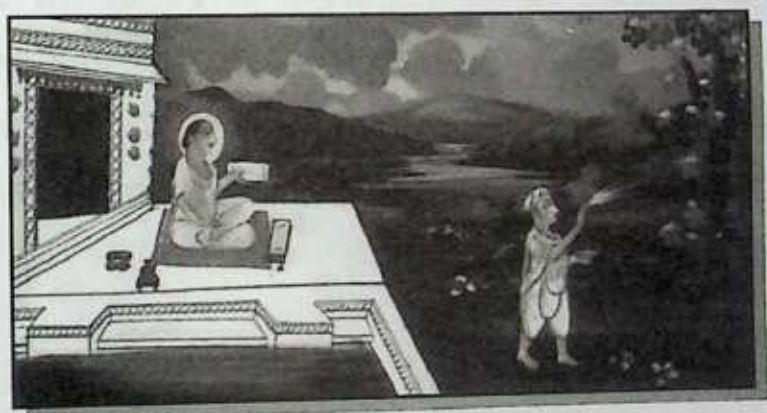
श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की बैठक खंभालिया में कुंड के ऊपर छोंकर के वृक्ष के नीचे है। वहाँ आप बिराजे। दामोदर दास को आज्ञा की यह स्थान बहुत रमणीय है। इसलिए यहाँ सप्ताह करेंगे। वहाँ सायंकाल एक ब्राह्मण ने आकर साष्टांग दण्डवत् की और प्रार्थना की महाराज यहां रात्रि को आप मत रहना। यहां इमली पर एक प्रेत रहता है वह रात्रि को यहां रहने वाले को खा जाता है। इसलिए मेरी यह विनती है आप रात्रि में शहर में बिराजो। ऐसा

कहकर वह ब्राह्मण तो चला गया। पीछे आप रात्रि को वहाँ कथा कहने को बिराजे। उस समय कृष्णदास अपरस धोने के लिए गया वहाँ वह प्रेत आया। वह प्रेत आसपास चारों तरफ फिरने लगा तब कृष्णदास ने कहा तू इधर उधर चारों ओर क्यों फिरता है। तेरे को आना है तो आ। मैं यहाँ ही खड़ा हूँ। तब वह प्रेत बोला तुमतो बड़े महापुरुष हो इसलिए मेरे ऊपर कृपा करो जिससे मेरा उद्धार हो। मैं बहुत दुःख पाता हूँ। पीछे कृष्ण दास अपरस धोकर आये। सुखाकर श्रीआचार्यजी से विनती की महाराजा धिराज वह प्रेत आया है विनती करता है कि मेरा उद्धार करो। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि तू चरणोदक लेकर उसके ऊपर छिड़क दे। कृष्णदास ने वैसे ही किया। तब उसकी प्रेत योनि छूट गई। वह दैवी स्वरूप हो गया। तब वैकुण्ठ से विमान आया। वह विमान में बैठकर गया। तब वह श्रीआचार्यजी महाप्रभु की जय जय बोलता हुआ गया। सब सेवकों ने साष्टांग दण्डवत् की। इसलिए भगवदियों ने गाया है–*"चरणोदक लेतप्रेत ततक्षणते मुक्ति भए, करुणामय नाथ सदा आनंद निधि कंदे।"* पीछे श्रीआचार्यजी ने वहाँ सप्ताह की। तब महा अलौकिक आनन्द हुआ। पीछे वहाँ से विजय कर पिंडतारक पधारे।

५८. पिंड तारक–पो. पिंडरा, भोपाल का स्टेशन जिला जामनगर वायाद्वारका

बैठक चरित्र

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक पिंडतारक पर छोंकर के नीचे है। आपने यहाँ बिराज कर दामोदरदास को आज्ञा की जब श्रीकृष्णचन्द्र द्वारिका में आकर बिराजे तब सभी तीर्थ श्री द्वारिकाजी के आस पास आपके दर्शन करने के लिए रहे। यह आज्ञा करके श्रीआचार्यजी वहाँ बिराजे तथा वहाँ श्रीभागवत का पारायण किया। वहाँ एक ब्राह्मण प्रतिदिन कथा सुनने को आता था। उसको आपने आज्ञा की तुम कहाँ रहते हो। तब उस ब्राह्मण ने प्रार्थना की महाराजाधिराज में तीर्थ क्षेत्र में रहता हूँ। आपके श्री मुख से कथा सुनने की बहुत दिनो से मनोरथ था। वह समय अब मिला है। यह सुनकर आप मुस्कराकर चुप रहे। जहाँ तक सप्ताह होती वहाँ तक वह रहता फिर दण्डवत् करके जाता वह किसी को दिखाई नहीं पड़ता। एक दिन कृष्णदास ने प्रार्थना की महाराजाधिराज वह ब्राह्मण आता है जो कौन है। आपकृपा करके कहो। तब आपने आज्ञा की कि उस दिन हमने कहा। उसको तेने नहीं समझा। वह तीर्थ क्षेत्र में रहता हैं। पंडित स्वरूप से तीर्थ राज आते है। जितने तीर्थ हैं वह साक्षात् स्वरूपात्मक है। यह सुनकर सब सेवकों ने दण्डवत् की। इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी ने अपने कटाक्ष द्वारा अनेक पशु पक्ष्यादि जीवों का उद्धार किया। पीछे आपने तीर्थ क्षेत्र में स्नान किया तब तीर्थ पुरोहित आया। उसको कृष्णदास ने पूछा कि तू कौन है। तब उसने कहा में तीर्थ पुरोहित हूँ। उस तीर्थ पुरोहित ने श्रीआचार्यजी का प्रताप देखकर कहा महाराज मेरा उद्धार करिये। मैं आपकी शरण हूँ। तब श्रीमहाप्रभुजी ने आज्ञा की तेरा उद्धार तीर्थराज करेंगे। तू जिसकी पीठ पर हाथ धरेगा उसके हाथ से पिंड तिरेंगे। पीछे आपने उस पुरोहित को दक्षिणा दी। इसके पीछे आपने वहाँ से विजय की। वहाँ से आप गामती मूल पधारे।

५६. मूल गोमती, पुरी मावती, देवीदास नाथराम, नीलकंठ चौक गोमती वाया द्वारका

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक मूल गोमती के किनारे एक छोंकर के नीचे है। वहाँ आप बिराजे थे। वहाँ कृष्णदास मेघन ने विनती की महाराज यह मूल गोमती कैसे है। तब आप ने आज्ञा की यह मूल गोमती वैकुण्ठ से पधारी है। राजा के यहाँ प्रकट हुई। अपने पिता से कहा कि मेरा ब्याह मेरी इच्छा से होगा। पीछे उनको श्रीद्वारकानाथजी की आज्ञा हुई कि तुम यहां तक आओ। तब उनने पिता से कहा कि अब में जल स्वरूप होकर समुद्र से जाकर मिलूंगी इस मिष से श्रीकृष्ण चन्द्र के चरणारविन्द का संबध मेरा होगा। यह कह कर श्रीगोमतीजी जलरूप होकर श्रीद्वारकाजी पधारी। इस कारण यह मूल गोमती नाम से विख्यात है। श्रीआचार्यजी वहाँ बिराजे थे। वहाँ एक संन्यासी आया। वह श्री महाप्रभु को दण्डवत् कर बैठ गया। तब आपने आज्ञा की कि तुम यहाँ कैसे रहते हो। तथा कहाँ से आये हो। तब उस संन्यासी ने प्रार्थना की महाराज पहले में दक्षिण में रहता था और विष्णुस्वामी का शिष्य था। मेरे पुत्र एवं स्त्री सब मर गये। तब में गृहस्थ से बैरागी हुआ। तब मन में विचार किया कि अब अपना कल्याण हो वैसा करना। अतः में घर छोड़कर श्रीद्वारिका आया। यहाँ आकर के श्रीद्वारिकानाथजी के दर्शन किये। पीछे एकान्त स्थल

देखकर बैठा। वहाँ श्रीभागवत का पाठ करता। तब दो चार बार काल आया सो मैं नहीं गया। मुझे यहाँ बैठे हुए सात सौ वर्ष हुए हैं। इसके पश्चात् श्रीभगवद् आज्ञा हुई कि वर मांग। तब मैंने यह वर मांगा कि मुझे श्रीकृष्णचन्द्र के बाल लीला के दर्शन हों। तथा श्रीगिरिराजजी की तलहटी में वास हो। उस समय आज्ञा हुई कि यह तो तेने बहुत कठिन वर मांगा है। यह तो बड़ों को भी दुर्लभ है। किन्तु हमारा वर खाली नहीं जायेगा। जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु यहाँ पधारेंगे तब तेरा मनोरथपूर्ण करेंगे। आप अब पधारे हो मेरे को स्वप्न में आज्ञा हुई है। श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं। यह सुनकर आपने संन्यासी से कहा कि तुम साधन में पड़ गये। इस कारण तुम्हारे देर हुई। अब तुम स्नान कर आओ। तब वह वैरागी श्री गोमतीजी में स्नान कर आया। तब आपने उसको नाम सुनाया। पीछे आपने सप्ताह पूर्ण की तब महा अलौकिक आनन्द हुआ। आपने उस संन्यासी को आज्ञा की कि आज के तीसरे दिन तेरी मृत्यु होगी। पीछे तेरा जनम श्री गिरिराज में व्रजवासी के घर में होगा। वहाँ तेरा हर जी वाल नाम धरेंगे। वहाँ हमारे पुत्र श्रीगुसांईजी तेरा उद्धार करेंगे। यह सुनकर उस संन्यासी ने दण्डवत् की तथा अपनी पर्ण कुटी को गया। इसके बाद श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने वहाँ से विजय की एवं द्वारकाजी पधारे।

६०. द्वारिका–गोमती नदी के किनारे, द्वारिका

बैठक चरित्र
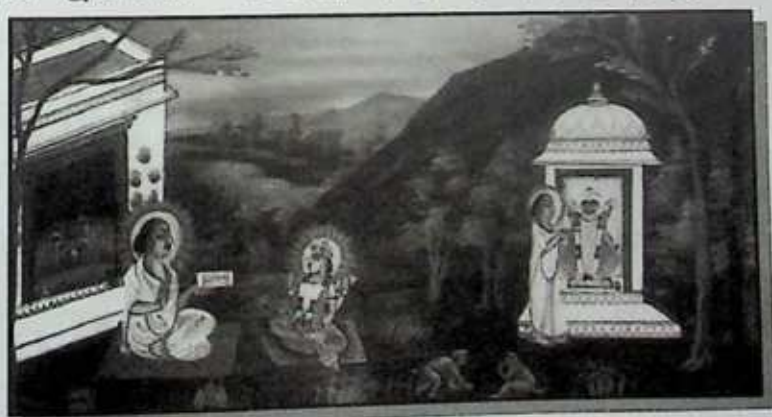
श्रीआचार्यजी द्वारिकाजी पधारे। वहाँ गोमती जी के किनारे छोंकर के नीचे आप बिराजे। पीछे श्री द्वारिकानाथजी आपसे मिलने को पधारे। तब श्रीआचार्यजी ने खड़े होकर प्रणाम किया। आपसे श्री द्वारिकाधीश आगे आकर मिले। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि प्रभु इतना परिश्रम क्यों किया। मैं तो आप से मिलने के लिए आ ही रहा था। श्री द्वारिकानाथजी ने कहा कि आप इतना परिश्रम करके यहाँ पधारे और सामने आये इसमें हमको क्या बड़ा परिश्रम हुआ। अब तो आप चातुर्मास यहीं बिराजो। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि आप प्रसन्न होंगे वही करेंगे। श्रीद्वारिकानाथजी प्रसन्न हुए और आज्ञा की कि मंदिर में शीघ्र पधारो। आपने विनती की कि आप पधारो में भी पीछे आता हूँ। श्रीद्वारिकानाथजी अपने मंदिर में पधारे। श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास मेघन से कहा कि सामग्री सिद्ध करो। उस समय श्रीद्वारिकानाथजी का कृपापात्र सेवक गोविन्ददास ब्रह्मचारी था उसको श्रीद्वारिकानाथजी ने आकर कहा कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु यहाँ पधारे हैं वे साक्षात् श्री पूर्ण पुरुषोत्तमम के अवतार हैं। इसलिए तू सामने जाकर भक्तिभाव से उनको पधराकर ला। तब गोविन्द दास ब्रह्मचारी ने आकर श्रीआचार्यजी को साष्टांग दंडवत् की। तथा प्रार्थना की राज मंदिर में शीघ्र पधारो। प्रभु ने मेरे को भेजा है तब श्रीआचार्यजी उसी समय पधारे। ब्रह्मचारी ने विनती की महाराज सेवा शृंगार सब आप ही करिये। श्री ठाकुरजी ने स्वयं आज्ञा की हैं तब आपने श्री द्वारिकानाथजी का शृंगार किया। उस समय सभी को अद्‌भुत दर्शन हुए। पीछे श्रीआचार्यजी भोग घर भोग सराकर आरती कर अपनी बैठक में पधारे। वहाँ श्रीद्वारिकानाथजी नित्य आपकी बैठक में पधारते। पीछे गोविन्ददास ब्रह्मचारी ने श्रीआचार्यजी से विनंती की महाराज आपके श्री मुख से कथा सुनने की बड़ी अभिलाषा है। इसलिए कृपा करके सुनाइये। उस दिन से गोविन्द दास के आग्रह से

बैठक चरित्र

श्रीआचार्यजी पुस्तक खोलकर कथा कहने को बिराजते। पीछे वहाँ श्रीगोवर्धननाथजी ने पधारकर श्री द्वारिकानाथजी से कहा कि गोविन्द दास ब्रह्मचारी तो राजलीला सम्बन्धी सेवक है वह जब आपके श्री मुख से कथा सुनेगा तब उसको व्रजलीला का संबंध होगा इसलिए आप जाकर उससे बात करो। तब श्री द्वारिकानाथजी गोविन्ददास से बाते करने लगे। श्रीआचार्यजी ने बाते सुनकर पुस्तक बांध ली। उसके पीछे श्री द्वारिकानाथजी मंदिर में पधारे। तब श्रीआचार्यजी गोविन्ददास के ऊपर अप्रसन्न हुए। इस के बाद पुनः गोविन्दास ने कथा की प्रार्थना की। परन्तु आपने कथा नहीं कहीं श्रीआचार्यजी के सेवक नित्य थाल की जूठन लेकर पीछे महाप्रसाद लेते। उस दिन कृष्णदास मेघन को श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की आज किसी को जूठन मत देना। तब कृष्णदास ने थाल मांजकर धर दिया। उस दिन किसी सेवक ने महाप्रसाद नहीं लिया पीछे जब श्रीआचार्यजी श्री द्वारिकानाथजी के मन्दिर में पधारे तब श्री द्वारिकानाथजी ने आज्ञा की इसमें सेवकों का अपराध क्या है जो आज आपने जूठन की मना की। मेरे को तो श्रीगोवर्धननाथ जी ने आज्ञा की कि गोविन्ददास राजलीला संबंधी हैं आपके श्रीमुख से कथा सुनेगा तब उसका ब्रजलीला में अंगीकार होगा। इसलिए तुम जाकर उनसे बाते करो। इसलिए मैंने उनसे बाते की। श्रीआचार्यजी श्रीद्वारिकानाथजी के वचन सुनकर प्रसन्न हुए। पीछे आप अपनी बैठक में पधारे। आपने दामोदर दास से कहा कि दमला तुम्हारी सिफारिश बड़ी जगह से हुई है। आपने कृष्ण दास मेघन को आज्ञा की कि अब सभी को जूठन देना। उस दिन के पीछे फिर श्रीआचार्यजी महाप्रभु कथा कहने को पधारे। जब कथा कहने लगे तब श्रीसुबोधिनीजी का फल प्रकरण कहा तब बडा रसावेश हुआ। इससे सेवकों को देहानुसंधान नहीं रहा। इतने में एक मेघ घटा चढ़कर आ गयी। उस

समय श्रीआचार्यजी ने विचार किया कथा में बहुत रसावेश हुआ हैं उसमें प्रतिबन्ध हो तो अच्छा। उस समय आपकी इच्छा जानकर शेषजी ने सहस्रफन से आकर छत्र की तरह छाया की। चार घड़ी तक वर्षा हुई। परन्तु श्रीआचार्यजी के सेवकों पर एक बूंद भी नहीं गिरी जब आप कथा कह चुके तब सब सेवक सावधान हुए। देखते हैं कि वर्षा बहुत हुई है। आस पास बहुत जल है। यह देखकर दामोदर दास ने प्रार्थना की महाराज बार बार आप इतना परिश्रम क्यों करते हैं। यहाँ आसपास तो वर्षा बहुत हुई है और यहाँ तो एक बूंद भी नहीं गिरी तब आपने कहा इसमें हमने कुछ भी परिश्रम नहीं किया हैं यह तो शेषजी ने सेवा की हैं यह सुनकर सब सेवकों ने साष्टांग दंडवत् की। पीछे श्रीआचार्यजी ने अन्नकूट और प्रबोधिनी वहाँ ही की। यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव आपके शरण आये। इसके बाद आपने श्रीद्वारिकानाथजी से आज्ञा ली एवं वहाँ से विदा होकर विजय की। पीछे आप गोपी तलाई पधारे।

६१. गोपी तलैया, जिला जामनगर वाया द्वारका

श्रीआचार्यजी गोपी तलेया पधारे। वहाँ छोंकर के नीचे बिराजे। तब कृष्णदास मेघन ने विनती की महाराज यह गोपी तलैया के नाम से प्रसिद्ध है। इसका क्या कारण हैं श्री गोपीजन तो हमेशा व्रज में ही बिराजते हैं।

गोपी चंदन तो यहाँ होता है। इसका क्या कारण हैं कृपा करके कहिये। तब श्रीआचार्यजी ने कहा यह पुरातनी कथा है। एक समय श्री द्वारिकाधीश ने श्रीरुक्मिणीजी के आगे व्रज भक्त की बहुत सराहना की। तब श्री रुक्मिणी जी ने कहा कि महाराज हम तो राजा की बेटी हैं और आपकी स्वकीया है। इसलिए आंपकी आज्ञा में तत्पर हैं। श्री ठाकुरजी ने कहा कि सब कुछ हो परन्तुव्रजभक्त की बराबरी कोई भी नहीं करेगा। जिनने लोकवेद की दृढ़ शृंखला तृणवत् तोड़ डाली और जब मैंने वेणुनाद किया तभी सबव्रज भक्त पधारे। तुम स्वकीया हो फिर भी तुमसे आया नहीं जायेंगा। तब श्रीरुक्मिणीजी ने कहा आप वेणुनाद करोगे वहाँ हम आयेंगे। हमको किसका डर है। श्रीद्वारिकानाथजी ने गोपी तलैया पर आकर वेणुनाद किया तब श्रीरुक्मिणीजी आदिक अष्टपटरानी और सोलह हजार स्त्री सब आभूषण साजकर बैठी थीं वे वेणुनाद सुनकर शीघ्रता से खड़ी होकर चली। यह देखकर उग्रसेन सहित सब यादवों का समाज देखकर मन में संकोच हुआ। अगर ये पूछेंगे तो हम क्या उत्तर देंगी। ऐसी लज्जा से आपस में संकुचित होकर सब अपने मंदिर में जाकर बैठ गयी। उस समय वेणुनाद सुनकर व्रज में से कुमारिकाओं के यूथ के यूथ पधारे। श्री ठाकुरजी ने उनसे रमण किया। पीछे उन कुमारिकाओं ने भी लीला में प्रवेश किया। उन कुमारिका भक्तों के पास यहाँ सदैव बिराजते हैं। इसलिए यहाँ गोपी चंदन होता हैं तब कृष्णदासजी ने प्रार्थना की महाराज यह दर्शन तो अवश्य करने चाहिए। उस समय श्रीआचार्यजीने भगवदीय को दिव्य चक्षु दिये। इसलिए श्रीद्वारिकानाथजी उन लौकिक कुमारिकाओं से रास करते हैं। ऐसा दर्शन करवाया। तब भगवदियों को अलौकिक आनन्द हुआ। किसी को शरीर

अनुसंधान नहीं रहा। उसके पीछे आपने सभी को सावधान किया तब सेवकों ने दण्डवत् करके प्रार्थना की कि महाराज आपने यहाँ सप्ताह की उससे यहां अलौकिक आनंद हुआ। पीछे आपने गोपी तलैया से विजय कर शंखोद्धार पधारे।

६२. शंखोद्धार, शंख तालाब, बैठ द्वारका जिला जामनगर

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक शंखोद्धार में शंख तलैया के किनारे छोंकर के वृक्ष के नीचे है। वहाँ आप बिराजे। तब दामोदर दास को कहा यहाँ श्रीठाकुरजी ने शंखासुर दैत्य को मारकर शंखलिया तब शंख तलैया से प्रकट हुए। इस कारण श्री शंख नारायणजी नाम से यहाँ बिराजते हैं। यहाँ के मालिक श्री शंख नारायण जी हैं। यह रमणीक द्वीप कहलाता है। इसलिए श्रीद्वारिकानाथजी यहाँ सदैव रमण करते हैं। इससे यह जान पड़ता है कि किसी दिन पुनः श्री द्वारिकानाथ यहाँ बिराजेंगे। ऐसा कहकर (आप) श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने शंख तलैया में स्नान किया। श्रीशंखनारायण जी के दर्शन किये। पीछे श्री शंखनारायण का शृंगार कर भोग धर कर भोग सराकर बीड़ी अरोगाकर आरती की। इसके बाद अपनी बैठक में पधारे। तब श्री शंख नारायण जी श्रीआचार्यजी के पास पध

ारे और कहा कि आपने श्री भागवत की टीका श्री सुबोधिनीजी की है उसमें से वेणु गीत का प्रकरण सुनाइए। श्रीआचार्यजी ने विनती की एक श्लोक की व्याख्या तीन दिन तक कहेंगे। पीछे आपने एक श्लोक का व्याख्यान किया उसमें तीन दिन तथा तीन रात्रि व्यतीत हो गये। किसी को देहानुसंधान नहीं रहा ऐसा रसावेश हुआ। जब सब सावधान हुए तब श्रीआचार्यजी से श्री ठाकुरजी ने कहा यह बात आप से ही बनती हैं श्रीआचार्यजी ने सप्ताह की तब महाअलौकिक आनन्द हुआ। श्री शंखनारायणजी नित्य कथा सुनने को पधाते थे। पीछे सप्ताह की समाप्ति कर श्रीशंखनारायणजी से आज्ञा लेकर श्रीआचार्यजी ने वहाँ से विजय की तथा नारायण सरोवर पधारे।

६३. नारायण सरोवर तहसील–लखपत जिला कच्छ

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक नारायण सरोवर मार्कंडेय ऋषि के आश्रम के पास है। वहाँ छोंकर के वृक्ष के नीचे आप बिराजे। वहाँ दामोदर दास को आपने आज्ञा की यहाँ श्री आदि नारायण जी बिराजे हैं। वे नारायण सरोवर में से प्रकट हुए हैं। इसलिए हम यहाँ सप्ताह करेंगे। ऐसा कहकर श्रीआचार्यजी ने नारायण सरोवर में स्नान कर सप्ताह का प्रारंभ किया। तब

अनिर्वचनीय सुख हुआ। वहाँ श्री कोटेश्वर जी महादेवजी नित्य कथा सुनने को पधारते थे। वहीं पर श्रीमहादेवजी का बड़ा एक बड़ा कृपापात्र सेवक था उसको साक्षात् महादेव जी दर्शन देते थे। उसके बाद वह खान पान करता था। एक दिन उसको शाम तक दर्शन नहीं हुए। रात्रि को जब श्रीमहादेवजी पधारे तब उसने दर्शन किये। तब उस भक्तने विनती की महाराज अभी तक आपके दर्शन नहीं हुए उसका क्या कारण है। श्री महादेवजी ने कहा यहाँ श्रीआचार्यजी पधारें हैं मै उनकी कथा सुनने को जाता हूँ। इसलिए तेरे को दर्शन करने हों तो जल्दी आया कर। पीछे श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास को आज्ञा कि सिंध प्रान्त में दैवी जीव बहुत हैं। परन्तु वहाँ हमारा पधारना नहीं होगा। उसका कारण यह है कि सरस्वती जी का उल्लंघन हम कभी भी नहींकरेंगे। क्योंकि वह तो भगवद्वाणी का प्रवाह हैं इसलिए चरणारविन्द की रजद्वारा वहाँ के लक्षावधि दैवी जीवों की तामसी योनि छूट जायगी। इसके पश्चात् हमारे वंश द्वारा सभी का अंगीकार होगा। तब दामोदर दास ने प्रार्थना की महाराज आपकी इच्छा हो वही करो। पीछे चरणारविन्द की रज की सुगन्ध फैलाकर सिंध से लगाकर पंजाब देश तक लक्षावधि जीवो की तामसी योनि छूट गई।

६४. जूनागढ़ दामोदर कुंड गिरनार रोड़, जूनागढ़

बैठक चरित्र

श्रीआचार्यजी महाप्रभुकी बैठक जूनागढ़ में गिरनार पर रेवती कुंड के किनारे छोंकर के नीचे है वहाँ आप बिराजे। तब गिरनार पर्वत और रैवताचल पर्वत विप्रका स्वरूप धरकर आए। उन्होंने साष्टांग दंडवत् की तथा कहा कि महाराज आपका प्राकट्य सकल तीर्थों को सनाथ करणार्थ है। इसलिए इस रैवताचल पर्वत को सनाथ कीजिये। तब आपने आज्ञा की हम तो रैवताचल तुम्हारे लिए ही आये हैं। आप वहाँ पधारकर एक शिला पर बिराजे। तब रैवता चल को परम आनन्द हुआ। वह नवनीत से भी अधिक कोमल हो गया। इस कारण आपके चरणारविन्द के चिन्ह ऊपर आये। पीछे आचार्यजी दामोदर कुंड में स्नान करने को पधारे। स्नान करते समय में श्रीदामोदरजी का स्वरूप आपको प्राप्त हुआ। वही स्वरूप अभी जूनागढ़ में श्री रघुनाथलालजी के माथे बिराजते हैं। इसके बाद श्रीआचार्यजी अपनी बैठक में पधारे। वहाँ सप्ताह का आरंभ किया। उस समय एक योगेश्वर ने आकर साष्टांग दंडवत् की और कहा महाराज आपके श्रीमुख से कथा सुनने की बड़ी इच्छा है। कृपा करके सुनाइये। तब आपने सप्ताह की वह योगेश्वर नित्य कथा श्रवण करने को आता था। एक दिन कृष्णदास मेघन ने प्रार्थना की महाराज योगेश्वर आता है वह कौन है। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि वह द्रोणाचार्यजी के पुत्र अश्वत्थामा यहाँ गिरनार में रहता है। वह कथा सुनने को आता है। तब कृष्णदासजी ने साष्टांग दंडवत् की। यह आज्ञा कर आपने चरणारविन्द की रजद्वारा वहाँ अनेक जीवों को अंगीकार किये।

६५. प्रभास क्षेत्र–त्रिवेणी नदी का घाट, प्रभास पाटन जिला जूनागढ़
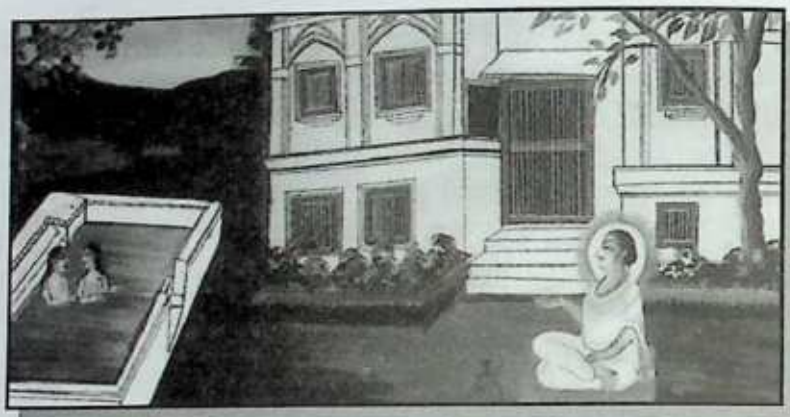
श्रीआचार्यजी प्रभास क्षेत्र पधारे वहाँ देहोत्सर्ग के ऊपर छोंकर के नीचे गुफा में बिराजे। आपने आज्ञा की कि यादवास्थली यहाँ ही हुई है। यहाँ दाऊजी शेष रूप में पधारे हैं। यहाँ सप्ताह अवश्य होगी। पीछे आपने त्रिवेणी में स्नानकर नित्य नियम किया। इसके बाद आपने सप्ताह की। वहाँ श्री सोमनाथजी महादेव जी नित्य कथा सुनने को पधारते थे। एक तरफ (ओर) बिराजते थे। जहाँ तक कथा होती वहाँ तक बिराजते थे। पीछे अपने स्थान को पधारते थे। वहाँ श्रीमहादेवजी का एक कृपा पात्र भक्त था उसको श्रीमहादेवजी का साक्षात्कार होता था। उसको दर्शन हो तब वह महाप्रसाद लेता था। एक दिन तीनप्रहर तक मंदिर में बैठा रहा। पीछे महादेवजी पधारे तब उसको दर्शन हुए। तब उस भक्त ने विनती की महाराज अब तक आपका दर्शन नहीं हुआ उसका क्या कारण है। तब उसको श्रीमहादेव जी ने आज्ञा की श्रीआचार्यजी महाप्रभु यहाँ पधारे हैं वहाँ मैं कथा सुनने को गया था अभी आया हूँ। इसलिए तेरे को अब दर्शन हुए हैं तब भक्त ने विनती की महाराज मेरे को श्रीमहाप्रभुजी के दर्शन करवाइये। श्रीमहादेवजी ने कहा कि तू देहोत्सर्ग तीर्थ पर जा वहाँ तेरे को दर्शन होंगे। तू उनकी शरण जाना। तब

वह भक्त श्रीआचार्यजी के दर्शन के लिए आया। आकर के उसने श्रीआचार्यजी के दर्शन किये। साष्टांग दण्डवत् करके विनती की महाराज कृपा करके मेरे को शरण में लीजिये। श्रीआचार्यजी ने कहा तू श्रीमहादेवजी का कृपा पात्र होकर हमारे शरण आने की क्यों कहता है। तब उसने प्रार्थना की महाराज मेरे को श्रीमहादेवजी ने भेजा हैं आपने आज्ञा की तुम स्नान कर आओ। तब वह स्नान करके आया। तब श्रीआचार्यजी ने उसको नाम सुनाकर वैष्णव किया। पीछे आपने सप्ताह की समाप्ति की। तब वहाँ महा अलौकिक आनन्द हुआ। इसके बाद श्रीआचार्यजी ने प्रभास क्षेत्र के पंचतीर्थों की परिक्रमा की। ऐसा माहात्म्य देखकर वहाँ अनेकजीव आपके शरण आये।

66- माधवपुर कदंबकुंड के ऊपर (बेड) जिला जूनागढ़

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक माधवपुर में कदम्ब कुंड के ऊपर है। वहाँ आप बिराजे वहाँ दामोदर दास को आज्ञा की यहाँ श्रीरुक्मिणीजी से श्रीकृष्ण का ब्याह हुआ था विवाह चौर्यता से हुआ। उस ब्याह की जगह (स्थान) यही है। (आपने) श्रीकृष्ण रुक्मिणीजी सहित गठ जोड़ा से स्नान किया। यही कदम्ब कुण्ड है। पीछे सभी ऋषि मंडल ने स्नान किया। ऐसा कहने के पश्चात् श्रीआचार्यजी ने श्री माधवरायजी के दर्शन किये। श्रीआचार्यजी ने साष्टांग प्रणाम कर विनती की महाराज आप यहाँ कहाँ बिराजते हो। तब

श्रीमाधवरायजी ने कहा कि एक ब्राह्मण मेरे को नित्य एक लोटा जल से स्नान कराता है। उसको आप सेवा प्रकार सिखाओ। दूसरे दिन श्रीआचार्यजी फिर गांव पधारे। वहाँ आपने श्री माधवरायजी के दर्शन किये उस समय वह ब्राह्मण वहां आया। उसको आपने आज्ञाकी इन श्री माधवरायजी को अच्छे स्थान पर पधराओ तथा सेवा शृंगार अच्छी रीति से करो। इससे इनके पीछे तुम्हारा निर्वाह भी अच्छी प्रकार से होगा। तब उस ब्राह्मण ने विनती की महाराज मेरे से तो कुछ भी नहीं बनता हैं इसलिए जैसे आप कहें वैसा करुं। तब आपने छोटी सी जगह बनवादी तथा उसमें आपकी आज्ञा प्रमाण श्री माधवराय जी को पधराए। धोती उपरणा धराए। पाग का शृंगार किया। आपने उस ब्राह्मण से कहा तुम इसी रीति से नित्य सेवा करना और जो मिले उसका भोग धरना पीछे श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी की आज्ञा लेकर अपनी बैठक में पधारे। कदंबकुंड में स्नान कर सप्ताह आरंभ की। वहाँ श्री ठाकुरजी नित्य सेवा करने को पधारते। वहाँ महा अलौकिक आनन्द हुआ। ऐसा माहात्म्य देखकर अनेक जीव आपके शरण आये इसके पीछ आप वहाँ से माधवरायजी से आज्ञा लेकर विजय की वहाँ से गुप्त प्रयाग क्षेत्र में पधारे।

67-गुप्त प्रयाग, पोस्ट देलवाड़ा जिला जूंनागढ़
पिन ३६२५१०

बैठक चरित्र

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक माधव सरस्वती पर है। वहां आपने स्नान किया पीछे श्रीमाधवरायजी के दर्शन कर आप मूल द्वारिका को पधारे। वहाँ से गुप्त प्रयाग पधारे। वहाँ प्रयागकुण्ड के ऊपर छोंकर के नीचे बिराजे। तब दामोदर दास को आज्ञा की सारस्वतकल्प में मुख्य प्रयागराज तीर्थ यही है। यहाँ पर श्रीगंगा यमुना कुंड है। पीछे आप प्रयागराज में स्नान कर अपनी बैठक में पधारे। दूसरे दिन सवेरे आपने भागवत का पारायण प्रारंभ किया। उस समय एक ब्राह्मण आया उसने आकर आपको साष्टांग दण्डवत् की। तथा प्रार्थना की महाराज बहुत दिनों से आपका भजन स्मरण करता था। सब दिनों का फल आज सिद्ध हुआ है। आपने आज्ञा की तू पहले कहाँ रहता था। यहाँ कब से आया है। तब उस ब्राह्मण ने विनती की महाराज में पहले पंढरपुर में रहता था। उस समय मैंने अपने मन में यह विचार किया था कि सब शास्त्रों में मुख्य श्रीमद्भागवत है इसलिए मैं नित्य पाठ करता था। तब विट्ठलनाथजी प्रसन्न हुए और आज्ञा की तू वर मांग उस समय मैने यह मांगा मुझे व्रजलीला के दर्शन हो आपने आज्ञा की तूने ऐसा वर मांगा है जो किसी को दिया नहीं जा सकता है। किन्तु मेरा वरदान खाली नहीं जायेगा। इसलिए प्रभासक्षेत्र के पास गुप्त प्रयाग है वहाँ तू जाकर बैठ। थोड़े दिन पश्चात् श्रीपूर्णपुरुषोत्तम का अवतार होगा। उनका नाम श्रीवल्लभाचार्यजी जगत में प्रसिद्ध होगा। वे पृथ्वी परिक्रमा के मिष से सकल तीर्थों को सनाथ करेंगे। तब तेरा मनोरथ पूर्ण करेंगे। मैंने विनती की मैं उनको कैसे जानूंगा। तब श्रीविट्ठलनाथजी ने आज्ञा की जिसदिन श्री वल्लभाचार्यजी पधारेंगे उस दिन हम तेरे को बतायेंगे। मैं उसी दिन से आपका भजन स्मरण करता हूँ। आज मेरे को श्रीविट्ठलनाथजी ने बताया है। तू जिसके लिए भजन, स्मरण करता है

वे श्री वल्लभाचार्यजी यहाँ पधारे हैं। तेरा सर्व मनोरथ पूर्ण करेंगे। इसलिए महाराज अब में यहाँ आया हूँ। मेरी विनती है आप मेरा उद्धार करो। तब श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की अब तू प्रयाग कुंड में स्नान कर आ। पीछे श्रीआचार्यजी ने उसको नाम सुनाए। तथा उसको आज्ञा की आज के आठवें दिन तेरा अन्तकाल होगा। तब श्री गिरिराज की तलहटी में तेरा जन्म होगा। वहाँ तेरा गोपीनाथ दास ग्वाल नाम होगा। श्रीगुसांईजी तेरेको अंगीकर करेंगे और गायों की सेवा में रखेंगे। उस समय श्रीनाथजी तेरे को सब लीलाओं के दर्शन करायेंगे। ऐसी श्रीआचार्यजी ने आज्ञा की तब उस ब्राह्मण ने साष्टांग दंडवत् करके कहा–"निजेच्छातः करिष्यति" पीछे आपने सप्ताह की समाप्ति की तब महा अलौकिक आनंद हुआ वह ब्राह्मण दंडवत् करके अपने आश्रम को गया। उसके पीछे उसका काल आया। इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी ने अपने चरणारविन्द की रज द्वारा वहाँ अनेक तामसी जीवों को अंगीकार किया। पीछे आपने गुप्त प्रयाग से विजय किया तथा गुजरात में तगड़ी में पधारे।

68-तगड़ी, अहमदाबाद, बोटाद मार्गपर पिन– ३८२२५०

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक तगड़ी में है। वहाँ एक ब्राह्मण गृहस्थ था उसके घर के आगे एक चोंतरा (चबूतरा) बहुत सुन्दर था। उस पर आप

बिराजे। तथा रात्रि को वहीं पोढ़े तब उस ब्राह्मण के दस पांच गाय तथा दस पांच भेंस थी। उसके पांच सेर मारवन नित्य होता था। उस समय शीतकाल के दिन थे। सवेरे ही उठकर उस ब्राह्मणकी स्त्री दही मंथन करके कूआ पर जल भरने गई। कूआ दूर था इस कारण उसको आने में विलब हुआ। उस ब्राह्मण के दो लड़के थे। एक तो पांच वर्ष का और एक सात वर्ष का था। दोनों लड़के जागे और वे जाकर मथनियां में से माखन खाने लगे। यह देखकर उस ब्राह्मण का प्रेम उत्पन्न हुआ। उस समय उस ब्राह्मण ने बाहर आकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु को साष्टांग दंडवत् कर विनती की महाराज आप भीतर पधार कर देखिये श्रीकृष्ण चन्द्र और बलदाऊ माखन खाते हैं। श्रीआचार्यजी ने पधारकर देखा तो वे दोनों लड़के माखन खा रहे हैं। तब आपने आज्ञा की तुमको भागवत् लीला स्फूर्त हुई है। इसलिए तुम स्त्री के सामने जाओ। क्योंकि स्त्री का स्वभाव लोभी होता है। वह थोड़े से माखन के लिए बालकों को मारेगी। यह ठीक नहीं है। तुम्हारे ऊपर श्रीकृष्ण बलदाऊ का स्नेह प्रकट हुआ हैं तुम जाकर स्त्री को समझाओ। वह इन बालकों को कंठ से लगाकर प्यार करे कहे कि बलिजाऊं श्रीकृष्ण बलराम तुमने अच्छा किया जो माखन खाया। तब वह ब्राह्मण स्त्री के सामने गया तथा उसने स्त्री को समझाकर सब वृत्तांत कहा तथा यह कहा कि अपने द्वार महापुरुष पधारे है उनकी कृपा से यह भाग्योदय हुआ है। उस की स्त्री ने कहा ठीक है। मैं प्यार करके वैसे ही करूंगी। उस स्त्री ने आकर जल का पात्र एक ओर रखा। तथा उन स्त्री पुरुष ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु को साष्टांग दंडवत की। पीछे उस स्त्री ने घर के भीतर जा करके उन बालकों को कंठ से लगाकर कहा जो बलिजाऊं लाल तुमने भली की जो माखन खाया। उस समय उस स्त्री पुरुष को तथा

श्रीआचार्यजी के सब सेवकों को अलौकिक लीला का दर्शन हुआ। पीछे उस ब्राह्मण ने प्रार्थना की महाराज कृपा करके हमको शरण लीजिये। तब श्रीआचार्यजी ने कृपा कर के उन स्त्री पुरुष को तथा उन दोनों पुत्रों को नाम सुनाए और निवेदन करवाये। पीछे आपने वहाँ सप्ताह की तब अनिर्वचनीय सुख हुआ। बाद में उन चारों को लीला में प्राप्त कराया। तब दामोदर दास ने विनती की महाराज आपने थोड़े ही दिन में आज्ञा दी। श्रीआचार्यजी ने कहा कि वे जीव लीला संबंधी थे। इस कारण लीला में प्राप्त हुए। पीछे श्रीआचार्यजी ने तगड़ी से विजय की और गुजरात में नरोड़ा पधारे।

69- नरोडा–नरोडारोड, अहमदाबाद
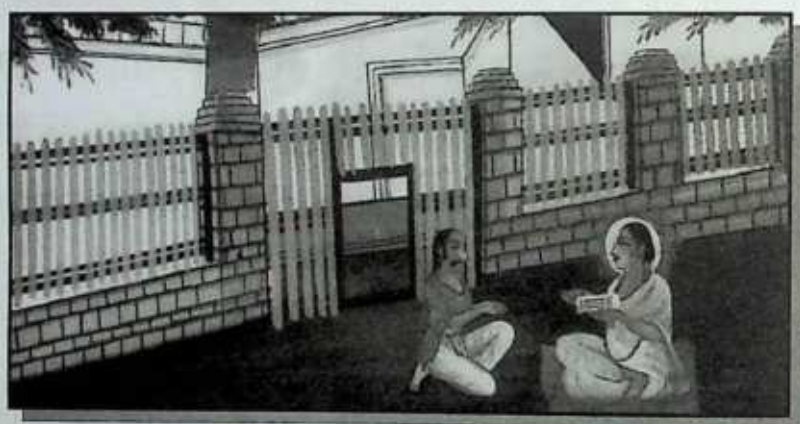
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक नरोड़ा में गोपालदास के घर में है। वहाँ आप बिराजे। वहाँ आपने गोपालदास को साक्षात् स्वरूपानन्द का अनुभव करवाया। पीछे आपने नाम देने की आज्ञा दी। तब गोपालदास ने विनती की महाराज अब आप कृपाकर के मेरे को एक भगवद् स्वरूप पधरा दो। तब आपने श्रीठाकुरजी का स्वरूप पधरा दिया। उन गोपाल दास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बधाई तथा चोखड़ा बहुत किये है। वे गोपालदासजी आनंद में मगन रहते थे। पीछे श्री आचार्यजी ने सप्ताह पारायण की। तब अनिर्वचनीय

सुख हुआ। उसके पीछे आपने नरोड़ा से विजय की वहाँ से गोधरा पधारे।

70- गोधरा–राणाव्यासमार्ग, पटेल बाजार गोधरा, जि. पंचमहाल गुजरात
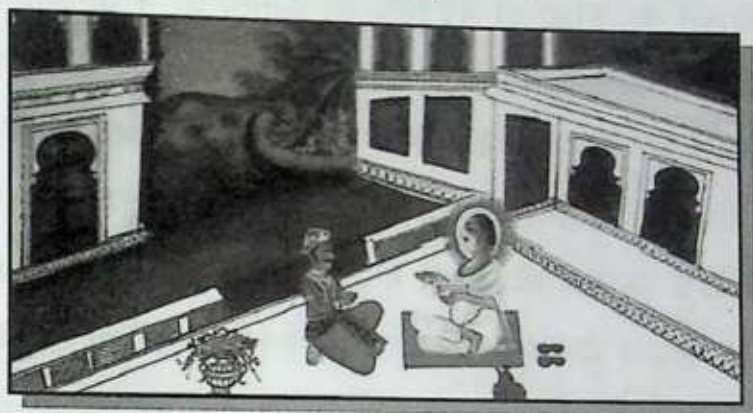
गोधरा में राणा व्यास के घर में आप बिराजे। उन राणा व्यास को छः शास्त्रों का ज्ञान था। वे बड़े पंडित थे। दक्षिण तथा काशी में सभी पंडितों को जीता था इस कारण से उनके मन में बड़ा गर्व था। मेरे समान कोई पंडित नहीं है। उन्होंने फिर काशी में सभाकी तब राणा व्यास हार गये। तब मन में बड़ा ताप एवं क्लेश हुआ। मन में आया कि मैं अब मुह क्या दिखाऊं। इसलिए मैं तो श्रीगंगाजी में डूब मरूं। यह निश्चय कर के गंगा तट ऊपर जाकर बैठे। उस समय श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास मेघन को साथ ले सन्ध्या वंदन करने श्रीगंगा तट पर पधारे थे। वहाँ राणा व्यास बैठे थे। तब भगवद् इच्छा से कृष्णदास ने श्रीमहाप्रभु से विनती की महाराज जो आपघात करके श्रीगंगाजी में डूबकर मरता है उसका क्या फल सिद्ध होता है। श्रीआचार्यजी ने कहा आत्महत्या करने वाले को श्रीगंगाजी भी मुक्त नहीं करती है। वह तो सात जन्म तक वैसे ही करता रहता है। तथा उसको नरक की प्राप्ति होती हैं

उसका यह लोक और परलोक दोनों ही बिगड़ते हैं। उसका उद्धार कभी नहीं होता है। यह सब बात राणा व्यास ने सुनी। तब राणा व्यास ने आकर श्रीआचार्यजी को साष्टांग दंडवत् की। उसने कहा महाराज आपतो साक्षात् ईश्वर हो। आपने यह आज्ञा तो मेरे लिए की हैं नहीं तो मैं तो अभी श्रीगंगाजी में डूबकर मर रहा था। आपने कहा तेरे पर ऐसा कौन सा संकट था। राणा व्यास ने विनती की महाराज मैं दक्षिण तथा पूरब में सब पंडितों को जीत चुका हूँ। मैंने काशी में सभा की तब मैं हार गया हूँ। इसलिए मैंने अपने मन में विचार किया है कि अब श्रीगंगाजी में डूब मरना। श्रीआचार्यजी ने कहा यह तो तेरा महान अज्ञान हैं मरने से क्या होता है। जीवित रहा तो फिर विजय करेगा। पीछे आपने आज्ञा की तू अभी श्री गंगाजी में स्नान करके आ। तब वह श्री गंगाजी में स्नान करके आया। श्रीआचार्यजी ने उसको नाम सुनाया। पीछे आपने चतुः श्लोकी ग्रन्थ उसको पढ़ाया और आज्ञा की तू अब सवेरे जाकर सभा करना। तू जीतेगा। तब वह प्रातः काल ही राणा व्यास श्री महाप्रभु को दंडवत् करके सभा में गया। वहाँ जाकर बैठा। वहाँ के पंडितों ने कहा कि कल तो हार गया था और आज क्यों आकर बैठा है। तब उसने कहा कल तो हार गया तो क्या हुआ। आज फिर वाद करूंगा। पीछे समग्र सभा इकट्ठी हुई। तब वादारंभ करके क्षण मात्र में राणा व्यास ने सब पंडितों को निरुत्तर कर दिया। इस कारण वह अपने मन में बहुत प्रसन्न हुआ तथा उसने जाना कि यह सब प्रताप श्रीआचार्यजी का है। राणा व्यास ने श्री महाप्रभुजी के पास आकर साष्टांग दंडवत् की तथा विनती की महाराज आपकीं कृपा से मैंने सब पंडितों को निरुत्तर कर दिये। तब आपने कहा कि तू श्री गंगाजी में डूबता तो सभा कौन जीतता। तू जीवित रहा तो जीता। राणा व्यास ने श्रीआचार्यजी से

प्रार्थना की महाराज मेरे को आप भगवद् स्वरूप पधरादो। तब आपने श्रीबालकृष्णजी का स्वरूप पधरा दिया। उनकी सेवा राणा व्यास गोधरा में करते थे। जब श्रीआचार्यजी गोधरा पधारते थे तब राणा व्यास के घर बिराजते थे। वहाँ रजपूतानी को आपने अंगीकार किया था। श्री वेणुगीत का श्रीसुबोधिनी के अनुसार प्रसंग राणा व्यास ने पूछा तब श्रीआचार्यजी ने व्याख्यान किया। व्याख्यान करते हुए तीन दिन और तीन रात्रि व्यतीत हुई। ऐसा रसावेश हुआ कि किसी को भी देहानुसंधान नहीं रहा। पीछे आपने सभी को सावधान किया तथा वहाँ सप्ताह की। वहाँ महा अलौकिक आनन्द हुआ। इसके बाद श्रीआचार्यजी वहाँ से गोधरा के लिए विजय की तथा खेरालु पधारे।

71-खेरालू–श्रीमालीवास, खेरालू जिला मेहसाणा
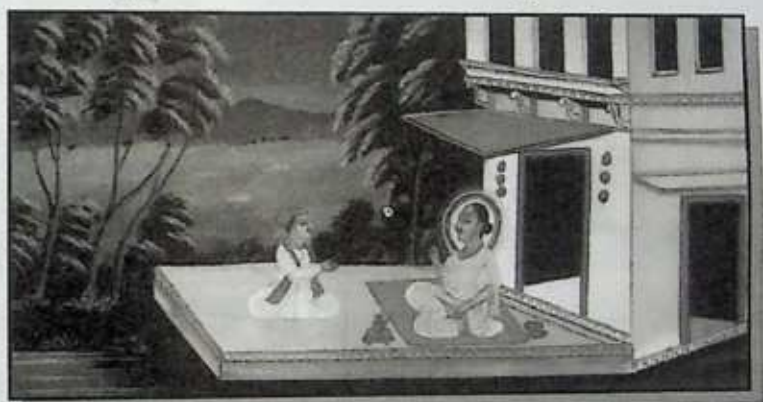
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक खेरालू में जगन्नाथ जोशी के घर में है। श्रीआचार्यजी जगन्नाथ जोशी की माता के ऊपर बहुत प्रसन्न रहते थे। इस कारण वे उसके घरपर ही बिराजते थे। वहाँ आप पाक भोग धर परम प्रीति से अरोगते थे। आप वहाँ कथा कहते उस कथा में रसावेश बहुत होता उस समय में जगन्नाथ जोशी ने एक श्लोक युगलगीत का पूछा। उसका व्याख्यान करते आपके तीन प्रहर व्यतीत हो गये। वचनामृत की अद्भुत वर्षा की। जिससे किसी

सेवक को देह अनुसंधान नहीं रहा। पीछे श्रीआचार्यजी ने सब को सावधान किया। इसके बाद आपने भागवत सप्ताह की तब वहाँ महा अलौकिक आनन्द हुआ। पीछे श्रीआचार्यजी ने खेरालू से विजय की तथा सिद्धपुर पट्टन पधारे।

72-सिद्धपुर पट्टन–बिन्दुसरोवर रोड़, सिद्धपुर जिला मेहसाणा

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु खेरलू से सिद्धपुर पधारे। वहाँ बिन्दुसरोवर पर जाकर बिराजे। वहाँ आपने दामोदर दास को आज्ञा की यह श्रीकर्दम ऋषि का आश्रम हैं यहां कपिलदेवजी ने श्री देव हुतीजी को सांख्ययोग का उपदेश दिया। तब श्री देवहुतीजी ने जलरूप होकर के बिन्दु सरोवर में प्रवेश किया ऐसा कहकर पीछे श्रीआचार्यजी ने बिन्दु सरोवर में स्नान किया। वहाँ पर नित्य नियम किया। इसके बाद आपने उस स्थान पर श्री भागवत सप्ताह की तब अनिर्वचनीय सुख हुआ। जब मायावादियों ने सुना कि यहाँ श्रीवल्लभाचार्यजी पध ारे हैं। उनने पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर इन चारों दिशाओं में दिग्विजय करके मायामत का खण्डनकर भक्तिमार्ग का स्थापन किया है। इनको साक्षात् ईश्वर का अवतार सुनते हैं। ईश्वर के बिना इतना कार्य नहीं हो सकता हैं। इसलिए हम सब मिलकर चलें उनसे चर्चा करेंगे। कदाचित् अगर हम हार जायेंगे तो उनकी शरण जायेंगे। इसके बाद पांच दस पंडित मिलकर श्रीआचार्यजी के दर्शन के लिए आये। नमस्कार कर सन्मुख बैठे। तब चर्चा हुई क्षण मात्र में

आपने सब मायावादियों को निरुत्तर करके ब्रह्मवाद का स्थापन किया। सिद्धपुर में जय जयकार हुआ। ऐसा माहात्म्य देखकर अनेकजीव आपकी शरण आये। वहां से विजयकर आप अवंतिका पुरी पधारे।

73-उज्जैन–गोमती कुण्ड, सांदीपनी आश्रम के पास उज्जैन, मध्यप्रदेश
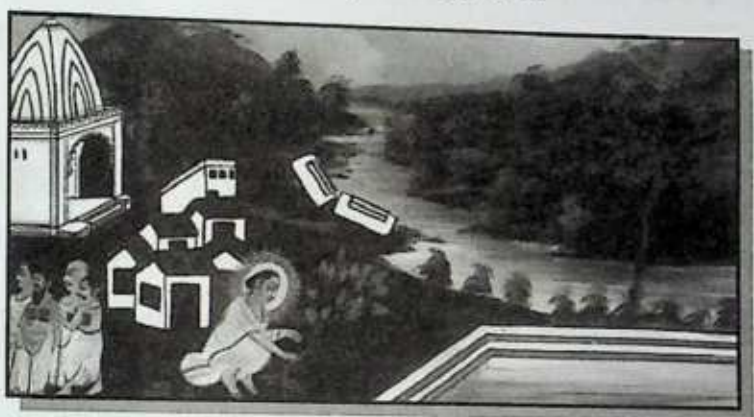
एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अवंतिकापुरी उज्जैन पधारे। वहां गोमती कुण्ड के ऊपर पीपल के वृक्ष के नीचे बिराजे। पीछे क्षिप्रानदीं में स्नान कर गोमती कुंड के ऊपर पधारे। तब आपने दामोदर दास को आज्ञा की दमला यह अवंतिका पुरी है। यह श्रीमहादेवजी की साढे तीन पुरी में है। यहां के स्वामी श्री महांकालेश्वरजी है। इसलिए यहां मायामतका खंडन कर ब्रहावाद का स्थापन होगा। यहां दैवी जीव बहुत है उनका उद्धार होगा। यहां पहले सप्ताह होगी। परन्तु यहां छाया नहीं है। तब दामोदर दास ने कहा महाराज आपकी इच्छा से अनेक वृक्ष होते हैं। एक वृक्ष करना इसमें कौनसी बड़ी बात है। इतने में ही एक पीपल का पत्ता उड़ता चला आया। उस पत्ते को आपने रेती में गाड़ दिया तथा संध्या का जल छिडक् कर कहा कि कल

सवेरे हम सप्ताह का आरंभ करेंगे। वहां तक तू बड़ा वृक्ष हो जाना। पीछे श्रीआचार्यजी बगीचे में पधारे वहां पाक कर श्रीठाकुरजी को समर्पित किया। इसके पश्चात् रात्रिको कथा हुई पीछे पोढ़गये। सवरे ब्रह्ममुहूर्त में श्रीआचार्यजी ने स्नान किया। तब देखते हैं उस पीपल के पत्ते में से बड़ा पीपल का वृक्ष हो गया है। उसका फैलाव बड़े बगीचे में हो गया है। यह देखकर उस वृक्ष के नीचे श्रीआचार्यजी बिराजे। वहां श्री भागवत का पारायण किया। पीछे जो कोई गोमती में स्नान करने आता वह उस नूतन वृक्ष को देखकर अपने मन में बड़ा आश्चर्य करता। यह गोमती कुंडपर अभी तक कोई वृक्ष नहीं था और यह एक रात्रि में ही इतना बड़ा वृक्ष हो गया। सैंकड़ो वर्ष का वृक्ष हो उसका भी इतना फैलाव नहीं होता है जैसा इसका है। इसलिए यह तो कुछ कारण है। इस प्रकार से सर्वजन परस्पर चर्चा करने लगे। कहने लगे यहाँ श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं ऐसा सुनने में आता है। उनने पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाओं में दिग्विजय की है मायामत का खंडन कर ब्रह्मवाद का स्थापन किया हैं ऐसा भी सुना है ये अग्निकुंड से भगवद् अवतार प्रकट हुए हैं। एक रात्रि में इतना बड़ा वृक्ष हुआ है। यह उन्हींने किया होगा। इस प्रकार प्रकट ईश्वर का प्रताप देखकर वहाँ के मायावादी सब अपने मन में भयभीत हुए। तब उनने विचार किया कि उनसे चर्चा करने की अपनी सामर्थ्य नहीं है। उनके तेज के सामने अपने से नहीं बोला जायेगा। कारण यह है कि उनको भस्म करने में जरा भी समय नहीं लगेगा। इसलिए अपने प्राणों की रक्षा चाहते हो तो यहाँ से भागना ही श्रेयस्कर होगा। तब सभी पंडित अवंतिका छोड़ कर आस पास के गांवों में भाग गये। वहाँ श्रीमहादेवजी के दो कृपा पात्र पंडित रहे। उनको श्री महादेवजी साक्षात् दर्शन देते तब वे खाना

पीना करते थे। वहाँ श्रीआचार्यजी ने सप्ताह की वहाँ श्री महादेवजी नित्य कथा सुनने को आते थे। जब आप कथा कह चुकते तब श्री महादेवजी अपने स्थान को पधारते। एक दिन उन सेवकों को दर्शन नहीं हुए तब वे बैठे रहे। जब श्री महादेवजी पधारे तब उनको दर्शन हुआ। उन सेवकों ने प्रार्थना की महाराज अभी तक दर्शन नहीं हुआ उसका क्या कारण हैं श्रीमहादेवजी ने कहा कि श्रीवल्लभाचार्यजी यहाँ पधारे हैं वे कथा कहते हैं मैं सुनने को गया था। वहाँ से अभी कथा सुनकर आया हूँ। तब उन पंडितों ने कहा कि महाराज श्री महाप्रभुजी के कारण सब पंडित गाँव छोड़कर भाग गये हैं। हमने ऐसा सुना है कि उनने मायामत का खंडन करके भक्तिमार्ग का स्थापन किया है और आप तो नित्य कथा सुनने को जात हो। तब श्री महादेवजी ने आज्ञा की हमको पहले भगवद् आज्ञा हुई थी की मायामत प्रकट करो। अब आपकी इच्छा ऐसी है मायामत का खंडन कर भक्तिमार्ग की स्थापना करना। इसलिए उनकी इच्छा हो वैसा करते हैं। पीछे उन दोनों भक्तों से श्री महादेवजी ने कहा कि मैं प्रातः काल ही कथा सुनने को जाता हूँ। तुमको आना हो तो जल्दी आना। नहीं तो कथा सुनकर आऊंगा तब दर्शन होंगे। जब तक सप्ताह की कथा होगी तब तक मैं कथा नित्य सुनूंगा। इस प्रकार श्रीमहादेवजी नित्य कथा सुनते। जब कथा संपूर्ण हुई तब श्री महादेवजी ने नमस्कार किया। तब श्रीआचार्यजी ने श्रीमहादेवजी से प्रार्थना की महाराज अवंतिका पुरी के स्वामी तो आप हैं और मायावादी यहाँ से भाग गये हैं उनमें से कोई दिखता नहीं हैं हमको तो मायावाद का खंडन करके ब्रह्मवाद का स्थापन करना है। इसलिए आप ही चर्चा करो। नहीं तो मायावादियों को बुलाओ। श्रीमहादेवजी ने कहा कि आप तो षड्गुण संपन्न हो। आपने पहले ही

ईश्वरता दिखाई है। एक रात्रि में इतना बड़ा पीपल का वृक्ष किया। इसको देखकर भय के कारण सब भाग गये हैं। जीव की क्या सामर्थ्य है जो ईश्वर के संमुख आवे। तब श्रीआचार्यजी ने कहा हम सब शास्त्रों से जीतेंगे। श्रीमहादेवजी अपने स्थान को पधारे। सब मायावादी पंडितों को श्रीमहादेवजी ने स्वप्न में बताया कि तुम क्यों भाग गये हो।

मैं तुम्हारे पक्ष में हूँ। तुम निर्भय होकर आओ और श्रीआचार्यजी से चर्चा करो। पीछे सब मायावादी अवंतिका में आये। सब ने मिलकर एक मन किया अपनी रक्षा तो श्री महांकालेश्वर जी करेंगे। तब सभी श्रीआचार्यजी के पास आये । श्रीआचार्यजी ने सब को बैठाया। श्रीमहादेवजी भी गुप्त रूप से पधारे तथा आसन पर बिराजे। श्रीआचार्यजी ने सब को आज्ञा की तुम सब से चर्चा नही होगी । तुम मे षट् शास्त्र के वक्ता हो वह एक एक जन चर्चा करे। सब ने मिलकर एक साथ प्रश्न किया। सुनकर श्रीआचार्यजी ने मुस्कराकर बहुत मुख करके उत्तर दिये । एक ही वचन में सबको निरन्तर कर दिया तब अवंतिका पुरी में जय जयकार हुआ श्रीमहादेवजी बडे प्रसन्न हुए। इस प्रकार श्रीआचार्यजी ने अवंतिका पुरी में मायामत का खंडन कर भक्ति मार्ग का स्थापन किया। सभी पंडितों ने मिलकर श्रीआचार्यजी के दोनो हाथ जोडकर विनती की महाराज हम को शरण लीजिये। श्रीआचार्यजी ने कहा कि तुम रूद्राक्ष उतारकर श्री गोमती कुंड में स्नानकर के आओ सभी पंडित रूद्राश उतार कर श्रीगोमती कुंड में स्नान करके आये तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सभी को नाम सुनाये और तुलसी की माला देकर वैष्णव किये। उन पंडितों ने रूद्राक्ष की माला उतारी तब उसका बहुत बडा ढेर हो गया। पीछे सब

बैठक चरित्र

पंडितों ने मिलकर श्रीआचार्यजी से विनती की महाराज जिसको वेद शास्त्र निरूपण करते है उन्ही के साक्षात् श्रीकृष्णचन्द्र के अवतार का हम को आज दर्शन हुआ है। पीछे अनेक जीव श्रीआचार्यजी के शरण आये तथा दंडवत कर अपने घर गये। श्रीमहादेवजी ने श्रीआचार्यजी से कहा की महाराज पहले तो आपने यह आज्ञा की थी कि हम शास्त्र रीति से पंडितो को जीतेंगे। किन्तु आपने तो ईश्वरता दिखाई उसका क्या कारण है। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि एक प्राचीन बात है उसको आप सुनिये जब श्री रामानुजाचार्य जी दिग्विजय कर काशी में पधारे तब श्रीशंकराचार्य से चर्चा हुई। श्रीशंकरचार्यजी तो आपका अवतार है। आपको तो पांच मुख का अधिकार है। इसलिए श्रीशंकराचार्य ने पांच मुख करके प्रश्न किया श्रीरामानुजाचार्यजी भी श्री शेष जी का अवतार है उनको सहस्र मुख का अधिकार है इसलिए उनने सहस्र मुख से श्रीशंकराचार्य को निरूतर किया । वैसे ही अभी यदि एक एक जन प्रश्न करता तो एक एक का उत्तर देते। परन्तु एक साथ उनने अलग अलग विषयों के प्रश्न किये। उस समय आप तो पास ही बिराजे थे। आपने उनको क्यो नही समझाया। इसलिए हमने उतने मुख से एक साथ सभी को निरन्तर किये फिर भी आज्ञा करते हो कि आपने ईश्वरता दिखलाई तब ऐसे प्रश्न सुनकर श्रीमहादेवजी बहुत प्रसन्न हुए। पीछे श्रीआचार्यजी से मिलकर अपने स्थान पर पधारे यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभु के शरण आये। तब अवंतिका पुरी में जय जय कार हुआ। वह पीपल का वृक्ष जो रोपण किया वह अद्यापि दर्शन देता है। इस प्रकार का चरित्र कर आप श्रीपुष्करजी पधारे।

७४-पुष्कर, ब्रह्माजी के मंदिर के आगे वल्लभ घाट पुष्कर जिला अजमेर (राज.)
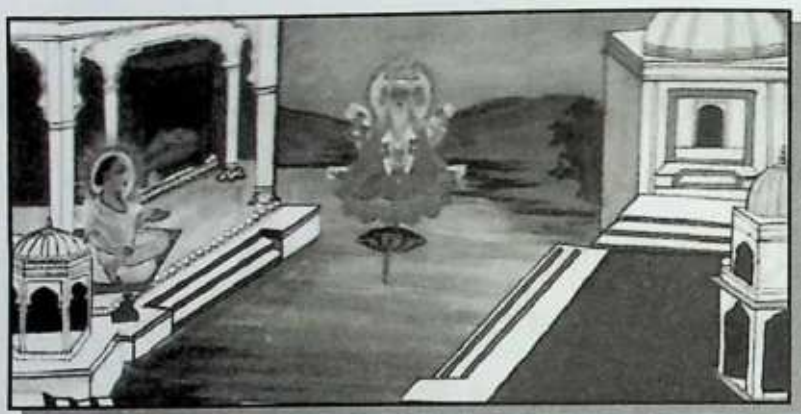
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक पुष्कर जी वल्लभ घाट के ऊपर छोंकर के नीचे है। वहां कृष्णदास मेघन को आपने आज्ञा की पुष्कर जी सब तीर्थों का पिता रूप है। ऐसा पुराणो में वर्णन किया है *"माता गंगा समं तीर्थं पिता पुष्कर मेव च"* श्री ब्रह्माजी की उत्पत्ति नाभी कमल से हुई है वह यंही से हुई है। यहां ब्रह्माजी और सावित्री जी का मंदिर है। इसलिए यहां कुछ दिन बिराजेंगे। तब पुष्कर जी ब्राह्मण का स्वरूप धर कर आपके पास आये। उनने विनती की महाराज आप देवी जीवों के उद्धार्थ मायामत का खंडन कर ब्रह्मवाद स्थापनार्थ पृथ्वी तल पर प्रकट हुए हो इसलिए पधारकर मेरे को सनाथ करिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने आज्ञा की आप तो तीर्थराज होकर क्यो घबराते हो तब श्रीपुष्करजी ने कहा कि महाराज कलि काल में सर्वतीर्थ सामर्थ्य हीन हो गये है। पीछे श्रीपुष्करजी आज्ञा लेकर अपने स्थान को पधारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सेवको सहित श्रीपुष्करजी में स्नान करके आनन्द प्राप्त किया। पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने वहां भागवत सप्ताह पारायण किया। तब अनिर्वचनीय सुख हुआ। वहां पुष्कर जी नित्य कथा

सुनने को पधारते थे। वहां श्रीआचार्यजी ने अनेक तामसी जीवों का उद्धार किया। इसके बाद आप श्री पुष्कर जी से विदा होकर कुरूक्षेत्र पधारें।

75-कुरूक्षेत्र – सरस्वती कुण्ड, शक्ति देवी के मंदिर के पास कुरूक्षेत्र

श्रीआचार्य महाप्रभु की बैठक कुरूक्षेत्र में कुंड के ऊपर है। वहां आप बिराजे कृष्णदास मेघन को आज्ञा की कि यह क्षेत्र बडा धर्म क्षेत्र है। यहां कौरव पांडवो का महाभारत युद्ध हुआ है। श्रीभगवान ने श्रीमद्भगवद्गीता अर्जुन को सुनाकर विराट स्वरूप का दर्शन यहां ही दिया था। इस कारण यहां सप्ताह करेंगें। पीछे श्रीआचार्यजी ने वहां श्रीभावगत का पारायण किया तब वहां महा अलौकिक आनंद हुआ। उन दिनों में कथा में युगलगीत का प्रसंग चला था उस समय ऐसा रसावेश हुआ कि किसी सेवक को देहानुसन्धान नहीं रहा। तब श्रीआचार्यजी ने अपने सेवको को सावधान किया। वहीं अपने चरणारविन्द की रज द्वारा अनेक देवी जीवों का उद्धार किया। इसके बाद श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने वहां से विजय किया और हरिद्वार पधारे।

76-हर की पेडी के मार्ग पर हरिद्वार उत्तरांचल

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक हरिद्वार में कनखल क्षेत्र के ऊपर है। वहां आप संवत् 1576के वर्ष में पधारे। तब कुंभ का बृहस्पति था। उस समय लक्षावधि मनुष्य गंगा स्नान करने के लिए आये थे। चार घडी पिछली रात्रि स्नान का पर्व काल समय था। तब श्रीआचार्यजी ने अपने सेवको के साथ मन में विचार किया कि भीड़ तो बहुत है लक्षावधि मनुष्य स्नान को आए है इसलिए यहां कुछ आलौकिक चरित्र दिखावें तो प्रसिद्धि बहुत हो जाय किन्तु गुप्त कार्य करना यहां योगमाया और काल दोनो ही प्राप्त है। तथा कह रहे है महाराज क्या आज्ञा है तब आपने योगमाया को आज्ञा की तुम सभी को निद्रावशकर दो। काल को आज्ञा की कि बह्ममुहूर्त में स्नान का पर्वकाल है। जहां तक हम स्नान करके कनखल तीर्थ के ऊपर जाकर विराजे और सब प्रजा स्नान करचुके वहां तक पुण्यकाल रहे। क्योकि ये श्रद्धा पूर्वक दूर दूर अलग से जन आये है। इसलिए इनको स्नान में देरी हो सो भी अश्रद्धा उत्पन्न नहीं हो। यदि अश्रद्धा होगी तो तीर्थ का फल नही होगा। इस कारण हमारे स्नान करने के पीछे सब स्नान करें। वहां तक पर्वकाल स्थिर रहे। ऐसा आप करो।

तब योगमाया और काल तथास्तु कहकर गये। इसके बाद आप वहां से उठकर हरि की पोडी पर पधारे। दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन,

वासुदेव दास छकड़ा, माधव भट्ट काश्मीरी, गोविन्द दुब्बे सांचोरा ब्राह्मण, सब समाज साथ था उनके साथ आपने वहां स्नान किया। पीछे संध्या वंदनकर एक मुहूर्त तक पंचाक्षर का जप किया। उस समय संपूर्ण सृष्टि निद्रावश देखी। इसके बाद आप कनखल क्षेत्र पर अपनी बैठक में पधारे। तब योगमाया को आज्ञा की अब सब की निद्रा खोल दो। योगमाया ने सब की निद्रा खोल दी। तब सभी जाग गये। क्या देखते है कि स्नान का समय हो गया है सभी ने पुण्यकाल में स्नान किया उसके पीछे पर्वकाल का तिरोधान हुआ। तब हरिद्वार में जय जय कार हुआ। यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीआचार्यजी की शरण आये। इसके बाद आपने वहां से विजय की तथा बदरिका श्रम पधारे।

77-बदरिका श्रम– मन्दिर के पास, ब्रदीनाथ उत्तरांचल

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक बदरिकाश्रम में है वहां आप बिराजे। उस दिन वामन द्वादशी थी। इसलिए कृष्णदास मेघन को आज्ञा की यहां फलाहार खोजकर लाओ। तब श्रीबद्रिनाथजी ने विचार किया कि मेरे आश्रम में श्रीवल्लभाचार्यजी पाहुने पधारे है। इसलिए भोजन करें तो अच्छा। तब कृष्णदास मेघन को बद्रिनाथजी ने ब्राह्मण भेष से कहा तुम कहां जाते हो। कृष्णदास ने कहा कि महाराज में फलाहार लेने को जाता हूं। तब श्रीबद्रिनारायणजी ने कहा कि बहुत अच्छी बात है। जिससे स्वामी सुख पावे

वही सेवक का कर्त्तव्य है। किन्तु फलाहार तो इस झाडी में नही मिलता है। तब कृष्णदास ने आकर श्रीआचार्यजी से विनती की महाराजाधिराज फलाहार तो यहा कुछ भी नहीं मिलता है उसी समय श्रीबद्रिकानाथजी भी श्रीआचार्यजी से मिलने पधारे। उनने भी कहा कि मैने भी आपके लिए फलाहार बहुत खोजा परन्तु कहीं मिलता नही है। इसलिए अब आप रसोई कर के भोजन करना। तब श्रीआचार्यजी ने प्रार्थना की जयन्ती के दिन अन्न का भोजन कैसे करें। श्रीबद्रिनाथजी ने कहा *"उत्सवान्ते पारणम्"* तब श्रीआचार्यजी ने अपने मन में विचार किया कि अब भगवद् आज्ञा ऐसी ही हुई है इसलिए श्री वामन जी का जन्म हुए पीछे भोग समर्पित कर भोग सराकर भोजन किया। पीछे सेवको ने भी महाप्रसाद लिया। इसके बाद आपने वहां श्रीमद् भागवत की सप्ताह की। तब महा अलौकिक आनन्द हुआ। श्रीबद्रिनाथजी ने आज्ञा की यहां जितने देवी जीव हो उन सभी को अंगीकार करिये। तब आपने मुस्कराकर कहा जो आपकी इच्छा होगी वही करेंगें। श्रीआचार्यजी ने अपने चरणारविन्द की रज द्वारा अनेक तामसी जीवों को अंगीकार किया। इसके पश्चात् आपने बद्रिनाथजी से आज्ञा लेकर वहॉ से विजय की।

78-केदारनाथ (अप्रकट)
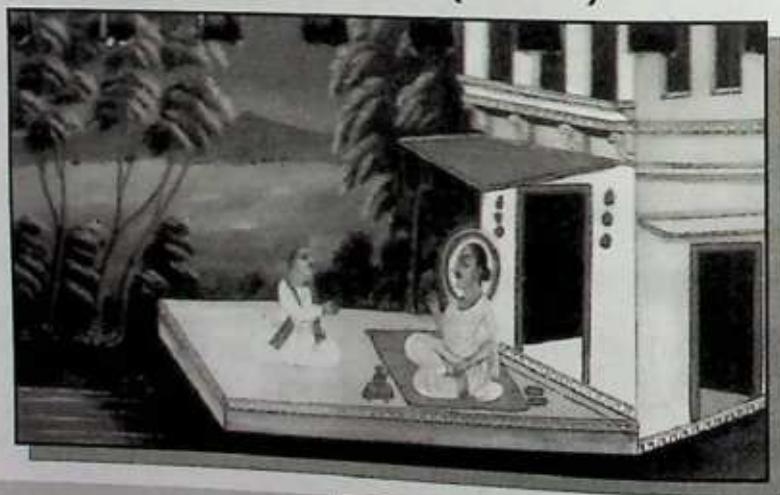
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक केदारनाथ में केदार कुंड के ऊपर है। वहाँ आप बिराजे आपने वहां श्रीभागवत का पारायण किया। सुनने को श्रीकेदारनाथजी पधारते थे। वे श्री महाप्रभुजी के निकट आकर बिराजते थे। जहाँ तक कथा होती वहाँ तक बिराजते थे। पीछे नमस्कार करके अपने स्थान को पधारते थे। एक दिन कृष्णदास मेघन ने श्रीआचार्यजी से विनती की महाराज ये योगेश्वर नित्य कथा सुनने को आते है। वे कौन है कृपा करके कहिए। श्रीआचायजी ने मुस्कराकर आज्ञा की ये श्री केदारनाथ जी पधारते है। जहां तक कथा हुई वहां तक श्रीकेदारनाथ जी नित्य कथा सुनने को पधारे। पीछे जब कथा सम्पूर्ण हुई तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपने चरणारविन्द की रज की सुगंध फैलाकर एक क्षण में सहस्रावधि जीवों का उद्धार किया। पीछे आप श्रीकेदारनाथजी से विदा होकर विजय की। पश्चात् व्यासाश्रम पधारे।

79-व्यास आश्रम, अलक नन्दा, भागीरथी संगम के पास, केशव प्रयाग बद्रीनाथ उ.प्र. (अप्रकट)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक व्यासाश्रम में है। वहां आप बिराजे। तब कृष्णदास मेघन को आज्ञा की तुम यहा खडे रहना। मैं श्रीवेदव्यास जी के दर्शन करके आता हूँ। यह आज्ञा कर आप श्रीवेदव्यासजी के आश्रम पर पधारे।

तब व्यासजी श्रीआचार्यजी को पधारे हुए जानकर सामने पधार कर आदर किया और निकट बैठाकर कहा कि आपने श्रीभागवद् की श्रीसुबोधिनीजी टीका की है वह मेरे को सुनाइये। आपने तब प्रार्थना की महाराज भ्रमर गीत का एक श्लोक कहूंगा। तब आपने एक श्लोक का व्याख्यान किया। तीन दिन तीन रात्रि व्यतीत हो गयी । श्री वेदव्यासजी ने कहा कि आपने अद्‌भुत वर्षा की है। श्रीआचार्यजी ने व्यासजी से प्रणाम पूर्वक विदा होकर पीछे पधारे। आकर देखते है कि कृष्णदास वहां ही खडा है। सभी सेवक मूर्च्छित पडे है। तब श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास से कहा कृष्णदास तू बैठा नहीं। कृष्णदास ने विनती की महाराज आपकी आज्ञा थी कि तू यहां खडा रहना । इसलिए मै खडा हूँ। श्रीआचार्यजी महाप्रभु उसके ऊपर अत्यन्त प्रसन्न हुए और कहा कि कृष्णदास तू कुछ मांग, मै तेरे पर प्रसन्न हूं, तब कृष्णदास ने तीन वस्तु मांगी। (1) महाराज मेरा मुखरता दोष जाय (2) मार्ग का सिद्धान्त ह्रदया रूढ़ हो। (3) मेरे पूर्व गुरू के घर पर आप पधारिये। (आपने) श्रीआचार्यजी ने दो वस्तु तो दी। परन्तु गुरू के घर पधारने की मना की उसका कारण कृष्णदास की वार्ता में प्रसिद्ध लिखा है। इसके पश्चात् आपने सभी सेवकों को सावधान किया। वहां आपने सप्ताह की। तब बड़ा अनिर्वचनीय सुख हुआ। पीछे आप हिमाचल पधारे।

80-हिमाचल पर्वत

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक हिमाचल पर्वत के ऊपर है। आप वहां बिराजे। जब कृष्णदास मेघन को आज्ञा की यहां सप्ताह करेंगें। पीछे आपने कथा प्रारम्भ की। हिमाचल पर्वत तब ब्राह्मण का स्वरूप धर कर श्रीआचार्यजी के दर्शन को आया। आपको साष्टांग दण्डवत् कर विनती की महाराज आपने मेरे को सनाथ किया। इसलिए अब श्रीभागवत सुनाइये आपने कृपाकर आज्ञा की कि सुखेन आया करो। पीछे दूसरे दिन आप ने सवेरे स्नान कर नित्य नियमकर श्रीभागवत की सप्ताह पारायण प्रांरम्भ की। तब हिमाचल पर्वत नित्य कथा सुनने को आते। जब कथा की समाप्ति हुई तब श्रीआचार्यजी ने वहा हजारों जीवों का उद्धार किया। पीछे आपने वहां से विजय की तथा व्यास गंगाजी पर पधारे।

81-व्यास गंगा (अप्रकट)
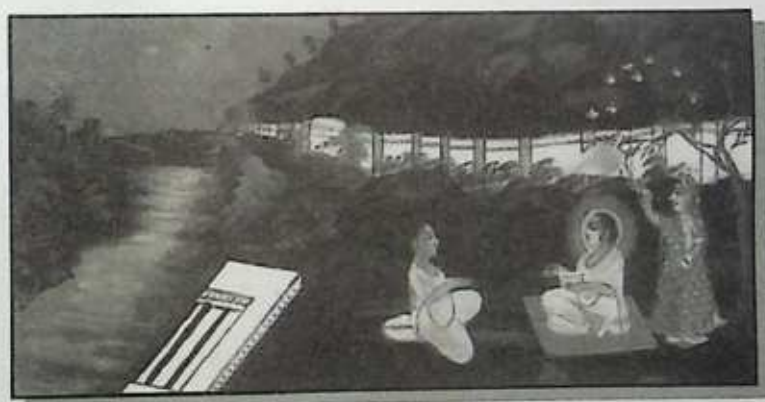
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक व्यास गंगा के तीर पर छोंकर के नीचे है। वहां आप बिराजे। तब दामोदर दास को आज्ञा की यह व्यास गंगा है। दामोदर दास ने विनती की महाराज इसका क्या कारण है। तब आपने आज्ञा की कि यही श्रीवेदव्यास का जन्म स्थान है। आपने समाधिभाषा (श्रीमद भागवत) की यहीं रचना की है। इसलिए हम भी यही श्रीभागवत सप्ताह

करेंगे। पीछे श्रीआचार्यजी ने श्री गंगा में स्नानकर श्री भागवत सप्ताह प्रारम्भ की तब महा अलौकिक आनन्द हुआ। उस समय एक स्त्री रत्न जडित आभूषण पहनकर एक पंखा हाथ में लेकर नित्य आती थी श्रीआचार्यजी महाप्रभु को साष्टांग दण्डवत् कर वाम भुजा की और खडी रहती और पंखा करती। उसको कृष्णदास मेघन ने मना किया। पीछे उस स्त्री ने सात दिन तक उसी प्रकार पंखा की सेवा की जहां तक कथा होती वहां तक वह पंखा करती थी। इसके बाद वह अन्तरध्यान हो जाती, किसी को दिखती नहीं थी। एक दिन सब सेवको ने श्रीआचार्यजी से विनती की महाराज यह अलौकिक स्त्री कौन है जो नित्य पंखा की सेवा करती है। आप कृपा करके बताओ तब पता चले। तब श्रीआचार्यजी ने मुस्कराकर आज्ञा की यह तो श्रीगंगाजी आती है। इसके पश्चात् सभी सेवको ने दंडवत की। इसके बाद आपने वहां सप्ताह की और समाप्ति की। वहां कृपा कटाक्ष द्वारा हजारों जीवों को अंगीकार किया। आप पीछे श्री व्यास गंगा से मुद्राचल मधुसूदनजी को पधारे।

82-मुद्राचल (अप्रकट)

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक मुद्राचल पर्वत के ऊपर छोंकर के नीचे है। वहां आप बिराजे। वहां श्री मधुसूदन ठाकुरजी बिराजते है। उनके दर्शन को पधारे। पीछे वहां श्रीआचार्यजी ने श्री भागवत का पारायण आरम्भ

किया। तब श्रीमधुसूदनजी कथा सुनने को पधारे। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्रीठाकुरजी को प्रणाम कर अपने पास आसन पर पधराया तथा विनती की आप परिश्रम करके क्यों पधारे। तब श्रीठाकुरजी ने कहा कि तुम इतना परिश्रम करके ऐसे विकट स्थान पर यहां तक पधारे हो इसलिए मेरे को क्या अधिक श्रम हुआ जो मै आप के निकट आया। अब मेरे को भागवत सुनाइये। श्रीआचार्यजी ने विनती की महाराज बहुत अवकाश तो नहीं है परन्तु सप्ताह तो करेंगे। तब श्रीठाकुरजी नित्य कथा सुनने को पधारते। इसलिए महा अलौकिक आनन्द हुआ। पीछे श्रीआचार्यजी ने कथा की समाप्ति कर और चरणारविन्द की रज द्वारा हजारों तामसी जीवों का उद्धार किया। इसके पश्चात् सब सेवको सहित श्री मधुसूदनजी ठाकुरजी के दर्शन को मंदिर में पधारकर श्रीठाकुरजी का सेवा श्रृंगार किया। इसके पश्चात् श्रीठाकुरजी की आज्ञा लेकर मुद्राचल से विजय की तथा व्रज में पधारे। तब श्रीगोवर्धननाथजी ने आज्ञा की अब सब कुटुम्ब सहित यहां आकर मेरी सेवा करो। अब मेरा प्राकट्य आपके यहां शीघ्र होगा। यह आज्ञा पाकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु काशी पधारे। वहां से श्री अक्काजी को पधराकर अडेल में आकर बस गये।

83-अडेल, त्रिवेणी संगम के सामने, ग्राम देवरस पो.नेनी. जिला इलाहाबाद

बैठक चरित्र
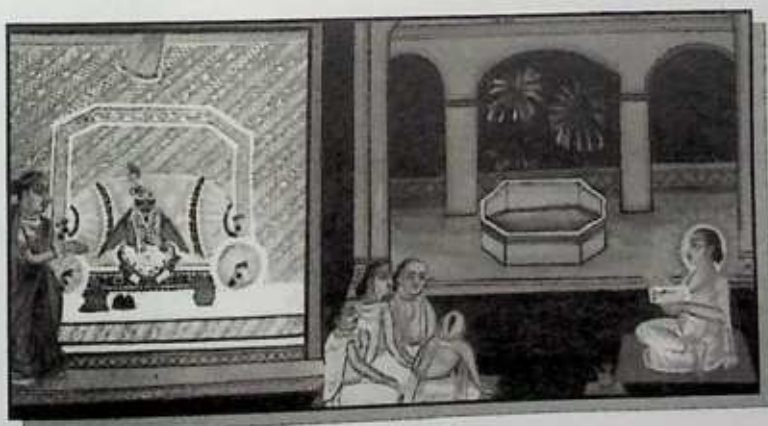
श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक अडेल मे है। वहां आप वास कर बिराजे। श्रीनवनीतप्रियजी की सेवा करते वहां नित्य मायावादी आते तथा श्रीआचार्यजी महाप्रभु से चर्चा करते। तब आप उनको निरूतर कर देते। पीछे आपने मन में विचार किया माता इल्लमागारू जी का मन सेवा में बहुत है परन्तु ब्रह्म संबंध बिना सेवा का अधिकार नहीं है। इसलिए माता का ब्रह्म संबंध कैसे कराया जाय। आपने श्री नवनीत प्रिय से विनती की आप हमारी माताजी को ब्रह्म संबंध करा देना। इतने मे मायावादी आ गये। तब आप तो उनसे चर्चा करने लग गये। जब उत्थापन का समय हुआ तब श्रीनवनीतप्रियजी ने इल्लमागारूजी से कहा कि उत्थापन का समय हुआ है तुम सेवा में नहाओ। श्रीआचार्यजी तो मायावादियों से चर्चा कर रहे हैं। इसलिए तुम स्नान करके शीघ्र सेवा में आओ। तब इल्लमागारू जी ने प्रार्थना की कृपानाथ मेरे को सेवा में नहाने की श्रीआचार्यजी की आज्ञा नहीं है। वे जानेंगे तो मेरे को लड़ेंगे। इसलिए सेवा मे कैसे आऊं। तब श्रीनवनीतप्रियजी ने आज्ञा की मै तुम से कहता हूं। इसलिए तुम स्नान करके शीघ्र आओ। तुमको आचार्यजी नहीं लडेगें। उनको मै कहूंगा। तब माता इल्लमागारू जी तुरन्त स्नान करके श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में गई। तब श्रीनवनीतप्रियजी ने उनके हाथ में तुलसी दी। दूसरे चरणारविन्द में निवेदन करवाकर समर्पित की। पीछे श्रीनवनीतप्रियजी ने माता इल्लमागारू से भेंट मांगी। उस समय उनके गले में मोतियों की माला थी वह श्रीनवनीतप्रिय को भेंट की। तब श्रीनवनीतप्रिय ने माता इल्लभागारूजी से कहा कि अब तुम उत्थापन का डबरा लाओ। तब वे डबरा लेकर गई। इतने में श्रीआचार्यजी मायावादियों को निरूत्तर करके शीघ्र स्नानकर सेवा में पधारे। इल्लभागारू को सेवा में देखकर उनको खीजकर (चिढकर) कहने लगे तुमने ये क्या किया। तब श्रीनवनीतप्रियजी ने श्रीआचार्यजी से कहा कि तुम इन पर क्यों चिढते हो।

मैने इनका ब्रह्म संबंध करवाया है। तब श्रीआचार्यजी ने प्रार्थना की महाराज आपने किस रीति से ब्रह्म संबंध करवाया है। श्रीनवनीतप्रियजी ने आपको सर्व प्रकार से समझाकर कहा तुलसी हाथ में देकर ब्रह्म संबंध करवाया है फिर तुलसी लेके दूसरे स्वरूप के चरणारविन्द मे मैने समर्पित की और कंठी भेंट ली है। वह मैने धरी है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने प्रसन्न होकर कहा बहुत अच्छा किया। श्रीआचार्यजी ने माता इल्लमागारूजी से कहा अब आप सुखेन सेवा किया करो। उस दिन से माता इल्लमागारूजी श्रीनवनीतप्रियजी की सेवा में नहाते। कितनेक दिनो पीछे श्री आचार्यजी के यहां श्रीगोपीनाथजी का प्रादुर्भाव हुआ। तब बड़ा अनिर्वचनीय सुख हुआ। पीछे श्रीगोवर्धननाथजी ने श्रीआचार्यजी को बताया कि अब मेरा स्वरूप प्रकट हो गया है। लीला सृष्टि प्रकट हुई है। इसलिए अब तुम श्रीअक्काजी को लेकर चरणाट पधारों। ऐसी आज्ञा सुनकर श्रीआचार्यजी आप सब भगवदीय समाज सहित चरणाट पधारे। वहां। एक रमणीय स्थल देखकर बिराजे। तब दामोदर दास और पद्मनामदास को आज्ञा की यहां श्री चन्द्रावली जी का निकुंज है। यह आज्ञा करके आप वहां बिराजे। पीछे सप्ताह की।

84-चरणाट आचार्य कूप, पो. चुनार, जिला मिर्जापुर (उ.प्र.)
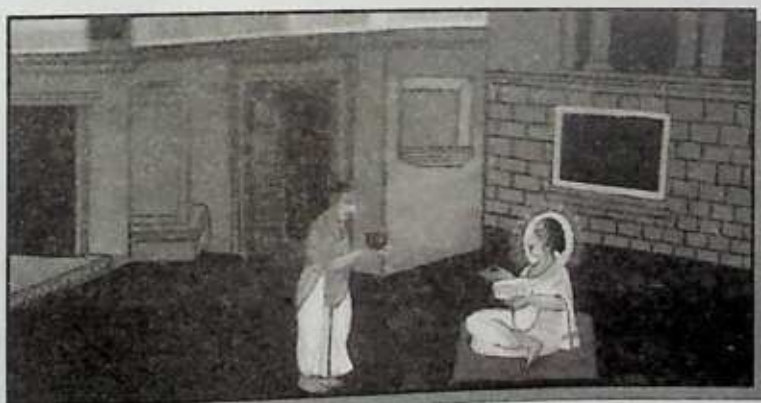
बैठक चरित्र

श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक चरणाट में है। वहां आप बिराजे। पहले तो आपने सप्ताह की तब महा अलौलिक आनन्द हुआ। उस समय श्रीगंगाजी के तीर पर एक ब्राह्मण रहता था। वह नित्य विष्णुसहस्रनाम का पाठ किया करता था। उसने बारह वर्ष तक पाठ किये और श्रीगंगाजी के तीर पर बैठा रहा। तब एक दिन श्रीठाकुरजी का स्वरूप श्रीगंगाजी के प्रवाह में से प्रकट हुआ। यह देखकर उस ब्राह्मण ने प्रार्थना की महाराज मै तो वैरागी हूं और आप तो महा अलौलिक हो। किसी गृहस्थ के यहां बिराजो तो भलीभांति से सेवा हो। मेरे तो नित्य आधासेर दूध आता है उसका भोग धरूंगा और स्नान कराऊंगा। तब श्रीठाकुरजी ने आज्ञा की कि एक महिना तेरे यहां बिराजूंगा। पीछे मैं कहूं वहां मेरे को ले चलना। मेरी इच्छा होगी वहां बिराजूंगा। उस ब्राह्मण ने एक मास तक श्रीठाकुरजी की सेवा की । पीछे श्रीगुसांईजी के प्राकट्य् के एक दिन पहले रात्रि मे श्रीठाकुरजी ने उस ब्राह्मण को आज्ञा की यहां से तीन कोस पर चरणाट है वहां मेरे को ले चल। वहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजते है। मेरे को वहां पधरादे। उस ब्राह्मण ने कहा कि मै तो जानता नहीं हूं श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहां बिराजते है। श्रीठाकुरजी ने कहा कि वे तो जगत प्रसिद्ध है। तू जिसको पूछेगा वही बतादेगा और मै तेरे साथ हूं। तलाब के ऊपर आप बिराजते हैं, वहां चलकर तू श्रीआचार्यजी महाप्रभु से कहना श्रीठाकुरजी आज्ञा करके तुम्हारे यहॉ पधारे हैं। तब वे उसी समय मेरे को पधरालेंगे। तथा तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न होंगे। वह ब्राह्मण उसी समय उठकर स्नान कर संध्या गायत्रीकर श्रीठाकुरजी को झापी में पधराकर वहां के लिए ले चला। प्रहर दिन चढ़े चरणाट में जा

पहुंचा। वहां जाकर श्रीआचार्यजी को साष्टांग दंडवत कर विनती की महाराज छोटे मुंह बडी बात है वह कही नहीं जा रही है। तब आपने आज्ञा की तू कह तो सही। उस ब्राह्मण ने कहा महाराज श्रीठाकुरजी ने आपके यहां पधराने की आज्ञा की है। आप ने कहा कि सुखेन पधराओ। तब उस ब्राह्मण ने झांपी पधरादी। उस समय आप बहुत प्रसन्न हुए। उस ब्राह्मण का समाधान कर विदा किया। पीछे मध्यान्ह के समय संवत् 1572व्रज पौषवदी 9भृगुवार वृषभ लग्न के समय श्रीविट्ठलनाथजी का प्रादुर्भाव हुआ। उस समय भूमण्डल पर बडा जय जय कार हुआ। गोपालदासजी ने गाया है " पौष नोमे श्रीनाथजी श्री अक्काजी डर ऊपन्यों आनंद। आचंद श्रीवृन्दावनतणो प्रगटियोए " भगवदीय जन बधाई गा रहे है वहां एक कूप है उसमें से श्रीयशोदाजी, श्री नंदराय जी, श्री वृषभान जी, श्री कीर्तिजी, नंद उपनंद, गोप, ग्वालन सहित, दूध दही की गागर लेकर पधारे और वहां भगवद माया से रत्न जटित महल, डोढी दरवाजे सब बन गये। पलना पर माणिक जडाऊ झूमका, हीरा, मोती की झालरी, सोना, रूपा के भांति भांति के खिलोना रखे हुए है। श्रीगुसांईजी का मुख निरखकर श्रीचन्द्रावलीजी कस्तूरी की तिलक कर रही है। अपने भाव से सूचित करती है। श्रीस्वामिनीजी दोनो कपोलो का स्पर्शकर केसर से कमल पत्र लिखती हैं। तथा अनेक भाव से सूचित करती हैं। पीछे श्री यशोदा जी, श्री कीर्ति जी, श्री विट्ठनाथ जी को पलना मे पधराकर व्रजभक्तो के सहित खिलोने से खिला रही है। तथा नाना प्रकार से मंगल गा रही है। इसके पश्चात् श्री नंदराय जी श्री वृषभान जी, नंद, उपनंद, श्रीमहाप्रभुजी के पास गोप, ग्वाल सहित वाद्य बजाते हुए आए। भगवदीय समाज भी आया। तब व्रज

भक्तों ने श्रीमहाप्रभुजी को अक्षत दूर्वा से बधाई दी। पीछे नंद महोत्सव हुआ। उस समय बडा अनिर्वचनीय सुख हुआ। उस समय भगवदियों ने बधाई गाई– "पोष निर्दोष सूरज कोष सुन्दर मास कृष्ण नौमी शुभ घडी दिन आज" श्रीवल्लभ सदन प्रकट गिरिवर धरन चार्यो विधु वदन सुछबि श्रीवल्लभ विट्ठल राज" ऐसी अनेक बधाई गाई पीछे शेषजी पधारे छायां की और ब्रह्माजी पधारे और वेद पढने लगे। श्रीमहादेवजी खडे होकर तांडव नृत्य करने लगे। इन्द्र तेतीस करोड देवता सहित आया और निशान बजाने लगा था। फूलो की वर्षा करने लगा। देवांगना गुणगान करने लगी। श्रीव्यासजी, श्रीशुकदेव जी, आदि आये। इठ्यासी हजार ऋषि मंडल आये जो वे वेद ध्वनि करने लगे। मेघ की सी गर्जना हो रही है। अप्सरा आकर के नृत्य करती है। गंधर्वगान करते है। बंदी, मागध, भाट याचक, बहुत आये हैं सभी को श्रीमहाप्रभुजी सम्मान करते हैं। दूध, दही की मानो सरिता बह रही हो। ऐसा नन्द महोत्सव हुआ उस समय किसी को देह की सुध नहीं रही। अष्ट महा सिद्धि, नवनिधि द्वार बुहारती हैं। लक्ष्मीजी द्वार पर बंदन वार बांधती हैं। स्थान स्थान पर मंगल कलश सजे हैं। भुवन प्रति भुवन ध्वज पताकाए फहरा रही है। महा अलौलिक आनन्द हो रहा है। उस समय भवदियों ने बधाई गाई हैं। उन बधाई की एक एक तुक कही है –"जुरि चली हैं बधाये श्री वल्लभ गृह सुन्दर व्रज की बाला।। और ।। जुरि चालि हैं बधाये श्री वल्लभ गृह प्रकटे श्री विट्ठलराय।। और।। श्री विट्ठल प्रभुप्रकट भए श्री गोकुल सुख दाई।। ऐसी ऐसी अनेक बधाई अनेक भगवदीय जन गाए हैं। पीछे श्री महाप्रभु जी मंगल स्नान करने को पधारे। सो रूपया मोहर न्योछावर करते हुए पधारे। श्रीगंगाजी

में स्नान कर पीछे अपने स्थान पर पधारे। इसके पश्चात् दान देने को आप श्रीनंदाराय जी, वृषभान जी, बड़े बड़े गोपों सहित श्रीआचार्यजी आकर बिराजे। आपके यहां हीरा, माणिक्य के अनेक भंडार भरे हुए हैं। हजारो गाय, भेंसों के ठाठ खडे हैं। जिसने जो मांगा उसको वही दिया। तुरग, हस्ती, रथ, सुख पाल दिये। भंडार सवेरे खोल दिये। बंदीजन सब बैठकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु का यशगान कर रहे है। मागध, सूत, चारण, सिद्ध, भाट आदि को मन वांछित दान देते हैं। उस समय कुल गुरू श्रीगर्गाचार्यजी आये उनने श्रीगुसांईजी की जन्म पत्री पढ़ी। संवत् १५७२ व्रज पौष वदी ९ भृगुवार वृषभ लग्न, मध्यान्ह समय श्रीवल्लभ आत्मज श्रीविट्ठलनाथजी का प्रादुर्भाव हुआ। ये अनेक कामनाएपूर्ण करेंगें। इनके दो बहुजी होंगी। सात लाल जी होंगे। इनके वंश में सभी पुरूषोत्तम होंगे। ये मायामत का खंडन कर ब्रह्मवाद का स्थापन करेंगें। देवी जीवों का उद्धार करेंगे। तीर्थो को सनाथ करेंगें। इनका यश अपार होगा। एक जिह्वा से कहां तक वर्णन करें। शेषमुख से भी पार नही पा सकते हैं। पीछे कुल गुरू श्रीमहाप्रभुजी से विदा होकर पधारे। इन्द्र, व्यासजी, शुकदेवजी, अप्सरा, गंधर्व, ब्राह्मण, महादेवजी, सब दंडवत् कर अपने अपने धाम को पधारे। शेषजी अपने लोक को पधारे। तब भगवदियों का समाज लेकर आप भीतर पधारे। श्रीठाकुरजी तथा श्रीगुसांईजी इन दोनो स्वरूपो की एक ही छवि थी। यह देखकर मंद मंद मुस्कान है भगवदीय जनो ने गाया है – *"आनन्द फेल्यो चहुंदिश छबि निरखि श्री वल्लभ से, वे कछू मुसिकाय चितये दोऊ हसनि मेरे मन बसे।। तिलक मृगमद छप्यो हररवत कहां लों, गुन गाइये कृपाते उछलित निजरस छिपत नाही छिपाइयें"* इसके पश्चात्

बैठक चरित्र

श्रीआचार्यजी ने श्रीस्वामिनीजी तथा चन्द्रावली जी, श्रीयमुनाजी, चतुर्थ यूथाधिपति और व्रजभक्त इन सभी को सब प्रकार से सन्मान कर मंदिर के भीतर पधराये। इसके बाद श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्रीगुसांईजी को पालने में झुलाया। उस समय बडा अनिवर्चनीय सुख हुआ। उस समय व्रज भक्त, तन, मन, धन, वारते हैं। पीछे श्रीगुसांईजी के तिलक कर आरती वारते हैं। उस समय श्रीगुसांईजी हाव भाव करते हैं। व्रज भक्तों को कटाक्षकर भाव से संबोधन करते है। श्रीयशोदाजी, कीर्तिजी, पालने झुला रही है। पीछे श्रीनंदरायजी, श्री वृषभान जी आदि सब श्रीमहाप्रभुजी से विदा होकर आशीष दी। सदा आपका घर सुबस बसे और आपके वंश में सभी पुरूषोत्तम होंगे। सभी पुष्टिमार्ग को प्रकाशित करेंगे। सारस्वत कल्प की नित्य लीलाकर देवी सृष्टि का अनुभव करायेंगे। श्रीगोकुल पुनः बसायेंगे। दिनोदिन अधिक प्रताप होगा। ऐसी आज्ञा कर गोलोक पधारे। श्रीआचार्यजी को आज्ञा की कि आप शीघ्र पधारोगे। पीछे व्रजभक्त गोकुल को पधारे। इसके पश्चात् सब अलौकिक भगवद् लीला अन्तरध्यान हुई। तब भगवद् माया से जो महल आदि अलौकिक वैभव हुआ था वह सब गुप्त होकर पूर्व जैसा स्थल हो गया।

श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसांईजी ने सभी के माथे माया का आवरण किया। जिससे सब पिता माता, पुत्र इस भाव से जानने लगे। श्रीआचार्यजी ने अलौकिक भगवदियों के मनोरथ सिद्ध किये। यह चरित्र आपने श्री चरणाट की बैठक में प्रकट किया।

इति श्रीगोकुलनाथजी कृत वनयात्रा तथा पृथ्वी परिक्रमा (प्रदक्षिणा) गर्भित श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की चौरासी बैठक चरित्र समाप्त।

प्रभुचरण श्री गुसांई जी श्री विट्ठलनाथजी

।। श्री कृष्णाय नमः ।।

श्रीगुसांईजी की बैठक चरित्र

१. श्री गोकुल की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक गोकुल में दो है उसमें एक बैठक श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में है। वहां श्रीगिरिधरजी और श्रीगोकुलनाथजी को श्रीगुसांईजी के साक्षात् दर्शन हुए थे। श्रीगिरिधरजी गादी के सामने बिराजकर संध्यावंदन करते थे। गादी के ऊपर विराजकर नहीं करते थे। एक दिन श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीगिरिधरजी से प्रार्थना की दादा आप को गादी ऊपर बैठने का अधिकार हैं। आप गादी पर क्यों नहीं बिराजते है। तब श्रीगिरिधरजी ने आज्ञा की मेरे को इस बैठक की गादी पर बिराजने पर श्रीगुसांईजी के दर्शन होते है। तुम भी देखो। तब श्रीगोकुलनाथजी को श्रीगुसांईजी के साक्षात् दर्शन हुए। उस समय श्रीगुसांईजी संध्या वंदन कर रहे थे। भगवदियों ने भी गाया है –

"मानिक चंद प्रभु सर्वदा, श्री गोकुलकरत विहार। सदा व्रज में ही करत विहार" युग युग राज करो श्रीगोकुल। यह सुख भजन प्रताप तेज ते छीन इत उत न टरो। ऐसे भगवदियों ने अनेक बधाइयों में गाया है। आप श्री गोकुल में सदा विराजमान हैं। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने श्री गोकुल में श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर की बैठक में प्रकट किया।

२. श्री गोकुल की बडी बैठक

श्रीगुसांईजी की दूसरी बैठक श्रीमहाप्रभुजी की बडी बैठक में श्रीमहाप्रभुजी के सामने बिराजे। जहां श्रीगुसांईजी ने श्रीनवनीतप्रियजी को पालने झुलाया।

उस समय नंद महोत्सव का महाअलौलिक दर्शन सब भगवदियों को श्रीगुसांईजी ने करवाये। उस समय सब भगवदीय आनंद में मग्न हो गये। किसी को देह की दशा की सुधि नहीं रही। श्रीगुसांईजी ने सभी को सावधान किया। जब तक श्रीनवनीतप्रियजी का मंदिर नहीं बना था। तब तक श्रीमहाप्रभुजी की बैठक में बिराजे। उस समय आपने सहज आज्ञा की इस समय में मन्दिर की नींव की खुदाई करे तो मुहूर्त अच्छा है। मन्दिर की नीम अविचल हो यह आज्ञा की। आप पोढने पधारे उस समय यादवेन्द्र दास खडे थे। उसी समय नींव खोदने लगे। एक रात्रि में सारे मन्दिर की नीम खोदी। प्रातः श्रीगुसांईजी जागे तो क्या देखते है। रज के बड़े बड़े ढेर पडे हैं। तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा की यह ढेर किसका है। वैष्णवों ने विनती की महाराजाधिराज यादवेन्द्र दास ने यह मन्दिर की नींव खोदी है। तब आपने यादवेन्द्र दास से पूछा। यह नीम कौन से समय में खोदी है। उसने विनती की राज आपने आज्ञा की थी उसी समय खोदी है। श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न हुए। पीछे वहां श्रीनवनीतप्रभु का मंदिर सिद्ध हुआ। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने बडी बैठक में प्रकट किया।

३. वृन्दावन में बंसीवट

श्रीवृन्दावन में बंसीवट में श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक के पास श्रीगुसांईजी बिराजे थे। वहां वृन्दावन के महंत हरिवंश आदि बैठे थे। तब हरिवंश ने श्रीगुसांईजी से प्रार्थना की आप संध्या वंदन करते हो? तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा की हमारे मार्ग में तो संध्या, उपासना मुख्य है। जो एतन्मार्गीय भक्त है वह संध्या की उपेक्षा करते है। नंदालय से प्रभु प्रातः समय गोचारण को पधारते है। तब एतन्मार्गीय भक्तो को विप्रयोग होता है। जब सायंकाल आप वन में से पुनः पधारते है। तब संयोग रस का दान करते

है। इसमें यह आज्ञा की है कि हमारा मार्ग है वह व्रज भक्तों का भावात्मक है। इतने में ही एक व्यक्ति भगवत् स्वरूप लेकर श्रीगुसांईजी के पास आया उसको श्रीगुसांईजी ने देखा। देखते ही वह स्वरूप पुरूषोत्तम की क्रीडा करने लगे। कोई तो वेणुनाद करता है। कोई घुटरू वन लीला करते है। ऐसे सब स्वरूप अपनी अपनी लीला करने लगे। इसमें यह बताया कि और कोई प्रतिष्ठा करे। तब पुरूषोत्तम होता है। हमारी दृष्टि से ही पुरूषोत्तम होता है। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने श्री वृन्दावन में महंत को दिखाया है। तब सब महंतो ने साष्टांग दंडवत की यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीगुसांईजी की शरण आये। यह चरित्र भी श्रीगुसांईजी ने श्रीवृन्दावन की बैठक में प्रकट किया।

४. श्री राधाकुंड की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक श्री राधाकुंड के ऊपर श्यामतमाल के नीचे है वहां आप बिराजे। यहां पर एक दिन बिराजते थे तब वहां रघुनाथ दास गोडियाने आकर के दंडवत् कर विनंती की महाराज आप श्रीस्वामिनीजी का स्वकीयत्व मानते हैं तब आपने आज्ञा की हां। हम स्वकीयत्व मानते है। उसने कहा हमारे तो परकीयत्व मानते है। तब आपने आज्ञा की एक कागज लाओ और इस कुंड में डालो वहां से स्वामिनीजी श्रीहस्ताक्षर लिखकर भेजे वह प्रमाण माने। कोरा कागज लेकर कुंड में डाला वह तत्काल डूब गया। निकुंज में श्रीस्वामिनीजी बिराजते थे। वहां ललिता जी ने विनती की यह कागज श्रीगुसांईजी ने भेजा है। गोडियों से वाद हुआ है। श्रीस्वामिनीजी ने एक श्लोक लिख दिया। तब श्रीगुसांईजी ने एक वैष्णव से कहा वह कागज ले आओ। वैष्णव ने वह कागज लाकर श्रीगुसांईजी को दिया। कागज श्रीस्वामिनीजी की इच्छा से भीगा नहीं था। उस कागज में से वह श्लोक पढ़ा "जयेति

वृषभान कुल की मुदिराधि के जयति कृष्ण परमानन्द कुल चन्द्रमा'' श्रीगुसांईजी के यह श्लोक पढते ही सभी गोडिया निरूत्तर हो गये। पहले जो श्रीगुसांईजी ने उत्तर दिया था वहां श्रीस्वामिनीजी ने लिख भेजा था तब गोडियाओं ने जाना की श्रीठाकुरजी और स्वामिनीजी श्रीगुसांईजी के वश मे है। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने राधाकुंड की बैठक में प्रकट किया।

५. चन्द्र सरोवर की बैठक

श्रीगुसांईजी की चन्द्र सरोवर पर दो बैठक है। प्रथम बैठक श्रीमहाप्रभुजी के पास आप बिराजते है। जब कृष्णदास अधिकारी ने श्रीनाथजी के दर्शन बंद किये थे तब श्रीगुसांईजी परासोली में बिराजकर विप्रयोग का अनुभव किया था। उस समय श्रीनाथजी ने निजमंदिर में एक छोटी सी बारी थी उसमें से श्रीगुसांईजी को दर्शन देते थे। उसकी कृष्णदास को सूचना मिली तो वह बारी बंद करा दी। तब श्रीगुसांईजी विज्ञप्ति लिखकर भिजवाते थे। श्रीनाथजी उसको पढकर रामदास को देते तथा श्रीनाथ जी भी पत्र लिखकर राम दास को देते। रामदास वह पत्र भी श्रीगुसांईजी को देते वह पत्र श्रीगुसांईजी पढकर फिर पानी में घोलकर पी जाते। ऐसे छः महिनो तक आपने विप्रयोग रस का अनुभव किया। यह चरित्र आपने श्रीचन्द्र सरोवर की बैठक में किया।

६. चन्द्र सरोवर में फूलघर की बैठक

चन्द्रसरोवर में श्रीगुसांईजी की दूसरी बैठक फूलघर में है। वहां श्रीगुसांईजी विप्रयोग में बिराजते थे। फूलघर की सेवा करते। उस फूल घर में बिराजकर श्रीगुसांईजी फूल की माला सिद्ध करके श्रीनाथजी के लिए नित्य भेजते थे। श्रीनाथजी राजभोग अरोग चुके तब '' माला बोली है'' इस प्रकार

'माला का बेग पधराओ यही भाव सो'' एक पुकार की जाती। उस समय उस आवाज को सुनकर श्रीगुसांईजी वह फूल की माला भेजते। इसलिए उसी दिन से अब तक माला बोलने का प्रचार हुआ है। वहां से माला आने के पश्चात् श्रीनाथजी के अंगीकार करने के बाद राजभोग के दर्शन खुलते, दर्शन हो चुके तब रामदासजी श्रीनाथजी की प्रसादी माला और बीड़ा नित्य श्रीगुसांईजी को देने जाते। उसी समय श्रीनाथजी का पत्र भी श्रीगुसांईजी ऊपर लिखते वह दे आते थे। श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी के लिए विज्ञप्ति लिख कर ले आते थे। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने चन्द्र सरोवर के फूलघर की बैठक में प्रकट किया।

७. श्री गिरिराज जी की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक श्री गोपालपुर श्रीगिरिराजजी में मथुरेश जी के मंदिर में है। वहां श्रीगुसांईजी बिराजते। तब एक दिन श्रीगोकुलनाथजी ने विनती की महाराजाधिराज श्री महाप्रभु ने सवासेर भात का अन्नकूट करवाया। तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा की हां। श्रीमहाप्रभुजी की लीला नित्य अखंड है। ऐसा कहकर श्रीगोकुलनाथजी और श्री शोभाबेटी जी को श्रीमहाप्रभुजी ने अलौलिक दर्शन करवाये। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने गोपालपुर में श्रीमथुरेशजी के मंदिर में प्रकट किया।

८. श्री कामवन श्रीकुंड

श्रीगुसांईजी की बैठक कामवन में सुरभीकुंड श्रीकुंड के ऊपर है। वहां आपने श्रीमहाप्रभुजी के परोक्ष दिशा में श्रीगुसांईजी के सेवक मधुसूदन दास को श्रीमहाप्रभुजी के साक्षात् दर्शन करवाये। वह मधुसूदनदास श्रीमहाप्रभुजी की सेवा नित्य करते और सर्वोत्तम का जप नित्य करते तथा दूध पीकर रहते थे। इसके मन में यह मनोरथ थी कि मेरे को श्रीमहाप्रभुजी साक्षात् दर्शन

देंगे। तब उठूंगा। ऐसे करते एक मास हो गया तब श्रीगुसांईजी वहां पधारे। तीन दिन तक बिराजे। उसके पीछे श्रीगुसांईजी गोकुल पधारे। पीछे छः मास होने पर श्रीमहाप्रभुजी ने कोटि कंदर्प लावण्यमय स्वरूप के दर्शन दिये और आज्ञा की मधुसूदन दास तेरे को इतना विलम्ब नहीं होता। किन्तु श्रीगुसांईजी ने यहा पधारकर तेरे को दर्शन दिया। तब भी तेने श्रीगुसांईजी में और मेरे में भेद बुद्धि कर बैठा रहा। प्रथम तो वैष्णव को दास का हठ करने का धर्म नहीं है। इसलिए तेरे को इतना विलम्ब हुआ। अगर विरह हो, तो मेरे वंश के बालक जहां बिराजे वहां जाकर दर्शन करे। मुख्य यही उत्तम है। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने श्रीकामवन में सुरभी कुंड ऊपर प्रकट किया।

९. श्री प्रेम सरोवर

श्रीगुसांईजी की बैठक प्रेम सरोवर ऊपर है। वहां श्रीगुसांईजी ने प्रेम सरोवर में स्नान किया और गोविन्द स्वामी को युगल स्वरूप का दर्शन श्रीगुसांईजी ने करवाया और श्री स्फुरत्कृष्ण प्रेमामृत की टीका यहां बिराजकर की और एक मास पर्यन्त आप वहां बिराजे। इससे सभी को अनिर्वचनीय सुख हुआ। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने प्रेम सरोवर की बैठक में प्रकट किया।

१०. संकेतवट की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक संकेत वट में संकेत देवी के पास है। आपका एक सेवक गुजराती ब्राह्मण रेंडा था। इसको आपने दिव्य चक्षु देकर ब्याह खेल का अलौकिक दर्शन करवाया। वह रेंडा वैष्णव दर्शन करके रस में मग्न हो गया। देहानुसंधान नहीं रहा। तब श्रीगुसांईजी ने सावधान किया। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने श्री संकेत वट की बैठक में प्रकट किया।

११. रीठोरा की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक रीठोरा में हैं। वहां श्री चन्द्रावली कुण्ड में आपने स्नान किया और आज्ञा की यह श्रीचन्द्रावलीजी निकुंज है। इसलिए आपने वहां तीन दिन का पारायण किया वहां महाअलौलिक सुख हुआ। पीछे श्रीगुसांईजी ने वहां दान लीला ग्रन्थ प्रकट किया। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने रीठोरा की बैठक में प्रकट किया।

१२. करहला की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक करहला में श्रीनाथजी के जलघरा के पास है। वहां आप तीन दिन तक बिराजे। वहां पर आपने श्री रास पंचाध्यायी की सुबोधिनीजी के ऊपर टिप्पणी ग्रन्थ लिखकर प्रकट किया। रासोली में ललिताजी का स्वरूप हैं। श्रीगुसांईजी उस स्वरूप को एक पुष्पमाला पहराने लगे तब श्री ललिता जी ने वह माला हाथ में ले ली पहनी नहीं। उस समय आप चुप रहे। यह माला किसी ने देखी नहीं थी। पीछे सायंकाल जब आप दर्शन को पधारे तब ललिताजी ने कहा कि तुम्हारी माला श्रीस्वामिनीजी को पहनाई है। वह माला प्रसादी करके मेरे को दी है तथा आज्ञा की है कि यह माला श्रीगुसांईजी को देना। यह माला आप पहरोगें। तब माला पहरकर श्रीगुसांईजी ने यह श्लोक कहा "निकुंजे पुष्पालीरचित शयनात्केलि जनित। श्रमामः संक्रांता ननकमल शोभाहृतमनाः ।।समुत्थायांयाती सहज कृपया केलि दलित सज्रं दातुं राधे स्मरसि यदिमां त्वं किम परः ।।9।। यह श्लोक कहकर आप बहुत प्रसन्न हुए और श्रीललिताजी भी प्रसन्न हुई। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने करहला की बैठक में प्रकट किया।

१३. कोटवन बैठक चरित्र

श्रीगुसांईजी की बैठक कोटवन में कंदब खंडी पर शीतल कुंड के ऊपर है। वहां गोविन्द स्वामी श्रीगुसांईजी के साथ थे। अर्ध रात्रि के समय श्रीगुसांईजी ने गोविन्द स्वामी को आज्ञा की तुम देखो कंदब खंडी में क्या लीला होती है। तब गोविन्द स्वामी ने देखा युगल स्वरूप विहार कर रहे है। उस समय रसमत्तता से श्री प्रभुजी ने श्रीस्वामिनीजी के मोतियों का हार तोड डाला है। सब मोती भूमि पर बिखरे पडे है। श्रीठाकुरजी मोतियों को बीनकर अपने श्री हस्त से हार पोकर श्रीस्वामिनीजी को पहराया। श्रीगुसांईजी ने इस लीला के दर्शन गोविन्द स्वामी को करवाये, गोविन्द स्वामी ने उस समय यह पद गाया – राग केदारो – कदम वन विथन करत विहार। मदन मोहन पिय अति रसमाते तोर्यो प्रिया उरहार।। कनिक भूमि विथुरे गज मोती कुंज कुटी के द्वार।। गोविन्द प्रभु श्रीहस्तसों पोई सुन्दर व्रज राजकुमार ।।1।।

यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने कोटवन की बैठक में प्रकट किया।

१४. चीरघाट की बैठक चरित्र

श्रीगुसांईजी की बैठक चीर घाट ऊपर है। वहां आप बिराजे। तब आपने आज्ञा की अग्निकुमारी का अलौलिक रात्रि के दर्शन श्रीठाकुरजी ने करवाये और वरदान दिया कि शरद की रात्रि में बुलाकर रास कर रस दान करूंगा। यह आज्ञा करके श्रीगुसांईजी ने व्रतचर्या ग्रन्थ प्रकट किया और तीन दिन तक वहीं बिराजे। अनिर्वचनीय सुख हुआ। यह चरित्र श्रीगुसांईजी के चीर घाट की बैठक पर प्रकट किया।

१५. बच्छवन की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक वच्छवन में छोकर के वृक्ष के नीचे है। आप वहां बिराजे और आज्ञा की ब्रह्माजी ने यहां वच्छो का हरण किया। पीछे आपने यहा, श्री वेणुगीत की सुबोधिनी जी ऊपर टिप्पणी प्रकट की। यहा अलौलिक आनन्द हुआ। यदि चरित्र श्रीगुसांईजी ने वच्छवन की बैठक में प्रकट किया।

१६. वेलवन की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक श्री वेलवन में श्रीयमुनाजी के किनारे हैं वहां पर आपने बिराजकर भगवान दास को अलैकिक रास के दर्शन करवाये। वहां आपने पुरूषोत्तम हुल्लास ग्रन्थ प्रकट किया। पीछे आपने वहां से विजय की। यह चरित्र आपने वेलवन की बैठक में प्रकट किया।

१७. चरणाट की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक चरणाट में है। वहां आपका छट्ठी पूजन हुआ था। वहां श्रीगुसांईजी ने अलौकिक चरित्र दिखाया। उस समय श्रीगुसांईजी ने लीला सृष्टि और लीला साम्रगी को अंगीकार किया। लक्षावधि जीवों को कटाक्ष द्वारा अंगीकार किया। यह देखकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु बहुत प्रसन्न हुए। श्रीगुसांईजी जब एक माह के हुए थे तब गंगा पूजन किया था। श्रीगंगाजी बहुत बढे। उस समय श्रीगुसांईजी श्रीअक्काजी की गोद में बिराज रहे थे। तब श्रीगंगाजी ने चरण स्पर्श किये और कहा कि महालक्ष्मीजी आप बड भागी हो। आपके पति साक्षात् श्रीपूर्ण पुरूषोत्तम है। तथा पुत्र भी पूर्ण

पुष्षोत्तम है। आपके वंश में सभी पूर्ण पुरूषोत्तम रूप में प्रकटेंगे। यह आज्ञा करके श्रीगंगाजी पधारे। तब श्रीअक्काजी अनेक सखियों के सहित मंगल गाते हुए बैठक में पधारे। श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीगुसांईजी का स्वरूप देखकर आज्ञा कि यह पुत्र रूप और ठाकुर स्वरूप होकर आप ही पधारे है। तब श्रीठाकुरजी का और श्रीगुसांईजी का नाम श्रीविट्ठलनाथजी रखा। उसके पीछे चरणाट से विजय की। श्रीआचार्यजी का महाप्रभु श्रीगुसांईजी को लेकर श्रीअडेल पधारे। उस समय अडेल में जय जय कार हुआ। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने श्री चरणाट की बैठक में प्रकट किया।

१८. अडेल की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक अडेल में है। वहां आपने बाल क्रीडा की है। वहां श्री महादेवजी आपको नित्य खिलोना लेकर खिलाने को आते थे। श्रृंगीनाद करते थे। नृत्य करते उसको देखकर आप बहुत प्रसन्न होते थे। आपके कृपा पात्र अंतरंग भगवदीय आपको नित्य खिलाते थे। आप भी हाव–भाव कटाक्षकर रस दान करते थे। जब आपकी कृपा कटाक्ष द्वारा सहस्रावधि जीवों को अंगीकार किया। ऐसे अनेक चरित्र श्रीगुसांईजी ने प्रकट किये।

१९. गोडदेश की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक गोडदेश में नारायणदासजी के घर में है। वहां नित्य श्रीगुसांईजी बिराजते थे। एक समय श्रीगुसांईजी गोडदेश में पधारे। वहां बगीचें में बिराजे। नारायणदासजी नित्य सवेरे दर्शन को जाते पुनः सायंकाल आते थे। बादशाह के पास एक बार मिलकर चले आते थे। राज्य

का काम नहीं चलाते। एक दिन बादशाह ने याद किया आजकल दीवान दिखते नहीं है। उसका क्या कारण है। तब किसी चुगलखोर ने कहा हजरत श्रीगोकुल के श्रीगुसांईजी पधारे है। इसलिए रात दिन वहां रहते है। तब बादशाह ने हलकारा से कहा कि नारायण दास को बुलाओ। वहां जाकर हलकार ने नारायणदासजी से कहा कि बादशाह याद कर रहे है। तब नारायणदासजी कचहरी में आये। बादशाह ने पूछा आजकल दिखते नहीं हो इसका क्या कारण है। दीवान ने कहा मेरे गुरू पधारे हैं। इस कारण जहां तक वे बिराजेगे। तब तक आना नहीं हो सकेगा। बादशाह ने कहा सुखेन जाओ। मेरी और से निवेदन करना मेरे को भी दर्शन देंवे। दीवान ने कहा कहेंगे। दीवान श्रीगुसांईजी के दर्शन को आये और विनती की आपने आज्ञा की बादशाह को दर्शन को बुला लाना। दीवान ने दंडवत् की पीछे घर आया। बादशाह से कहा तुमको दर्शन होंगे। तब दूसरे दिन दीवान के साथ बादशाह दर्शन को आया। बादशाह को श्रीगुसांईजी के साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम के दर्शन हुए। बादशाह ने साष्टांग दंडवत् की तथा दस हजार रूपये श्रीगुसांईजी के आगे धरे। श्रीगुसांईजी समाधान करने लगे। तब बादशाह ने प्रार्थना की महाराज मेरे मस्तक पर सदा बिराजो। ऐसी वस्तु कृपा करके दो। श्रीगुसांईजी ने श्री हस्त से उपरणा ओढाया। बादशाह ने दंडवत् कर मस्तक पर पाग में बांधा और प्रार्थना की महाराज में आपकी शरण हूं। कृपा कर मेरा उद्धार करो। आपने आज्ञा की हम गोड देश में पधारे है। तब से तेरा उद्धार हो गया है। पीछे बादशाह दंडवत् कर अपने घर गया। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने गोड देश में नारायण दास जी के घर की बैठक में प्रकट किया।

२०. सोरम की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक श्रीसोरमजी में श्रीमहाप्रभुजी की बैठक के पास है। वहां श्रीगुसांईजी बिराजे। सोरम घाट स्नान करके अपनी बैठक में पधारे। पीछे आपने सप्ताह की। तब महा अलौकिक आनन्द हुआ। इसके बाद श्रीगुसांईजी ने अपनी कृपा कटाक्ष द्वारा अनके जीवों का उद्धार किया। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने श्रीसोरमजी की बैठक में प्रकट किया।

२१. गोधरा की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक गोधरा में नागजी भाई के घर में है। जब श्रीगुसांईजी गोधरा पधारते तब नागजी भाई के घर में बिराजते थे। एक समय नागजी भाई ने युगलगीत का प्रसंग पूछा तब श्रीगुसांईजी ने व्याख्यान किया। तीन दिन तीन रात्रि तक प्रसंग चला। ऐसे अद्‌भुत रस की वर्षा आपने की। उस समय सब भागवदियों को देह दशा का अनुसंधान नहीं रहा। तब आपने सभी को सावधान किया। यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीगुसांईजी के शरण आये। यह चरित्र श्रीगुसांईजी श्री गोधरा की बैठक में प्रकट किया।

२२. अलीणा की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक अलीणा में महीधरजी फूल बाई के घर में है। पहले नरहर जोशी जब श्रीगुसांईजी को अलीणा में पधराकर लाये तब पधराने के लिए संमुख चले। रास्ते में रुपया और मोहर न्योछावर करते करते अपने घर पधरा लायें। पीछे सकुटुम्ब श्रीगुसांईजी के सेवक हुए। गांव के लोग भी बहुत से वैष्णव हुए। तब महीधरजी से फूलबाई ने प्रार्थना की राज कृपा

करके श्रीठाकुरजी पधरा दो। श्रीगुसांईजी ने श्रीमदनमोहनजी का स्वरूप पध ारादिया। तथा सेवा की रीति सब बताई तथा कहा कि नरहर जोशी कहे वैसा करना। पीछे महीधरजी और फूलबाई ने श्रीगुसांईजी की भली भांति सेवा की। पीछे श्रीगुसांईजी ने वहां से विजय की। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने अलीणा की बैठक में प्रकट किया।

२३. असारवा की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक अरवाखा में भाइला कोठारी के घर में है। जब आप राजनगर पधारते थे। तब भाइला कोठारी के घर बिराजते थे। लाछबाई भाट श्रीगुसांईजी की सेवक थी। इसका भाई अधिकारी (हाकिम) के पास रहता था। इसने अधिकारी के पास चुगली की मेरी बहिन श्रीगोकुल के श्रीगुसांईजी जो असारवा में बिराजते है। उनके पास रहती है। घर पर नहीं आती है। तब अधिकारी ने कहा असारवा चलो। अधिकारी असवारी करके आया उस समय श्रीगुसांईजी बैठक में गादी तकिया पर बिराज रहे थे। लाछ बाई पंखा की सेवा कर रही थी। तब श्रीगुसांईजी से वैष्णव ने प्रार्थना की महाराज अधिकारी आरहा है। आपने आज्ञा की अधिकारी को आने दो। तब अधिकारी ने आकर देखा साक्षात् ईश्वर बिराज रहे है। अधिकारी ने साष्टांग दंडवत् की तथा प्रार्थना की महाराजाधिराज में आपकी शरण हूं। तब अधिकारी ने दस हजार रूपया भेंट किये। श्रीगुसांईजी वस्त्र देने लगे तब अधिकारी ने विनती की महाराजाधिराज कृपा करके ऐसी वस्तु दीजिये जो मेरे मस्तक पर सदैव बिराजे। श्रीगुसांईजी ने तब सुपारी दी। अधिकारी ने दंडवत् कर सुपारी को पात्र में रखा। पीछे अधिकारी ने प्रार्थना की महाराज सात वर्ष से यहां वर्षा नहीं हुई है। इसके कारण यहां के लोग बहुत दुःखी

है। आप कृपा करिये। आपने आज्ञा की तुम दरवाजा में भींगकर जाओगे। तब अधिकारी दंडवत कर घोडा पर सवार हुआ और उसी समय घटा चढआई। वर्षा बहुत हुई भींगकर अधिकारी शहर में गया। पीछे उस अधिकारी ने उस भाट पर बडा क्रोध किया और कहा चुगलखोर तू साक्षात् ईश्वर से लडवाता। परन्तु आपने कृपा कर मेरा अपराध क्षमा किया। इन की कृपा से वर्षा हुई है। सारे देश में आनन्द हुआ। तेरे को तो ठोर (स्थान) मारूंगा। यह सूचना श्रीगुसांईजी के पास पहुंची तब आपने अधिकारी को कहलवाया कि इसको किसी प्रकार का दंड नहीं हो ऐसी मेरी आज्ञा है। अधिकारी ने तब कहा देखो प्रभु की दयालुता का पार नहीं है। तथा ऐसे जीव की दुष्टता का भी पार नहीं है। पीछे उस अधिकारी ने चुगलखोर को आदेश दिया कि अभी तो श्रीगुसांईजी की आज्ञा से छोडता हूं नही तो ठोर ही मारता। आज के बाद किसी की भी चुगली मत करना। ऐसे कहकर उसको घर भेजा। यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीगुसांईजी की शरण आये। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने आसारवा राजनगर की बैठक में प्रकट किया।

२४. खंभात की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक नारायण सर तलाब के ऊपर है वहां श्रीगुसांईजी पधारे। डेरा कर बिराजे। मुरारी आचार्य बडे पंडित थे। आपके दर्शन को आये। आपसे कुछ चर्चा (वाद) किया आपने एक क्षण मे निरूतर कर दिया। तब उसने प्रार्थना की महाराज आप तो पूर्ण पुरूषोत्तम हो। मनुष्य हो तो उसको जीता जा सकता है। ईश्वर के आगे तो सभी की पराजय होती है। यह कहकर साष्टांग दण्डवत् की। आज्ञा लेकर घर को गये। हरिवंशजी ने विनती की महाराजाधिराज जीव तो देवी दिखता हैं इसको अंगीकार कीजिये।

ऐसे पंडित अपने मार्ग में चाहिए। पीछे तो आपकी जैसी इच्छा हो वैसा ही करिये। उस समय श्रीगुसांईजी मुस्कराकर चुप रहे। चाचाजी ने जाना कि अंगीकार तो होगा। किन्तु कुछ विलम्ब से होगा। यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीगुसांईजी की शरण आये। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने खंभात की बैठक में प्रकट किया।

२५. नवा नगर की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक नवानगर में बाला बादरायण के घर में है। वहां आप बिराजे। तब श्रीगुसांईजी ने राजाजामत मांची को अंगीकार किया। तथा अनेक जीवों का उद्धार किया। पीछे (आपने) श्रीगुसांईजी ने सप्ताह की। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने श्री जामनगर की बैठक में प्रकट किया।

२६. गंगागोडगढ़ बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक गंगागोडगढ में है वहां श्रीगुसांईजी बिराजे। वहां नागजी भाई आमकी पोट (गठरी) लेकर आये। आम झाडी में रखे और एक टोकरा भरकर ले आये। तब श्रीगुसांईजी ने पूछा नागजी यह क्या है। तब उसने विनती की महाराजाधिराज यह आम लाया हूं। आप अंगीकार करिये आपने आज्ञा कि यह आम तो श्रीद्वारकानाथजी के लायक (योग्य) है। तब नागजी भाई ने प्रार्थना की महाराजाधिराज आप तो अरोगो। श्रीद्वारकानाथजी भी अरोगेगें। श्रीगुसांईजी ने आम अरोगे। आप नागजी भाई के ऊपर बहुत प्रसन्न हुए। वहां तीन दिन तक आप बिराजे। नित्य नियम से नागजी भाई आम का मनोरथ करते। तीन दिन तक कथा हुई। अनिर्वचनीय सुख हुआ। श्रीगुसांईजी ने गंगागोड गढ की बैठक में यह चरित्र प्रकट किया।

२७. श्री द्वारिका की बैठक

श्रीगुसांईजी की बैठक श्रीद्वारिकाजी में जगत देहेरा के समीप श्रीदाऊजी के मन्दिर के पास है। वहां आप सेवा के अवकाश में बिराजते और कथा कहते, कथा में अनिर्वचनीय सुख होता। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने श्रीद्वारिका की बैठक में प्रकट किया।

२८. श्रीद्वारका में राम लक्ष्मणजी के मंदिर की बैठक

श्रीगुसांईजी श्रीद्वारकानाथजी से विदा होकर श्री राम लक्ष्मणजी के मंदिर पर डेरा कर बिराजे। वहां श्रीगुसांईजी की बैठक है। वहां नागजी भाई आम लेकर आये तब श्रीगुसांईजी ने पूछा नागजी क्या लाये हो। उसने विनती की महाराज आम लाया हूं। आपने आज्ञा की ये आम द्वारकानाथजी में पहुंचाओ। उस समय नागजी भाई ने विनती की महाराज मेरे तो आपसे काम है। तब आपने आज्ञा की श्रीद्वरिकानाथजी के अरोगने पर पीछे हम लेंगे। इसलिए श्रीद्वारिकानाथजी में पहुँचाआओं। तुम आओगे उसके पीछे हम चलेंगे। तू गोमती मे स्नानकर श्रीद्वारिकानाथजी के दर्शन करके आना। नागजी भाई श्रीद्वारिकाजी गये तथा श्रीगोमतीजी में स्नानकर आम का टोकरा श्रीद्वारिकानाथजी के मंदिर में दिया और राजभोग आरती के दर्शन किये उस समय श्रीगुसांईजी द्वारिकानाथजी को बीडा अरोगा रहे हैं। ये दर्शन नाग जी भाई को हुए। तब वे आश्चर्य में पड गये कि श्रीगुसांईजी यहां पधारे है क्या? बाहर आकर देखे तो श्रीगुसांईजी के साथ आदमी भी दिखाई नहीं दिये। तब नागजी वहां से चल दिये और श्रीरामलक्ष्मणजी के मंदिर में आये। वहां श्रीगुसांईजी डेरा पर भोजनकर पर बिराजकर बीडा अरोग रहे हैं। तब नागजी भाई ने साष्टांग दण्डवत् की । श्रीगुसांईजी ने पूछा कि श्रीद्वारिकानाथजी के

दर्शन कर आये। नागजी भाई ने विनती की राज श्रीद्वारिकानाथजी के अद्भुत दर्शन हुए। श्रीद्वारिकानाथजी को आपने बीडा अरोगाया और श्रीद्वारिकानाथजी ने आपको बीडा अरोगाया ऐसा अलौलिक दर्शन आपकी कृपा अनुग्रह से हुआ है। तब आपने आज्ञा की तेरा संदेह निवृत करने के लिए हमने तेरे को दर्शन दिये। इससे श्री महाप्रभु जी का संबंध श्रीद्वारिकानाथजी में सदैव बना रहता है। इसलिये तुम्हारा भी संबघ सदा रहता है। तेरे जो आम है उनको हमने ही अरोगा है। तब नागजी भाई ने साष्टांग दंडवत् की। पीछे आपने आज्ञा की जूंठन महाप्रसाद ले ओ। तब नागजी भाई ने जूठन महाप्रसाद लिया। उसके ऊपर श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न हुए। इसके बाद आपने वहां से विजय की। राजनगर गोधरा, उज्जैन होते हुए श्री गोकुल पधारे। यह चरित्र श्रीगुसांईजी ने श्रीद्वारिकाजी में श्रीरामलक्ष्मणजी के मंदिर में प्रकट किया।

श्रीगुसांईजी के ज्येष्ठ लाल जी श्रीगिरिधरजी की बैठक व्रजमंडल में चार हैं उनका चरित्र

।। श्रीकृष्णाय नमः ।।

१. गोकुल बैठक

श्रीगिरिधरजी की बैठक श्रीगुसांईजी की बैठक में श्रीगुसांईजी के सन्मुख है आप वहां बिराजे थे। एक समय श्रीगुसांईजी ने विचार किया कि कोई भी मायावादी मेरे सामने नहीं आता है। पृथ्वी परिक्रमा का समय नहीं है। मायावादी बहुत है इसलिए कुछ उपद्रव करेंगे। उस समय श्रीगिरिधरजी पधारे और श्रीगुसांईजी को दण्डवत् की तथा विनती की महाराज आज क्या विचार में हो। तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा की हमारे आगे कोई मायावादी नहीं दिखाई देता है। श्रीगिरिधरजी ने विनती की महाराज पुरूषोत्तम के आगे मनुष्य की क्या सामर्थ्य है जो आपके संमुख आकर बैठे। आज्ञा हो तो में आपके सामने बैठा हूं। परन्तु मेरे ऊपर आपकी सदा प्रसन्नता रहे। तब श्रीगुसांईजी ने आज्ञा की बहुत अच्छा आप सामने बैठकर वादी की और से पूर्ण पक्ष करने लगे। श्रीगुसांईजी उत्तर देते जाते है। उसके ऊपर विद्वन्मंडन ग्रन्थ प्रकट किया। तब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजी के ऊपर बहुत प्रसन्न हुए। यह चरित्र श्री गिरिधर जी ने श्रीगोकुलजी की बैठक में प्रकट किया।

२. श्री गिरिराजजी की बैठक

श्रीगिरिधरजी की बैठक श्री गोपालपुरा में श्रीमथुरेशजी के मंदिर में श्रीगुसांईजी की बैठक के पास में है। वहां आप नित्य बिराजकर जप पाठ करते थे। एक समय श्रीगोवर्धननाथजी ने श्रीगिरिधरजी से आज्ञा की सात

स्वरूप इकट्ठे करके मेरे को अन्नकूट अरोगाओ। तब श्रीगिरिधरजी ने विनती की श्रीगुसांईजी की आज्ञा हो तो यह कार्य हो सकता है, पीछे श्री गिरिधर जी ने श्रीगुसांईजी से प्रार्थना की तो आप कुछ नहीं बोले। थोडे दिन बाद श्रीगिरिधरजी की बैठक में श्रीनाथजी ने श्रीगिरिधरजी को आज्ञा की। श्रीगिरिधरजी ने कहा में फिर श्रीगुसांईजी से प्रार्थना करूंगा। पीछे श्रीगुसांईजी से प्रार्थना की तब भी आपने कुछ उत्तर नहीं दिया। थोड़े दिन बाद तीसरी बार आज्ञा हुई तब श्रीगिरिधरजी ने श्रीगुसांईजी से विनती की राज अब तो तीसरी आज्ञा हुई है। श्रीगुसांईजी ने आज्ञा की भले ही सुखेन करो। अब लौकिक बढाने की आपकी इच्छा है। श्रीगिरिधरजी ने सातों स्वरूप पधराकर अन्नकूट अरोगाया। अनिर्वचीय सुख हुआ। श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजी के ऊपर बहुत प्रसन्न हुए। यह चरित्र श्रीगिरिधरजी ने श्रीगोपालपुर की बैठक में प्रकट किया।

३. कामरी की बैठक

श्री गिरिधरजी की बैठक कामरी के गुफा में है। वहां एक मायावादी था वह बड़ा महात्मिक था, वह सभी का खंडन करता था। जब श्रीगिरिधरजी पधारे, तब वह मायावादी पंडित आया और आपसे चर्चा की। आपने दो घड़ी में उसको निरूत्तर कर दिया। उस पंडित ने साष्टांग दंडवत् की तथा प्रार्थना की महाराजाधिराज कृपा करके मेरे को शरण लीजिये। आपने आज्ञा की रूद्राक्ष तोड़ चन्द्रभागा कुंड में स्नान करके आओ। जब वह स्नान करके आया तब उसको अंगीकार किया। वह माहात्म्य देखकर अनेक जीव शरण आये, वहां ऐसा अनिर्वचनीय सुख हुआ। यह चरित्र श्रीगिरिधरजी ने कामरी की बैठक में प्रकट किया।

४. नरीसेंवरी बैठक

श्रीगिरिधरजी की बैठक श्रीनरीसेंवरी में बलभद्र कुंड के किनारे श्रीदाऊजी के मन्दिर के पास है। वहां आप बिराजे। षट्मासपर्यंत आप वहां बिराजें। तथा श्रीमद्भागवत की कथा की। अनिर्वचनीय आनंद हुआ और लीला का अवलोकन किया। जो भगवदीय संग थे उनको भी अलौकिक दर्शन करवाये तथा अनेक जीवों का उद्धार किया। यह चरित्र श्रीगिरिधरजी महाराज ने श्रीनरीसेंवरी की बैठक में प्रकट किया।

इसके अलावा कामवन में श्रीसुरभि कुंड–श्रीकुंड ऊपर श्रीमहाप्रभुजी की बैठक है उनकी बैठक के साथ में श्रीगिरिधरजी महाराज की बैठक भी वर्तमान में प्रकट है। वैष्णव सेवा दर्शन करते है। किन्तु इस बैठक का चरित्र नहीं मिलता है।

।।श्रीगिरिधरजी की बैठक चरित्र संपूर्ण।।

गो. श्री गोकुलनाथजी

।। श्री कृष्णाय नमः ।।

श्रीगुसांईजी के चतुर्थलालजी श्रीगोकुलनाथजी की १३ बैठकों का चरित्र–

१. श्रीगोकुल की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक श्रीमद् गोकुल में श्रीगोकुलनाथजी के मंदिर में हैं। वहां आप बिराजे। एक समय श्रीगोकुलनाथजी श्रीगुसांईजी के पास पध ारे और पुष्टि मार्ग का सिद्धान्त आपसे पूछा तब श्रीगुसांईजी ने पुष्टि मार्ग का सिद्धान्त कहा उसको सुनकर श्रीगोकुलनाथजी अपनी बैठक में पधारे। पुष्टिमार्ग के सिद्धान्त का विचार कर रहे थे, उसी समय कल्याण भट्ट ने आकर साष्टांग दण्डवत् की। आप तो रस में मग्न थे, इसलिये कुछ बोले नहीं। चार घड़ी के पश्चात् कल्याण भट्ट की ओर देखा। आपने पूछा तुम कब आये। तब उसने साष्टांग दंडवत् की और विनती की तथा कहा मैरे को आये हुए चार घड़ी हुई है। आपने आज्ञा की में आज श्रीगुसांईजी के पास गया था। उन्होंने पुष्टिमार्ग का सिद्धान्त कहा। पुष्टिमार्ग की रीति तो अतिकठिन है। उस समय कल्याण भट्ट ने विनती की महाराज कृपा करके कुछ कहिए। तब कल्याण भट्ट को कृपा करके सब सिद्धान्त कहा वह सभी २४ वचनामृत में लिखा है। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने श्री गोकुल की बैठक में प्रकट किया।

२. श्रीवृन्दावन की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक वृन्दावन में बंसीबट में श्रीमहाप्रभुजी की बैठक के पास है। वहां आप बिराजे। श्रीगोकुलनाथजी ने वहां सप्ताह की।

वहां हरिवंश प्रमृति सारे संत, महंत सप्ताह सुनने को आते थे। वहां पर अनिर्वचनीय सुख हुआ। इसके पश्चात् आपने श्री वल्लभाष्टक की टीका भी वहां पर की। उस समय कल्याण भट्ट आदि भगवदीय साथ थे उनको अलौकिक आनन्द हुआ। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीवृन्दावन की बैठक में प्रकट किया।

३. श्री राधा–कृष्ण कुंड की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक श्री राधा–कृष्ण कुंड पर श्रीगुसांईजी की बैठक के पास है। वहां श्री गोकुलनाथजी पधारे श्री राधा–कृष्ण–कुंड में स्नान करके बिराजे। कल्याण भट्ट को उस समय आज्ञाकी यहां श्रीस्वामिनीजी सहित श्रीठाकुरजी नित्य रमण करते हैं। यहां श्रीस्वामिनीजी के रत्न जड़ित महल हैं, इसलिए यहां सप्ताह करेंगे। पीछे आपने सप्ताह की। महाअलौकिक आनंद हुआ। यह चरित्र श्रीराधा–कृष्ण कुंड की बैठक में प्रकट किया।

४. श्री चन्द्रसरोवर की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक चन्द्रसरोवर पर श्रीगुसांईजी की बैठक के पास है। वहां श्रीगोकुलनाथजी ने प्रथम रास करवाया। तब वहां श्रीगिरिधरजी श्रीगोवर्धननाथजी सहित पधारे। अलौकिक रास हुआ। उस समय चतुर्भुजदासजी ने कीर्तन गाया। वह चतुर्भुजदासजी की वार्ता में विस्तार से लिखा है। वहां श्रीगोकुलनाथजी ने श्री सर्वोत्तमजी की टीका की। महाअनिर्वचनीय सुख हुआ। आप एक मास तक वहां बिराजे। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीचन्द्रसरोवर की बैठक में प्रकट किया।

५. श्री गोपालपुर की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक श्री गोपालपुर (श्री गिरिराज जी) में श्रीगोकुलनाथजी के मंदिर में है। वहां आप बिराजते थे। उद्धव तिवाड़ी आपका सेवक था। उसके ऊपर आप बहुत कृपा करते। वह आपकी सेवा में अष्ट प्रहर उपस्थित रहता था। तरहटी में रसोई कर भोग धरकर महाप्रसाद लेकर सेवामें आता था, एकदिन श्रीगोकुलनाथजी ने दो चार बार जल अरोगा। तब उसने विनती की महाराज दो चार बार जल अरोगा उसका क्या कारण है। आपने आज्ञा की खींचड़ी में नमक बहुत डाला था। उसने विनती की राज नमक (मीठुं) अधिक–अधिक गिरा यह सही है। तब आपने आज्ञा की रसोई तो बहुत सावधानी के करनी चाहिए तथा उत्तम सामग्री कर प्रभु को भोग धरनी चाहिए। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीगोपालपुर की बैठक में प्रकट किया।

६. श्रीकामवन की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक कामवन में सुरभि कुंड के पास श्रीकुंड के ऊपर है। वहां आप बिराजे और आज्ञा की कामवन में लीलास्थल अनेक है। यहां श्रीठाकुरजी सदैव रमण करते हैं। यह कामवन लीलात्मक है। इसलिए यहां सप्ताह की जिससे अनिर्वचनीय सुख हुआ यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने कामवन की बैठक में प्रकट किया।

७. श्री करहला की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक श्रीकरहला में श्रीगुसांईजी की बैठक के

समीप है। वहां आप बिराजे। तब वहां श्री वेणुगीत की श्री सुबोधिनी जी का प्रसंग चला। उस समय सभी को रसावेश हुआ। किसी भी वैष्णव को देह दशा का अनुसंधान नहीं रहा। पीछे आपने सभी को सावधान किया। पीछे आपने सप्ताह की। महा अलौकिक आनन्द हुआ। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने श्री करहला की बैठक में प्रकट किया।

८. श्री रासोली की बैठक

श्री गोकुलनाथजी की बैठक रासोली में है। वहां आप बिराजे। वहां सप्ताह की। वहां महाअलौकिक आनन्द किया। तब कल्याण भट्ट ने भ्रमरगीत की श्रीसुबोधिनीजी का प्रसंग पूछा तो आपने व्याख्यान किया। तीन प्रहर व्यतीत हो गये। महा अनिर्वचनीय सुख हुआ। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने रासोली की बैठक में प्रकट किया।

९. श्रीसोरमजी की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक श्रीसोरमजी में श्रीमहाप्रभुजी श्रीगुसांईजी की बैठक के पास है। वहां श्रीगंगाजी में स्नान करके आप बिराजे। पीछे आपने सप्ताह की। अनिर्वचनीय सुख हुआ। कल्याण भट्ट को आज्ञा की कि श्रीगंगाजी को भागीरथ राजा जाकर पधरा लाये। श्रीगंगाजी में स्नान करने से उनके आगे के प्रायश्ति का नाश करते है। श्री यमुनाजी के संबंध से श्रीगंगाजी का सामर्थ्य अधिक हुआ है। ये भक्ति एवं मुक्ति दोनों देती है तब श्रीगोकुलनाथजी ने कृपा कटाक्ष द्वारा अनेक जीवों का उद्धार किया। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने श्री सोरमजी की बैठक में प्रकट किया।

१०. श्रीअडेल की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक श्री अडेल में है। वहां आप नित्य बिराजते हैं। प्रथम सप्ताह आपने वहीं की एक समय श्रीगुसांईजी और श्रीगिरिधरजी ने सेवामें स्नान किया। श्रीगोकुलनाथजी आपकी बैठक में बिराजे हुए थे। उसी समय मायावादी पंडित आया। उसके साथ आपने चर्चा की। उसको दो घड़ी में आपने निरुत्तर कर दिया। उस पंडित ने साष्टांग दंडवत की और विनती की महाराज आप साक्षात् ईश्वर हो। पीछे दंडवत् करके वह पंडित अपने देश को गया। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने श्री अडेल की बैठक में प्रकट किया।

११. काश्मीर की बैठक

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक काश्मीर में है। आपने वहां चिद्रूप को जीत मायामत का खंडन किया भक्तिमार्ग का स्थापन किया। माला प्रसंग जीतकर सभी को माला बंधवाई। तब चारों संप्रदाय वालों ने मिलकर श्रीगोकुलनाथजी को तिलक किया और विनती की महाराज चारों संप्रदाय के दीक्षित आप हो आपने ही हमारे धर्म को रखा है। चारों संप्रदाय वालों ने मिलकर श्रीगोकुलनाथजी को सुखपाल में पधराया। बादशाह ने दंडवत् करके मोतियों की माला अमोलक थी, वह भेंट की। आपने उसे श्री गंगाजी में डाल दी। तब किसी ने बादशाह को कहा कि तुम्हारी माला श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीगंगाजी में डाल दी है। बादशाह ने विनती की महाराज वह माला बेगम की है। अतः दे दो। मैं आपको दूसरी माला भेंट करूंगा तब आपने आज्ञा की कि श्री गंगाजी में हाथ डालो। उसने हाथ डाला। एक साथ दस बीस माला बड़े–बड़े गज मुक्ता की अमोल माला आ गयी। आपने आज्ञा की तेरी माला हो वह ले ले। बादशाह ने

साष्टांग दंडवत कर विनती की महाराज आप साक्षात् ईश्वर हो। मेरी बादशाही आप ने रखी। नहीं तो डूब जाती। मेरा अपराध क्षमा करो। माला अंगीकार करिये। तब आपने आज्ञा की सब माला गंगाजी में डाल दो। तुम्हारी माला तो अंगीकार हुई है। बादशाह ने दण्डवत् की तथा अपने घर गया। यह माहात्म्य देखकर अनेक जीव श्रीगोकुलनाथजी के शरण आये। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने काश्मीर की बैठक में प्रकट किया।

१२. श्री गोधरा की बैठक –

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक गोधरा में नागजी भाई के घर में श्रीगुसांईजी की बैठक के पास है। जब श्रीगोकुलनाथजी गोधरा पधारते तब नागजी भाई के घर बिराजते थे। जब देखते है वहां सब जगह गिर गई है। श्रीगोकुलनाथजी ने आज्ञा की नागजी भाई की जगह बनवा दूं। वैष्णव ने कहा कि महाराज आप द्वारिका होकर पीछे पधारोगें वहां तक बन जायेगी। पीछे श्रीगोकुलनाथजी ने तपेली की। श्रीगुसांईजी को भोग धर कर भोजन किया। पीछे सप्ताह की। अनिर्वचनीय सुख हुआ। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने श्रीगोधरा की बैठक में प्रकट किया।

१३. श्री असारवा की बैठक –

श्रीगोकुलनाथजी की बैठक राजनगर– अमदाबाद में असारवा में भाइला कोठारी के घर में श्रीगुसांईजी की बैठक के पास है। वहां आप बिराजते थे। चाचा हरिवंशजी भी यहां ही रहते थे। चाचाजी ने प्रथम श्रीगोकुलनाथजी को विनती पत्र लिख भिजवाया था महाराज श्रीगुसांईजी श्रीद्वारिका छः बार

पधारे। आप भी शीघ्र पधारोगे। वह पत्र पढकर श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारिका पधारे। जब आप राजनगर पधारे तब चाचाजी ने साष्टांग दंडवत की तथा प्रार्थना की महाराज अनेक जीव आपके दर्शन के लिए तरसते है। कृपा करके उन जीवों को अंगीकार करिये। उस समय आपने आज्ञा की कि तुम्हारा पत्र पढते ही यहां आया हूं। पीछे आपने रसोई की। श्रीगुसांईजी को भोग धर कर भोजन किया और वहां ही बिराजे। दूसरे दिन आपने सप्ताह प्रारम्भ की उससे अनिर्वचनीय सुख हुआ। तब आपने वहां अनेक जीवों का उद्धार किया। पीछे आप श्रीद्वारिकाजी पधारे। वहां कुछ दिन बिराजकर फिर राजनगर पधारे। यहां कुछ दिन बिराजकर पीछे गोधरा होते हुए श्रीमद्गोकुल पधारे। यह चरित्र श्रीगोकुलनाथजी ने श्री असारवा की बैठक में प्रकट किया।

।।श्रीगोकुलनाथजी की बैठक चरित्र संपूर्ण।।

श्रीमद् गोस्वामी श्री हरिराय जी महाप्रभु जी की बैठक का चरित्र

१. श्रीगोकुल की बैठक –

श्रीहरिरायजी की बैठक श्रीमद् गोकुल में श्रीविट्ठलनाथजी के मंदिर में है। वहां आप नित्य बिराजते थे। वहां आपका कृपा पात्र सेवक हरजीवनदास उनसे मिलकर रहस्य वार्ता करते और प्रथम निरोध लक्षण ग्रन्थ की टीका आपने वहां ही की थी। पीछे आपने श्री भागवत् सप्ताह की उससे अनिर्वचनीय सुख हुआ। यह चरित्र श्रीहरिरायजी ने श्रीगोकुल की बैठक में प्रकट किया।

२. श्रीजीद्वार की बैठक

श्रीहरिरायजी की बैठक श्रीविट्ठलनाथजी के मंदिर में है। वहां आप बिराजकर नित्य कथा कहते। एक दिन हरजीवन दास ने वेणु गीत का प्रसंग पूछा। जिस व्याख्यान में आपके तीन दिन और तीन रात्रि व्यतीत हो गई। अलौकिक आवेश हुआ किसी को देहानुसंधान नहीं रहा। पीछे आपने सब को सावधान किया। वहां आपने सप्ताह की महा अलौकिक आनन्द हुआ। यह चरित्र श्रीहरिरायजी ने श्रीजीद्वार में प्रकट किया।

३. श्री खमनोर की बैठक

श्रीहरिरायजी की बैठक श्री खमनोर में है। वहां आप बिराजे। वहां हाथी, सुखपाल, घोडा, तथा घुडवेल और रथ में चारों सवारी प्रहर प्रहर वहां

श्री हरिराय महाप्रभु

खडी रहती थी। क्योंकि श्रीनाथजी क्षण क्षण में आपको बताते रहते थे। आप सवारी कर शीघ्र पधारते। एक दिन श्रीनाथजी को श्रीबालकृष्णजी के लालली श्रीवल्लभजी ने श्रृंगार किया वे पेंडे की गादी बिछाना भूल गये। तब श्रीनाथजी खडे रहे। गंगाबाई को आपने आज्ञा की में खडा हूं। यह बात गंगाबाई ने श्रीहरिरायजी को बताई। उस समय श्रीहरिरायजी तो पोढे हुए थे। स्वप्न में आपने बताया आज पेंडे की गादी किसी ने बिछाई नहीं है और में खडा हूं। उस समय श्रीहरिरायजी चौंक उठे और उद्धव दास रववास को कहा कौन सी सवारी खडी है। उसने कहा घुडवेल खडी है। उससे आप मंदिर पधारे श्रीदाऊजी की बैठक में से कूंची (चाबी) का झूमका मंगवाकर शंखनाद किये। ताला खोलकर भीतर पधारे। पेंडे की गादी बिछाई, दंडवत की ताला मंगलकर श्रीदाऊजी महाराज की बैठक में पधारे। श्रीदाऊजी महाराज ने दंडवत की और विनती की तथा कहा आप श्रीवल्लभ कुल में शिरोमणि हो कुछ सेवा में भूल हुई हो तो आपको सेवा करना उचित है। आज पेंडे की गादी बिछाना भूल गये श्रीनाथजी को परिश्रम हुआ। यह आज्ञाकर आप खमनोर पधारे। पीछे श्रीदाऊजी महाराज बहुत सावधानी रखते थे। यह प्रसंग श्रीनाथजी की प्राकट्यवार्ता में विस्तार से लिखा है। यह चरित्र श्रीहरिरायजी ने श्री खमनोर की बैठक में प्रकट किया।

४. श्री जैसलमेर की बैठक

श्रीहरिरायजी की बैठक जैसलमेर में है। श्रीगिरिधरजी के मंदिर में है। वे श्रीगिरिधारीजी, श्रीकल्याणरायजी के सेव्य स्वरूप है। वहां आपने जैसलमेर के राजा को आपने सेवक किया और भी अनेक जीवों का उद्धार किया। पीछे

आपने श्रीमद् भागवत की सप्ताह की उसमें महाआलौकिक आनन्द हुआ। यह चरित्र श्रीहरिरायजी ने जैसलमेर की बैठक में प्रकट किया।

५. श्री डाकोर जी की बैठक

श्रीहरिरायजी की बैठक श्री डाकोर जी में श्रीगोमतीजी के तीर पर है। वहां श्रीहरिरायजी पधारे। श्रीगोमतीजी में स्नान करके भोजन कर आप पोढे थे। उस समय में श्रीरणछोडजी ने स्वप्न में आज्ञा की में यहां एक छपरा में बैठा हूं। एक ब्राह्मण नित्य जल का लोटा डाल जाता है। इसलिए आप मेरे को श्रीहस्त से स्पर्श तथा साधारण मंदिर बनवाकर यहां मेरे को बैठाओ। उस समय आप जागे। सब वैष्णवों को बुलाकर पूछा। यहां श्रीरणछोडजी कहां बिराजते है। तब वैष्णवों ने कहा कि एक छपरा में बिराजते है। आप दर्शन को पधारे। दर्शनकर सब वैष्णवों को बुलाये। एक साधारण मंदिर बनवाकर अच्छा मुहूर्त देखकर श्रीरणछोडजी को पधराये। खेडावाल ब्राह्मण को सेवा में नहलवाये। प्रथम जो नित्य जल से स्नान करवाता उसने आकर विनती की महाराज स्नान तो मे कराता था आपने सेवा में खेडावाल नहवाये। तब आप ने आज्ञा की तुम दोनों आधा आधा बांट लेना। पीछे आपने सप्ताह की। अनिर्वचनीय सुख हुआ। यह चरित्र श्रीहरिरायजी ने श्रीडाकोर जी की बैठक में प्रकट किया।

६. श्री सावली की बैठक

श्रीहरिरायजी की बैठक श्री सावली में तलाब के समीप है। वहाँ श्रीहरिरायजी बिराजे। वहाँ आपने सप्ताह की अनिर्वचनीय सुख हुआ। अनेक

जीवों का उद्धार किया। यह चरित्र श्रीहरिरायजी ने सावली की बैठक में प्रकट किया।

७. श्री जंबुसर की बैठक

श्रीहरिरायजी की बैठक श्री जंबुसर में तलाब के पास है। वहाँ आप बिराज कर कथा कहते थे। तब प्रेमजी भाई ने युगल गीत का प्रसंग पूछा तब आपने व्याख्यान किया। तीन प्रहर व्यतीत हो गये ऐसा महा अलौकिक रसावेश हो गया। किसी को देहानुसंधान ही नहीं रहा। पीछे आपने सावध ाान किया। इसके बाद आपने सप्ताह की। अनेक जीवों का उद्धार किया। पीछे श्रीहरिरायजी ने वहाँ से विजय किया। श्रीजी द्वार पधारे। यह चरित्र श्रीहरिरायजी ने श्रीजंबुसर की बैठक में प्रकट किया।

।। श्रीमद्गोस्वामी श्री हरिरायजी महाप्रभु की बैठक चरित्र संपूर्ण।।

श्रीगोवर्धननाथजी की ११ चरण चौकी का चरित्र

(१) श्रीनाथजी की चरण चौकी श्री गिरिराज के ऊपर आप के निज मंदिर में है जहाँ श्रीनाथजी नित्य बिराजते हैं।

(२) श्रीनाथजी की चरण चौकी श्रीमथुराजी में सतधरा में है जहाँ आप से १६२३ (व्रज) फाल्गुन कृष्ण ७ को श्रीगुसांईजी के घर पधारे थे।

(३) श्रीनाथजी की चरण चौकी आगरा में हवेली में है जहाँ आप श्रीगिरिराज से सं. १७२५ (व्रज) आश्विन सुदी पूर्णिमा को विजय कर पीछे यहाँ पधारे थे। तब अन्नकूट यहाँ अरोगा था।

(४) श्रीनाथजी की चरण चौकी कृष्ण पुरी दंडोत धार में चंबल नदी के ऊपर है। जहाँ श्रीनाथजी का रथ रूक गया वहाँ आप बिराजे उत्थापन वहीं हुए। यहाँ बैठक है।

(५) श्रीनाथजी की चरण चौकी कृष्णपुरी में है। जहाँ श्रीव्रजरायजी महाराज ने २७ दिन तक सेवा की है। पीछे श्री गोविन्दजी महाराज ने सेवा की है। यहाँ आप चतुर्मास बिराजे हैं।

(६) श्रीनाथजी की चरण चौकी कोटा में है। कृष्ण विलास में पद्म शिला के ऊपर बिराजे है।

(७) श्रीनाथजी की चरण चौकी किशनगढ़ के पास "अजमित्ति गाँव के पास पर्वत पर है। वहाँ पर श्रीनाथजी ने बसंत ऋतु की है।

(८) श्रीनाथजी की चरण चौकी चापासेनी में है। जहाँ बहुत सुन्दर कदंब

खंडी देखकर आप बिराजें।

(९) श्रीनाथजी की चरण चौकी उदयपुर में श्रीनाथजी की हवेली में है। यहां पर कुछ मास बिराजे।

(१०) श्रीनाथजी की चरण चौकी घस्यार में है वहाँ आप छः वर्ष के लगभग बिराजे।

(११) सिंहाड़ ग्राम जहां वर्तमान में श्रीजी का खर्च भण्डार है पूर्व में यहां पर पीपल का पेड़ था श्रीजी का रथ रुक गया था। श्रीजी के नवीन मन्दिर निर्माण तक प्रभु यहीं पर सेवा अंगीकार करते रहे। यहां पर श्रीजी की छवि विराजमान है। यहां पर पर्वो पर कीर्तनादि होते हैं। पाटोत्सव पर कीर्तन होते हैं, दूध का भोग आता है तथा भक्तों में दूध वितरण किया जाता है।

।। श्रीगोवर्धनाथजी की चरण चौकी चरित्र संपूर्ण।।

श्रीगोवर्धननाथजी की बैठक व्रज में तीन है उनका चरित्र

(१) श्रीगोवर्धननाथजी की बैठक श्री श्याम ढाक पर है। वहाँ आपने व्रज भक्तों के साथ, ग्वाल बाल के संग छाक लीला, आंख मिचोनी लीला, गोचारण लीला इत्यादि अनेक की। कुंभनदासजी और गोविन्द स्वामी के साथ अनक भांति आपने क्रीड़ा की है।

(२) श्रीगोवर्धननाथजी की बैठक श्री गुलाल कुंड के ऊपर है। वहाँ पर आपने बिराजकर व्रजभक्तों के संग होली का खेल किया।

(३) टोड के घना में गुलाल–कुंड के पास जहाँ श्रीनाथजी वैरागी को दर्शन देने को पधारे थे वहाँ पर श्रीनाथजी की बैठक है।

श्रीगुसांईजी के पंचमलालजी श्रीरघुनाथजी की एक बैठक श्री गोकुल में है। श्रीगुसांईजी के सप्तमलालजी श्रीघनश्यामजी की एक बैठक श्रीगोकुल में श्रीमदनमोहनजी के मंदिर में एक गुफा में है। वहाँ आप बिराजे। एक समय आपके सेव्य श्रीठाकुरजी श्रीमदनमोहनजी (कामवन में बिराते है।) को तस्कर विद्या से चुराकर ले गया। उस बात की आपको जानकारी हुई। श्रीठाकुरजी के बिना आप से रहा नहीं गया। उस समय आपने अन्नजल का त्याग करके ये गुफा में बिराजे। अत्यन्त विरह से आप निज लीला में पधारे।

परम भगवदीय दामोदरदास की दो बैठक है:–

(१) श्री गोकुल में श्री ठकुरानी घाट पर

(२) श्री वृन्दावन में श्री बंसीबट में है।

सुन्हेहरा की कदम खंडी

यहाँ श्रीगोस्वामी श्रीकाका वल्लभजी (श्री गोकुल चन्द्रमाजी के घर की बैठक है।) उनका जन्म दिवस सं. १७१६ कार्तिक सुदी १३ को आता है। ये महाराज श्रीगोकुल चन्द्रमाजी की सेवा पहुंचकर अनोसर में यहाँ बिराजते थे। इसी स्थल पर 'भावना के ग्रंथ लिखे थे। यहीं श्रीगोस्वामी श्रीदेवकीनंदनजी महाराज भी किसी किसी समय पधारते थे।

जगद्गुरु श्री वल्लभाचार्य जी

।। श्री कृष्णाय नमः।।

।। श्री गोपीजन वल्लभाय नमः।।

श्रीमद्भगवद्वदनानलावतार–श्री मद्खण्डभूमण्डलाचार्य वर्य श्रीमद्वल्लभाचार्य जी की ५१ प्रसंग की निजवार्ता

निजवार्ता प्रारम्भ

वार्ता प्रसंग–१

श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी जिन दैवी जीवों के उद्धारार्थ भूतलपर प्रकट हुए उन दैवीजीवों को भगवान से बिछुटे बहुत समय हुआ। गद्य श्लोक में श्रीआचार्यजी ने कहा है "सहस्र परिवत्सर आदि" जब श्रीठाकुरजी की लीला में दया उत्पन्न हुई तब अपने मुख से एक तेज का स्वरूप कल्पकर उनको आज्ञा दी कि तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभु का देह धारण कर भूतल पर प्रकट होकर दैवी जीवों का उद्धार करो। वे जीव बहुत समय से भटक रहे है और अन्य मार्ग मे से भ्रमित है। परन्तु कभी भी उनका भला नहीं हो रहा हैं इसलिये जो जिस वस्तु का अधिकारी है उसको वह वस्तु नहीं दीख रही है। वे जीव इस कारण परिभ्रमण कर रहे हैं। उनके लिए आप प्रकट होकर उनका उद्धार करो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रकट हुए। इस प्रकार साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम का जो तेजोमय धाम है उसका आधार अग्नि है। उस अग्निकुंड में से आप प्रकट हुए। इसलिए सभी आपको अग्नि स्वरूप कहते है। आप वह अग्नि है जो साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम के मुखारविन्द में विद्यमान आधिदैविक रूप अग्नि है। वह अग्निस्वरूप श्रीआचार्यजी महाप्रभु का है। आप अग्निस्वरूप ऐसे है जो आपके समीप आता है तो शीतलता प्राप्त होती है और आप से दूर

जाता हैं तो ताप होता है। किन्तु लौकिक अग्नि तो ऐसी होती है पास जाने पर ताप और दूर जाने पर शीतलता प्राप्त होती है। यह तो पूर्ण पुरूषोत्तम के मुखारविन्द रूप अग्नि है इसलिए सब पदार्थ का भोग करते है। इसलिए श्रीआचार्यजी महाप्रभु का नाम श्रीगुसांईजी ने सर्वोत्तम में " यज्ञ भोक्ता" कहा है। श्रीवल्लभाष्टक में भी "वस्तुतः कृष्ण एव" कहा है। इसलिए निश्चय करके श्रीआचार्यजी ने महाप्रभु को श्रीगोवर्धन जाना। श्रीगुसांईजी ने इसलिए कहा कि श्रीआचार्यजी ने मनुष्य देह अंगीकार किया उस कारण सर्वोत्तम मे " प्राकृतानुकृति व्याज मोहिता सुर मानुषः" कहा है। श्रीआचार्यजी साक्षात् श्रीगोवर्धन होकर दर्शन दें तो सभी प्राणीमात्र शरण आवें। उसमें आसुर भी आवें। इसलिए आपने अपने स्वरूप को प्रकट नहीं किया। सब जगत को मनुष्य का दर्शन हो और कहें कि ये बड़े महापुरूष बड़े पंडित हैं इतना ही जानें। दैवीजीवों को तो साक्षात् श्रीगोवर्धन के दर्शन होते है जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ४० हाथ के अग्निकुंड में से चंपारण्य में १५३५ चैत्र (व्रज वैशाख) वदी ११ रविवार के दिन प्रकट हुए। तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी और इल्लमागारूजी इनको लेकर पधारे। जब आप पाँच वर्ष के हुए तब संवत् १५४० चैत्र वदी ६ रविवार के दिन यज्ञोपवीत धारण किया। पीछे, चारोंवेद, पुराण, सब शास्त्र पढ़ गये। इसलिए लक्ष्मण भट्टजी को आश्चर्य हुआ। तब लक्ष्मण भट्टजी को श्रीठाकुरजी ने स्वप्न में कहा तुम संदेह क्यों करते हो? में साक्षात् तुम्हारे घर में प्रकट हुआ हूँ। कितने ही दिन पीछे श्रीबालाजी मे संवत् १५४६ चैत्रवदी ६ के दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु के ११ में वर्ष में श्री लक्ष्मण भट्ट को श्रीठाकुरजी के चरणाविन्द की प्राप्ति हुई। उसका कारण यह था श्रीआचार्यजी महाप्रभु को तो पृथ्वी प्रदक्षिणा कर दैवीजीवों का उद्धार करना था। दैवीजीव तो देशान्तर में भी है। श्रीलक्ष्मण भट्टजी के बिराजते हुए उनकी बिना आज्ञा देशान्तर को

कैसे पधारें तथा श्री लक्ष्मण भट्ट जी बालक को अकेले जाने की आज्ञा कैसें दें। इसलिए यह स्वतंत्रता बिना दैवीजीवों का कार्य नहीं होगा। इसके पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु संवत १५४८ वैशाख वदी २ रोहिणी नक्षत्र के दिन माताजी की आज्ञा लेकर १३ वर्ष की आयु में आप घर से प्रथम परिक्रमा करने को पधारे।

प्रसंग–२

प्रथम मार्ग में किसी एक महापुरूष का स्थल था। वह महापुरूष बहुत वृद्ध था। वह दूसरों को सेवक करता था। तब उसने यह मन में विचार किया मेरे को कोई सेवक मिले जिस को यह कार्य सोंपदूँ। उसी समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु उसके आश्रम में पधारे। वह देखते ही महापुरूष् अपने मन में बहुत प्रसन्न हुआ और मन में सोचा मे जो विचार करता था श्रीठाकुरजी ने मेरा मनोरथ सिद्ध किया। उस महापुरूष ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से कहा तुम मेरे सेवक बनो। यह सारा मठ आपको सोंप दूं। मैं अब वृद्ध हो गया हूँ। यह सब कार्य आप करो। तब आपने कहा बहुत अच्छा। श्रीआचार्यजी महाप्रभु तो ईश्वर है सब जानते हैं। इसी कारण आप यहाँ पधारे हैं। पीछे रात्रि को आप वहाँ ही उसके आश्रम में पोढ़े और वहां महापुरूष भी सोया। तब उसको श्रीठाकुरजी ने स्वप्न में कहा अरे मूर्ख मैंने तो तेरे उद्धार के लिए इनको यहाँ भेजे हैं। तू तो उनको सेवक करता है तेरे को अगर अपना कार्य करना होतो तू इनके शरण जाना। ये तो साक्षात् मेरा स्वरूप है। भक्तिमार्ग के उद्धार के लिए प्रकट हुए है। यह सुनकर वह महापुरूष तत्काल जग गया और उठकर आकर के श्रीआचार्यजी महाप्रभु को साष्टांग दंडवत् की और हाथ जोड कर कहा मैंने आपके स्वरूप को नहीं पहचाना। आप तो साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम हो। मेरे उद्धार के लिए पधारे हो। अतः मेरे को अंगीकार करो। मै आपकी शरण हूँ। तब श्रीआचार्यजी ने कहा

हाँ हाँ तुम्हारा उद्धार करेंगे। क्या हुआ जो तुमने कुछ कहा। तब सवेरे श्रीआचार्यजी ने उसको नाम सुनाये। पीछे वहाँ से पधारे।

प्रसंग—३

आगे एक बड़ा नगर आया उस जगह एक बड़ा नगर सेठ था। उसकी देह छूटी। उसके चार पुत्र थे। उसमें तीन बेटे तो बड़े थे और उनमें सब से छोटा दामोदर दास था उन बड़े भाइयों ने विचार किया कि यह द्रव्य सब अपना अपना बांट लें। क्योंकि द्रव्य जो है वह क्लेश का मूल है इसलिए हमारा हित नहीं होगा दामोदर दास जी तो छोटे थे। उनको कहा क्यों बाबा तू अपने हिस्से का द्रव्य लेगा। तब दामोदर दास ने कहा में तो कुछ समझता नहीं हूँ। तुम बडे हो जो अच्छा समझते हो वह करो। उन्होंने तब सब द्रव्य घर में से निकालकर उसके चार हिस्से किये और चारों के नाम की चिट्टी उसके ऊपर डाल दी जिसके नाम की चिट्टटी निकली वह हिस्सा उसने लिया। दामोदर दास से कहा कि तुम्हारे धन को जहाँ कहो वहाँ धर दें। उस समय दामोदर दास गौरव में बैठ थे इतने में श्रीआचार्यजी महाप्रभु उस मार्ग से होकर निकले। ऊपर से दामोदर दास की दृष्टि पड़ी। तब वे वहाँ से तत्काल उठकर दोड़े। द्रव्य तथा घर का ध्यान न रहा। आते ही आपको दंडवत की तब आपने श्रीमुख से कहा दमला तू आया। दामोदार दास ने कहा में तो कमी से मार्ग देख रहा हूं। उसके बाद श्रीआचार्यजी महाप्रभु के चरणारविन्द के पीछे पीछे दामोदर दास चले। दामोदर दास के भाई कहने लगे घर में दामोदर दास नहीं है कहां गये। तब किसी ने कहा कि वे तो एक महापुरुष जा रहे थे उनके पीछे वे भी जा रहे थे। यह सुनते ही वे तीनों भाई वहाँ से चले। आगे उस नगर के बाहर एक स्थल था वहाँ श्रीआचार्यजी

महाप्रभु बिराज रहे थे। आगे दामोदर दास बैठे थे। यह देखते ही तीनों भाई चकित हो गये देखते ही उन से कुछ बोला नहीं गया। अपने मन में विचार किया कदाचित् हम बोलेंगे तो यह अग्नि हमको भस्म कर डालेगी। दामोदर दास ने भाइयों को देखकर कहा भाई तुम जाओ। उस समय भाइयो ने दामोदर दास का स्वरूप तेजोमय देखा तथा भयभीत होकर पीछे लौट आये। दैवीजीव होते तो शरण आते श्रीआचार्यजी का नाम है। "दैवो द्धार प्रयत्नात्मा" पीछे दामोदर दास को संग लेकर श्रीआचार्यजी आगे पधारे। दामोदर दास का ब्याह नहीं हुआ था। दामोदर दास का प्रतिबन्ध कौन करें। वे तो प्रभु से बहुत दिनों में बिछुड़े हुए थे। इसलिए आकर मिले। पीछे दामोदर दास आपके साथ चले।

प्रसंग–4

विद्यानगर में कृष्णदेव राजा था। वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु के मामा विद्याभूषण जी रहते थे। आप वहाँ पधारे। मामा देखकर बहुत प्रसन्न हुए। बहुत आदर सन्मान किया और कहा उठो भोजन करो। तब श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख से कहा। मैं तो कहीं भोजन नहीं करता हूँ। अपने हाथ से करके लेता हूं। यह सुनकर मामा को क्रोध आया तथा बहुत बुरा लगा। हमारे घर भोजन नहीं करते हो तो देखते हैं राजा से कैसे मिलोगे? राजा के दानाध्यक्ष तो हम हैं। देना दिलाना तो हमारे हाथ में है। यह सुनकर आपने कहा हमारे तो कुछ चाहिए नहीं। ऐसा कहकर आप कुछ भी नहीं बोले। क्यों? आप तो ईश्वर हैं। आपकी बराबरी के हों तो उससे बोले। आपनें वहाँ अपने हाथ से भोजन किया वहाँ उनके घर सायं ब्राह्मण आये उनसे बातें करने लगे वे कहने लगे कल मायावादी जीतेंगे। श्रीआचार्यजी सायं संध्या कर रहे थे संध्या करके कहा कि मायावादी कैसे जीतेंगे। तब उन ब्राह्मणों ने कहा उनकी युक्ति बड़ी

है। इसके पीछे रात्रि को आप पोढ गये। इतने में अर्धरात्रि के समय श्रीगोवर्धननाथजी पधारे। उस समय श्रीआचार्यजी तो निद्रा में थे। श्री गोवर्धननाथजी ने श्रीआचार्यजी के केशों को दबाया तब आप तत्काल जग गये। देखते है तो श्रीनाथजी खड़े है। आप उठकर हाथ जोड़ कर खड़े रहे और कहा आप इस समय कैसे पधारें तब श्रीगोवर्धननाथजी ने कहा कि आप ऐसा गर्वित वचन सुनकर इस मामा के घर में क्यों रहे। मैं तो तुम्हारे पीछे पीछे डोल रहा हूँ। एक क्षण भी छोड़ता नहीं हूँ। यह मामा तुमको राजा से क्या मिलायेगा? ऐसे राजा तो कोटान कोटि तुम्हारे चरणारविन्द की अभिलाषा करते हैं। और करेंगे। आप उठो इसके घर मत रहो। तब तत्काल श्रीआचार्यजी महाप्रभु वहाँ से चले। नगर के बाहर जहां जलाशय था वहाँ आप बिराजे। देहकृत्य दंत धावन करके स्नान, तिलक मुद्रा कर संध्या करके कृष्णदेव राजा की सभा में पधारे। कृष्ण देव राजा के यहाँ पहले से ही वैष्णव सम्प्रदाय और स्मार्त सम्प्रदाय का आपस में बहुत दिनों से झगड़ा चल रहा था। इस कारण वैष्णव सम्प्रदाय के बड़े बड़े आचार्य महन्त बहुत इकट्ठे हो रहे थे युक्ति में स्मार्त जीते उस दिन यह झगड़ा समाप्त होने को था। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु के मामा ने पहले से ही राजा कृष्णदेव से कहा आज झगड़ा समाप्त होने में है। इसलिए द्वारपाल से कह दिया जाय आज कोई नया ब्राह्मण न आये। राजा ने कहा दानाध्यक्ष तो आप ही है। देना दिलाना आपके हाथ में ही है। जिसको तुम बुलाओगे वही आयेगा। उसके पीछे राजाकृष्ण देव के यहाँ सब सम्प्रदायी आचार्य ब्राह्मण इकट्ठे हुए थे। जब सब सभा इकट्ठी हुई। वहाँ राजा कृष्णदेव भी आकर बैठ गया। इतने में श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे। राज द्वार पर जाकर द्वारपाल से खबर करवाई। द्वारपाल आपको देखकर चकित हो गये। जैसे मानों आकाश से सूर्य पधारे हैं और तेज का पुंज

देखकर द्वारपाल ने जाकर राजा से कहा एक बड़ा तेज पुंज ब्राह्मण आया है। यह सुनकर राजा कृष्णदेव सब सभा सहित उठकर खड़ा हो गया और नंगे पैर आकर दंडवत् कर सभा में पधरा लाया। उस समय की क्या उपमा कही जाये? मानो राजा बलि की सभा में श्रीवामनजी पधारे हो श्रीआचार्यजी महाप्रभु के दर्शन करके राजा बहुत प्रसन्न हुआ। तब राजा ने आप से विज्ञप्ति की। महाराज आप आसन पर बिराजिये। मेरा बड़ा भाग्य है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु वहाँ आसन पर बिराजे। आपने राजा कृष्णदेव से पूछा आपकी सभा में झगड़ा क्या है? तब राजा ने विनती की महाराज वैष्णव सम्प्रदाय और मायावादी का आपस में झगड़ा है। वैष्णव सम्प्रदाय वाले निरूतर हो गये है। मायावादी की युक्ति बड़ी है। यह सुनकर श्रीआचार्यजी ने कहा ऐसा कौन है? जो वैष्णव सम्प्रदाय को जीतेगा? वैष्णव सम्प्रदाय तो हमारा है। इसलिए हमसे चर्चा करो। वे कौन है ऐसे जीतने वाले। यह सुनकर वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य महंत बहुत प्रसन्न हुए। तब राजा कृष्णदेव ने उन मायावादी से कहा आओ तुम्हारे चर्चा करनी हो वह करो। उसमें बड़े बड़े पंडित थे। वे श्रीआचार्यजी महाप्रभु से चर्चा करने लगे। तब आपने आज्ञा की तुम सभी में जो बहुत पढे लिखे हो चार व्यक्ति बड़े हो उन चार जनों के जीत ने पर सभी की जीत तथा चार जनें के हारने पर सभी हारें यह सुनकर मायावादियों ने चार मुखिया नियुक्त किये। उन मायावादियों ने विज्ञानानंद गिरि नाम का महापंडित था। उससे श्रीआचार्यजी वाद प्रश्न, ब्रह्मकर्म इत्यादि प्रश्न पूछने लगे। इस प्रकार यह वाद उनसे २७ दिन तक चला। आप तो साक्षात् ईश्वर हैं। चारों वेद, अठारह पुराण, षट् शास्त्र जिनके कंठाग्र है। इसलिए उनकी क्या सामर्थ्य? वे मायावादी तत्काल निरूतर हो गये। उन मायावादियों में जैन और बौद्ध मत वाले को आगे किया। तब श्री महाप्रभु पीछे पीठ देकर बैठे और

कहा हम इन से संभाषण नहीं करेंगे। उसका कारण ये अनीश्वर वादी है इनसे भाषण करना योग्य नहीं है। उस समय राजा ने बड़ा आग्रह किया तब आपने एक आदमी को मध्य में रखकर उनसे शास्त्रार्थ किया। सभा मे नानक पंथी दादू पंथी, निरंजनी, कबीर पंथी, आदि सभी को निरूतर किया। तब उन्होंने श्रीआचार्यजी महाप्रभु को साष्टांग दण्डवत् की और कहा महाराज कोई मनुष्य हो तो उससे हमारी चले। आप तो साक्षात् ईश्वर हैं। श्रीआचार्यजी का माहात्म्य देखकर राजा कृष्णदेव बहुत प्रसन्न हुआ। राजा को लोभ हुआ और प्रधान को आज्ञा दी ये ब्राह्मण मार्ग से टूटे है इनने वेदमार्ग को छोडा है। इसलिए इनकी वृत्ति बंद करदो। श्रीआचार्यजी तो बड़े दयालु है। आपने राजा से कहा इन्होंने तो अपना धर्म छोड़ा है। परन्तु तुम तो अपना धर्म मत छोड़ो। तुम तो जो देते हो वह दिया ही करो। प्रतिबन्ध करने का तुम्हारा धर्म नहीं है ऐसी आज्ञा कृष्णदेव राजा को की। पीछे वैष्णव सम्प्रदाय को रामानुज सम्प्रदाय के हनुमंताचार्य, निम्बार्क सम्प्रदाय के केशव भट्ट कश्मीरी, और माधव सम्प्रदाय के व्यास तीर्थ स्वामी आदि आचार्य महंत थे उन सभी ने कहा कि हम श्रीआचार्यजी को तिलक करेंगे। आज से हमारे वैष्णव सम्प्रदाय वाले ब्राह्मणों के ये राजा हुए तथा आचार्य पदवी दी। ये हमारे सभी के शिरोमणि है। इन्होंने हमारी वैष्णवता और वैष्णवता के मार्ग को रखा है। यह सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए और कहा बहुत अच्छा। तुम सभी ने ऐसा विचार किया है तो में श्रीआचार्यजी महाप्रभु का कनकाभिषेक करूंगा। यह सुनकर सब वैष्णव सम्प्रदाय के आचार्य महंत प्रसन्न हुए। राजा कृष्णदेव ने अच्छा मुहूर्त देखकर आपको सतमण (सोमन) स्वर्ण जल में डालकर कनकाभिषेक कराया। सभी ब्राह्मणों ने तिलक किया। सभी उस दिन से श्रीवल्लभाचार्यजी कहने लगे। ऐसा नाम उस दिन से प्रसिद्ध हुआ। प्रथम उसी दिन मायामत का

खण्डन किया। भक्तिमार्ग का स्थापन किया। तब राजा ने विनती की महाराज मेरे को अंगीकार कीजिये। आपने अनुग्रह करके राजा को नाम सुनाया। राजा ने स्वर्ण का थाल स्वर्ण द्रव्य से भरकर आगे रखा। आपने उसमें से सप्त स्वर्ण मुद्रा निकाल कर रखी। राजा ने कहा महाराज सब द्रव्य अंगीकार करिये। आपने श्रीमुख से कहा हमारा इतना ही है। हमारे अधिक नहीं चाहिए। राजा ने बहुत प्रार्थना की महाराज स्नान का स्वर्ण है। वह आपका है। आपने कहा वह हमारे क्या काम का है यह तो उच्छिष्ट जलवत् है। इसलिए तुम ब्राह्मणों को बांट दो। तब भी राजा नहीं माना। आपने कहा इसमें से आधा द्रव्य तो ब्राह्मणों को बांट दो तथा आधा तुम्हारे पास रहने दो। काम पड़ेगा तब मंगवा लेंगे। जब यज्ञ किया तब राजा के पास रखें हुए द्रव्य को मंगवा लिया। उसमें से आधा स्वर्ण में से श्रीजगन्नाथरायजी के लिए कटि मेखला बनवाई। पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अपने स्थल पर पधारे। मध्यरात्रि के समय मध्वाचार्य के व्यास तीर्थ नाम के वृद्ध सन्यासी श्रीआचार्यजी के पास आये। उनने कहा तुम इस मार्ग में आओं तो तुमको यह सम्प्रदाय सोंप दूं। तब आपने कहा कि विचार कर कहूंगा। इसलिए वे चले गये। पीछे उसी रात्रि को विष्णु स्वामी के सम्प्रदाय के बिल्व मंगल भी आये। उन्होंने श्रीआचार्यजी को विष्णु स्वामी का पत्र दिया और विष्णु स्वामी के मार्ग की सब वार्ता कही। मध्वाचार्य तुम्हारे पास आये थे उनको आपने कहा विचार कर कहूंगा। कहा आपने बिल्व मंगल से कहा उनसे में क्या कहूं? वे आपना मार्ग नहीं जानते है। अपना स्वरूप नहीं जानते । मायावाद का खंडन हुआ तब भी उनको ज्ञान नहीं हुआ। इसलिए में उनसे क्या कहूं? तब बिल्व मंगल ने कहा कि महाराज आपको तो बहुत कार्य करने है। विष्णु स्वामी मार्ग उच्छिन्न होता जा रहा है। उसकी रक्षा करें नहीं तो पूजा मार्ग में आवाहन विसर्जन की पूजा होती है। निरन्तर सेवा

का प्रकार तो विष्णु स्वामी से चला है। आपने कहा कि विष्णु स्वामी ने जो मार्ग स्थापित किया है उसमें जो उत्तम पक्ष है वह लिया है। इसलिए तुम चिंता मत करो। बिल्व मंगल के ७०० वर्ष तक वायु रूप करके स्थिति की थी। यह बात कहने के लिए बिल्व मंगल को श्रीठाकुरजी ने आज्ञा की थी। यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभु को कहकर आना। यह सब बात कहकर बिल्व मंगल गये। पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु पोढे। तब श्रीनाथजी पधारे और कहा कि तुम मध्वाचार्य के मारग को अंगीकार मत करना। प्रातः काल होने पर श्रीआचार्यजी विद्यानगर से सब मतवादियों से विजय पत्र लेकर चले तथा व्रजकी और पधारे।

प्रसंग – ५

श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपने मन में विचार किया कि सब देशान्तर में दैवी जीव है इसलिए अपने को सभी स्थान पर जाना है, हो सके तो प्रथम व्रज में चलें। व्रज जो है वह निजधाम है। प्रथम श्री गोकुल, श्रीगोवर्धन, श्रीवृन्दावन श्रीयमुनाजी का दर्शन और व्रज ८४ कोस की प्रदक्षिणा करनी है। दामोदर दास को साथ लेकर श्रीआचार्यजी आप व्रज को पधारे। आते हुए मार्ग में झारखंड में आये। वहां संवत् १५४८ फाल्गुन सुदी ११ गुरूवार के दिन श्रीगोवर्धननाथजी ने बताया कि आप शीघ्र पधारो। हम श्रीगोवर्धन पर्वत में तीन दमन है। नागदमन, इन्द्र दमन, और मध्य में देवदमन इन तीन नामों से प्रकट हुए हैं। इसलिए आप शीघ्र पधार कर हमारी सेवा का प्रकार प्रकट करो। यह आज्ञा सुनकर श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास से कहा दमला श्रीठाकुरजी ने तो हम को ऐसी आज्ञा दी है। इसलिए शीघ्र व्रज को चलें। झारखंड से कितने ही दिनों बाद आप व्रज में पधारे। संवत् १५४६ श्रावण सुदी

११ गुरुवार के दिन प्रथम श्री गोकुल को पधारे। उस दिन श्रावण सुदी ११ थी। इसलिए श्रीआचार्यजी ने उपवास किया था। रात्रि को गोविन्द घाट के ऊपर एक छोंकर है उस स्थान पर पोढे। तथा थोड़ी दूर पर दामोदर दास सोये थे। इतने में श्रीआचार्यजी को चिन्ता हुई। श्रीठाकुरजी ने आज्ञा दी। भूतल पर दैवी जीवों का उद्धार करो। तब उनसे मेरा संबंध हो। यहां तो सब जीव संसार समुद्र में पड़े हैं। इसलिए वे अपना स्वरूप और श्रीठाकुरजी का स्वरूप भूल गये है। श्रीठाकुरजी तो निर्दोश है पूर्ण विग्रह हैं और जीव तो अनेक संसार के दोष से भरा है। इनका सम्बन्ध किस रीति से हो यह चिंता करते हुए निद्रा आ गयी। तब अर्ध रात्रि से समय साक्षात् कोटि कंदर्प लावण्य पूर्ण पुरूषोत्तम श्रीगोवर्धनधर प्रकट होकर के श्रीमुख से कहा कि तुम चिंता क्यो करते हो? जिनको तुम नाम देकर ब्रह्म संबंध कराओगे उसका सकल दोष दूर होगा और उसे मेरी प्राप्ति होगी। ब्रह्मा संबंध बिना प्रेम भक्ति नहीं होती है और प्रेम लक्षणा भक्ति बिना पुष्टिमार्ग में अंगीकार नहीं होता है। पुष्टिमार्ग में अंगीकार किये बिना भगवत्सेवा का अधिकार नहीं होता है। जीव तो भगवत्सेवा ही से कृतार्थ होता है। श्रीगुसांईजी ने सर्वोत्तम में श्रीआचार्यजी का नाम लिखा है – "भक्तिमार्गे सर्वमार्ग वैलक्षण्यानुभूतिकृत " भक्ति मार्ग में तो प्रथम ही था और हूं। भगवान के प्राप्ति के मार्ग बहुत थे किन्तु व्रज भक्तों के स्नेह के मार्ग में अंगीकार नहीं था। बिना स्नेह की सेवा नहीं वह तो पूजा है। पूजा तो मंत्र के अधीन है। पुष्टिमार्ग की सेवा है वह भावात्मक है। इसलिए सूरदास जी ने गाया है – "भज सखि भाव भाविक देव" ऐसा मार्ग प्रकट करने की श्रीठाकुरजी की इच्छा थी। इसलिए आपने श्रीआचार्यजी महाप्रभु को ब्रह्म संबंध की आज्ञा दी। तब आपने पवित्रा उपरना और मिश्री श्रावण सुदी १२ के लिए सिद्ध की उठकर भोग धरा। पीछे श्रीठाकुरजी पधारे।

श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने दामोदर दास को कहा कि दमला तेने कुछ सुना। तब दामोदर दास ने विनती की महाराज श्रीठाकुरजी के वचन सुने तो सही पर समझा नहीं। आपने तब श्रीमुख से कहा मेरे को श्री ठाकुरजी ने आज्ञा दी है कि जीवों को ब्रह्म संबंध कराओ। जिससे सकल दोष दूर होंगे। और मैं अंगीकार करूंगा। इसलिए ब्रह्म संबंध अवश्य करवाना चाहिए। श्रीठाकुरजी से जितनी वार्ता हुई उसके आधार पर आपने "सिद्धान्त रहस्य" नामक ग्रन्थ प्रकट किया। ग्रन्थ का अर्थ श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में एकादशी के दिन अर्ध रात्रि के समय भगवान ने साक्षात् प्रकट होकर जो आज्ञा दी वह अक्षरशः हम कहते है। ।।१।। आत्म निवेदन करते ही सर्व प्राणियों के देह के और जीव के जो जो दोष है उन सब की निवृत्ति होगी। वे दोष पांच प्रकार के है। ।।२।। वे पांचो भांति के दोष लोक और शास्त्र में निरूपिति किये है। सहज दोष, जो जन्म के साथ ही उत्पन्न होते है। जैसे शूद्रत्वादि – देश दोष जैसे मगध आदि में जिसके धर्म कर्म करने – काल दोष जैसे अमुक काल में करने के कर्म दूसरे समय में करने जन्म संयोग दोष जैसे जिसका संयोग शास्त्र में निषिद्ध किया है उसका सम्बन्ध हो जाना स्पर्श जन्म दोष जैसे अमुक के स्पर्शादि से जलादिक की अशुद्धि होती है। ये पांचो दोष ब्रह्मसंबंध होने के पश्चात् सेवा में मात्र बाधक नहीं होते है ।।३।। निवेदन बिना सर्वथा दोष की रंच भी निवृति नहीं होती है। इसलिए असमर्पित वस्तु का परित्याग करना और भगवतीप्रसादी अन्न वस्त्रादि से अपना निर्वाह करना। ।।४।। सब पदार्थो का निवेदन करना। जिस वस्तु में से कुछ पहले खर्च कर चुके है। बाकी जो बचा है उसका समर्पण करना वह देव के देव भगवान् अंगीकार नहीं करते है। ।।५।। इसलिए विवाहादिक सर्व कार्य में पहले सर्व वस्तु का समर्पण कर पीछे प्रसादी वस्तु लेकर अपना कार्य करना।

समर्पित वस्तु के स्वीकार में दत्तापहार ''देकर फिर लेना'' दोष लगता है ऐसा कोई कहे यह ठीक नहीं है कारण सब वस्तु भगवान् की है। उसमें अपना कुछ नहीं है। ।।६।। भगवान की वस्तु नहीं लेना यह जो बात है वह भिन्न मार्ग पर है। जैसे देवालय के निर्वाह के लिए जो द्रव्य और ग्राम आदि भेंट किया उसमें से फिर न लेना। जैसे सेवकों का व्यवहार लोक में चलता है वैसे सर्वकाम समर्पित वस्तु से करना। ।।७।। ब्रह्मसंबंध से ही सर्व वस्तु की ब्रह्म की तरह विशुद्धता होती है जैसे अपवित्र जल है वह श्रीगंगाजी में मिलता है तब वह सब गंगा स्वरूप हो जाता है। गंगास्वरूप से उसके गुण दोष कहे जाते है। उसी तरह से यहां ब्रह्मसंबंध में दूषित वस्तु के पांचो प्रकार के दोष निवृत्त होते हैं। ।।८।। आपने सिद्धान्त रहस्य ग्रन्थ प्रकट किया यह वार्ता सब एकादशी की अर्ध रात्रि को हुई और अर्ध रात्रि को ही मिश्री पवित्रा धराये। इसलिए श्रीनाथजी और सातों स्वरूपों के यहां एकादशी द्वादशी को दो उत्सव मानते है। श्रावण सुदी द्वादशी के दिन श्रीआचार्यजी ने प्रथम ब्रह्मसंबंध दामोदर दास को करवाया। प्रथम दामोदर दास ने श्रीठाकुरजी के वचन सुने पर समझे नहीं। उसका हेतु यह कि दामोदर दास को ब्रह्मसंबंध नहीं था और समझते तो स्वामी सेवक भाव नहीं रहता। फिर भी श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने इनका ब्रह्मसंबंध क्यों करवावें ? जैसे गोविन्द दुब्बे श्रीरणछोडजी से बातें करने लगे थे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीसुबोधिनी कहते थे पुस्तक बांध ाकर कहा – ''तो सो श्रीठाकुरजी बाते करत है तो हम तोसो कथा काहे को कहे?'' इसलिए स्वामी सेवक भाव रखने के लिए दामोदर दास ने वचन सुने पर समझे नहीं ऐसा कहा। इसका कारण दामोदर दास जी को श्रीगुसांईजी आगे पूछेंगे कि तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभु को क्या करके जानते हो? तब दामोदर दास कहेंगे हम तो जगदीशजी श्रीठाकुरजी से अधिक मानते है। श्रीगुसांई

कहेंगे श्रीठाकुरजी से अधिक क्यों कर मानते हो तब श्रीगुसांईजी कहेंगे श्रीठाकुरजी से अधिक क्यों कहते हो? तब दामोदर दास कहेंगे कि दान बड़ा के दाता बड़ा? इससे यह सिद्ध हुआ कि श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभु के वश में है। तब व्रज में श्रीआचार्यजी महाप्रभु के बहुत सेवक हुए।

प्रसंग – 6

कृष्णदास मेघन सोरो में रहते थे। केशवानंद नाम के योगी के शिष्य थे। वे एक समय व्रज में आये। उनने श्रीआचार्यजी के दर्शन किये। उस समय उनके मन में आया में तो इनका शिष्य बनूं। किसलिए? उनको श्रीआचार्यजी के दर्शन साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम के हुए। इसलिए वे और प्रभुदास जलोटा क्षत्री तथा रामदासजी ये सब सेवक हुए। इन सभी को आपने ब्रह्मसम्बन्ध करवाया। उन सब सेवकों को साथ लेकर श्रीआचार्यजी वृन्दावन परासोली होकर आन्योर में सदुपांडे के घर पधारे। जहां एक चबूतरा था। उस पर आप बिराजे। इतने में सब व्रजवासी देखकर कहने लगे ये तो कोई बड़े महापुरूष है ऐसा तेज किसी मनुष्य पर तो नहीं हो सकता है। कौन जानता है किस स्वरूप में है। इस प्रकार सभी कहने लगे। उस समय सदुपांडे ने आकर हाथ जोड कर आप से कहा कि स्वामी कुछ खाओगें। तब कृष्णदास मेघन बोले आप तो सेवक बिना कुछ नहीं लेते है। सदुपांडे के एक भवानी स्त्री और बेटी थी उसका नाम नरो था। उस पर श्रीगोवर्द्धननाथजी बहुत कृपा करते । सायं प्रातः दोनो समय श्रीनाथजी को दूध पिलाने जाती थी। जब वह घर के काम काज में होती तब नहीं जा सकती थी। तब गिरिराज ऊपर से उसको श्रीगोवर्धननाथजी ने पुकारा। तब भी वह न गई तो श्रीनाथजी आप स्वयं उसके घर आकर मांगकर अरोगे। जैसे कोई घर का बालक हो ऐसे आप उससे हिल गये। जिस समय कृष्णदास मेघन सदुपांडे को मना

किया। उसी समय श्रीगोवर्धननाथजी ने पुकार कर कहा। अरी नरो। दूध ला, तब नरो ने कहा कि आज मेरे पाहुने (अतिथि) आये है। तब आपने कहा पाहने आये है सो तो अच्छा है पर मेरे तो दूध लाओ। तब नरो ने कहा "होंवारी लाल लाई" नरो दूध का कटोरा भरकर पर्वत के ऊपर ले गई। उस समय श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास को कहा "दमला" तेने कुछ सुना, तब उस समय दामोदर दास ने कहा हां महाराज सुना। तब आपने श्रीमुख से कहा। यह शब्द झारखंड के शब्द से मिलता है। इसलिए प्रभु यहीं प्रकट हुए है। ऐसा जान पडता है। इसलिए सवेरे ऊपर चलेगें। ऐसे आपने श्रीमुख से कहा। इतने में नरो श्रीगोवर्धननाथजी को दूध पिलाकर आई। तब श्रीआचार्यजी ने उससे कहा। यह हमको दे इसमें कुछ बचा है। नरो ने कहा हां महाराज थोडा है तब आपने कहा रंच ही लाओ। नरो ने कहा महाराज घर में दूध बहुत है। लाऊ? आपने कहा और तो हमारे नहीं चाहिए। सदुपांडे तो भगवदीय है। श्री गोवर्धननाथजी के कृपा पात्र है जो साक्षात् श्रीगोवर्धननाथजी इनसे बाते करते है और चाहिए वह मांग लेते है। उस समय सदुपांडे को तो श्रीमहाप्रभु के दर्शन साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम के हुए। तब सदुपांडे ने कहा कि महाराज कृपा करके हमको नाम दीजिये। आपने अनुग्रहकर उनको अपने किये। तब सब उनका अंगीकार किया। पीछे उस रात्रि को सदुपांडे और उनके बड़े भाई मानिक चंद पांडे और सदुपांडे की स्त्री भवानी और उसकी बेटी नरो तथा व्रजवासी बड़े बड़े वृद्ध थे सब श्रीआचार्यजी महाप्रभु के चबूतरा पर आकर बैठे। तब आपने श्रीमुख से कहा कि सदुपांडे ऊपर देव दमन प्रकट हुए है। वे कौन सी रीति से प्रकट हुए है? इनकी सब बात हमसे कहो। तब सुदपांडे ने कहा आप तो सब जानते है और आप ही पूछते हो फिर भी कहता हूं। ऐसा कहकर जिस रीति से श्री गोवर्धन नाथजी का प्राकट्य हुआ था उस प्रकार सदुपांडे ने कहा।

प्रसंग – ७

महाराज हमारी गायो का एक ग्वाल था। वह सारे गांव की गायों को चराने को ले जाता था। वहां एक ब्राह्मण की गाय बहुत बड़ी थी। वह गाय चरने को जाती थी। चर कर घर को आवे तब वह ब्राह्मण दुहने को बैठे तब दूध थोडा देती और सब दूध चढाकर रखती थी। वह ब्राह्मण अपने मन में बहूत खीजता था। मेरी ऐसी बड़ी गाय दूध क्यों नहीं देती? उसने अपने मन में सोचा कि कही गाय को ग्वाल दूह तो नहीं लेता है, इसलिए ग्वाल को कहना पड़ेगा, जब सायं काल ग्वाल अपने घर आया तब उस ब्राह्मण ने जाकर उससे खीजकर कहा। "क्यों रे भैया तू मेरी गाय दुहि लेत है?" तब उस ग्वाल ने कहा भैया मैं तो इस बात में समझता नहीं। तुम वृथा बिना देखे मेरा नाम लेते हो यह अच्छी बात नहीं फिर भी तुमने इतनी बात कही है तो में कल ठीक ध्यान रखूंगा। जब सवेरे वह ग्वाल गाय चराने को गया उसने सब गायों को तो वन में छोड़ दिया और उस गाय के पीछे पीछे डोलने लगा। अपनी नजर में उस गाय को रखा। इसका दूध कौन पी जाता है? वह गाय इतने में ग्वाल की दृष्टि बचाकर गोवर्धन पर्वत ऊपर चढ़ी। पीछे वह ग्वाल भी पर्वत पर चढ़ा और दूर से देखता है कि ऊपर एक बड़ी शिला थी उसमें एक छेद था। उसके ऊपर खडी होकर वह गाय दूध ा सवन करती है। वह सारा दूध उस स्थान पर स्रवित कर उत्तर आई। यह ग्वाल ने दूर से देखा। उसके पीछे वह उस स्थान पर गया। वहां जाकर देखा तो एक शिला है उसमें एक छेद है । यह देखकर वहां ग्वाल नीचे उत्तर आया और सारे दिन गाय चराई। पीछे जब घर आने का समय हुआ तब वह गाय पुनः पर्वत पर चढ़ी उस समय यह ग्वाल भी उसके पीछे पर्वत पर चढा तो देखता है जैसे सवेरे उस गाय ने अपने आप दूध का सवन किया था वैसे ही अभी कर

रही है। पीछे वह दूध का स्राव करके पर्वत के ऊपर से उतरकर आगयी। वह ग्वाल भी उतरकर आ गया। उस ग्वाल ने ये समाचार ब्राह्मण को कहे कि भैया तेरी गाय ऐसी रीति से दो बार स्वयं जाकर पर्वत ऊपर दूध का स्रवन करती है। अगर तू नहीं मानता है तो सवेरे मेरे संग चलना। मैं तुझे दिखा दूंगा। यह बात सुनकर उस ब्राह्मण को बड़ा आश्चर्य हुआ था। सवेरा होने पर गाय वन को चली तब वह ब्राह्मण भी गाय के पीछे पीछे चला आगे जाकर वह गाय पर्वत पर चढी। तब वह ग्वाल और ब्राह्मण ये दोनो उसके पीछे पर्वत ऊपर चढ़े। दूर से देखा तो वह गाय अपने आप खड़ी खड़ी दूध का स्रवन कर रही है। यह देखकर उस ब्राह्मण के मन में विश्वास हुआ। उसने मन में विचार किया कि इस बात का अब क्या करना? पीछे उस ब्राह्मण ने आकर यह सब बात हम से कही। हमने भी सुनकर आश्चर्य किया और आपस में विचार किया कि भैया यह क्या कारण है? हम सभी में एक बहुत वृद्ध था। उसने कहा भैया मैंने तो ऐसा सुना है जहां कुछ धन होता है वहां गाय अपने आप दूध स्रवित करती है। यह बात सुनकर हम निश्चय करके पर्वत ऊपर गये। वहां देखा एक बहुत बडी शिला है। उस शिला में एक छेद है। हम सभी ने यह विचार किया कि इस शिला को उठावें । तब उस शिला को सभी ने मिलकर उठाई तो देखा कि उसमें एक सुन्दर बालक सात वर्ष का खड़ा है। उस शिला में छेद है वह उसके मुख के ऊपर है वहां से वह दूध पीता है। तब हम सभी ने कहा कि इसके नीचे धन है यह सत्य है। उस दिन के पश्चात् उसको दूध दही का भोग धरते वह सब अरोगता था और यहां सब लडको के साथ खेलता। हम सभी ने जब आपका नाम पूछा। तब आपने अपना नाम देवदमन बताया । हमने ऐसा जाना कि यह पर्वत का देवता है। इन्द्र ने जब वर्षा की थी तब इसी ने ही रक्षा की थी इसलिए सभी इनकी मान्यता करो। ऐसी रीति से यह प्रकट हुए है। श्रीनाथजी के साथ और तीन देवताओं का भी गिरिराज से प्राकट्य हुआ है।

संकर्षण कुंड में से श्रीसंकर्षण देवता का प्राकट्य हुआ है। गोविन्द कुण्ड में से श्रीगोविन्दजी का प्राकट्य हुआ और दानघाटी ऊपर श्री दानीराय जी का प्राकट्य हुआ। उनकी सेवा मतांतर में वैणव करते है। ऐसे चारों देवताओं का प्राकट्य एक ही साथ हुआ है। आप तो ईश्वर है। सभी जानते है। अपनी बात आप ही पूछते है। इसका कारण यह है कि जगत में अपना माहात्म्य प्रकट नहीं करते है। भगवदीय क्या गुण गान करें? इसलिए गोपालदास जी ने गाया है – "अपनी लीला ते वदन पोते करि, उच्चार आनन्द अधिक दीधो" तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु यह बात सुनकर गद् गद् हो गये।

प्रसंग – ८

पीछे सवेरे उठकर देह कृत्य कर स्नानकर के सब वैष्णवों को साथ लेकर आप गिरिराज ऊपर पधारे। तब श्रीगोवर्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभु को देखकर आप सामने पधारे। वहां मिलने का अत्यन्त हरख (हर्ष) हुआ। उसको गोपाल दास जी ने गाया है – "हरखे ते सामा आविया श्री गोवर्धन उद्धरण" जब श्रीगोवर्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभु से मिले तब बहुत प्रसन्न हुए। आप तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु के लिए प्रकट हुए है। उसका कारण यह है कि आपने श्रीमहाप्रभु को आज्ञा दी कि आप भूतल पर प्रकट होकर देवी जीवों का उद्धार करो। वे दैवी जीव मेरे से बहुत दिनो से बिछुडे है। तब आप श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी की आज्ञा से मनुष्य देह को अंगीकार करके भूतल पर पधारे है। दैवी जीवों को तो साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम श्रीनंद कुमार का ही दर्शन होता है। सब जगत को ऐसा दर्शन हो तो सब जगत कृतार्थ हो जावे। इसलिए मनुष्य देह का नाटक किया। श्रीगुसांईजी ने आपके लिए श्री वल्लभाष्टक में लिखा है – वस्तुतः कृष्ण एव" ऐसा श्रीआचार्यजी का स्वरूप है तब श्रीठाकुरजी

ने आज्ञा दी कि तुम भूतल ऊपर पधारो। श्री की आज्ञा से भूतल ऊपर पधारे हैं। श्रीठाकुरजी को आप से बडा स्नेह है। इसलिए आपका नाम श्रीवल्लभ है। श्रीयमुनाष्टक स्तोत्र के समाप्त में आपने ही कहा है – ''वदति वल्लभ श्री हरे:'' श्रीआचार्यजी महाप्रभु का विरह सहन नहीं होगा ऐसा जानकर श्रीगोवर्धननाथजी भी भूतल पर प्रकट हुए। भगवल्लीला अनंत है। परन्तु पूतना से लेकर सब लीला नित्य है। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्रीगोवर्धन धर को प्रकट किया उसका कारण यह है कि श्रीगोवर्धन धर परम कृपालु है। इन्द्र के इतना अपराध करने पर भी आपने उसके ऊपर अनुग्रह किया। उसने गाय का व्रजभक्तों का व्रज का श्री गोवर्धन आदि से द्रोह किया परन्तु श्रीगोवर्धननाथजी मन में कुछ भी नहीं लाये। उसके ऊपर उलटा अनुग्रह करके उसको अपने लोक में भेजा। उसके अपराध को सेवा मानी। व्रजवासियों ने तो मेरे साम्रगी भोग रखा और इन्द्र ने जल की सेवा की । यह मानकर अनुग्रह किया। इसी कारण श्रीगोवर्धननाथजी आप परमदयालु हैं। ऐसी दया बिना जीव अंगीकार नहीं होता है। पीछे श्रीगोवध् र्ननाथजी ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु को आज्ञा दी कि अब आप मेरी सेवा का प्रकार प्रकट करो और मेरे को पाट बिठाओ। सेवा के बिना पुष्टि मार्ग में दैवी जीवों का अंगीकार नहीं होगा। इसलिए में प्रकट हुआ हूं। तब आपने श्री गोवर्धननाथजी को पाट बैठाने के लिए तत्काल एक छोटा सा मंदिर सिद्ध करवा कर श्रीगोवर्धननाथजी को पाट बैठाये।

प्रसंग – ६

अप्सरा कुंड के ऊपर एक गुफा है। उसमें रामदास चौहान रहते थे। और सदा भजन करते थे। उनने श्रीआचार्यजी के दर्शन किये और विनती की ''महाराज मेरे को अंगीकार करिये। मैं तो आपके लिए बहुत दिनो से श्रीगोवर्धनजी

की कन्दरा में तपस्या करता था। मेरा तप आज सफल हुआ है। तब आपने श्रीआचार्यजी ने रामदास जी को अंगीकार किया। पीछे आपने रामदास को कहा श्रीगोवर्धन पर्वत में से श्रीगोवर्धननाथ जी प्रकट हुए है तुम इनकी सेवा करो। तब रामदास जी ने कहा कि महाराज मैने तो कभी सेवा नहीं की है। सेवा कैसे करूंगा? आपने तब कहा तुमको सब सेवा श्रीगोवर्धननाथजी आप सिखायेंगें पीछे आपने मोर की चन्द्रिका का मुकुट सिद्ध करवाया और पीताम्बर काछनी सिद्ध करवा कर के श्रीआचार्यजी ने गोवर्धननाथजी का श्रृंगार किया उससे श्रीगोवर्धननाथजी ने आप को सुन्दर दर्शन दिये। श्रीआचार्यजी ने तब रामदास से कहा कि तुम नित्य सवेरे गोविन्द कुंड में स्नानकर के आना और एक गडुवा जल भरकर लाना। उससे श्रीगोवर्धननाथजी को स्नान करवाना। पीछे अंग वस्त्र करके यह श्रृंगार जो हमने किया ऐसा नित्य करना। भगवद् इच्छा से जो आय प्राप्त हो उससे तुम नित्य भोग धरना। उसमें से तुम्हारा निर्वाह करना दूध, दही, माखन तो ये व्रजवासी लोग धरते है। नित्य का नेग बता दिया है। पीछे आपने सदुपांडे से तथा मानिक चंद पांडे से और आन्योर में जो सेवक हुए थे उन सभी से कहा मेरे तो ये सर्वस्व है। इनकी सेवा तुम सावधानी से करना। चौकी पहरा का उपद्रव हो तो सब बात से सावधान रहना । ऐसी आज्ञा देकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप व्रज यात्रा को पधारे। २० वर्षो तक रामदास जी ने गिरिराज पर श्री की सेवा की थी।

प्रसंग — १०

संकेत वट के नीचे आपकी बैठक प्रसिद्ध है। सभी वैष्णव वहां दही का भोग धरते वहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजे। तब आपने मन में विचार किया कि इस समय दही हो तो श्रीठाकुरजी को समर्पित करें। आपके मन की बात

प्रभुदास जलोटा क्षत्री ने जानी । उठकर गांव में गये। गांव में से दही लेकर उसको मुक्ति दी। यह प्रभुदास की वार्ता में प्रसिद्ध हैं। वहां श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी ने अपने सेवकों के लिए सिद्धान्त को प्रकट किया। वह दही आपने श्रीठाकुरजी को समर्पित किया दही अति स्वाद लगा और श्रीआचार्यजी ने अपने सेवक के हाथ मुक्ति दिलवाई, उसका कारण यह है कि आपके मन में आया मेरे सेवक का माहात्म्य जगत में प्रकट करू। इसमें यह सिद्ध हुआ कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु के सेवकों में यह सामर्थ्य है जो मुक्ति भी देते है। ब्रह्मादिको से नहीं दी जाय वह भगवदीय देते है। जैसे गदाधर दास ने माधवदास को भक्ति दी। इस प्रकार श्रीआचार्यजी ने अपने सेवकों का प्रभाव जगत में प्रकट किया।

प्रसंग—११

एक समय आप गोवर्धन की तरहटी में श्रीगोवर्धन की पूजा की जगह पूजनी शिला के पास एक छोंकर का वृक्ष है वहां पोढे हुए थे। दामोदरदास हरसानी की गोद में श्री मस्तक रखा था। इतने में वहां श्रीगोवर्धननाथजी पधारे। तब दामोदर दास ने हाथ से मना किया। इसलिए आप वहीं खड़े रहे। श्रीआचार्यजी महाप्रभु जग गये । देखते है श्रीगोवर्धननाथजी खड़े है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उठकर कहा पधारिये श्रीगोवर्धननाथजी ने तब कहा तुम्हारा सेवक मना करता है। तब श्रीआचार्यजी ने दामोदर दास से कहा कि दमला तेने क्यों मना किया? तब उसने कहा महाराज आप जाग जाते उसके लिए मना किया है। आप दामोदर दास पर खीजे। श्रीगोवर्धननाथजी ने कहा कि मै इसके ऊपर प्रसन्न हूं। तुम इसके ऊपर मत खीजो। इनको ऐसा ही करना चाहिए। सेवक का ऐसा ही धर्म है। श्रीआचार्यजी दामोदर दास के ऊपर बहुत प्रसन्न हुए। दामोदर दास ऐसे भगवदीय थे। उस समय आप से

श्रीगोवर्धननाथजी ने श्रीमुख से कहा मेरे को नूपुर बनवा दो। तब आपने उसी समय शीघ्र ही राजा कृष्णदेव की भेंट में से सात सुवर्ण की मुहर देवी द्रव्य की थी जिसको आपने अंगीकार किया था। उन मुहरों का सुवर्ण देकर एक वैष्णव को मथुरा भेजा और यह कहा कि इसके शीघ्र नूपुर बनवाकर लाओ। तब वह वैष्णव शीघ्र नूपुर बनवाकर लाया। नूपुर लेकर आपने श्रीगोवर्धननाथजी को समर्पित किये। नूपुर लेकर आपने श्रीगोवर्धननाथजी को समर्पित किये। नूपुर बहुत सुन्दर बजे। इससे श्रीगोवर्धननाथजी बहुत प्रसन्न हुए। बहुत सुन्दर दर्शन दिये। ऐसा ही मुकुट काछनी का श्रृंगार और वैसा ही नूपुर का शब्द। जो भी दर्शन करे उसका मन हर लेते। व्रजवासियों के लड़को से आप खेले। जैसे वे बालक खेल करते। उनके साथ अनेक क्रीडा संवत् १५७४ के वर्ष से संवत् १५७६ तक ३१ वर्ष पर्यन्त श्रीगोवर्धननाथजी करते रहे।

प्रसंग– १२

दूसरा सदुपांडे के घर के पास एक व्रजवासी गृहस्थ रहता था। उसके घर में समृद्धि और गायें, भेंसे बहुत थी और कुटंब बहुत था। बेटा बेटी बहू नाती बहुत थे। वे सब श्रीआचार्यजी महाप्रभु की शरण आये। वे आपके अनुग्रह से ऐसे भगवदीय हुए कि उनके घर श्रीगोवर्धननाथजी आप स्वयं पधारे। उसके घर में एक डोकरी बहुत वृद्ध थी। सवेरे उसकी बहू बेटी बिलोना करती थी। उसका सब माखन इकट्ठाकर के उस डोकरी के पास लाकर रखती। वह डोकरी घर में जितने बालक बहू बेटा थी उन सब को कलेवा देती थी। उस डोकरी की दृष्टि बल थोड़ा था जो लड़का आवे उसका नाम पूछ कर देती। तब उन लड़कों के साथ श्रीगोवर्धननाथजी आते और कहते अरे मो को हूं देरी। वह डोकरी रोटी ऊपर माखन धर कर देती और

पूछती तेरा नाम क्या है? तब आप कहते थे अरी मेरा नाम देवदमन है। वह डोकर कहती अरे तू पर्वत ऊपर रहता है। वह है? आप कहते हां! डोकरी कहती अरे देव दमन तू मेरे घर आकर नित्य कलेऊ करजाया कर। वह डोकरी श्रीआचार्यजी महाप्रभु की कृपा से ऐसी भाग्यशाली हुई। जिसके ऊपर श्रीगोवर्धननाथजी ऐसा अनुग्रह करते। कारण यह था कि वह डोकरी सीधी बहुत थी। अपने मन में कुछ भी प्रपंच स्वप्न में भी नहीं समझती। भक्ति मार्ग की तो यह रीति है प्रपंच से दूर रहे तब श्रीठाकुरजी अनुग्रह करते है जिसके स्वप्न में भी प्रपंच नही है वे परमाधिकारी है। इसलिए श्रीगोवर्धननाथजी आप उस डोकरी से साक्षात् बातें करते।

प्रसंग–१३

पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोवर्धननाथजी से आज्ञा मांगकर श्री गोकुल पधारे। आपके कृपा पात्र दामोदर दास प्रभृति वैष्णव सब साथ थे। आपने अपने मन में विचार किया पृथ्वी पर पेरों से चलना क्यों? दैवीजीव तो अनेक जगह है। सर्वत्र दूर देशान्तर में है। इसलिए आप पुनः पृथ्वी प्रदक्षिणा के लिए गोकुल पधारे। गोविन्द घाट के ऊपर छोंकर के नीचे एक चबूतरा है उसके ऊपर बिराजे। सभी सेवक पास खड़े है। इतने में एक वैरागी आया उसके पास शालिग्राम का बटुवा था। उसने बटुवा छोंकर पर लटका दिया। कपड़े श्रीयमुनाजी के तीर पर धरकर श्रीयमुनाजी में स्नान करने लगा। इतने में स्नाकर के जब बाहर आया तब देखता है शालिग्राम का बटुवा वहाँ नहीं है। तब उस वैरागी ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से कहा कि महाराज यहां मेरा बटुवा था वह नहीं हैं। किसी सेवक ने लिया होतो तो मेरे को दिलवा दीजिये। आपने कहा हमारा सेवक तेरा बटुवा क्यों लेगा? जहाँ धरा हो वहीं

पर देख ले। इतने में देखता है सारा छोंकर का वृक्ष बटुवाओं से भरा है। पुनः आकर उसने आप से कहा कि महाराज छोंकर तो सब बटुवाओं से भरा है। श्रीआचार्यजी ने कहा उसमें से तेरा तू उतार ले। वह वैरागी बटुवा उतारने लगा तो देखता है वहाँ तो एक ही बटुवा हैं इसलिए उसने उतार लिया। उस वैरागी को आपने ऐसा माहात्म्य दिखाया। किन्तु वह दैवीजीव तो था नहीं। अगर वह दैवीजीव होता तो शरण आता। इतना श्रीआचार्यजी ने अपना माहात्म्य अपने सेवको को दिखाया। उस छोंकर वृक्ष का नाम ब्रह्म छोंकर है। उसके पत्ते पत्ते सब भगवदीय रूप है।

प्रसंग–१४

पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने विचार किया कि हो सके तो प्रथम काशी चलें। वहाँ मायावदी बहुत है। शिव की पुरी है। वहाँ सब जीव शिवमाया से मोहित होने से भगवान से बहिर्मुख है। इसलिए काशी चलकर उन माया वदियों का खंडन करें। तब सब वैष्णवों को लेकर आप काशी पधारे। गंगातीर पर मणिकर्णिका घाट ऊपर स्नान करके बिराजे। उस समय वहाँ बड़े बड़े पंडित स्नान करने को आये उन्होंने जाना ये बड़े पंडित है। इसलिए वे चर्चा करने लगे। उस चर्चा में आपने सबको निरुत्तर कर दिया। माया मत का खंडन किया। भक्तिमार्ग सिद्ध किया उस समय सेठ पुरूषोत्तम दास क्षत्री खड़े थे। वह वहाँ के नगर सेठ थे। वे उस समय मणिकार्णिका के ऊपर स्नान करने को आये थे। वहाँ उनको श्रीआचार्यजी महाप्रभु का दर्शन साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम रूप में हुआ। इसलिए सेठ पुरूषोत्तम दास ने आपको साष्टांग दण्डवत् करके विनती की महाराज मेरे पर कृपा करके अपना करिये। तब श्रीआचार्यजी ने उनको नाम दिया और ब्रह्मसंबंध करवाया तब सेठ ने

प्रार्थना की महाराज मेरे को आप के स्वरूप की सेवा पधरा दो। आपने श्री गंगाजी में श्री हस्त डालकर एक श्रीठाकुरजी का स्वरूप निकालकर सेठ पुरूषोत्तमदासजी को सेवा के लिए पधरा दिया और कहा यह मेरा स्वरूप है। उस स्वरूप के जनोई और पादुकाजी हैं। सो स्वरूप अद्यापिमारवाड़ देश के जोधपुर में बिराजते है। पीछे सेठ जी ने कहा कि महाराज मेरा गृह पावन करने को पधारिये। तब आप अनुग्रह करके सब भगवदियों को साथ लेकर सेठ के घर पधारे। सेठ के घर के सब कुटंबी सेवक हुए। आपने सब को अंगीकार किया। तब पाक सामग्री सिद्ध करके श्रीआचार्यजी के आगे रखी। आपने कृपा करके सेठ के घर श्रीमदनमोहनजी को भोग समर्पित किया। पीछे भोग सराकर आपने भोजन किया। सभी सेवकों ने भी महाप्रसाद लिया। वहाँ सेठ पुरूषोत्तम दास के घर बिराजे। इस कारण से सेठ के घर में आपकी बैठक प्रसिद्ध हुई। सब पंडित वहाँ पर चर्चा करने को आते थे। बड़े बड़े स्मार्त और मायावादी वहाँ आकर के झगड़ा करते उन सब को आप निरूत्तर कर घर भेजते थे। एक दिन श्रीआचार्यजी ने मन में विचार किया कि ऐसे मायावदी आकर के बहुत दुःख देते हैं। इसलिए किन किन से माथा पचाया जाय। तब आपने एक पत्रावलंबन ग्रन्थ किया। ग्रन्थ एक पत्र पर लिखकर एक वैष्णव को दिया, और कहा कि यह पत्र ले जाकर श्रीविश्वेश्वरमहादेवजी के मंदिर की दीवार पर लगा कर आओ। उस पत्र के नीचे आपने लिखा कि इस पत्र को बांचकर उसके पीछे हम से चर्चा करने को आना। पत्र श्रीविश्वेश्वरजी के मंदिर पर लगाया। वहां सभी मायावादी दर्शन को आते उस पत्र को देखते उनके मन में शंका होती उसका उत्तर उनको उसी में मिलता वही गोपालदास जी ने श्री वल्लभाख्यान में गाया है—

''पत्राव लंबे पंडित जीत्या गज मायिक मत्त मातंग, 'श्रीकृष्ण पूरण

बह्मास्थाप्या जेनारूप कोटि अनंग' उस पत्र को बांचकर पीछे कोई कोई मायावादी आपके पास जाता। एक दिन श्रीआचार्यजी के सेवक विष्णुदास छींपा द्वारपाल ने विचार किया कि सभी मायावादी आकर के आप को श्रमकरवाते हैं। यह उसको अच्छा नहीं लगा। इसलिए कैसा ही मायावादी पंडित हो उसे द्वारपाल पूछे तुम क्यों आये हो? तब वह कहे मैं श्रीआचार्यजी से चर्चा करने आया हूँ। विष्णुदास कहता तुम कहाँ तक पढ़े हो? तब वह बताता श्रीमहाप्रभु की कृपा से विष्णुदास दूषण देकर उस पंडित को निरूत्तर कर भेज देता। पत्रावलंबन गन्थ इसीलिए आपने किया कि बहिर्मुखों से बार बार संभाषण नहीं करना पडे। पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु सेठ पुरूषोत्तमदास के घर सुख पूर्वक बिराजते थे। सेठ पुरूषोत्तमदास के घर समृद्धि बहुत थी इसलिए वे आपकी सेवा बहुत भली भांति से करते और वैसे ही आपके संग दामोदर दास हरसानी, कृष्णदास मेघन प्रभृति बहुत भगवदीय थे उनकी सेवा सेठ अच्छी भांति से करता वैसे ही श्रीमदनमोहनजी की सेवा बहुतभली भांति करता था। सेठ के ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु का ऐसा अनुग्रह था। अनुग्रह में तीन वस्तु चाहिए। वे तीनों वस्तु आपने उस सेठ को दी थी। भगवत्सेवा, गुरूसेवा, भगवदीय की सेवा पीछे काशी में जो दैवीजीव थे वे श्रीआचार्यजी महाप्रभु की शरण आये। काशी में आप बहुत दिनों तक बिराजे। ऐसे में जन्माष्टमी का उत्सव आया तब आपने अपने मन में विचार किया कि अवतार तो श्रीठाकुर जी के सभी है। किन्तु कृष्णावतार सब अवतारों का मूल है। सभी अवतार इनसे ही हुए है। श्रीभागवत में कहा है– ''एते चांशकलाः पुंसःकृष्णस्तु भगवान स्वयम्'' इसलिए श्री कृष्णावतार सब अवतारों में हमारा सर्वस्व है और हमारे सेव्य हैं। पुष्टिमार्ग इन से ही प्रकट हुआ है। यह पुष्टिमार्ग व्रजभक्तों का स्नेह है। इसलिए नंद महोत्सव आपने प्रकट करने की इच्छा की । यदि

नंद महोत्सव प्रकट नहीं करे तो दैवीजीव क्या जाने? श्रीनंदरायजी के घर कैसा उत्सव हुआ था। श्रीशुकदेवजी ने तो राजा परीक्षित को कहकर बताया और श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने तो अपने सेवक दैवीजीवों को साक्षात् नंद महोत्सव के दर्शन करवाये। उस समय में सेठ पुरूषोत्तम दास के घर में एक कुआ था। उस में से श्रीनंदरायजी आदि व्रजभक्तों के स्वरूप प्रकट हुए और श्री ठाकुरजी तो पालने झूलते हैं श्रीयशोदाजी झुलाती है और व्रजभक्त श्रीनंदरायजी समेत गोप नृत्य कर रहे हैं। ऐसा उत्सव श्रीमदनमोहनजी के सामने प्रथम ही सेठ पुरूषोत्तम दास के घर प्रकट किया। बहुत समृद्धि विना ऐसा उत्सव नहीं हो सकता है। सेठ के घर जो वस्तु चाहिए थी सब सिद्धि होने से नंद महोत्सव उत्तम प्रकार से हुआ। सेठ के ऊपर आपका ऐसा अनुग्रह था। उससे सेठ पुरूषोत्त्म दास को आपने ओरों को नाम देने की आज्ञा दी थी हम तो जब भगवद् इच्छा होगी तब आयेंगे दैवीजीव तो बहुत है। उन सभी को अंगीकार करना है। इसलिए सेठ को नाम देने का अधिकार दिया था। यह आज्ञा देकर आप श्रीजगन्नाथजी के दर्शन करने को पधारने की इच्छा की। कारण यह था कि उन देशों में भी दैवीजीव बहुत थे। उनका भी उद्धार करना था। पृथ्वी को पावन करनी थी। तीर्थो को सनाथ करने थे। मायामत का खण्डन करना एवं भक्तिमार्ग का स्थापन करना इसके लिए था। श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीकाशी से मार्गशीर्ष वदी ७ शनिवार के दिन श्रीजगन्नाथरायजी की और पधारे।

प्रसंग–१५

श्रीजगन्नाथपुरी सब से बड़ी पुरी है। पुरूषोत्तम क्षेत्र है। सब पृथ्वी में प्रसिद्ध है। जहां पूजा का बड़ा प्रकार है और वह देश भगवदियों से आच्छादित है। इसलिए आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीजगन्नाथरायजी को पधारे। उस दिन

बैठक चरित्र

एकादशी का दिन था आप जब पुरी में मंदिर के निकट पधारे उस समय कोई एक पंड़ा महाप्रसाद लेकर आया। वहाँ महाप्रसाद का बहुत माहात्म्य है। इसलिए श्रीठाकुरजी के दर्शन तो पीछे किन्तुप्रसाद पहले लेना। किन्तु आपकी तो यह प्रतिज्ञा थी कि एकादशी के दिन जल भी नहीं लेना। उसने तो आकर महाप्रसाद दे दिया। आपने प्रसाद श्री हस्त में लिया। आप तो साक्षात् ईश्वर हैं। इस लिए वेद, पुराणों में जहाँ जहाँ पर महाप्रसाद के माहात्म्य के श्लोक थे उन सभी को श्री मुख से कहने लगे। कहते कहते एकादशी का दिन तथा सब रात्रि व्यतीत हो गयी। जब सवेरा हुआ तब स्नान संध्या की। मन में कुछ भी बाधा नहीं रखी और महाप्रसाद आपने ले लिया। पीछे श्रीजगन्नाथरायजी के दर्शन किये। उस पुरूषोत्तम पुरी में श्रीआचार्यजी महाप्रभु का माहात्म्य देखकर सब कोई कहने लगे ये तो साक्षात् ईश्वर हैं मनुष्य देह में तो यह विद्या नहीं देखी न सुनी। चारों वेद, अठारह पुराण सब शास्त्र जिनके है। ऐसा सभी कहने लगे। ये समाचार वहाँ के राजा भोजदेव ने सुने तब आकर के उसने श्रीआचार्यजी महाप्रभु के दर्शन किये और बहुत प्रसन्न हुआ। और कहने लगा मेरा बड़ाभाग्य है जो मेरे को आपके दर्शन हुए। राजा ने श्रीआचार्यजी से प्रार्थना की महाराज यहाँ हमारे देश में ब्राह्मणों और वैष्णव संप्रदायी तथा मायावादियों का आपस में क्लेश बहुत है। वह मिटता नहीं है। ये लोग नित्य लड़ते है। आप साक्षात् ईश्वर है। आप इस ब्रह्मक्लेश को मिटा दो। आप विना ऐसी सामर्थ्य किसी में नहीं है तथा किसी से यह झगड़ा नहीं मिटेगा। तब श्रीआचार्यजी ने कहा तुम्हारा मनोरथ जो भी होगा श्री ठाकुर जी सिद्ध करेगें। प्रभु सर्व सामर्थ्य सहित हैं और भक्त मनोरथ पूर्ण करता है यह बात सुनकर राजा भोजदेव बहुत प्रसन्न हुआ। श्रीआचार्यजी ने राजा से कहा तुम्हारे यहाँ जितने ब्राह्मण हैं उन सब को एकत्र करो। उनमें जो बड़े बड़े पंडित हों वे आकर हम से चर्चा करें। राजा ने सभी ब्राह्मणों को बुलवाया सभी आकर श्रीजगन्नाथरायजी के मंदिर में इकट्ठे हुए।

बैठक चरित्र

स्मार्त और बड़े बड़े मायावादी पंडित और राजा भोजदेव आकर बैठ गये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भी मंदिर में पधारे। सभी को आपके दर्शन ऐसे हुए मानों साक्षात् सूर्य–अग्निका पुंज– तेजोमय हो। उन ब्राह्मणों में जो बड़े बड़े पंडित थे वे सब चकित होकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु से चर्चा करने लगे। वे जो जो युक्ति लाते उन उन सभी का आप खंडन करते। तब वे सब निरूत्तर होकर सवेरे के बैठे तीन प्रहर तक श्रीआचार्यजी बिराजे रहे और राजा भी बैठा रहा। किन्तु दुराग्रह से झगड़ा समाप्त नहीं हुआ। श्रीआचार्यजी ने उन ब्राह्मणों से कहा तुम्हारे हमारे वाद है। उसको श्रीजगन्नाथजी लिख दे वहीं प्रमाण होगा। तब राजा और ब्राह्मणों ने कहा कि महाराजाधिराज श्रीजगन्नाथरायजी कैसे लिखेंगे? तब आपने श्रीमुख से कहा तुम भोग धरते हो उसको श्रीजगन्नाथरायजी कैसे अरोगते है? वैसे ही आपके आगे कोरा कागज और कलम, दवात धर आओ और प्रार्थना कर आओ कि महाराज सच्चा मार्ग होतो लिखोगे। आप लिख देंगे यह बात सुनकर राजा को आश्चर्य हुआ। श्रीआचार्यजी ने राजा से कहा कि मंदिर में सेवक, पंडा हो उन सभी को बाहर निकालो ओर यह कागज कलम और दवात लेकर तुम जाकर श्रीजगन्नाथरायजी के आगे धर आओ। उस पत्र में चार प्रश्न आपने लिखे थे। वे प्रश्न परमार्थ का साधन भूत मुख्य शास्त्र कौन सा है? मुख्य सेव्य देवत्व कौन? मुख्य मंत्र कौन? मुख्य धर्म कौनसा? ये चार प्रश्न है। सभी को दिखाकर श्रीआचार्यजी ने राजा भोजदेव को आज्ञा की यह पत्र तुम श्रीजगदीश के आगे धरकर उत्तर की प्रार्थना करो। किंवाड देकर तुम द्वार पर बैठो। जब हम कहें तब तुम किंवाड खोलना। जिस प्रकार श्रीआचार्यजी ने कहा उस भांति राजा ने किया। श्रीजगन्नाथरायजी लिख चुके तब श्रीआचार्यजी ने राजा से कहा अब किंवाड खोलो। वह पत्र लेकर आओ। राजा किंवाड खोलकर देखता है तो श्रीजगन्नाथरायजी के आगे लिखा धरा है। तब श्रीआचार्यजी ने राजाभोज देव से कहा यह सब ब्राह्मणों को दिखाओ। वह कागज राजा

भोजदेव ने सब ब्राह्मणों को दिखाया। उसमें लिखा था वह श्लोक–

"एकं शास्त्रं देवकी पुत्र गीतमेको देवोदेवकी पुत्र एव।
एको मंत्रस्तस्य नामानियानि, कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा ।। १ ।।"

इसका भावार्थः– जो देवकीजी के पुत्र भगवान् श्रीकृष्ण उनके द्वारा कथित श्री भगवत् गीता वही एक शास्त्र, और श्रीकृष्ण वही एक देवता, और उसी का नाम, वही एक मंत्र, वही एक कर्म है जो उस देवता की सेवा। इसमें प्रमाण वेद, श्री गीताजी, व्यास सूत्र और भागवत है। यह लेख श्रीजगन्नाथरायजी के हस्ताक्षर से युक्त को देखकर सब प्रसन्न हुए और कहा यह लिखा सत्य है। यह वचन हमारे माथे पर है। तब सब श्रीआचार्यजी की स्तुति करने लगे तथा कहने लगे ये धन्य है। जिनकी आज्ञा में श्रीठाकुरजी ऐसे हैं जो कहते हैं वे करते है। इसलिए वैष्णव मार्ग सत्य हुआ। मायामत का खण्डन हुआ। राजा भोजदेव बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगा महाराज आप साक्षात् ईश्वर है। ब्रह्मलेश आपके विना किसी से नहीं मिटता। तब इतने में एक बड़ा ब्राह्मण मायावादी था वह बोला। यह लिखा हमारे लिए प्रमाण नहीं है। हमारे तो परंपरा है वह करेंगे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने राजा से कहा जिसका भगवद् वाक्य पर विश्वास न हो उसको म्लेच्छ जानना चाहिए। तुम राजा हो निश्चय करो। इसकी माता से पूछो यह किसका वीर्य है। यह ब्रह्म वीर्य तो सर्वथा नहीं हो सकता उसके प्रमाण में यह श्लोक है :–

" यः पुमान पितरं द्वेष्टि तं विद्यादन्यरेतसम्।
यः पुमान् भगवद् द्वेषी तं विद्यादन्य रेतसम्"

इसका भावार्थः– जो अपने पिता और भगवान् से द्वेष करता है वह सर्वथा दूसरे के वीर्य से उत्पन्न हुआ है। ऐसा जानना चाहिए। तब राजा को बहुत बुरा

लगा। इसलिए उसकी माता को बुलवाई और एकांत मे पूछा तू सच बता यह तेरा बेटा किससे उत्पन्न हुआ है। नहीं तो तेरा प्राण जायेगा। ऐसा उसको भय दिखाया। तब उसने धोबी का वीर्य बताया भय से सब सत्य वृत्तान्त कहा। राजा ने उस ब्राह्मण को देश से बाहर निकलवा दिया। पीछे शक्ति मत वाले तथा भैरवी चक्र वाले भी ऐसा ही कहते थे। उन सभी को परास्त करके भगवद् प्रसाद का माहात्म्य विख्यात किया। इसलिए और सभी ब्राह्मण ने कहा कि धन्य है श्रीआचार्यजी महाप्रभु धन्य है जिनने अपना मार्ग श्रीजगन्नाथरायजी द्वारा स्थापन करवाया। माया मत का खंडन किया ऐसा आपका माहात्मय देखकर दैवीजीव बहुत प्रसन्न थे। वे सब शरण आये। जिनके लिए आप पधारे ही थे। कुछ दिन वहां रहकर श्रीआचार्यजी आप विदा होने के लिए श्रीजगन्नाथरायजी के पास पधारे उस समय मंदिर में मेघ गर्जना जैसा बड़ा भारी घोर शब्द हुआ। उस शब्द को सुनते ही भय के मारे पंड़ा ब्राह्मण सब मंदिर से निकल भाग दूर जाकर खडे हुए और मंदिर के द्वार बंद हो गये। केवल श्रीआचार्यजी अकेले मंदिर में रहे। उनको श्रीजगन्नाथरायजी ने आज्ञा की तुमने सेवामार्ग प्रकट किया है वह मेरे को बहुत प्रिय है। अब अपने वंश द्वारा सेवामार्ग का प्रचार विस्तार पूर्वक प्रकट करो। तुमने श्रीकृष्ण प्रेमामृत ग्रन्थ किया है वह हमारे प्रिय भक्त कृष्ण चैतन्य को दो और श्रीजयदेवजी कृत गीत गोविन्द ग्रन्थ का प्रचार अपने मार्ग में करो और बेंगन का शाक तुमने निषिद्ध किया है वह प्रचलित करो। तब आपने आज्ञा प्रमाण कहकर साष्टांग दंडवत करके किंवाड खोलकर श्रीआचार्यजी आप बाहर पधारे। उस समय सब को बड़ा आश्चर्य हुआ। पीछे वहां से आप पृथ्वी पावन करने को आगे पधारे

प्रसंग १६

बैठक चरित्र

श्रीआचार्यजी महाप्रभु दक्षिण देश में पधारे। तब भगवदीय दामोदर दास कृष्ण दास मेघन प्रभृति और भी वैष्णव आपके साथ थे। मार्ग जाते हुए देखते है एक बड़ा अजगर मरा हुआ पड़ा है। उसके लक्षावधि चींटे लगे हुए है। उसके ऊपर आपकी दृष्टि पड़ी। उसको देखकर आप आगे मार्ग में पधारे। नित्य तो मार्ग में पधारते हुए कथावार्ता कहते हुए पधारते थे और उस दिन तो आप कुछ भी बोले नहीं। जहां ठहरने का गाँव था वहां आप पधारे। स्नान करके पाक सिद्ध किया। किन्तु किसी से आप बोले नहीं। पाक सिद्ध होने पर श्रीठाकुरजी को भोग समर्पित किया। पीछे भोग सराकर आपने भोजन किया। तब भी आप किसी से बोले नहीं। तब दामोदर दास ने प्रार्थना की महाराज आपके चरणाविन्द से ये सब जीव सेवक लगे है ये सब घर बार छोड़कर आपके साथ आये है। इसलिए आपके वचनामृत सींचे बिना कैसे जीवेगें । श्रीआचार्यजी ने कहा। अरे दमला तेने सवेरे वह अजगर देखा। जो मरा पडा था और उसके चेंटे लगे थे। उसने कहा हां महाराज देखा था। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि वह अजगर पिछले जन्म में महंत था। उसने अपना उदर भरने के लिए जीविका चलाने के लिए सेवक बहुत किये। परन्तु उनको कृतार्थ करने की सामर्थ्य नहीं थी। भगवत् सेवा, भगवन्नाम हो तो जीव कृतार्थ हो। यह तो उदरभरण के लिए महंत हुआ था। इसलिए मरने पर अजगर हो गया है और वे सब चीटे हो गये । वे उसको खाते है और कहते है कि अरे पापी ! तेरे में कृतार्थ करने की सामर्थ्य नहीं थी तो हमको सेवक क्यों किये। हमारा जमारा (योनि) वृथा क्यों खोयी। उसको देख कर मेरे को भी ग्लानि आई। तब दामोदर दास ने कहा कि महाराज आप ऐसा क्यों विचार करते हो। आप तो साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम हो आपके नाम को जो जीव एक बार भी स्मरण करेगा उस के सब पाप भस्म हो जायेंगे। आप तो साक्षात् अग्नि रूप हो। अग्नि के संबंध से कुछ भी दोष नहीं

रहते है। यह बात श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने इसलिए प्रकट की जो जीव शरण आवें सेवक हो यह तो गुरू को अपना सामर्थ्य देखकर सेवक करना चाहिए। सिद्धान्त प्रकट करने के लिए आपने यह वार्ता प्रकट की। इसलिए सर्वगुण संपन्न गुरू तो एक श्री वल्लभाधीश है इसके लिए श्रीगुसांईजी ने श्री सर्वोत्तम में श्रीआचार्यजी महाप्रभु का नाम " श्री कृष्ण ज्ञान दो गुरूः ऐसा कहा है। इसके बाद श्रीआचार्यजी आगे पधारे।

प्रसंग – १७

श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीरणछोड़जी के दर्शन करने को पधारे। मार्ग में सिद्ध गुजरात भी पधारे। उस समय वैष्णव समाज बहुत साथ में था। इसलिए आप अपना माहात्म्य प्रकट करने के लिए और अपना ऐश्वर्य दिखाने के लिए चकडोल में बिराजे गुजरात के देशाधिपति की गौरव के नीचे होकर पधारे। वह देशाधिपति महादुष्ट था और धर्म द्वेषी था। उसके सामने होकर कोई असवारी पर बैठकर नहीं निकल सकता था आप पधारे। आपके ऊपर खोजा की दृष्टि पड़ी तब उसने कहा देखो साहब कैसी असवारी आती है। तब उस देशाधिपति ने देखा और देखकर खोजा से कहा। अरे मूर्ख तू मेरे को अग्नि से लड़वाता है। तेरा मुझ से कोई वैर है क्या ? यह तो अग्नि है अभी मेरे को भस्म कर देगी। तेरे को दिखता नहीं है। उस समय देशाधिपति को श्रीआचार्यजी का तेजोमय ऐसा दर्शन हुआ देखकर उसको डर लगा। चुप होकर रह गया। यह देशाधिपति के प्रतिबन्ध को तोडने का प्रताप बल अपने वैष्णव को दिखाकर श्रीआचार्यजी द्वारिका की और पधारे।

प्रसंग – १८

बैठक चरित्र

श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीद्वारिका पधारे। वहां के ब्राह्मण ने कहा कि महाराज यहां के श्रीठाकुर जी वज्रनाम के स्थापित बोडाना भक्त के ऊपर प्रसन्न होकर डाकोर में जाकर बिराज गये। अब यहां का मंदिर खाली है। इसलिए आप कुछ यत्न करो। तब आपने कहा आज विचार कर कल कहेंगे। पीछे आप रात्रि को चिन्ता ग्रस्त होकर बिराजे। तब श्री द्वारिकाधीश ने प्रकट होकर आज्ञा कि हमारी मूर्ति श्रीरूक्मिणीजी से सेब्य यहां रूक्मिणी वन में पृथ्वी तल में बिराज रही है। उसके पास उस समय के तीन रत्न है। एक तो दिव्य शंख, माणिक का किरीट और कटार यह सब प्रकट करके स्थापित करो। यह मूर्ति दुर्वासा ऋषि के श्राप से श्रीरूक्मिणीजी को १२ वर्ष तक हमारा वियोग हुआ था। उस समय श्रीरूक्मिणी जी ने इस मूर्ति का पूजन किया था। अब पीछा संयोग हुआ है। वियोग समय में जिस स्थल में श्रीरूक्मिणीजी बिराजे थे उस स्थल पर वह मूर्ति पधरादी थी। उसको पधराओ। ऐसे कहकर श्रीद्वारिकाध ीशजी अन्तर्धान हुए। पीछे श्रीआचार्यजी के दूसरे दिन वहां के ब्राह्मण के हाथ से तीनों वस्तु सहित वह मूर्ति पृथ्वी में से प्रकट कर वहां के प्राचीन मंदिर में स्थापित की तथा सब सेवा का प्रबन्ध बांधा। पीछे औरंगजेब बादशाह के समय फिर आप श्री रणछोडजी उस प्राचीन मंदिर में से उठकर शंखाद्धार तीर्थ पर पध ारे, तभी से वहां अद्यापि पर्यन्त बिराज रहे हैं। वहां श्रीद्वारिका में गोविन्द दुबे नामक ब्रह्मचारी जो श्रीरणछोड़जी की सेवा करते थे श्रीआचार्यजी के सेवक हुए वे बड़े पंडित थे। जब श्रीआचार्यजी कथा कहते तब वे श्रोता होकर बैठते। आपने नवरत्न ग्रन्थ उन्हीं के लिए प्रकट किया था। एक समय गोविन्द दुबे ने आपसे विज्ञप्ति की थी कि महाराज मेरा मन सेवा में नहीं लगता है। तब आपने उसको " नवरत्न ग्रन्थ" लिखकर दिया और आज्ञा दी कि तुम इसका पाठ करो। इससे तुम्हारा मन सेवा में लगेगा। उस गोविन्द दुबे को आपने अंगीकार

किया। इसलिए श्रीरणछोड़जी साक्षात् उससे बात करते। गोविन्द दुबे ने तो सब वैष्णवों के ऊपर अनुग्रह किया और उसकी विनती से आपने नवरत्न ग्रन्थ' किया जो वैष्णव इस नवरत्न ग्रन्थ का पाठ करेंगे उनकी चिंता निवृत होगी। चिंता महादोष है। चिन्ता भगवन्नाम में भगवत्सेवा में जीव का मन रंच (थोडा) भी नहीं लगता है। इसलिए आपने अपने सेवकों की चिंता दूर कने के लिए यह ग्रन्थ प्रकट किया है। गोविन्द दुबे के उपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु का ऐसा अनुग्रह था। यह ग्रन्थ है–

।। चिंता कापि न कार्या निवेदितात्मभिः कदापीति।
भगवान नपि पुष्टिस्थो न करिष्यति लौकिकं चगातिम।।

'षोडश ग्रन्थ'

प्रसंग–१९

पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप शंखोद्धार पधारे तब आपके साथ गोविन्द दुबे भी आपके साथ शंखोद्धार आये। एक दिन शंखोद्धार में श्रीआचार्यजी कथा कह रहे थे। वहां दामोदर दास हरसानी, कृष्णदास मेघन, गोविन्द दुबे और राणा व्यास (जो उस प्रांत के रामानुज संप्रदाय के बड़े पंडित थे और बहुत भगवदीय सेवक पास बैठ हुए थे। उस समय कथा में ऐसा रसावेश हुआ था जैसे चन्दमा को चकोकर देखता है। ऐसे श्रीआचार्यजी को सब सेवक देखने लगे। आपका तो नाम ही है– *" श्री भागवत पीयूष समुद्र मथन क्षमः"* उस समय श्रीभागवत रूपी अमृत के समुद्र में सब भगवदियों को आपने ऐसे मग्न कर दिये जिससे किसी को देहानु सन्धान नहीं रहा। ऐसी रीति से आप कथा कर रहे थे। उसी समय एक घटा उठी उससे सब आकाश छा गया और वर्षा की बूंदे

भी आने लगी। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने मेघ को हाथ से मना किया। इसलिए आप जहां बिराज थे और जहां तक आपके सेवक बैठें थे वहां से दूर दूर चारों तरफ मेघ ने वर्षा की। बीच में एक चक्रसा सूखा रहा गया। वहां तो एक बूंद भी नहीं गिरी पर अन्यत्र बहुत वर्षा हुई। तब गोविन्द दुबे ने आप से कहा कि महाराज हम तो आपको पूर्ण पुरूषोत्तम जानते है फिर आप किस लिए अनुग्रह करके लीला दिखाते हो। आप का स्वरूप तो ऐसा है जो वेद भी नेति नेति कहता है। इसलिए हम जीव क्या जानें। तब आपने श्रीमुख से कहा कि तुम मेरा माहात्म्य जानों इसके लिए मैंने वर्षा को मना नही किया। मैंने तो मेघ को इसलिए मना किया कि कथा कहते बीच में उठना पड़ता इसके लिए ऐसा किया। क्या पता उठने के पश्चात् ऐसा रसावेश हो के नहीं हो। यह जानकर भगवदीय बहुत प्रसन्न हुए। पीछे वहां श्री शंखोद्धार में आपके सेवक बहुत हुए। पृथ्वी पर और भी बड़े बड़े भगवद धाम है जैसे श्रीजगन्नाथजी श्रीलक्ष्मणबालाजी, श्रीब्रदीनाथजी, श्रीरंगनाथजी उनमें से श्री शंखोद्धार में आप पधारे। पीछे वहां आपके सेवक श्रीरणछोड़जी की सेवा करने लगे। इस लिए वहां अपनी सत्ता जानकर श्रीगुसांईजी छः बार श्रीद्वारिका पधारे।

प्रसंग–२०

इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीद्वारिका से नारायण सरोवर को पधारे। वहां नारायण सरोवर के ऊपर दो भाई पुष्करणा रहते थे। वे आपकी शरण आये वे दोनों दैवीजीव थे। उनके लिए आप वहां पधारे थे उसमें से एक का नाम तो बाला था और दूसरे का नाम बादा था। बाला का नाम तो श्रीआचार्यजी ने बालकृष्णदास रखा ओर बादा का नाम बादरायण दास रखा। उसके बाद उन दोनों भाइयों ने विनती की महाराज अब हम निर्वाह कैसे करें

तब आपने आज्ञा की तुम एक नया वस्त्र ले आओ। वे एक सफेद वस्त्र ले आये। उस पर आपने अपने दोनों चरणारविन्द में कुंम कुंम लगाकर उस वस्त्र के ऊपर धरे। उन दोनों भाइयों पर अनुग्रह करके अपने चरणादविन्द् की सेवा पधरा दी। वे दोनों भाई श्रीआचार्यजी महाप्रभु की कृपा से बड़े भगवदीय हुए। पीछे वहां से आप श्रीआचार्यजी सब वैष्णवों को साथ लेकर फिर व्रज को पधारे।

प्रसंग–२१

एक समय श्री गोवर्धननाथ जी ने विचार किया मंदिर तो छोटा हुआ है और समृद्धि तो बहुत बढ़ी है बड़े मंदिर बिना सेवा का मंडान कैसे हो। तब एक पूर्णमल्ल क्षत्री अम्बाला में रहता था। उसके पास द्रव्य बहुत था। वह दैवीजीव था। इसलिए श्रीगोवर्धननाथजी उसके घर संवत् १५५६ चैत्र सुदी २ की रात्रि को पधारे और उसको स्वप्न में कहा कि हम श्रीगोवर्धन पर्वत पर प्रकट हुए हैं। देव दमन हमारा नाम है। तू आकर श्रीगोवर्धन पर्वत के ऊपर हमारा बड़ा मंदिर बनवा दे। उस पूर्णमल्लका स्वप्न में साक्षात् कोटि कन्दर्प लावण्य आपके दर्शन हुए। इसलिए सवेरे उठते ही उसको शीघ्रता हुई इस कारण सब काम छोड़कर द्रव्य संचय कर वह व्रज में गोवर्धन को आया। वहां आकर के पूछा यहां देवदमन ठाकुर कहां प्रकटे है। तब एक व्रजवासी ने बताया कि पर्वत ऊपर है। वह पूर्णमल्ल पर्वत के ऊपर आकर श्रीगोवर्धनाथजी के दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुआ और अपने मन में कहा कि अनुग्रह करके उस रात्रि को मेरे घर पधारे थे। मेरे को दर्शन दिये थे। वह यही है। उस समय श्रीगोवर्धननाथजी की सेवा रामदास जी चौहान करते थे। इसलिए उन से पूर्णमल्लजी ने पूछा कि यहां सेवा तुम ही करते हो या और कोई करता है। तब रामदासजी ने कहा इनके सेवक तो बहुत है। यहां नीचे जो आन्योर

गाँव है उसमें रहते हैं। ये सब सेवक इन के ही है। सेवा करते है। दूध, दही, माखन जो चाहिए वह सब लाते है। इनको श्रीआचार्यजी महाप्रभु की आज्ञा है। इन्ही को सौंपकर श्रीआचार्यजी पधारे है। तब पूर्णमल्ल ने पूछा कि वे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कौन है। रामदासजी ने कहा कि जिनके लिए श्रीनाथजी प्रकट हुए है वे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करने को पधारे हैं। तब पूर्णमल्ल ने रामदास से कहा। मेरे को श्रीगोवर्धननाथजी ने आज्ञा दी है कि तूम मेरा मंदिर समराय। इनका मंदिर समराने के लिए आया हूं। इसलिए तुम मंदिर बनवाने का उद्यम करो। तब रामदास जी ने कहा इस गँाव के मुकदम (प्रतिष्ठित) सदूपांडे है। तुम उनसे कहो। पूर्णमल्ल ने आकर सब समाचार सदूपांडे से कहे। तब उनने उत्तर दिया कि भैया यह मंदिर तो तुम्हारे बनवाने का नहीं है। जिनके ये ठाकुर है वे तो पृथ्वी परिक्रमा को गये है। इसलिए वे जब आये तथा वे आज्ञा करेंगे तो मंदिर बनेगा। यह बात सुनकर पूर्णमल्ल ने विचार किया कि श्रीठाकुरजी ने मेरे को आज्ञा दी है और मेरे को घर से बुलवाया है। इसलिए अभी घर तो नहीं जाना। यह निश्चय करके पूर्णमल्ल आन्योर में ही रहे। श्रीआचार्यजी का मार्ग देखने लगे। श्रीआचार्यजी महाप्रभु का तो स्वभाव ही है जो–" भक्त विरह कातर करूणामय डोलत पाछें लागें।। उस समय श्रीगोवर्धननाथजी की इच्छा तो मंदिर बनवाने की हुई। तब श्रीआचार्यजी ने आपके मन की इच्छा जानकर मंदिर बनवाने के लिए व्रज में पधारे। आकर के श्रीगोवर्धननाथजी के दर्शन किये और सब सेवक वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभु के दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुए और पूर्णमल्ल भी श्रीआचार्य जी के दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुआ। तथा यह जाना ये साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम है। इनमें तथा श्रीठाकुरजी में भेद नहीं है। पीछे पूर्णमल्ल ने आपसे विनती की महाराज मेरे को नाम दीजिए तथा अपना सेवक कीजिये। तब

आपने अनुग्रह कर उसको अंगीकार किया। पूर्णमल्ल ने आपसे प्रार्थना करके सब वृत्तान्त कहा कि महाराज मेरे को श्रीनाथजी ने मंदिर बनवाने की आज्ञा की है। इसलिए में द्रव्य लेकर अंबाला से आया हूँ। श्रीआचार्यजी ने कहा कि हम पूछेंगे। आपने श्रीगोवर्धननाथजी से पूछा। तब आज्ञा हुई कि मंदिर शीघ्र सिद्ध करो। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्रीगिरिराजजी से पूछा कि आपके ऊपर मंदिर बनेगा, टांकी बजेगी उसकी आज्ञा है। तब गिरिराजजी में से ध्वनि हुई मेरे हृदय में श्रीनाथजी बिराजेंगे। इसलिए मेरे को टांकी का परिश्रम नहीं होगा। आप मंदिर सुखेन सिद्ध करवाओ। तब श्रीआचार्यजी ने पूर्णमल्ल से कहा कि मंदिर शीघ्र समराओ। उसने आगरा से कारीगर बुलाए उसमें हीरामणि कर के उस्ता था उसको श्रीजी ने स्वप्न में ही आज्ञा की थी कि तूम मेरा मंदिर निर्माण करने को आ। तब उसने गोवर्धन पर आकर श्रीआचार्यजी से आज्ञा मांगी और कहा कि मेरे को श्रीनाथजी ने आज्ञा की है आप आज्ञा करो तो मैं मंदिर सिद्ध करूँ। तब आपने श्री मुख से आज्ञा की तुम मंदिर का चित्र कागज पर बनाकर लाओ। तब वह मंदिर की सब आकृति कागज पर उतारकर लाया और आपको दिखाया। उसमें आपने शिखर देखा। फिर आपने दूसरा उतार ने की आज्ञा की। उसमें भी शिखर देखा तब श्रीआचार्यजी ने दामोदर दासको आज्ञा की तब श्रीआचार्यजी ने दामोदरदास को आज्ञा की श्रीनाथजी की इच्छा शिखर वाले मंदिर में बिराजे की है। इसलिए थोड़े काल तक मंदिर में बिराजकर पीछे यवन का उपद्रव होगा तब और देश में श्रीजी पधारेंगे। वहाँ से पुनः व्रज में पधारेंगे तब पूछरी की ओर पृथ्वी पर दूसरा मंदिर बनेगा। श्री गिरिराज के तीन शिखर है। १आदि शिखर २ शिखर और ३ देवशिखर उसमें से श्री कृष्णावतार में आदि शिखर पर क्रीडा की। मध्य में देवशिखर पर अब क्रीड़ा कर रहे हैं बाद में ब्रहा शिखर पर क्रीड़ा करेंगे। (आदि शिखर और देवशिखर संप्रति पृथ्वी में गुप्त है।

ब्रह्मशिखर प्रकट दर्शन देता है) आप तो श्रीगोवर्धननाथ है सदा श्री गोवर्धन पर ही क्रीडा करते हैं। ऐसी आज्ञा कर संवत् १५५६ वैशाख सुदी ३ रविवार रोहिणी नक्षत्र के दिन मंदिर की नीम खुदवाई और बहुत शीघ्र काम चलाया वह मंदिर थोड़े ही काल में सिद्ध हुआ। यह सब पूर्णमल्ल की वार्ता में विस्तार से लिखा है) यह मंदिर बहुत बड़ा हुआ था जिसमें मणिकोठा, तिबारी सब बनकर सिद्ध हुए। तब श्रीगोवर्धननाथजी को उस मंदिर में संवत् १५७६ वैशाख सुरदी ३ (अक्षय तृतीया) के दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने पाट बैठाये। सात ध्वजा मंदिर के ऊपर फहराई फिर दर्शन कर पूर्णमल्ल बहुत प्रसन्न हुए। बहुत द्रव्य खर्चा और कहा कि धन्य है मेरा भाग्य ऐसा अनुग्रह करके मेरे को आज्ञा दी वैसा मेरा मनोरथ सिद्ध हुआ। श्रीआचार्यजी महाप्रभु पूर्णमल्ल के ऊपर बहुत प्रसन्न हुए। आपने श्रीमुख से कहा कि पूर्णमल्ल कुछ मांगो जो मांगो वह दूँ। तब उसने कहा महाराज मेरा मनोरथ यह है एक बार श्रीगोवर्धननाथजी के श्रीअंग को अति उत्तम अरगजा अपने हाथ से समर्पित करूं। आपने अनुग्रह करके कहा समर्पित करो। तुम्हारा मनोरथ जो हो वह पूर्ण करो। उसने अति सुगन्ध का अरगजा श्रीगोवर्धननाथजी को समर्पित किया। समर्पित करके अत्यन्त प्रसन्न हुआ और प्रार्थना की महाराज मेरे पास एक लक्ष मुद्रा और कुछ हजार रूपये थे उसमे से एक लाख रूपया तो मंदिर में लग गये तो भी मन्दिर में काम रह गया है। इसलिए कुछ मुद्रा रही है वह लेकर दक्षिण में जाता हूं। वहां से और द्रव्य कमाकर लाकर मंदिर पूर्ण सिद्ध करुंगा। तब श्रीआचार्यजी ने प्रसन्न होकर अपना धारण किया उपरणा प्रसादी पूर्णमल्ल को दिया। पूर्णमल्ल ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु को साष्टांग दंडवत् करके आज्ञा मांगकर अपने घर अंबालय को गये। वहां से दक्षिण को गये। दक्षिण से रत्न लाकर विक्रय किये। उससे तीन लाख मुद्रा हुई। उसी मुद्रा से बीस वर्ष पीछे उसने पुनः मन्दिर बनवाया। वहां तक यह

मन्दिर आधा ही रहा था उसमें ही श्रीजी बिराजे थे। ब्रजवासियों से क्रीडा करने की इच्छा आपकी थी। इसलिए मन्दिर के प्रतिबंध बीस वर्ष तक श्रीजी ने किया था। वहां तक रामदास चौहान राजपूत ने सेवा की थी। संवत् १५४५ से आरंभ कर संवत् १५७६ तक गोवर्धन की खेमोगूजरी, गांठ्योली की पाथोपूजरी, अडीग के गोपाल ग्वाल, आगरा के ब्राह्मण के छोरा, सरवीतरा के मांडलिया पांडे इत्यादि अनेक ब्रजवासियों ने अनेक प्रकार के खेल करते जिनका विस्तारपूर्वक वर्णन श्रीनाथजी के प्राकट्य के ग्रन्थ में है। इस प्रकार श्रीजी ने अनेक क्रीड़ा की थी।

प्रसंग–२२

एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सदूपांडे को बुलाकर आज्ञा दी। गोवर्धननाथजी का मंदिर तो सिद्ध हुआ परन्तु ऐसे बड़े मंदिर में सेवक भी बहुत चाहिए। इसलिए तुम ब्राह्मण हो श्रीगोवर्धननाथ जी की सेवा करो। यह मर्यादा है कि भगवत सेवा ब्राह्मण करे तो अच्छा। तब सदू पांडे ने आपसे कहा महाराज हमारी ज्ञाति के मनुष्य कुछ भी आचार विचार में नहीं समझते हैं। सेवा में जो समझते हों उनसे सेवा करवाओ। श्रीआचार्यजी ने विचार किया कि श्रीकुंड पर ब्राह्मण रहता है। वह कृष्ण चैतन्य का सेवक है उनको रखना चाहिए। तब आपने उन बंगाली ब्राह्मणों को बुलाकर सेवा की आज्ञा दी। उसमें माधवेन्द्र पुरी मध्वसंप्रदाय के आचार्य तैलंग ब्राह्मण कृष्ण चैतन्य के गुरू थे। जिनके पास श्रीआचार्यजी ने काशी में वेदाध्ययन किया था। उस समय भगवत्सेवा देने को कहा उनको मुखिया किया। उनके शिष्यों को सेवामें रखे। कृष्णदास जी को अधिकारी किया। कुंभनदास को कीर्तन की सेवा दी और अपनी रीति भांति सब सिखाई। श्रीगोवर्धननाथजी का नित्य नेग बांधा इतनी सामग्री श्रीगोवर्धननाथजी को नित्य को अरोगाओ। पीछे बंगालियों

से आपने कहा इतना नेग तो सदूपांडे तुमको नित्य पहुंचाया करेगा। अधिक आवे तो अधिक लेना। किन्तु इस नेग में से घटाना मत। इस महाप्रसाद में तुम्हारा निर्वाह करना। ऐसी श्रीआचार्यजी ने आज्ञा दी और कहा कि इनका समय मत चूकना। भोग तो भगवत् इच्छा से जो हो वह धरना। किन्तु श्रीठाकुरजी के अवार (विलम्ब) मत करना। इसके लिए सावधान रहना। १४ वर्ष तक बंगालियों ने सेवा की। पीछे श्रीनाथजी बंगालियों की सेवा से अप्रसन्न हुए। उनको निकालने के लिए अवधूत दास और कृष्णदास को आज्ञा दी और कहा कि ये बंगाली मेरा द्रव्य चुराकर ले जाते हैं। इसलिए इनको निकालो। श्रीआचार्यजी के पीछे तीन वर्ष उनने सेवा की। पीछे उनको श्रीजी की आज्ञा से श्रीगुसांईजी ने निकालकर गुर्जर ब्राह्मण को सेवा में रखे थे।

प्रसंग–२३

एक समय श्रीगोवर्धननाथजी ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से कहा मेरे को गाय ला कर दो। तब आपने कहा महाराज सिद्ध है। श्रीआचार्यजी ने सदूपांडे को कहा श्रीनाथजी ने आज्ञा दी है कि मेरे को गाय लाकर दो। इसलिए यह सुवर्ण वीटी है इसको बेचकर गाय लाकर दो। तब सदू पांडे ने कहा महाराज इस घर में जितना गोधन है वह किसका है। हमने तो तन, मन, धन सब आपको समर्पित किया है। हमारा क्या रहा है। इसलिए आप आज्ञा करें उतनी गाय लाकर दूं। तब आपने कहा तुम जो लाओ वह तो तुम्हारी इच्छा। उसके लिए तो हम मना नहीं करते हैं। किन्तु मेरे को तो श्रीगोवर्धननाथजी ने आज्ञा दी है। इसलिए प्रथम तो हमारे इस सुवर्ण बीटी की गाय लाकर दो। सदूपांडे उस स्वर्ण बीटी की प्रथम गाय ले आये वह गाय श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्धननाथजी के आगे खड़ी की। पीछे सदूपांडे तथा और भी व्रजवासी अपने अपने घरों से कोई एक गाय, कोई दो गाये

ले आये और वैष्णवों के यहां से भी बहुत गाय आयी उस दिन से आपने श्रीगोवर्द्धननाथजी का नाम "गोपाल" धरा। पीछे श्रीगुसांईजी ने गोपाल इस नाम से गोपालपुर गांव बसाया। भगवदीय छीत स्वामी ने भी गाया है:-

"आगें गाय पाछें गाय इत गाय उत गाय,
गोपाल को गायन में बसिवोई भावेरी।"

पीछे गायों की समृद्धि बहुत बढ़ी। ग्वाल भी बहुत रखे। गायों को चराने के लिए ग्वाल जाने लगे। उनके साथ आप श्री ठाकुरजी और श्रीबलदाऊजी पधारे। वहां ही छाक आता। श्रीबलदेवजी सभी को बांटते। श्रीगोवर्धननाथजी सव सखा मंडली में बैठकर अरोगते। श्रीगुसांईजी भी छाक लेकर वन में पधारते। यह वार्ता में प्रसिद्ध है। गायों का दूध बहुत होने लगा। इसलिए श्रीगोवर्धननाथजी ने दूध, दही, माखन बहुत अरोगा। इस रीति से श्रीगोवर्धननाथजी की सेवा अच्छी रीति से होने लगी।

प्रसंग-२४

श्रीआचार्यजी महाप्रभु एक दिन श्री गोकुल पधारे। वहां श्रीठकुरानी घाट के ऊपर स्नान करके अपनी बैठक में बिराजे। सब भगवदीय आगे खड़े थे। उस समय एक ब्राह्मण राघवदास इस नाम का साधु आया। वह पूजा मार्गी थी उसने श्रीयमुनाजी में स्नान कर अपनी पूजा खोली। उसके पास एक बंटा था उसमे एक स्वरूप श्रीठाकुरजी का था। एक श्रीशालिग्राम जी का स्वरूप था। वह धरकर ब्राह्मण पूजा करने को बैठा। धूप, दीप, नैवेघ धरकर पीछे उसने श्रीठाकुरजी के स्वरूप को बंटा में पधरा दिया और छाती पर शालिग्राम धर और बंटा को बन्द कर दिया। उस समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु की

दृष्टि पड़ी। तब दामोदर दास हरसानी से कहा कि तुम इस ब्राह्मण से कहो कि तुम शालिग्राम को अलग घरो श्रीठाकुरजी के ऊपर मत घरो। दामोदर दास ने उसने कहा। उस ब्राह्मण ने कहा महाराज अब ये कुछ ठाकुर नहीं रहे। श्रीठाकुरजी तो मैंने विसर्जन कर दिये। तब श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख से कहा अरे भगवत्स्वरूप तो है? किन्तु उस ब्राह्मण ने नहीं माना। वह अपनी पूजा को साथ बांध कर चला। दूसरे दिन फिर उसी स्थान पर आया। स्नान करके जैसे प्रतिदिन पूजा करता था वैसे फिर करने के का तैयार हुआ। उसी समय श्रीआचार्यजी संध्या वंदन कर रहे थे। जब उस ब्राह्मण ने बंटा खोला तो देखता कि श्रीठाकुरजी पोढे है और शालिग्राम के टूक टूक हो गये है। यह देखकर वह बहुत दुःखी हुआ श्रीआचार्यजी महाप्रभु से कहा महाराज कल मैने आपकी कही बात को नहीं माना तो मेरे शालिग्राम के टूक टूक हो गये। अब में क्या करूं। तब आपने कहा तू फिर ऐसा काम नहीं करे तो तेरे श्रीशालिग्राम जी अच्छे तो सकते है। उसने कहा कि महाराज अब मे फिर ऐसा नहीं करूंगा। तब आपने श्री मुख से कहा तू इन टूक टूक को जोड़। उस ब्राह्मण ने उन टूक टूक को जोड़े। तब आपने कहा तू इन के ऊपर यमुना जल डाल। उसने श्रीशालिग्रामजी के ऊपर श्रीयमुना जल डाल। वे शालिग्राम जैसे थे वैसे हो गये। ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपने सेवक दैवीजीवों को अपना माहात्म्य दिखाया। इस प्रकार अपने सेवकों के ऊपर आप कृपा करते थे।

प्रसंग–२५

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपने मन में विचार किया हम को श्रीठाकुरजी ने आज्ञा दी है कि तुम भूतल पर दैवीजीवों का उद्धार करो। उनका उद्धार तो दो बातों से हो सकता है। एक तो भगवत स्वरूप की सेवा से और

एक भगवत्नाम से, भवत्स्वरूप में तो श्रीगोवर्धननाथजी प्रकट हुए है। अब भगवत्नाम प्रकट करना चाहिए। जैसे श्रीठाकुरजी ने श्रीनारदजी द्वारा श्रीशुकदेवजी को आज्ञा दी थी तुम भागवत प्रकट करो। वैसे ही आपने मेरे को आज्ञा दी है कि तुम भी श्री भागवत की टीका श्री सुबोधिनी जी को प्रकट करो। इसलिए लिखने वाला हो तब टीका हो। कश्मीर में केशव भट्ट कर के बड़ा पंडित था उसने अपने देश में सुना कि श्रीवल्लभाचार्यजी दक्षिण में प्रकट हुए हैं वे बड़े पंडित हैं। पृथ्वी के सभी पंडितो को जीता है। इसलिए चलो उनसे मिलते हैं। वह केशव भट्ट कश्मीर से आये। (श्रीआचार्यजी महाप्रभु सरस्वती का उल्लंघन नहीं करते इसलिए कश्मीर नहीं पधारे) उस केशव भट्ट के साथ शिष्य बहुत थे उनमें एक माधव भट्ट था वह दैवीजीव था। मानो उनके लिए ही केशव भट्ट आये हों। उस केशव भट्ट ने आकर श्रीआचार्यजी से विनती की महाराज आप ने दिग्विजय की है सब देश के पंडितों को जीता है। आपको आचार्य पदवी है। श्री भागवत के एकादशस्कंधमें श्रीठाकुरजी ने उद्धव जी के प्रति कहा है जो आचार्य है वह मेरा स्वरूप है। इसलिए आप इच्छानुसार भगतत्स्वरूप हो। मेरे को अनुग्रह कर कुछ सुनाओ। तब श्रीआचार्यजी कथा कहते उसको भगवदियो के साथ केशव भट्ट और माधव भट्ट सुनते। उससे उस माधव भट्ट में तो भक्ति उत्पन्न हुई कारण कि वह दैवीजीव था केशव भट्ट तो श्रीआचार्यजी की विद्या देखकर आया था इसलिए उसको कोई बोध नहीं हुआ। पीछे केशव भट्ट अपने स्थल पर आकर अपने सेवकों को कथा कहते थे वहां माधव भट्ट नहीं जाते। वे अपने मन से यह सोचते थे मेरे तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु के चरण छोड़कर कहीं नहीं जाना। तब एकदिन केशव भट्ट ने माधव भट्ट से कहा तू हमारी कथा छोड़कर वहां श्रीआचार्यजी के सेवकों में जाकर हंसी ठिठोली करता है। माधव

भट्ट ने तब कहा मेरे को तुम्हारी कथा से उनकी हंसी ठिठोली अच्छी लगती है। केशव भट्ट माधव भट्ट की बात सुनकर अपने मन से बहुत कुढ़ा और विचार किया कि यह तो मेरे काम से गया और माधव भट्ट ने ऐसे कठोर वचन इसीलिए कहे कि यह मेरा पीछा किसी प्रकार से छोड़े। पीछे केशव भट्ट ने कुछ समय बाद श्रीआचार्यजी महाप्रभु के पास रहकर सीख मांगी और कहा महाराज मैंने आपके श्री मुख से कथा सुनी पर मेरे को तो कुछ बोध नहीं हुआ। इसका क्या कारण है। तब आपने केशव भट्ट से कहा तुमने अभिमानी होकर कथा सुनी इसलिए तुमको बोध नहीं हुआ। परन्तु इसका गूढ भाव तो और था आपने उसको प्रकट नहीं किया। यदि तू दैवीजीव होता तो यह बात कहने की नहीं थी। पीछे श्रीआचार्यजी से केशवभट्ट ने कहा कि महाराज यह माधवभट्ट है इसको में आपको भेट करता हूं। तब आपने श्री मुख से कहा था यह तो हमारे चाहिए था बहुत अच्छा हुआ। वे माधव भट्ट प्रथम तो बड़े पंडित थे। जब श्रीआचार्यजी की शरण आये तब वे बड़े भगवदीय हुए। इसलिए आपने माधव भट्ट से कहा कि माधव भट्ट हमारे श्री भागवत की श्री सुबोधिनी जी की टीका करनी है। तुम लिखो तो टीका हो। तब उसने कहा महाराज ठीक है आप कहते जाते और माधव भट्ट लिखता जाता। जहां वह नहीं समझता वहां लिखना छोड़कर बैठ रहता। तब आप उसको समझाकर कहते तब वह पुनः लिखने लगता। वे माधव भट्ट ऐसे भगवदीय थे जिनने श्री सुबोधिनी जी रास्ते चलते लिखा। इस प्रकार दोनों वस्तुएं प्रकट हुई। श्री गोवर्धन पर्वत में से श्रीनाथजी प्रकट हुए और श्रीआचार्यजी महाप्रभु के मुखारविन्द में से श्री सुबोधिनी प्रकट हुई। माधव भट्ट ने लिखा इसलिए उसके अहोभाग्य। निबन्ध में श्रीआचार्यजी ने लिखा है कि "रूप नाम विभेदेन जगत्क्रीडतियो यतः।।

प्रसंग–२६

एक समय श्रीआचार्यजी दूसरी बार पूर्व में ओडछा देश में पधारे। वहां पहले से माया वी और वैष्णव सम्प्रदाय वालों का फिर से झगड़ा हो रहा था। वे मायावदी ऐसे थे जिन्होंने सरस्वती देवी की पूजन कर अपने वश में कर रखी थी। वे मायावादी जिस देश में जाते वहां एक सरस्वती का घट धर रखते और उसके ऊपर वस्त्र ढक कर सभी से वाद करते और कहते कि यह साक्षात् सरस्वती जी है यह जिसको सत्य कहे वह सत्यं उस घट के बल से मायावादी जहां भी जाते वहीं उनकी विजय होती। इसलिए उनसे कोई चर्चा नहीं कर सकता। उस ओरछा देश के राजा राम भद्रनारायण के यहां ब्राह्मण की सभा इकट्ठी हुई। ये समाचार श्रीआचार्यजी ने सुने तब आप उस राजा की सभा में गए। राजा आपके दर्शन कर बहुत प्रसन्न हुआ और ऊंचे आसन पर पधराये। आप ने राजा से पूछा तुम्हारा यहां ब्राह्मणों का क्या झगड़ा है। तब राजा ने आप से विनती की महाराज़ वैष्णव मतवाले हारे है और शक्तिमत वाले जीते है। आपने कहा मायावादी कैसे जीते है राजा ने विनती की महाराज साक्षात् देवी इन से बोलती है। इनका मार्गसत्य कहती है। इसलिए ये जीते है। तब आपने कहा हम देखते हैं। देवी कैसे बोलती हैं। राजा ने उन मायावादियों से कहा वावा अब तुम इन से चर्चा करो। तब वे मायावादी ब्राह्मण स्थापित घट के पास श्रीआचार्यजी महाप्रभु से चर्चा करने लगे और कहा कि महाराज यह साक्षात् सरस्वती है यह जो कह दे वह सब सत्य है। आपने कहा ठीक है। तुम सरस्वती का बुलाओ। उन मायावादियों ने घट से प्रार्थना की वह घट तो कुछ बोलता नहीं है। वे ब्राह्मण बहुत बार बुलाते पर उस घट से शब्द नहीं निकलता तब श्रीआचार्यजी ने राजा से कहा ये तो

पाखंड है। वैष्णव मार्ग के विषय से साक्षात् श्री कृष्णचन्द्र ने श्री भागवत के एकादश स्कंध में उद्धव जी के प्रति कहा है वैष्णव जो है वे मेरे अंग है और वैष्णव को तो मेरा ही स्वरूप जानना। वैष्णवों में जोकुबुद्धि रखता है वह महा अपराधी है। वेद शास्त्रों में स्थान स्थान पर वैष्णवों का माहात्म्य कहा है। ये मायावादी वैष्णव मार्ग को कैसे जीतेंगे। तब वे निरूतर होकर देवी के ऊपर मरने के लिए बैठे। तेने सभामें हमारा मान भंग क्यों किया?तू बोली क्यों नहीं? देवी ने उनको बताया अरे अपराधी! उनके तो मैं कंठाग्र हूं। उनके सामने लज्जा छोड़कर कैसे बोलूं। कोई मनुष्य हो तो उसके सामने मैं बोलती हूं। वे तो साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम है। यह सब दृश्य राजा ने देखा तब राजा ने मन मैं विचार किया मेरा भाग्यधन्य है। मेरे घर साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम पधारे हैं। पीछे राजा ने विनती की महाराज मेरे को अपना किया है इसलिए मै कृतार्थ हुआ हूं। इसके पश्चात् और भी बहुत दैवीजीव शरण आये सब वैष्णव मार्गीय जो ब्राह्मण थे वे सब बहुत प्रसन्न हुए और कहने लगे कि हमारे धर्म को तो श्रीआचार्यजी ने रखा है। उस राजा ने भी श्री आचार्यजी महाप्रभु का कनकाभिषेक करवाया। उस स्नान के सुवर्ण का द्रव्य ब्राह्मणों के बालकों के यज्ञोपवीत और ब्राह्मण कुमारिकाओं के विवाह तथा यज्ञ कर वाने की आज्ञा राजा रामभद्र को श्रीआचार्यजी ने की। तब राजा ने आपके समुख सहस् मुद्रा भेंट रखी। वहां मायामत का खंडन हुआ। भक्तिमार्ग का स्थापन हुआ।

प्रसंग–२७

पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पृथ्वी को पावन करते हुए आगे पधारे। मनकर्णि त्रिलोकीनाथ में कृष्ण चैतन्य का समागम हुआ। वे श्रीआचार्यजी के दर्शन कर के बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि मेरा बड़ा भाग्य है मैं महाराज

के दर्शन कर पाय। पीछे कृष्ण चैतन्य ने श्रीआचार्यजी के आगे भगवन्नाम का माहात्म्य कहा कि एक क्षण भी श्रीठाकुरजी के चरणारविन्द में मन लगावे तो जीव कृतार्थ हो जाता है। तब श्रीआचार्यजीने कहा कि हमारे मार्ग में ऐसा नहीं है। हमारे मार्ग में तो एक क्षण भी श्रीठाकुरजी के चरणाविन्द में मन को निकाले तो आसुरावेश हो जाता है। इसीलिए नवरत्न में कहा है–" तस्मात् सर्वात्मना नित्यं श्री कृष्णः शरणं मम।। ऐसे जीव को रात दिन कहना– चाहिए। पुष्टि मार्ग का स्वरूप तो ऐसा है यह वार्ता सब भगवदियों ने आपके श्रीमुख से सुनी। उनमें से कृष्णदास मेघन के मन में संदेह आया कि ऐसे भी भगवदीय होंगे जो अहर्निश भवन्नाम लेते है। श्री महाप्रभु ने उसके मन की जानी की कृष्णदास को संदेह हुआ है। परन्तु उसने कुछ पूछा नहीं। पूछता तो आप उत्तर देते। श्रीआचार्यजी तो मार्ग से पधारे उस मार्ग में एक सरोवर बहुत सुन्दर देखा। उसके ऊपर वृक्ष बहुत सुन्दर था। तब आपने दामोदर दास से कहा कि दमला आज तो हम यहां ही पाक करेंगे यह स्थल बहुत सुन्दर है। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु वहां ही ठहरे। नित्यकृत्य कर के आप तो पाक करने बैठे और कृष्णदास मेघन पत्तते लेने गया। वहां जाकर देखता है तो सरोवर के ऊपर एक जानवर बैठा है। वहां कृष्णदास मेघन अकस्मात् जाकर खड़े हो गये। किन्तु देखते ही डर लगा विचार किया कि भगवान् की इच्छा होगी वह होगा। इसलिए भगवन्नाम लो ऐसा विचार कर कृष्णदास मेघन से उस जानवर से श्रीकृष्ण स्मरण किया। तब उस जानवर ने डुबकी मार जल पिया। दूसरी बार फिर श्रीकृष्ण स्मरण किया उसने दूसरी बार डुब की मार जल पिया। जब तीसरी बार फिर श्रीकृष्ण स्मरण किया फिर तीसरी बार उस जानवर ने जल में डूब की मार कर जल पिया। पीछे कृष्णदास मेघन वहां से आगे पत्ते लेने गये पर मन में विस्मय हुआ कुछ भी समझ में नहीं

आया। यह क्या चमत्कार हुआ मैंने तीन बार श्रीकृष्ण स्मरण किया और उस जानवर ने तीनो बार जल में बुड़कीमार कर जल पान किया। परन्तु इसका आशय कुछ नहीं जान पाया। पीछे पत्ते लेकर कृष्णदास मेघन श्रीआचार्यजी महाप्रभु के पास आया तब आपने उससे पूछा क्यों कृष्णदास तेरा संदेह गया। उसने कहा कि महाराज संदेह तो आप अनुग्रह करके दूर करोगे तब दूर होगा। जीव तो सदा संदेह से युक्त है। जीव की बुद्धि अल्प है। श्रीआचार्यजी ने कहा वह जो तेने जीव देखा वह बहुत दिनों से प्यासा था। जल के तीर पर बैठा था तब भी उसने जल नहीं पीया। उसका कारण यह था कि जल पियूंगा तो इतने समय मेरे भगवन्नाम स्मरण छूट जायेगा। जब तेने श्रीकृष्ण स्मरण जिनती बार किया उतनी बार उस शब्द को सुनते ही उसने जल पी लिया ऐसी भगवन्नाम में आसक्ति चाहिए। तब कृष्ण दास मेघन बहुत प्रसन्न हुआ और सुनकर उसके मन का संदेह दूर हुआ।

प्रसंग—२८

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पंढरपुर पधारे। वहां पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथजी का स्वरूप है। उनके दर्शन को आप पधारे। जहां श्रीआचार्यजी की बैठक हुई है वहां आप बिराजे। वहां आपसे श्रीविट्ठलनाथजी मिले और श्रीमुख से कहा कि तुम विवाह करो। पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथजी ने इसलिए कहा कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु के मार्ग की स्थिति बहुत दिन तक है और दैवीजीवों को अंगीकार बहुत दिनों तक करना है अगर आप विवाह नहीं करेंगे तो दैवीजीवों का अंगीकार शिष्य द्वारा होगा। जैसे सेठ पुरूषोत्तम दास को नाम देने की आज्ञा दी। वे नाम देते वैसे और सेवकों को भी नाम देने की आज्ञा श्रीआचार्यजी ने की थी। श्रीठाकुरजी ने विचार किया कि संप्रति भगवदीय नाम

देते हैं। वे तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु के परम कृपा पात्र है और अंग है। इसलिए इनमें तो जीव कृतार्थ करने की सामर्थ्य है जैसे गदाधर दास ने भक्ति दी और प्रभुदास ने मुक्ति दी। परन्तु आगे ऐसी सामर्थ्य किसी को नहीं होगी। जैसे और संप्रदायी से वेद मार्ग छूट गया। वैसे ही इस संप्रदाय से भी, छूट जायेगे तो जीव कृतार्थ नहीं होंगे। इसीलिए पांडुरंग श्रीविट्ठलनाथजी ने श्रीआचार्यजी को आज्ञा दी तुम विवाह करो मैं तुम्हारे घर में जन्म लूंगा। यहां पर कोई संदेह करे कि श्रीविट्ठलनाथजी ने आज्ञा क्यों दी और श्रीगोवर्धननाथजी ने क्यों नहीं दी। उसका कारण यह है कि भगवत्स्वरूप का श्रीआचार्यजी महाप्रभु स्पर्श करें तो साक्षात् पुरूषोत्तम श्रीगोवर्धननाथजी ही जाने। इसलिए यह जानना चाहिए कि श्री गोवर्धननाथ जी ने ही आज्ञा दी। छीतस्वामी ने भी गाया है– *" छीत स्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल एइतेई तेई एइ कुछ न संदेह"* इसलिए श्रीगुसांईजी साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम प्रकट हुए। वह कैसे आगरा में एक वैष्णव श्रीगुसांईजी के पंखा करता था उसको संदेह हुआ। इसलिए उसको श्रीगुसांईजी ने साक्षात् श्रीगोवर्धनधर के दर्शन दिये। ऐसे दर्शन सभी को नहीं होते है। ऐसे दर्शन सभी को हो तो जगत कृतार्थ हो जाय। श्रीआचार्य और श्रीगुसांईजी का प्राकट्य तो केवल दैवीजीवों के उद्धारार्थ था आपने सेवा मार्ग प्रकट किया। गोपाल दास जी ने गाया है–*"।। आप सेवा करी सीख वे श्री हरि भक्त पक्ष वैभव सुदृढ कीध्ो"।।* इसलिए आप साक्षात् ईश्वर हैं। किन्तु आपने सेवक भाव कर के मनुष्य देह को अंगीकार किया। पीछे श्रीविट्ठलनाथजी से आपने कहा हम विवाह कैसे करे। हमकों कन्या कौन देगा। हमारा किसी एक स्थान पर निवास नहीं है। ब्रह्मचर्याश्रम को ग्रहण किया है और हम पृथ्वी परिक्रमा करते फिरते हैं। इसलिए हम किससे कहें कि हमको कन्या दो। तब श्रीविट्ठलनाथजी ने कहा कि हमने सब सिद्ध कर रखा है। आप काशी पधारो वहाँ एक मधु मंगल नाम का

तैलंग ब्राह्मण हनुमान घाट पर तैलंग ब्राह्मणों की ज्ञाति समुदाय में रहता है। उसके एक महालक्ष्मी करके कन्या है। उसने आपकी पहले से कीर्ति सुनकर यह निश्चय किया है कि अगर में बरण करूं तो श्रीवल्लभाचार्यजी को वरण करूं। इसलिए वह नित्य अपनी माता के साथ गंगा स्नान करने को जाती है। वहाँ गंगाजी से यह मांगती है कि मेरे पति श्री वल्लभाचार्य जी ही हों। उसको श्री गंगाजी ने स्वप्न में कहा है कि आज से पांचवें दिन श्रीवल्लभाचार्यजी आकर तेरा वरण करेंगे। ऐसा कहकर सौभाग्य द्रव्य देकर गंगाजी अंतर ध्यान हो गयी। यह वृन्तान्त प्रात : काल उसने अपनी माता से कहा तथा वह सौभाग्य द्रव्य दिखाया। इसलिए वे दोनों स्त्री पुरूष और वह कन्या ऐसे तीनों आपकी इच्छा कर रहे हैं। तुम को अपने आप कन्या दे देंगे। उस समय वहाँ के पुंडरीक भक्त ने श्रीआचार्यजी से प्रार्थना की महाराज मेरे को व्रज की लीला के दर्शन करवाओ। तब उनको उसकी आंख बंद करवाकर अपनी बैठक के पीछे वन में ले गये। वहाँ नेत्र खुलवाये। तब उस पुंडरीक भक्त को संपूर्ण व्रज विहार के स्थल सहित श्रीठाकुरजी की लीला के दर्शन हुए। पीछे फिर उसके नेत्र बंद करवाकर निज स्थलपर लाये तब वह बड़ा प्रसन्न होकर श्रीआचार्यजी को साष्टांग दंडवत प्रणाम कर अपने स्थल श्रीपांडूरंग श्रीविठ्ठलनाथजी के साथ गया। पीछे श्रीआचार्यजी ने राजा कृष्णदेव की भेंट में से सात स्वर्ण मुद्रा दैवीद्रव्य की ली थी उसके श्रीविठ्ठलनाथजी को नूपुर बनवा कर अंगीकार करवाकर विदा हुए। इसके बाद श्रीआचार्यजी महाप्रभु सब भगदीय को साथ लेकर काशी की और पधारे। काशी मे मधुमंगल ब्राह्मण कैसा था। उसके घरपर कोई प्रजा (संतान) नहीं होती। स्वयं वृद्ध था। उसने श्रीठाकुरजी से प्रार्थना की महाराज मेरे घर में प्रजा हो तो मैं परमार्थ करूंगा। पुत्र होगा तो किसी महापुरूष को भेंट कर दूंगा। यदि कन्या हुई तो किसी अपूर्व निष्कंचन,

निष्कलंक, स्वज्ञाति, ब्राह्मण सुपात्र होगा उसको दूंगा। तब भगवद् इच्छा से उन ब्राह्मण के घर कन्या हुई। वह कन्या ऐसी हुई जो साक्षात् श्री महालक्ष्मी जी का अवतार। इसिलिए उस कन्या का नाम भी उसने महालक्ष्मी जी रखा। जिनके पति भी पुरूषोत्तम और पुत्र भी पुरूषोत्तम होंगे। जब उस कन्या का विवाह काल प्राप्त हुआ तब मधुमंगल ब्राह्मण को श्रीविट्ठलनाथजी ने स्वप्न में बताया कि श्रीवल्लभाचार्यजी भूतल पर दैवी जीवों को कृतार्थ करने के लिए प्रकट हुए है उनको कन्या दीजिए। इसलिए वह ब्राह्मण नित्य काशी के द्वार पर बैठ गया। नगर में जो मनुष्य आता उससे ज्ञाति, नाम पूछता। नित्य ऐसे ही करता, ऐसे पूछते कितने ही दिन बीत गये तब जिस दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु काशी में पध ारे उस समय सब भगवदीय आपके साथ थे। जब आपने काशी द्वार से प्रवेश किया इतने में वह ब्राह्मण भी आकर खड़ा हो गया। उसने आप से पूछा आप की ज्ञाति क्या है। तब श्रीआचार्यजीने कहा कि हम कांकरवाड के यजुर्वेदी तैत्तिरीय शावी भारद्वाज गोत्री तैलंग ब्राह्मण हैं पृथ्वी परिक्रमा करते हैं। संप्रति ब्रह्मचर्चाश्रम में है। तब वह ब्राह्मण यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और कहा हम भी तैलंग ब्राह्मण है। मेरे घर में एक कन्या है वह मैने आपको दी। श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप तो साक्षात् ईश्वर है सब जानते ही हैं। इसके लिए भी श्रीविट्ठलनाथजी की आज्ञा हुई है। इसलिए आप जो कहते है वह बहुत अच्छा है। उस मधुमंगल ब्राह्मण ने अपने घर पधार कर अच्छा मुहूर्त देखकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु का विवाह कर दिया। जैसा वे श्रीपूर्ण पुरूषोत्तम वैसे ही वे साक्षात् श्री महालक्ष्मी जी। श्रीआचार्यजी महाप्रभु के विवाह पश्चात् घर में जो कुछ था वह सब उसने आपको समर्पित किया पीछे अपनी स्त्री श्रीमहालक्ष्मीजी को अपने सासरे के घर छोड़ कर श्रीआचार्यजी तीसरी बार पृथ्वी प्रदक्षिणा करने को पधारे। तीसरी परिक्रमा आपने विवाह पश्चात् की। उस समय साथ में वासुदेवदास छकड़ा

दामोदरदास हरसानी, प्रभुदास जलोटा, कृष्णदास मेघन ये चार जन क्षत्री और माधव भट्ट काश्मीरी ब्राह्मण एवं उनके भाई केशव भट्ट काश्मीरी पांच सेवक साथ थे उनमें वासुदेव दास तो निरक्षर थे परन्तु बड़े भगवदीय थे अपने शिरपर छकड़ा की तरह बहुत बोझा उठाते थे। इसलिए श्रीआचार्यजी उसको छकड़ा कहते थे।

प्रसंग–२६

पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु काशी से प्रयाग आये। वहां आपने सात दिन निवास कर श्री भागवत का पारायण किया वहाँ मधुसूदन सरस्वती दंडी बडेभारी विद्वान थे। किन्तु थे वे मायावादी परन्तु भगवद् भक्ति के अनुरागी थे। उनने गीता जी की व्याख्या की थी। उसके ऊपर मंगलाचरण का एक श्लोक श्री भगवान परक किया था। आपको दिखाया वह श्लोक –

वंशी विभूषित करान्नवनीरदाभात् ।।
पीताम्बरादरूणबिम्ब फला धरोष्ठात्
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादर विन्द नेत्रात्
कृष्णात् परं किमपि तत्वमहं न जाने।।

यह श्लोक देखते ही श्रीआचार्यजी बड़े प्रसन्न हुए। पीछे उन मधुसूदन सरस्वती ने अपना किया हुआ भक्ति रसायन ग्रन्थ भी आपको दिखाया उसके विषय में किंचित् संभाषण हुआ। पीछे आप बहुत प्रसन्न हुए। वहाँ से आगे आप व्रज की और पधारे।

प्रसंग–३०

श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रयाग से व्रज की ओर पधारे। मार्ग में कन्नोज

गाँव में कान्य कुब्ज ब्राह्मण पद्मनाभ पंडित पौराणिक जो मायिक मत से सब ग्रन्थ लगाते थे उनके मत का खंडन किया। तब वे दोनों स्त्री पुरूष आप श्रीआचार्यजी के शरण आये। पीछे उनका नाम पद्मनाभ दास रखा। उनको आपने सेवा के लिए श्रीमथुरानाथजी का स्वरूप पधरा दिया। सब सेवा प्रकार बताया। पीछे आप आगे पधारे।

प्रसंग–३१

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु चातुर्मास वर्षा ऋतु करने को संवत १५४८ फाल्गुनसुदी ६ रविवार को श्री वृन्दावन पधारे। वहां आप ४ महिना बिराजे। आपका वहाँ कृष्ण चैतन्य से समागम हुआ। उनको श्री भागवत की श्रीसुबोधिनीजी की टीका की व्याख्या कहकर सुनाई। वहां मांडीस्वट की कुंज में रूप सनातन और कृष्ण चैतन्य के शिष्य जीव गोस्वामी के साथ भगवद चर्चा हुई उसमें जीवगोस्वामी ने आपसे विवाद किया। यह सुनकर कृष्ण चैतन्य ने उसका त्याग किया। तब उसने श्रीयमुनाजी के तीर पर जाकर दो दिन तक बालुका की दो मुठी भर भक्षण कर अनशन व्रत लेकर बैठा। यह सुनकर श्रीआचार्यजी वहाँ कृष्ण चैतन्य को संग लेकर पधारे तब उनको तथा गुरू को देखकर जीव गोस्वामी ने अपने अपराध की क्षमा मांगी। श्रीआचार्यजी ने उसको कृष्ण चैतन्य के साथ कर दिया।

प्रसंग–३२

श्रीआचार्यजी महाप्रभु तीसरी परिक्रमा पूर्ण करके श्रीगोवर्धन पधारे। आकर श्रीगोवर्धननाथजी के दर्शन किये। तब श्रीआचार्यजी का विवाह हुआ था उससे श्रीगोवर्धननाथजी बहुत प्रसन्न हुए थे तथा आज्ञा दी की अब आप

स्थल सिद्धकर विराजो। क्यों कि अब आपने गृहस्थाश्रम को अंगीकार किया हैं। तब आपने कहा कि जो आपकी आज्ञा। पीछे वहां से श्रीगोवर्धननाथजी की आज्ञा लेकर संवत् १५४८ फाल्गुनसुदी ६ रविवार के दिन आप परासोली पध ारे थे। जिसका नाम आदि वृन्दावन है। वहां जाकर श्रीआचार्यजी ने देखा वहीं गोपालदासजी ने गाया।

"त्यांथी वृन्दावन पांउधारिया ज्यां मधुप करें गुंजार। कुसुम द्रुम नव मल्लिका मकरंद नो नहीं पार। तरूतमाल अति शोभिता हेम जू–थिको संघोड। ललना ते सुमगा लटकती हींडै तो मोडा मोड। तान धुनि मुनिमयूर रूपे सांभले धरीध यान। नित्य लीला गान करे ते मधुपान। कुंज सदन सोहामणा शोभा तणो नहीं पार।। विविध–रास मंडल रचना रचिरवेले नंद कुमार"।

ऐसे उस परासोली में आपने रासलीला के दर्शन किये इसलिए। श्रीगुसांईजी ने श्री सर्वोत्तम में कहा है–" रास लीलैक तात्पर्य" जितनी श्रीठाकुरजी की लीला है उन सभी में रास लीला फलरूय है। इसलिए श्रीसुबोधिनीजी में रासलीला का नाम फल प्रकरण रखा हैं। ऐसे दर्शन कर श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्री गोकुल पधारे। जैसे आदि वृन्दावन में आपने साक्षात् रासलीला के दर्शन किये। वैसे ही श्रीगोकुलजी में साक्षात् बाल लीला के दर्शन किये। श्रीआचार्यजी महाप्रभु तो साक्षात् ईश्वर हैं। रासलीला भी आपकी है और बाललीला भी आपकी है तथा आप ही सब लीला करते हैं। परन्तु इतना जो भगवदीय अलग करके नहीं गावें तो आपका यश प्रकट कैसे हो। श्रीआचार्यजी महाप्रभु इस नाम से आपने मनुष्य देह अंगीकार किया है। श्रीठाकुरजी इस स्वरूप से सेव्य स्वरूप हुए हैं। इसलिए जगत् को दिखाने के

लिए आपने सेवक का भाव अंगीकार किया है। उसको भगवदियों ने गाया है–

"भक्ति श्री गोकुल ते प्रकट भई। पहले करी श्री वल्लभ नंदन फिरी ओरन सिखई।।१।। चारोंवरन शरन अपने करि विधिसों बांटि दई। श्री विट्ठल नाथ प्रताप तेजते तिन्यों ताप गई।। प्रकट हुते वे प्रेत अदीक्षित तिन हूं मांगिलई। अब उद्धरे कहेत अपने मुख पत्री लिखि पढई। श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल गिरिधर तीन्हों एक सही एकादश दरशसही। नव प्रकार आधार नारायण (घोष लोक वेद निवही।।

इसलिए श्रीआचार्यजी महाप्रभु और श्रीगुसांईजी तथा श्रीगोवर्धननाथजी में तीनों एक स्वरूप है। श्रीगुसांईजी सेवा करते है वे जीवों के शिक्षार्थ करते हैं। उसको भागवदियों ने गाया है–

आपुनपे आपुनी सेवा करत। आपुन प्रभु आपुन ही सेवक है आपुनो रूप उर धरत।। आपनु नेम' धर्म कर्म सब जानत मरजादा अनुसरत। छीतस्वामी गिरिधर न श्रीविट्ठल भक्तवत्सल वपुधरत।। वहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने श्रीगोकुल में श्रीवलदेवजी के संग क्रीडा करते हुए श्रीठाकुरजी के दर्शन किये। तब आपने मन में विचार किया कि श्रीठाकुरजी की ऐसी इच्छा दिखती है कि हम दोनों तुम्हारे घर प्रकट होंगे। आपने ऐसी इच्छा जानकर आपके मन में बहुत आनन्द हुआ। श्रीबलदेवजी हैं उनका नाम तो श्रीगोपीनाथजी रखेंगे वे साक्षात् वेद का स्वरूप है। वेद मार्ग का विस्तार करेंगे। श्रीविट्ठलनाथजी है वे नंद कुमार है। अपने जो दैवीजीव भगवदीय हैं उनको परमानंद का दान करेंगे। इसका भाव गोपाल दास जी ने कहा है– "रंगे ते रमता दीठडा बलदेव श्रीगोविन्द ए पुत्र भावे प्रकट से मन उपन्यों आनंद। बलदेव श्रीगोपीनाथ

कहिये श्री विट्ठल नंदनंद ए वेद पंथ विस्तार से जन आपसे आनंद"

प्रसंग–३३

पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने मन में विचार किया कि श्रीगोवर्धनाथजी ने आज्ञा दी है कि एक ठोर (स्थान) पर बिराजो। इसलिए आपने यह निश्चय किया कि कहीं स्वतंत्र निवास करना। जिसमें किसी की सत्ता नहीं हो। तब आप काशी जाकर वहाँ प्रथम श्रीविश्वेश्वर तथा बिंदुमाधव के दर्शन करने के पश्चात् अपने ससुराल पधारे। वहाँ श्राद्ध विधि की। तब आपके साथ के वैष्णवों ने ध्वजा खड़ी कर सूचना दी कि जिनको वाद करना हो तो करे। हमारे गुरू चरण राजा कृष्णदेव की सभा में संपूर्ण मायावादियों को जीतकर जय पत्र लेकर आये है। तब काशी के रह सहे पंडित वाद करने को आये। उनमें मुख्य नाम दिनकर भट्ट, लक्ष्मण भट्ट, नित्यानंद महाशय, चन्द्रशेखर और नीलकंठ ये शुद्धा द्वैतमत सुनने की इच्छारख आये। उनको आपने उत्तम रीति से समाधानकर उनके कहने से आपने ध्वजा का उपसंहार करने की सेवकों को आज्ञा करने की तैयारी में थे इतने में एक दंडी उपेन्द्रश्रम और प्रकाशानन्द सरस्वती मायावदी मठधारी पंडितताभि मानी ने आकर वाद चर्चा फिर आरम्भ की उनको दो मुहूर्त में (कोई २७ दिन लिखते है) परास्त किया। तब उन्होंने कहा कि तुम को संन्यास नही होता है। आपने कहा हम संन्यास लेकर काशी में आकर तुम को संन्यास धर्म बतायेंगे। पीछे आप स्वस्थल सासरे के घर पधारे। वहां कुछ दिन बिराजे। काशी के दुष्ट लोगों ने उन संन्यासी के उपदेश से श्रीआचार्यजी महाप्रभु से लड़ने की तैयारी करने की बात आपके सेवकों से सुनी। तब श्रीआचार्यजी से विनती की महाराज अब आप किसी और स्थल का निश्चय कर बिराजो तो ठीक। आपने आज्ञा की हाँ। श्रीठाकुरजी की भी आज्ञा स्थल कर

बिराजने की है। ऐसे कहकर आपने श्री प्रयागराज पधारेने की इच्छा की।

प्रसंग–३४

पीछे आप प्रयाग पधारे वहाँ एक घर सिद्धकर बिराजे और अपने सेवकों को एकांत स्थल तीर्थ से दूर ढूंढने को भेजे। उन सेवकों ने आकर विनती की महाराज अडेल गाँव उत्तम स्थल है तब आप अपनी ज्ञाति सहित वहाँ पधारे और यथाक्रम सभी के घर बंधवाये। आप भी धर करवा कर रहे। उस दिन से उस गाँव का नाम देवर्षि विख्यात हुआ वहाँ सब शंका समाधान को आते थे। उपदेश के लिए और पढने के लिए भी आते थे। प्रयाग में मधुसूदन सरस्वती विख्यात थे जिनसे प्रथम बार ही समागम हुआ था उनसे आपका स्नेह था वे भी आपके पास आते थे बंगदेश से कृष्ण चैतन्य वृन्दावन आये जब आपने सुना की अडेल में आपका निवास है श्रीआचार्यजी के पास आये। उनके शरीर में श्रीकृष्ण का निवास देखकर श्रीआचार्यजी ने उनको असमर्पित वस्तु में से सामग्री देकर भोजन कराया। वे कुछ दिन आपके पास रहे। पीछे कृष्ण चैतन्य अपने स्थल श्री वृन्दावन गये। इसके पश्चात् पद्मनाभदास और उनकी स्त्री जो प्रथम कन्नोज में शरण आये थे वह आपके पास आकर रहने लगे। जब काशी से श्री महालक्ष्मी जी को संग लेकर आप अडेल पधारे। वहाँ स्थल सिद्ध करके आप बिराजे। सब भगवत्सेवा आपके संग थी। उनकी सेवा तो आप करते ही थे। उसमें श्रीमदनमोहनजी तो आपके बड़े ठाकुर थे। उनको तो आपकी माता इल्लमा गारूजी दक्षिण से पधरा लायी। श्रीगोकुलनाथजी जो आपके सासरे से श्री महालक्ष्मी से साथ पधारे थे। श्रीआचार्यजी महाप्रभु के ससुर मधुमंगल जो पंचायतन पूजा करते थे उनमें श्रीगोकुलनाथजी बिराजते थे। जब श्रीआचार्यजी श्री महालक्ष्मी को लेकर पधारे तब आपको ससुर जो पंचायतन पूजा करते थे

संग दी और कहा मेरे कोई सन्तान तो है नहीं जो इन की पूजा करे। इसलिए आप लेकर पधारो। अब हम वृद्ध हो गये हैं हम से सेवा नही बनती है। तब श्रीआचार्यजी सब स्वरूपों को लेकर गंगाजी के तीर पधारे। चार स्वरूप महादेव, सूर्य, भवानी, गणेश इनको तो आपने गंगाजी में पधराये और जो युगल स्वरूप श्रीस्वामिनीजी सहित श्रीगोकुलनाथजी का था उनको सेवामें रखे। जब उन चारों को श्रीगंगाजी में पधाये तब वे चारों स्वरूप बोले कि जब आप ही हमको नहीं मानोगे तब जगत में हमको कौन मानेगा और हमारी पूजा कौन करेगा?

तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि हम तुमको प्रस्ताव में अवश्य मानेंगे। उस समय आप का समाधान करेंगे। तब वे बहुत प्रसन्न हुए। पीछे श्रीआचार्यजी ने जो श्रीगोकुलनाथजी का स्वरूप था उनका नाम श्रीगोवर्धननाथ जी रखा क्यों कि श्रीगोकुलनाथजी के एक श्री हस्त में गोवर्धन है तथा एक श्री हस्त में शंख है। शंख को इसलिए धारण किया है। वह जल का आधिदैविक है। दो श्री हस्त से वेणु नाद कर रहे हैं। उस वेणुनाद को करके व्रज भक्तों को आनन्द देते है इस भांति से श्रीगोकुलनाथजी का स्वरूप है ऐसी रीति से श्रीआचार्यजी महाप्रभु अडेल में वास करके सेवा करते। जो भगवदीय सेवक थे उनको सुख देते।

प्रसंग—३५

प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने व्रज में श्रीबलदेवजी के और श्रीठाकुरजी के खेलते हुए के दर्शन किये। इस कारण आपके घर श्री बलदेव जी प्रथम प्रकट हुए। क्योंकि श्रीबलदेवजी जो हैं वे श्रीठाकुरजी का धाम है। अक्षर ब्रह्म है और साक्षात् शेष महानाग है। जब प्रथम सिंघासन शैय्या सिद्ध हुई तब श्रीठाकुरजी पधारे। इसलिए श्रीबलदेव जी श्रीगोपीनाथजी होकर अडेल में संवत् १५६७ भाद्रपद (व्रज आश्विन) वदी १२ के दिन प्रकट हुए। तब श्रीआचार्यजी

महाप्रभु ने बत्तीसवें वर्ष को अंगीकोर किया था। आपका नाम तो नित्य लीला विनोदकृत हैं। इसलिए आप सदा अखंड विराजमान है। श्रीगोपीनाथजी प्रकट हुए। पीछे श्रीआचार्यजी कितने ही दिनों तक अडेल में ही बिराजे। इसके बाद श्रीमहालक्ष्मीजी सहित चरणाट पधारे। चरणाट गाँव श्री गंगाजी के तीर पर है वहाँ साक्षात् श्री भगवान के चरणारविंद के चिन्ह है। श्रीआचार्यजी वहाँ स्थल करके बिराजे। पीछे संवत् १५७२ पोष कृष्ण नवमी शुक्रवार हस्त नक्षत्र के दिन साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम श्रीगोवर्धननाथजी श्रीनंदराय कुमार– श्री यशोदोसंग लालित श्री व्रजभक्तों के प्राण आधार कस्तूरी तिलक सहित श्रीगुसांईजी प्रकट हुए। उसी समय कोई ब्राह्मण श्रीविट्ठलशराय जी का स्वरूप पधराकर आया उसी समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु को दिया। उनको लेकर आप बड़े प्रसन्न हुए और कहा हमारे घर में सेव्य सेवकभाव ये दो रीति से श्री ठाकुर जी प्रकट हुए हैं श्रीठाकुरजी ने सेव्य सेवक भाव इसलिए अंगीकार किया जो देवीजीवों को सेवा करके बतावे। जिस समय श्रीगुसांईजी का प्राकट्य हुआ उस समय अलौकिक रीति से उत्सव हुआ। उस उत्सव का अनुभव दामोदर दास हरसानी, कृष्णदास मेघन प्रभृति भगवदियों को हुआ उसको गोपालदास जी ने गाया है–

"शेरीये वहेरे सुगंध आ सुगंधे मोहा अलीकुल आवीया" दामोदर दास जाय बारणे बारणे रह्योरे (उत्सव जुवे) फिर भगवदीय मानिकचंदजी ने भी गाया है वह पद– बहोरिकृष्ण फिरी गोकुल प्रकटे श्री विट्ठलनाथ हमारे" सुनिसुत को जस लक्ष्मण नंदन ढाढ़ी निकट बुलायो हो। कंचन थार भरे मुक्ता फल भक्ति वसन पहरायो हो" मन वांछित फल बहुत विधि दीनों कीयो अजाची ढाढी हो, मानिक चंद बलि बलि उदारता प्रीति निरन्तर बाढी हो"

इस प्रकार से श्रीआचार्यजी महाप्रभु के सेवक भगवदियों ने श्रीगुसांईजी

के जन्म उत्सव के दर्शन करके अनेक प्रकार का यश वर्णन किया। वहाँ कोई संदेह करता कि ये भगवदीय तो सब के पीछे आये है और श्रीठाकुरजी का प्राकट्य तो श्री नंदरायजी के घर हुआ है यहाँ अब कैसे गाते हैं। उसका हेतु यहाँ संदेह न करना। क्योंकि भगवद् लीला भगवद् यश और भगवदीय नित्य है। इसलिए सूरदास जी ने ढाढी बनकर बधाई गाई है–*"नंदजू मेरे मन आनंद भयोहो सुनि गोवर्धन ते आयो"* जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु का प्राकट्य हुआ। तब इन सूरदास जी का भी जन्म है। श्रीनंदरायजी का तो द्वापर के अन्त में है। श्रीठाकुरजी उन के घर प्रकट हुए थे इसलिए इस पद का भाव ऐसा है कि भगवदीय नित्य है इसके कारण भगवान अवतार लेते है। तब भगवदीय भी यश गाने के लिए उसी अवसर पर अवतार लेते हैं वही गोपालदास भगवदीय ने गाया है कि–

"नित्य लीला नित्य नौतन श्रुति न पामे पार" इसलिए श्रीगुसांईजी का वर्णन कोई कहाँ तक करेगा। छीतस्वामी ने और गाया–"जेजेजे श्री वल्लभ नंदन कोटिकला श्री वृन्दावन चंद" भांति श्रीगुसांईजी का इस अलौकिक रीति से प्राकट्य हुआ पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु सकुटुंब श्रीगुसांईजी को लेकर चरणाट से अडेल आकर बिराजे। तब सेव्य स्वरूप तीन हुए। श्रीमदनमोहनजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्री विट्ठलनाथ जी।

प्रसंग–३६

आपके बड़े पुत्र श्री गोपीनाथजी श्रीचरणाद्रि में आकर रहे। जहाँ श्रीगंगाजी बहती है। वहाँ चरण पहाड़ी पर श्री भगवान् के चरण चिन्ह बिराजते हैं। उसी से चरणाद्रि नाम विख्यात हुआ। (वहाँ के चरण चिन्ह की शिला औरंगजेब बादशाह के समय से यवनों के स्वाधीन हो गई। उसके

श्रीगोपीनाथजी ने दर्शन कर उस गाँव के कुछ दूर सुन्दर स्थान बना कर निवास किया। श्रीगुसांईजी के प्राकट्य के पीछे आप श्री चरणाद्रि में थोड़े ही दिन बिराजे फिर पीछे अडेल के समीप देवर्षि गाँव में आप अपने पिता श्रीआचार्यजी महाप्रभु के पास प्राचीन गृह में बिराजे। वहाँ श्रीगुसांईजी का उपनयन किया। पीछे मधुसूदन सरस्वती स्वामी के पास विद्याध्यन कराया। उसके पश्चात् श्रीआचार्यजी महाप्रभु देवर्षि गाँव में १५ वर्ष तक बिराजे पीछे श्री गीताजी के ऊपर भाष्य करने की प्रार्थना श्रीगुसांईजी ने अपने पिता श्रीआचार्यजी से की तब आपने कहा कि जो श्री गीताजी में ५७४ भगवद् वाक्य है वे सब प्रमाण है और सरल है इसलिए हमने श्री गीताजी पर कोई व्याख्या नही की है। किन्तु तुम्हारी इच्छा हो तो तुम करना और व्यास सूत्र के चौथे अध्याय के सपादशेष एक अध्याय का भाष्य करना बाकी रहा है उसको करना। इसमें तुम को भी आचार्य पदवी प्राप्त होगी। पीछे श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी के घर ६ पुत्र अडेल में प्रकट हुए। उन सभी का विभागकर दिया। इसके पश्चात् श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलजी में निवास करके रहे। वहां दूसरी पत्नी से सातवेंलालजी श्रीघनश्यामजी संवत् १६२३ मार्गशीर्ष कृष्ण १३ के दिन (वैराग्य गुण का स्वरूप) प्रकट हुए। उनके दायेंभाग में श्रीमदनमोहनजी का स्वरूप दिया उस समय वहाँ टोडर मल्लादिक राजा सेवक हुआ। बीरबल राजा और अकबर बाद शाह ने श्रीगुसांईजी से प्रश्न किये उसको आपने शीघ्र ही समयोचित्त उत्तर दिये।

प्रसंग–३७

यहाँ अडेल से आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु नासिक–यंबक पधारे। वहाँ से श्री उज्जैन पधारे फिर कांची पधार वहाँ वरदराज स्वामी के दर्शन किये। पीछे वेणानदी के ऊपर उडपी कृष्णानगर में मध्वमतानु यायी गोविंदानंद तीर्थ के साथ

वाद हुआ। आगे सिद्धेश्वर गाँव में रामानंद और शंकरमिश्र दोनों भाई शरण आये। उनमें से शंकरमिश्र का नाम आपने प्रभुदास रखा। पीछे श्रीआचार्यजी श्रीरंगजी पद्यारे वहां रामानुज मतानुयायी श्री निवासाचार्य तथा जनार्दना चार्यजी से विशिष्टाद्वैत के विषय में वाद हुआ। वहां श्रीआचार्यजी ने शुद्धद्वैत मत स्थापना किया और तप्त मुद्रा का निषेध कर तुलसीमाला धारण का मंडन किया।

प्रसंग–३८

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु व्रज में पधारे। आप गोकुल में बिराजते और श्रीनवनीतप्रियजी श्रीठाकुरजी आगरा में गज्जनधावन क्षत्री के घर बिराजते थे। इसलिए एकदिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपने मन मे यह विचार किया कि सभी स्वरूपों में अधिनायक तो श्रीनवनीतप्रियजी है वे आगरा में बिराजते हैं। वे पधारें तो बहुत अच्छा और हमने ही श्रीनवनीतप्रियजी को गज्जनधावन को पधरा दिये। उससे तो श्रीनवनीतप्रियजी बहुत हिल गये हैं। गज्जनधावन मना तो करेंगे नहीं वे तो देंगे। परन्तु उनकी श्रीनवनीतप्रियजी के ऊपर आसक्ति बहुत है। उनके बिना क्षण भर भी उनसे रहा नहीं जायेगा। इसलिए उनकी इच्छा होगी तब वे आप ही पधारेंगे। यह बात श्रीआचार्यजी के मन की जानकर श्री नवनीत प्रियजी उनके पास पधारने का आपने गज्जनधावन से कहा। तू मेरे को श्री गोकुल में श्रीआचार्यजी महाप्रभु के पास ले चल। उसी समय गज्जनधावन आगरा से श्रीनवनीतप्रिय को पधराकर श्रीगोकुल ले आये। आकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु से दंडवत कर कहा महाराज ये श्रीनवनीतप्रियजी पधारे हैं। तब श्रीआचार्यजी ने कहा अभी तो शैय्या, सिंघासन भी सिद्ध नहीं है और तुम कैसे पधराकर ले आये। गज्जन धावन ने कहा यह तो

श्रीनवनीतप्रियजी जानें। मेरे को तो इनने जैसी आज्ञा दी वैसे मैंने किया। सेवक तो आज्ञा के अधीन है। आपने भी पहले मेरे को आज्ञा दे रखी थी कि जैसे श्रीनवनीतप्रिय प्रसन्न हो वैसै करना मेरे को तो आपके अनुग्रह से श्रीनवनीत प्रिय जी आप श्री मुख से आज्ञा करते हैं वैसे ही करता हूं। तब श्रीआचार्यजी उस पर बहुत प्रसन्न हुए। उस गज्जन धावन की जैसी आसक्ति श्रीनवनीतप्रियजी पर थी वैसी ही श्री नवनीत प्रिय जी की आसक्ति गज्जन धावन पर थी। श्रीठाकुरजी ने श्रीगीताजी में भी कहा है–"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्" जो जैसी रीत से भजन करता है उसी रीति से में उसका भजन करता हूँ। इसलिए गज्जन धावन की और श्रीनवनीतप्रियजी की परस्पर ऐसी ही आसक्ति थी। पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने गज्जन धावन को दामोदर दास हरसानी, कृष्णदास मेघन की तरह अपने चरणारविन्द के निकट ही रखा। श्रीनवनीतप्रियजी को पधराकर अपने घर अडेल पधारे। वहाँ श्रीनवनीतप्रियजी आप सिंघासन ऊपर बिराजे। वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने गज्जन धावन को आज्ञा दी कि तुम मंदिर के आगे सदा बैठे रहो। क्यों कि श्रीनवनीतप्रियजी तुमसे हिले हुए हैं। तुम्हारे बिना वे एक क्षण भी नहीं रहते हैं। वहाँ श्री नवनीत प्रिय जी गज्जन के साथ अनेक भांति से क्रीड़ा करते। कभी हाथी करते, कभी घोड़ा करते, कभी गाय, कभी वत्स करते। जब हाथी करते तब तो ग्रीवा ऊपर बिराजते और जब गाय करते तब अपने पीताम्बर से मुख पोंछते और जब वत्स करते तब पकड़ कर रखते। जब घोड़ा करते तब उसकी पीठ पर असवारी करते। ऐसे करते करते गज्जन धावन के घेंटु घिसगये और भी उस को आप श्री नवनीत प्रिय जी बहुत सुख देते उसका वर्णन कहाँ तक किया जाय।

प्रसंग–३९

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभु के घर चार स्वरूप बिराजे। श्रीनवनीतप्रियजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्री विट्ठलनाथजी, श्रीमदनमोहनजी और दामोदर दास सांभर वाले कन्नोज में रहते उनके श्रीद्वारकानाथजी जो कन्नोज से पधारे थे उनको पधरा दिये थे। उनकी सेवा वे करते। आपके अनुग्रह से दामोदरदास सांभर वाले श्रीद्वारिकानाथजी की भली भांति से सेवा जैसे राजा के घर सेवा होती वैसी वे करते। इसलिए श्रीआचार्यजी ने श्री मुख से कहा कि जिसने राजा अम्बरीष को नहीं देखा हो वे इन दामोदर दास को देखो। पर वे मर्यादा मार्गी थे और ये पुष्टिमार्गी हैं। इस लिए इन में इतनी अधिकता हैं। इस भाँति से आप श्री मुख से दामोदर दास सांभरवाले की सराहना करते थे। जब दामोदर दास सांभरवाले श्रीठाकुरजी के चरणारविन्द को प्राप्त हुए तब श्रीद्वारिकानाथजी नाव में बिराजकर अडेल में श्रीआचार्यजी महाप्रभु के घर पधारे। तब सिंघासन पर पाँच स्वरूप बिराजे १ श्रीनवनीतप्रियजी २ श्री विट्ठलनाथ जी ३ श्री द्वारिकानाथ जी ४ श्रीगोकुलनाथजी ५ श्रीमदनमोहनजी ये पाँचो स्वरूप एक सिंघासन पर बिराजे। भगवदीय सबदर्शन करते श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोपीनाथजी और श्रीगुसांईजी ये तीनों सेवा करते। इस भांति से श्रीआचार्यजी महाप्रभु अडेल में बिराजे।

प्रसंग ४०

अब श्रीगुसांईजी श्रीविट्ठलनाथजी के चौथे पुत्र श्रीगोकुलनाथजी ने और भगवदियों ने विनती की महाराज आपने श्रीआचार्यजी महाप्रभु की तीन पृथ्वी परिक्रमा के चरित्र संक्षेप से सुनाये। परन्तु इस चरितामृत से हम को

तृप्ति नहीं होती है। इस लिए और भी श्रीआचार्यजी के चरित्र सुनाने की कृपा करके आपके दासानुदास को कृतार्थ करेंगे। तब श्रीगोकुलनाथजी ने आज्ञा की श्रीआचार्यजी महाप्रभु के चरित्र तो अनंत है। किन्तु और भी कुछ संक्षेप मे तुम को सुनाता हूँ। ऐसे कहकर आप और ही चरितामृत अपने भगवदियों को पान कराने लगे। श्रीआचार्यजी महाप्रभु का प्राकट्य जिस चंपारण्य में हुआ है वह चंपारण क्षेत्र नागपुर के आगे रायपुर नाम का बड़ा भारी गाँव है। वहां से ७ कोस पूर्व की ओर है। उसका नाम चंपाझर संप्रति स्फुट है। श्रीआचार्यजी का प्राकट्य संवत् १५३५ में मैने जो कहा उसका आधार श्रीकृष्ण प्रकट हुए उस समय जैसे ग्रह अन्य राशि से चलकर शुभस्थान पर आ गये। वैसे ही यहाँ भी जानना। पर कल्याण भट्ट जी ने अपने कल्लोल ग्रन्घ में श्रीआचार्यजी का जन्म संवत् १५२६ का लिखा है उसका कारण ज्योतिष चक्रानु सार जान पड़ता है। (श्री वल्लभा चार्य जी के जन्मकाल समय की जन्म पत्रिका गर्भित पर गोस्वामी श्रीद्वारकेशजी महाराज ने किया है, वह ज्योतिष चक्रानुसार है इसलिए यहाँ लिखा है)

"तत्वगुण बाण भुव माधवासित तरणि प्रथम सौभग दिवस प्रकट लक्ष्मण सुवन। धन्य चंपारण्य धन्य त्रैलोक्य जन अन्य अवतार भुवि है न ऐसो भवन" लग्न वृश्चिक कुंभ गति केतु कवि इन्दु सुख मीन बुध उच्च रवि बैरिनाशे। मंद वृष कर्क गुरूभौम युत सिंह में तमस के योग" ध्रुव यश प्रकाशे।। ऋक्ष धनिष्ठा प्रतिष्ठा अधिष्ठान स्थिति विरह वदनानलाकार हरिकों। यहै निश्चय द्वारकेश इनके शरण और को श्रीवल्लभाधीश सर को।।३।।

रसिक स्वामी ने देवगंधार राग में बधाई गाई उसका पद–

"भूतल महामहोत्सव आज। श्रीलक्ष्मण गृह प्रकट भये है श्री वल्लभ महाराज ।१। आज्ञा दई दया करि श्रीहरि पुष्टि प्रकटवे काज कलि में जन्म उधर्यो तत छिन बूड़त वेद जहाज।२। आनंद मुरति निरखत नेनन फूले भक्त समाज। नाचत गावत विवस भये सब छांडि लोक कुल लाज।३। घरघर मंगल बजत बधाई सजत नए सब साज। मगन भये सब गिनत न काहू तीन लोक परगाज।४। लीला सिंधु (महारस) अब ते बांधी भक्ति प्रेम की पाज। रसिकन के मन सदा बिराजो श्रीवल्लभ महाराज" इस भांति अनेक भक्तजनों ने आपका यश वर्णन किया। श्रीआचार्यजी के पिता श्रीलक्ष्मण भट्टजी ने किये हुए सोमयज्ञ की समाप्ति के निमित्त सवालक्ष ब्राह्मण भोजन का जो संकल्प किया था उसको पूर्ण करने लिए आप सकुटुम्ब संवत् १५३२ के चैत्र में काशीजी पधारे थे वहाँ श्रीलक्ष्मणभट्टजी के घर के पास सद्गुण दास ढाढी रहते थे। उनका ऐसा नियम था कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु जी के दर्शन किये बिना अन्नजल न लेते। इसलिए श्रीआचार्यजी उसके घर नित्य खेलने को पधारते। काशी में आषाढ़ शुल्क रविवार पुष्यनक्षत्र (पुष्यार्क योग में श्रीआचार्यजी को श्री लक्ष्मण भट्टजी ने माध ।वानंद नाम के यती के घर विद्या पढने को भेजा था वहाँ संपूर्ण विद्या को पढा। पीछे कार्तिक शुल्क ११ के दिन अपने विद्यागुरू माधवानंद स्वामी के गुरू दक्षिणा मांगने की विनती की उस समय उनने भगवत्सेवा मांगी। तब आपने कहा बहुत अच्छा अवश्य देंगे। इसका स्मरण रखकर आपने श्रीनाथजी की सेवा दी थी। पीछे आप विद्या पढ कर कार्तिक शुक्ल १५ के दिन श्रीआचार्यजी अपने पिता श्री लक्ष्मण भट्ट जी के पास पधारे। आप सिले वस्त्र नहीं पहनते थे। काशी में जो ब्रह्मा समाज होती उसमें पिता के बिना जानकारी दिये आप श्लोक लिख घर कर आ जाते। इसको कोई नहीं जानता था आप ऐसी लीला करते थे। अपने साथ में पादुका पट्टा और करवा ही रखते थे। पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु

ने छट्टटी पीढ़ी के पुरूष यज्ञनारायण भट्ट के वारी के सेव्य श्रीरामचन्द्रजी का मंदिर श्री लक्ष्मण भट्ट का अपने गाँव कांकरवाड में था। उसकी सेवा अपने बड़े पुत्र रामचन्द्र भट्ट को दी और मदनमोहनजी और शालिग्राम का स्वरूप जो यज्ञ नारायण भट्ट के वारी का सेव्य था उनकी सेवा करने को श्री लक्ष्मण भट्ट जी ने अपने पुत्र श्रीआचार्यजी महाप्रभु को कहा था उनकी सेवा श्रीआचार्यजी करते थे। प्रथम परिक्रमाओं १५५४ के वैशाख शुक्ल ३ के दिन पूर्ण की थी। पृथ्वी परिक्रमाओं का संकल्प अलग अलग स्थल से इतने पृथ्वी की तीर्थ से और ठकुरानी घाट से तथा विश्राम घाट से लिए थे। परिक्रमा के समय जितने दिन विद्यानगर में बिराजे थे उतने दिन में वहाँ व्यास सूत्र पर, अणुभाष्य और स्वमार्गीय तत्वदीप निबंध आदिग्रन्थ प्रकट किये पुष्टिमार्ग का स्थापन कर वहाँ ही अपनी माता जी इल्लमागारू जी को अपने मामा विद्याभूषण जी के घर रखकर आप आगे पृथ्वी प्रदक्षिणा को पधारे थे। दूसरी परिक्रमा करने की आज्ञा माता जी से लेकर संवत् १५५५ कि चैत्र शुक्ल २ रविवार के दिन पधारे। रात्रि को आप सोमेश्वर जाकर रहे थे। उस समय साथ में दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, गोविन्द दुबे, माधव भट्ट काश्मीरी थे। माधवभट्ट काश्मीरी श्रीआचार्यजी के साथ रहकर आप जो जो ग्रन्थ करते वह मार्ग में चलते लिखते थे। वासुदेवदास एक गाड़ा जितना बोझा उठाते इसलिए श्रीआचार्यजी उसको छकड़ा कहते थे। जब आप जगदीश पधारे थे तब एकादशी का दिन होने से किसी पंडाने सखड़ी महाप्रसाद सामने लाकर श्रीआचार्यजी को दिया। उसका वंदन पूर्वक श्री हस्त में लेकर आप गरूड़ स्तंभ के पास खड़े रहे और महाप्रसाद को श्री हस्त में रखकर उसके माहात्म्य का वर्णन करते करते दूसरे दिन द्वादशी हुई वहाँ तक आप खडे ही रहकर वर्णन किया। इसलिए एकादशी का व्रत, रात्रि जागरण और द्वादशी की पारणा यह तीनो ही आपने महाप्रसाद का अनादर न करते हुए युक्ति से साधना की थी। यह मैंने प्रथम संक्षिप्त में कहा है। आपके

पास जो कृष्णदास मेघन बड़े कृपा पात्र भगवदीय संग रहते थे वे प्रथम सोरों के पास श्री नंद ग्राम के केशवानंद ज्योतिषी के शिष्य थे। उनके पास ज्योतिष पढ़ते थे। उनको ज्योतिषी आरंभ करने का मुहूर्त आषाढ शुक्ल २ पुष्य नक्षत्र को कर वाया था। वे श्री मह्मप्रभु यज्ञोपवीत (जनोइ) के समय काशी में आकर मिले थे। वे सेवक होकर यावत् जीवन आपके साथ रहे और आपके संग दामोदर दास हरसानी बड़े कृपा पात्र थे। वे श्रीआचार्यजी जब बालाजी से विद्यानगर पधारे थे तब बीच में एक नगर में शिष्य हुए थे। जब श्रीआचार्यजी गोमती जी पधारे थे। तब वहाँ के ठाकुर जी द्वारकानाथजी के सेवक गोविंद दुबे, ब्रह्म, चारी थे वे श्रीआचार्यजी की बार बार पारायण सुनकर सेवक हुए थे। इसलिए सेवा अपने शिष्यों को सोंपकर श्रीआचार्यजी के साथ पृथ्वी प्रदक्षिणा को गये थे। पीछे सदा आपके ही साथ रहे थे। वहाँ से श्रीआचार्यजी आप कार्तिक कृष्ण २ के दिन जामनगर पधारे। श्रीआचार्यजी के परम कृपा पात्र सेवक प्रभुदास जलोटा सभी के माथे श्रीमदनमोहनजी का स्वरूप सेवा के लिए पधरा दिया था। वह स्वरूप सरस्वती के प्रवाह से गिरी हुई रेत में से प्रकट हुआ था। उसकी आरव्यायिका ऐसी है जो श्रीआचार्यजी के प्राकट्य से ३२२५ वर्ष पूर्व पृथ्वीराज चौहान बड़ाभारी राजपूत राजा था। उनके ये श्रीमदनमोहनजी सेव्य श्रीठाकुरजी थे। वे राजा बादशाह की लड़ाई में देवलोक हुए। इसलिए उनके घर के जनोंने बादशाह के डर के मारे श्रीठाकुरजी को सरस्वती के प्रवाह में पधरा दिये थे वे श्रीआचार्यजी को परिक्रमा करते समय पाये थे। प्रथम प्रदक्षिणा के समय झारखंड में श्रीआचार्यजी आये तब वहाँ प्रभु आज्ञा थी कि हम श्रीगोवर्धन में प्रकट हुए हैं। इसलिए आप आकर प्रकट करो। उस समय परिक्रमा अधूरी (बीच में) छोड़कर (आप) श्रीआचार्यजी संवत् १५४८ फाल्गुन सुदी २ के दिन व्रज में पधारे और मथुरा में उजागर चोबे के घर रहे। उस समय मथुरा में विश्रान्त घाट के ऊपर दिल्ली के बादशाह के प्रधान रूस्तम अली ने

जो हिन्दु से मुसलमान हो जाने का यन्त्र बंधवाया था उसको झूठाकर अपना मुसलमान से हिन्दु हो जाने का यन्त्र रूपी पत्र वासुदेवदास और कृष्णदास के साथ दिल्ली भेजकर वहाँ के द्वार पर लगवाया। उस समय दिल्ली का बादशाह सिंकदर लोदी था। उसको सूचना दी। उसने रूस्तम अली को डरा कर अपना यंत्र मथुरा से हटवादिया और प्रेमनिधि मिश्र करके बड़े महात्मा भगवदीय श्रीआचार्यजी के सेवक हुए थे। जिनकी की हुई छप्पय भक्तमाल ग्रन्थ में प्रसिद्व है। पीछे आप उजागर चोबे को साथ लेकर संवत् १५४८ फाल्गुन सदी ६ के दिन श्री वृन्दावन पध ारे वहाँ से श्री गिरिराज आकर श्रीजी का प्राकट्य कर आपने रामदास चौहान को और कुंभनदास को सेवा दी। तब श्रीनाथजी ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु को विवाह करने की आज्ञा दी थी और यह कहा कि यह पृथ्वी परिक्रमा पूरी कर विवाह करो। तब आपने कहा जो आज्ञा। इसके पश्चात् श्रीआचार्यजी उजागर चोबे को साथ लेकर चौरासी कोस की व्रज यात्रा की। पीछे झारखंड में अधूरी छोड़ी गई परिक्रमा का आरम्भ करने को आप झारखंड की और पधारे। उस प्रदक्षिणा के पहल श्रीआचार्यजी ने काशी में आकर संन्यास लेकर संन्यास धर्म दिखाने की प्रतिज्ञा की थी। झार खंड के लिए मथुराजी से आगरा आते हुए बीच में गोघाट के ऊपर सूरदास जी रहते थे। जिनको सभी सूरस्वामी कहते थे वे बड़े विरक्त ब्राह्मण थे और बड़े भगवद् भक्त थे। कीर्तन के पद करते वहां श्रीआचार्यजी पधारे तब उनके किये पद सुनने की आपने इच्छा की तब सूरदास जी ने पद्गाया–

प्रभु में सब पतितन को टीको।

ओर पतित सब द्योस चार के में तो जन्मत ही को।।

बधिक अजामिल गणिका तारी ओर पूतना ही को।

मोहि छांडि तुम ओर उद्धारे मिटेशूल कैसे जी को।

कोउ न सामर्थ सेव करन को खेंचि कहत हों ली कों।
मेरीपत लाज सूर पतितन में कहत सब मो ही नीको।।

यह पद सुनने के पश्चात् सूरदासजी को श्रीआचार्यजी ने मंत्रोपदेश किया। इसके बाद सूरदासजी ने ओर पद गाया वह पद–

(राग सारंग)

आपनु पो आपुन हि बिसर्यो। जैसे श्वान काच के मंदिर भ्रमि भ्रमिमर्यो।१। दूर सौरम मृगनाभि –बसत है द्रमतृण शोधिसर्यो। ज्यों सुपने में रंक भूप भयो तस्कर पकर्यो।२। ज्यों के हरि प्रतिबिंब देखि के आपुन कूप पर्यो। जैसे गजलखि स्फटिक शिलाकों दुसासन जाई अर्यो।३। मरकर मुठि छार नहीं दोनो घर घर द्वारि फिर्यो। सूरदास नलिनी को सूवा कहि कोने पकयो।४। फिर सूरदास जी ने विज्ञप्ति का एक पद गाया वह पद (रागमलार) तुम तजि और कोन पेंजाऊ। काके द्वार जाय सिर नाऊं पर हथ कहा बिकाऊं।१। ऐसो को दाता है समरथ जाके दिये अघाउं।। अंतकाल तुमरे सुमिरण बिनु और नाहीं कहूं ठाउं।२। रंक सुदामा कियो अजाची दिये अभे पद दाउं। काम धेनु चिंतामणि दीनी कल्पवृक्ष तर छाउं।३। भवसमुद अति देखि भयानक मन में अधि ाकड राउं कीजे कृपा महाप्रभु मोपर सूरदास बलिजाउं।४।

यह पद सुनकर श्रीआचार्यजी ने सूरदास जी को यमुना जी मे स्नान कराया और शरण और निवेदन मंत्र का उपदेश देकर दिव्य चक्षु दिये। उससे सूरदास जी को संपूर्ण व्रजलीला का दर्शन हुआ उन अनुभवों से पद करने लगे। इस प्रकार श्रीगोकुलनाथजी ने अपने सेवकों को श्रीआचार्यजी महाप्रभु की

परिक्रमा के चरित्र सुनाकर कहा कि जो इस प्रसंग के चरित्र मैने कहे वह प्रथम के २५ प्रसंग में कहीं कहीं भाग कहने का रहा था तुम को सुनाया। अब इन तीनों पृथ्वी प्रदक्षिणा में से कुछ चरित्र संक्षेप में कहता हूं। सुनो।

प्रसंग–४१

श्रीआचार्यजी महाप्रभु दैवी जीवों के उद्धारार्थ भूतल पर प्रकट हुए। दैवी जीव दो प्रकार के है। एक तो श्रीठाकुरजी से बहुत दिन के बिछुडे है। उनके लिए तो श्रीआचार्यजी ने अवतार लिया है। एक दैवी जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभु के साथ ही आये हैं। वे दैवी जीव कैसे हैं। उनके ऊपर श्रीठाकुरजी ने साक्षात् अनुग्रह किया है। वह तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु का समाज है। जिनको तो श्रीआचार्यजी अपने वचनामृत से सींचकर इसी देह से उनको नित्य लीला के दर्शन कराते। उनके ऊपर जिस भांति से श्रीआचार्यजी ने अनुग्रह किया और श्रीगोवर्धननाथजी का साक्षात्कार हुआ वह घरू वार्ता, चौरासी बैठकों के चरित्र तथा चौरासी वैष्णवों की वार्ता में विस्तार पूर्वक पढ़ने में आयेगा।

प्रसंग– ४२

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु गुजरात पधारे। वहाँ रात्रि एक गाँव में ब्राह्मण के द्वार के आगे चबूतरा पर उस ब्राह्मण को पूछकर आपने विश्राम किया। उस गाँव में पानी भरने का कुआ गाँव के बाहर था। इसलिए पिछली रात्रि को उस ब्राह्मण की स्त्री और पुत्र दधि मंथन करके माखन उसी बासन मे छोड़ पानी भरने को कुंआ पर गये। उनके दोनो पुत्र बालक थे। उसको सोते ही छोड़कर गयी। वे दोनों बालक समवय के थे। वे पीछे से उठकर

उस मथानी में से नवनीत निकालकर खाने लगे। उस कौतुक के समय वह ब्राह्मण सो कर उठा। उसने यह देखकर बाहर आकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु से कहा महाराज आपको श्रीठाकुरजी का एक कौतुक दिखाता हूँ। तब आपने भीतर पधारकर दूर से देखा तो वे बालक माखन खा रहे है। यह देखकर आप पीछे पधारे और उस ब्राह्मण से कहा कि तेरे को श्री कृष्ण बलदेव जी का भाव ऐसा उपजा है इसलिए तू अपनी स्त्री को मना करना। इन बालकों पर कुछ भी प्रहार नहीं करें। स्त्री जनों का स्वभाव अति दुष्ट होता है। इसलिए आते ही इन लड़कों को लालन पालन करे इन पर खीजे नहीं। पीछे उस ब्राह्मण ने उस पनिहारिन के संमुख जाकर कहा कि बालक ने ऐसा कौतुक किया है। इसलिए तू उसको कुछ कहना मत। पुचकाराना। ऐसा कहकर उसने स्त्री को मना किया। तब उसने आकर पानी का बासन धर कर उन बालकों को गोद में लेकर पुचकार कर मुखा चूम कर कहा भला किया जो तुमने मारवन खाया। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने यह चमत्कार संग के भगवदीय दामोदर दास आदि सब को कहा। सारे गुजरात में से इस ब्राह्मण को भगवल्लीला की स्फूति हुई है पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने वहाँ सप्ताह करके अपनी बैठक स्थापित कर आगे पधारे।

प्रसंग—४३

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु व्रज में पधारे। व्रज जो है वह निजधाम है श्रीठाकुरजी ने जितनी लीला की है वह सब व्रज में ही की हैं इसलिए आपको व्रज बहुत प्रिय है। श्रीसर्वोत्तम में श्रीगुसांईजी ने कहा है—

"प्रिय व्रज स्थितिः" एक दिन आप ने श्रीगोवर्धननाथजी का सेवा श्रृंगार किया राजभोग आरती कर अनोसर कराकर श्री गिरिराज से नीचे उतर

कर अपनी बैठक में बिराजे थे। एक बाई वैष्णव आन्योर में रहती। उस को आपकी कृपा अनुग्रह से श्रीगोवर्धननाथजी के ऊपर बहुत आसक्ति थी। उस बाई ने आकर आप से विनती की महाराज मेरे ऊपर कृपा करके एक भगवत्स्वरूप की सेवा पधरा दो। सेवा बिना मेरा दिन नहीं निकलता है। आपकी कृपा अनुग्रह से श्रीगोवर्धननाथजी दर्शन देते है। परन्तु मेरे ऊपर कृपा करके श्रीठाकुरजी पधरा दो तो मैं श्रीठाकुरजी की सेवा करूं। तब आपने उस बाई के माथे श्रीबालकृष्णजी पधरा दिये और श्री मुख से आज्ञा की ये बालक है इस लिए तुम इनका जतन रखना। इनको अकेला छोड़ोगी तो ये डरेंगे। ऐसे समझाकर कहा। इसलिए उस बाई का मन अहर्निश श्रीठाकुरजी की सेवा में ही लगा रहा। क्योंकि कि मन का निरोध है वही मुख्य है। उस बाई का मन श्रीठाकुरजी के चरणाविंद में श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने रखा। तब वह बाई एक क्षण भी सेवा से नहीं निकलती थी। कदाचित् वह बाई थोड़ी सी भी दूर होती हो उसको ठाकुर जी पुकारने लगते। जैसे लौकिक बालक अपनी माता बिना दुःखी होता है वैसे ही श्रीठाकुरजी उस बाई से कहते अरी तू कहां जात है मैं तो डरता हूं। ऐसा स्नेह बंधन हुआ जिससे वह बाई श्रीठाकुरजी के पास से कहीं नहीं जाती थी। वह बाई जब कुछ सामग्री समारे तब श्रीठाकुरजी के मंदिर के आगे बैठकर सब कार्य करे। थोड़ा भी दूर नहीं जाती थी। ऐसा स्नेह का दान श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उस बाई को दिया। एक समय कृष्णदास मेघन ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से प्रश्न किया महाराज श्रीठाकुरजी की प्रियवस्तु क्या है और अप्रियवस्तु क्या है तब आपने श्री मुख से कहा कि श्रीठाकुरजी का भगवदीय का स्नेह अति प्रिय है। गोरस अति प्रिय है। गोरस में दूध, दही, माखन, घृत सब आता है। प्रथम श्रीआचार्यजी ने भक्तों का स्नेह कहा उसका

कारण यह है कि स्नेह बिना कोई श्रीठाकुरजी को कुछ समर्पित करता है वह अंगीकार नहीं होता है इस मार्ग में स्नेह ही मुख्य है। स्नेह से जो कोई श्रीठाकुरजी की सेवा थोड़ी भी करता है उसका वे बहुत मान देते हैं। वही सूरदासजी ने गाया है– "राई जितनी सेवा को फल मानत मेरू समान" और परमानंददास जी ने भी गाया है– "गोपीप्रेम की ध्वजा" इसमें सब आ गया। इसलिए स्नेह है तो सब से अधिक है। श्रीठाकुरजी की अप्रिय वस्तु है जहाँ क्लेश रहता है उसके हृदय में श्रीठाकुरजी कभी प्रवेश नहीं करते है। क्यों कि क्लेश है वह चांडाल का स्वरूप है। इसलिए भगवदियों को क्लेश से दूर रहना चाहिए। प्रभु के मिलने की आतुरता रखनी चाहिए। दूसरा श्रीठाकुरजी को धूंवा अप्रिय है। इसलिए जहाँ धूआ हो वहाँ श्रीठाकुरजी को नहीं पधराना चाहिए। तीसरा जो भगवदीय का द्रोही हो वह श्रीठाकुरजी को बहुत अप्रिय है। श्रीठाकुरजी की तो प्रतिज्ञा ही है। जो मेरे से द्रोह करेगा उसका तो मैं क्षमा करूंगा किन्तु जो भगवदियों का द्रोह करेगा उसको मेरे द्वारा क्षमा नहीं मिलेगी। श्री भगवान् ने दुर्वासा के प्रसंग में कहा है– "अहंभक्त पराधीनों" मैं अपने भक्तों के आधीन हूँ। इसलिए भगवदियों का द्रोही श्री को अत्यन्त अप्रिय है। इस प्रकार का दान श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उस बाई को किया था। इसलिए वह बाई भलीभांति से श्रीठाकुरजी की सेवा करने लगी। वह बाई सोती तो रात्रि को श्रीठाकुरजी के निकट ही सोती और क्षण क्षण में श्रीठाकुरजी से कहती महाराज मैं बैठी हूँ। आप डरोमत सुख से सोवो। कदाचित् थोड़ी सी उस बाई को नींद आती तो श्रीबालकृष्णजी उस बाई को कहते तू सोगई। मैं डरता हूँ। तू जागती रह। ऐसा अनुग्रह श्रीठाकुरजी उस बाई पर करते थे। ऐसा करते हुए उस बाई का निरोध सिद्ध हुआ। एक दिन रात्रि को श्रीगोवर्धननाथजी

ने उस बाई के घर पधारकर कहा अरी बाई किंवाड़ खोल मैं आया हूँ। तब उस बाई ने कहा कि महाराज आप पधारे बड़ी कृपा की। किन्तु में उठुंगी तो मेरा बालक डरेगा। इसलिए आप सवेरे पधारना। यह कहकर वह उठी नहीं। तब श्रीगोवर्धननाथजी उस बाई पर बहुत प्रसन्न हुए और श्री मुख से आज्ञा की अरे अमुकी मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हूँ। तू जो कुछ मांगेगी वह दूंगा। तब उस बाई ने श्रीनाथजी से विनती की महाराज आपने श्रीआचार्यजी महाप्रभु की कृपा से सब कुछ दिया है और आप प्रसन्न हुए हो तो एक वस्तु आपके पास से मांगती हूँ। यहाँ श्रीगोवर्धन पर्वत के ऊपर बंदर बहुत रहते है वे बालकों को ले जाते है। मेरा यह लड़का तो निपट बालक है। इसलिए इस बालक को कहीं न ले जाय यह मै आपके पास से मांगती हूँ। ऐसा वचन उस बाई के सुनकर श्रीगोवध र्ननाथजी रोमांचित हुए और कहा कि धन्य हो जिनका स्नेह मेरे ऊपर ऐसा है। इसके ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने ऐसा अनुग्रह किया है। इसलिए इसके भाग्य का पार नहीं। इसको में क्या दूं यह तो सब मेरे ही सुख की चिन्ता करती है। इसलिए इसके वश में पड़ा हूँ। इससे एक क्षण भी दूर नहीं जाता हूँ। वह बाई श्रीआचार्यजी महाप्रभु की ऐसी कृपा पात्र भगवदीय हुई थी।

प्रसंग–४४

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्री गोकुल पधारे। तब आपके साथ दामोदर दास हरसानी, कृष्णदास मेघन प्रभृति थे। उस समय एक वैष्णव पूर्व से मिश्री लेकर आया। उस सामग्री को उस वैष्णव ने श्रीआचार्यजी के संमुख रखी। साष्टांग दंडवत् की। मिश्री बहुत थी तब आपने सभी भगवदियों को आज्ञा की तुम इस सामग्री को लेकर छोटे छोटे टूक करो। जैसे श्रीठाकुरजी के मुख में धरे जा सकें। तब सभी भगवदियों ने वह सामग्री लेकर अच्छी

भांति से टूक कर सिद्ध किया। जिस से सुख पूर्वक श्रीठाकुरजी अरोग सके। किसी प्रकार का श्रम नहीं हो। कितनी ही छाबें (टोकरी) मिश्री से भर गई। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने सब मिश्री लेकर श्रीठकुरानी को समर्पित की और बची उसका भोग धरकर श्रीठाकुरजी घाट, गोविन्द घाट पर श्रीयमुनाजी को स्नान को पधारे वहाँ भी वह मिश्री श्रीयमुनाजी को समर्पित की। जल के मार्ग को अंगीकार कराया। तब जो वैष्णव सामग्री लाया था। उसको यह देखकर अपने मन में खेद हुआ। मैंने तो जाना कि बहुत दिनों तक थोड़ी थोड़ी सामग्री पहुंचेगी किन्तु आपने तो एक ही बार यमुना जी में पधरा दी। आप तो जो करते हैं सब अच्छा ही करते हैं। जो अंगीकार हुई वह भी अच्छी हुई। इस भांति उस वैष्णव ने अपने मन में विचार किया। श्रीआचार्यजी महाप्रभु तो अन्तर्यामी साक्षात् भगवान हैं। इसलिए इसके अन्तः करण की बात को जाना। तब उस वैष्णव को बुलाकर श्री मुख से कहा कि तेरे को ऐसा संदेह क्यों हुआ। वह सब मिश्री श्रीठाकुरजी ने ही अंगीकार की हैं। उस वैष्णव ने विनती की महाराज जीव बुद्धि है जैसे देखता है वैसे मन में आती है। आपने जो सामग्री सिद्ध करके समर्पित की वह देखा और श्रीयमुनाजी में पधराई वह भी देखी। इसलिए मेरे मन में ऐसा संदेह हुआ। आप तो हमारे मुकुट मणि हो और साक्षात् श्रीपूर्ण पुरूषोत्तम सच्चिदानंद हो। हमारे तो सर्वस्व श्रीठाकुरजी आप ही हो। हमने तो तन, मन, धन आप ही को समर्पित किया है। श्रीठाकुरजी तो आपके अनुग्रह से ही कृपा करेंगे। नहीं तो श्रीठाकुरजी हमको क्या जाने? हमारे जैसे करोड़ों जीव पडे हैं। यह तो आपके अनुग्रह से मेरा भाग्य सिद्ध हुआ हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु उसकी दीनता देखकर उसके ऊपर प्रसन्न होकर जो वस्तु किसी को नहीं दी जाती है वह आपने कृपा एव अनुग्रह कर उसको दी। क्यों कि आप कृपा सिंधु है। श्री सर्वोत्तम में

श्रीगुसांईजी ने कहा है–

"अदेय दान दक्षश्च महोदार चरित्रवान" पीछे उसी समय श्रीआचार्यजी ने उस वैष्णव से कहा कि देख वैष्णव तेरी सामग्री का क्या उपयोग हुआ है। उस वैष्णव को कैसे दर्शन हुए। उसका वर्णन आपने श्रीयमुनाष्टकमें किया है। सकल गोप गोपी वृते कृपा जलधि संश्रिते" श्रीयमुनाजी में सकल गोप गोपियों सहित श्रीठाकुरजी ने सामग्री अंगीकार की। ऐसी जगह श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उसकी सामग्री का उपयोग कराया। श्रीठाकुरजी की लीला सहित दर्शन करके वह वैष्णव बहुत ही प्रसन्न हुआ। अपने परम भाग्य को मानता हुआ कहने लगा धन्य है श्रीआचार्यजी महाप्रभु जिनने मेरे ऊपर ऐसा अनुग्रह किया है। आपने श्रीयमुनाजी का स्वरूप प्रकट किया। इसलिए भगवदियों को श्रीयमुनाजी को ऐसा ही जानना चाहिए। इसी कारण से गोविन्द स्वामी श्रीयमुनाजी में पांव नहीं देते थे। श्रीगुसांईजी ने ऐसा दर्शन गोविन्द स्वामी को श्रीयमुनाजी का करवाया। इस में वैराग्य का यह स्वरूप प्रकट किया है और बताया है कि संग्रह नहीं रखना चाहिए।

प्रसंग–४५

श्रीआचार्यजी महाप्रभु बहुत बार मथुरा पधारे। वहाँ उजागर चोबे के घर बिराजते। तब पुनः श्रीजी की आज्ञा हुई कि आप शीघ्र पधारों। इस प्रकार दो आज्ञा जब हुई। तब आपने मन में कहा कि श्रीठाकुरजी बहुत उतावली (शीघ्रता) करते हैं और यहाँ तो अभी काम शेष है। इसलिए यह श्री की आज्ञा पूरी नहीं होगी। इसलिए जैसे भी बने दशमस्कंध निरोध लीला की टीका श्रीसुबोधिनीजी की होतो अच्छा। इस के लिए श्रीआचार्यजी का यह नाम है–" भक्तकृतार्थ कृतकृष्ण आज्ञा द्वेयोल्लंघनाय नमः। आपका भगवदीय दैवीजीवों

पर ऐसा अनुग्रह था जिस कारण श्रीठाकुरजी की दो आज्ञा का उल्लघन किया। इसका दूसरा अर्थ यह है कि श्रीठाकुरजी का स्वरूप और नाम श्रीआचार्यजी को प्रकट करना है। वह स्वरूप तो श्रीगोवर्धननाथजी ने प्रकट किया और नाम तो जब श्रीसुबोधिनीजी प्रकट हो तब हो। इसलिए दो आज्ञा श्रीठाकुरजी की आपने नहीं मानी। श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी को शीघ्र बुलाते हैं उसका कारण क्या है? श्रीठाकुरजी ने तो श्रीमहाप्रभुजी को आज्ञा दी आप दैवीजीवों का उद्धार करो। वे मेरे से बहुत दिनों से बिछुड़े हुए है। आपने ऐसी दया करके ही श्रीआचार्यजी महाप्रभु का प्राकट्य किया। श्रीगुसांईजी ने श्रीसर्वोत्तम में श्री महाप्रभु का नाम कहा है– ''दयया निज माहात्म्यं करिष्यन् प्रकटं हरिः'' श्रीठाकुरजी की आज्ञा से ही आप पधारे है और श्रीठाकुरजी की यह आज्ञा की आप शीघ्र पधारो उसका हेतु यह है कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु का नाम श्रीवल्लभ है वह श्रीठाकुरजी को बहुत प्रिय है। इसीलिए श्रीआचार्यजी का नाम श्री सर्वोत्तम में श्रीगुसांईजी ने ''वल्लभाख्य'' ऐसा कहा है और श्रीआचार्यजी को श्रीठाकुरजी अतिप्रिय हैं ऐसा अनिर्वचनीय परस्पर स्नेह है। ऐसा स्नेह छोड़कर श्रीआचार्यजी भूतल पर कैसे पधारे। उसका यह कारण है कि आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना। अपने को दुःख सुख हो वह सहन करना ऐसा स्नेह का धर्म है। इसलिए श्रीठाकुरजी से बिछुडकर श्रीआचार्यजी विहर का अनुभव करते है। उसी को श्रीगुसांईजी ने सर्वोत्तम में कहा है–'' विरहानु भवैकार्थ सर्व त्यागोपदेशकः''। आप तो साक्षात् पूर्णानंद हैं–''वस्तुतः कृष्णएव'' इसलिए साक्षात् श्री कृष्ण पुरूषोत्तम भी श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप हैं उसको स्थान स्थान पर भगवदियोंने गाया है– श्री लक्ष्मण नंदन जे जे'' भक्त हेतु प्रकटे पुरूषोत्तम मन वांछित फल निज जन दे।१। शुक मुख द्रवित सुधारस मथि के गूढभाव दस विध कर दे। मायावाद करी दे दर्प दल भूतल तीरथराज

सबे ।२। परिक्रमा मिस परसि पूत कृत दैवी जीवन दान अमे। बसौ निरंतर मेरे हियमें दास गोपाल पदांबुज द्वे ।३।

कदाचित् ऐसा किसी को संदेह हो तो श्रीआचार्यजी स्वयं श्रीठाकुरजी है तो फिर आज्ञा किसने की और किसके ऊपर की। उसका हेतु पंचाध्यायी में श्रीशुकदेवजी ने कहा है– "अनुग्रहार्थ भक्तानां मानुषं देह मास्थितः" भजते तादृशीं क्रीडां या श्रुत्वा तत्परो भवेत्"

इसलिए महाप्रभु ने दैवीजीवों के ऊपर अनुग्रह किया है। साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम रूप धरकर आप भूतल तल पर पधारते तो सब जगत् शरण आता। सब जगत का उद्धार तो करना नहीं था। आप तो केवल दैवीजीवों के लिए पधारे इसलिए अपने भगवदियों को तो साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम के ही दर्शन होते है और सब जगत ऐसा जानता है कि ये कोई महापुरूष है बड़े तेजस्वी है। बड़े पंडित हैं। दिग्विजय की है उनको तो इतना ही ज्ञान है। किन्तु आप तो श्रीठाकुरजी का स्वरूप है यह ज्ञान नही है। श्रीगुसांईजी ने श्री सर्वोत्तम में लिखा है– "प्राकृतानुकृति व्याज मोहिता सुर मानुषः" और भगवदियोंने कीर्तन में भी गाया है–"असु खंचे मनुज माया मोह मुख मृदुहास" श्रीआचार्यजी के मृदुहास से सब जीवों को मोह होता है और दैवीजीवों को तो सकल लीला विशिष्ट दर्शन होता है। जैसे जैसे भगवदीय मनोरथ करते है उसी प्रकार आप उनको दर्शन देते है।

प्रसंग–४६

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु उज्जैन पधारे वहाँ क्षिप्रानदी है। उसके ऊपर आप बिराजे। वहां स्थल बहुत सुन्दर था। वहाँ आपके पास सभी वैष्णव

बैठे थे। आप संध्यावंदन कर रहे थे। उस समय बयार चली उससे कही से पीपल का पत्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु के चरणारविन्दि में आकर गिरा। तब आपने उसको संध्यावंदन कर अपने श्री हस्तकमल से उठा लिया। जहाँ आपने संध्यावंदन किया था वहाँ जल पड़ा था उस जल से धरती गिली थी वहाँ श्रीआचार्यजी ने अपने श्रीहस्त से पत्ते की डांडी को रोप दिया। तब तत्काल उसी समय उसमें से नवपल्लव निकलने लगे। देखते देखते तत्काल बड़ा जँगी पीपल का वृक्ष हो गया। आप जहाँ बिराजरहे थे वहाँ धूप थी। वहाँ पीपल की छांया हो गयी। इस प्रकार दैवीजीवों के ऊपर अनुग्रह करके श्रीआचार्यजी ने अपनी ऐश्वर्यता प्रकट की। इस से सारे जगत में आपका माहात्म्य प्रकट हुआ। श्रीआचार्यजी महाप्रभु का ऐसा सामर्थ्य है। ये तो साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम है यह देखकर सब लोक कहने लगे। यह कार्य मनुष्य से तो नहीं हो सकता है। यह ईश्वर का काम है। जहाँ जहाँ श्रीआचार्यजी की बैठक है वहाँ वहाँ छोंकर के वृक्ष है। उज्जैन में पीपल के नीचे श्रीआचार्यजी महाप्रभु की बैठक सिद्ध हुई जब कभी आप उज्जैन पधारते तब उस पीपल के नीचे बैठक में बिराजते थे। वहां आपके श्रीहस्त का लगाया पीपल का वृक्ष नित्य है।

प्रसंग–४७

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु अयोध्या पधारे तब दामोदर दास हरसानी, कृष्णदास मेघन, प्रभुदास जलोटा क्षत्री और पाँच सात वैष्णव आपके साथ थे। आप सरयू के बाग में उतरे थे वहाँ श्रीरघुनाथजी आप से मिलने पधारे थे। उस समय श्री जानकी जी, लक्ष्मण जी तथा हनुमान जी ये चारों साथ थे। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने तत्काल उठकर श्रीरघुनाथजी से कहा–"श्रीमर्यादा पुरूषोत्तमायनमः" तब श्रीआचार्यजी का सम्मान श्रीरघुनाथजी

ने भली भांति से किया और जो कुछ श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कहा उसको श्रीरघुनाथजी ही समझे और कोई नहीं समझा। इससे श्रीहनुमानजी को बहुत बुरा लगा। इनने मेरे स्वामी श्रीरघुनाथजी से "श्रीमर्यादा पुरूषोत्तमाय नमः" ऐसा क्यों कहा और दंडवत् प्रणाम तो किया नहीं। यह बात श्रीहनुमानजी के मन में किसलिए आयी। कारण की श्रीआचार्यजी के स्वरूप का श्रीहनुमानजी को ज्ञान नहीं था। वहाँ कोई शंका करे कि श्रीहनुमानजी तो श्रीरघुनाथजी के अत्यन्त कृपा पात्र है इनको श्रीआचार्यजी के स्वरूप का ज्ञान नहीं था यह कैसे संभव? उसका हेतु श्रीगुसांईजी ने सर्वोत्तम में कहा है–"सर्वाज्ञात लीलोतिमोहनः" श्रीआचार्यजी की लीला अत्यन्त गोप्य है जिसको आप कृपा करके बतावें वही जान सकता है। इसलिए भगवदियों ने गाया है–"जो लों हरि अपन पो न जनावें तो लों सकल सिद्धान्त सुमरन बल बढ़े सुनें नहीं आवे" श्रीवल्लभा ख्यान में गोपालदास जी ने भी गाया है–"नित्य लीला नौतन श्रुतिन पामेंपार" वहाँ और भी गाया है– "गाए श्रुतिगण रूप अहरनिश धरे ध्यान विचार। आनंद रूप अनुपम सुन्दर पामें नहीं कोई पार" और वेद भी ऐसे ही कहते है कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु के स्वरूप का कोई पार नहीं पासकता है। तो इस स्वरूप को श्रीहनुमानजी क्या जानेंगे? इसी कारण उनको ईर्ष्या हुई। उस समय श्रीरघुनाथजी ने श्री हनुमान जी के अन्तः करण को जानकर इनके मन में दोष आया है। यह तो मेरा सेवक है इसलिए श्रीरघुनाथजी ने श्रीहनुमानजी को देखकर समाधन करने के लिए यह उपाय किया। आपने हनुमानजी को आज्ञा की तुम श्रीआचार्यजी के पास जाकर देख आओ वे कहाँ बिराज रहे है। उस समय श्री सरयु गंगाजी के तीर ऊपर स्नान करके श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजे हुए थे। उनके पास भगवदीय बैठे थे और रसोई का सामान सिद्ध कर

रहे थे। उसी समय हनुमान जी श्रीआचार्यजी महाप्रभु के निकट आए तब श्रीआचार्यजी के दर्शन हनुमान जी को श्री रघुनाथ जी के हुए। दर्शनकर साष्टांग दंडवत् प्रणाम कर हाथजोड़ खड़े हुए। श्रीआचार्यजी ने श्री मुख से आज्ञा की हनुमान जी आओ। तुम श्रीरघुनाथजी के दर्शन करो। तब हनुमानजी के मन में संदेह हुआ कि श्रीआचार्यजी ने श्रीरघुनाथ जी का स्वरूप कैसे धारण कर लिया। ऐसे मन में सोचते हुए श्रीआचार्यजी महाप्रभु को दंडवत् कर हनुमान जी श्रीरघुनाथजी के पास मंदिर में आये। तब श्रीरघुनाथजी ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु का समाचार पूछा कि हनुमान जी तुम श्रीआचार्यजी के दर्शन करके आते हो?हनुमान जी ने प्रार्थना की महाराज दर्शन करके आया। परन्तु श्रीआचार्यजी तो साक्षात् आपका स्वरूप धर कर बिराजे हुए थे। तब रघुनाथ जी ने मुस्कराकर हनुमान जी से कहा इनमें इतनी सामर्थ्य है कि वे मेरे स्वरूप को ध ार सकते है। हममें श्रीआचार्यजी का स्वरूप धरने की सामर्थ्य नहीं है। इसका कारण कहा है कि श्रीरघुनाथजी से श्रीआचार्यजी महाप्रभु का स्वरूप नहीं धर सकते है। उनका हेतु यह है कि द्वितीय स्कंन्ध श्री भागवत की श्री सुबोधिनी जी में जहाँ चौबीस अवतार का श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने निर्णय किया है। वहाँ सब अवतारों का स्वरूप लिखा है। कोई अवतार अंश का है और कोई कला का है। आभरण का है। कोई वस्त्र का है, और श्रीरघुनाथजी तो श्री पूर्ण पुरूषोत्तम हास्य का स्वरूप है। इसलिए श्रीआचार्यजी महाप्रभु का स्वरूप है। श्रीगुसांईजी ने सर्वोत्तम में कहा है– "श्री कृष्णास्यं" कि साक्षात् श्री कृष्णपूर्ण पुरूषोत्तम में मुखारविन्द का स्वरूप है। जैसे श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से हास्य प्रकट होता है परन्तु हास्य में से मुखारविन्द प्रकट नहीं होता है। इसलिए श्रीआचार्यजी महाप्रभु तो श्री रामचन्द्र जी का स्वरूप धर लेते है परन्तु श्री रामचन्द्र जी से

श्रीआचार्यजी का स्वरूप नहीं धरा जा सकता है। क्यों कि वे वागधीश है और वाणी भी मुख में रहती है और सर्व प्रकार का भोग करता है। इसलिए भगवदीय विष्णुदास ने गाया है–"वंदेहंत विमल हुताशं सीत समीप दूरजन तापक। अनुभव उभय एक गुण भास। अखिल धरापद परस पूत कृत व्रज यमुना विहरत रूचिरासं।१। इसलिए श्रीआचार्यजी का स्वरूप अति अगाध है। इसको श्रीरामचन्द्रजी जानते है और जो परम कृपापात्र दैवीजीव है उनको आप बताते हैं और सब लीला सहित साक्षात् श्रीगोवर्धननाथजी का दर्शन करते हैं। श्रीआचार्यजी ने श्री रघुनाथ जी का स्वरूप श्री हनुमान जी का अनन्य व्रत पालने को लिया था। इस रीति से श्रीहनुमानजी का संदेह निवृत्त किया।

प्रसंग–४८

श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अयोध्या में पारायण किया तब हनुमानी जी ने भी आकर आपसे प्रार्थना की महाराज मेरे को आज्ञा हो तो मैं भी आप की कथा सुनने को आऊं। तब आपने कहा कि तुम तो नग्न रहते हो इसलिए सभा में कैसे बैठोगे। अपराध पड़ेगा तब हनुमान जी ने प्रार्थना की मैं तो आपके सामने बैठकर सुनुंगा। इसलिए आप मेरे बैठने के लिए एक स्थान पर परदनी धरवा देना मैं उसको पहरकर कथा सुनुंगा। तब वहाँ श्रीआचार्यजी महाप्रभु पोथी खोलते तब एक परदनी अपने सन्मुख धरते। वह परदनी पहर कर हनुमानजी जी कथा सुनते। वहाँ एक पंडित श्रीआचार्यजी से वाद करने के लिए आया। उस पंडित ने श्रीआचार्यजी से कहा कि आप कृष्णभक्ति करते हो या श्री रघुनाथ जी की भक्ति करते हो। आपने उस पंडित से कहा हम तो दोनों के भक्त हैं यह तो हमारी ननिहाल है श्री लक्ष्मण भट्ट का यहाँ व्याह हुआ श्रीकृष्ण और लक्ष्मण

का व्याह भी अयोध्या में हुआ। इसलिए हमारे श्रीठाकुरजी का यह ससुराल है। उस दिन से अध्योध्या भी हमारी है। यह बातसुन कर वह पंडित चुप हो गया। श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपने मार्ग का पक्षपात नही करते हैं। पीछे श्रीआचार्यजी चित्रकूट पधारे। वहाँ पर वृद्ध ब्राह्मण का वेश किया हनुमान जी के साथ संभाषण हुआ। वहाँ कान्ता नाथ पर्वत की सीमा अति रमणीय देख मन लग गया। इसलिए आप एक मास तक वहाँ बिराजे और वाल्मिकी रामायण का पारायण किया। पीछे हनुमान जी ने श्रीआचार्यजी को कान्तानाथ पर्वत पर पध ाराया। वहाँ साक्षात् श्री रामचन्द्र जी के दर्शन हुए। वहाँ फिर "श्री मर्यादा पुरूषोत्तममाय नमः" ऐसा कहकर श्रीआचार्यजी ने प्रणाम किया। श्रीरामचन्द्रजी ने कहा कि हम भी हमारे अंश से आप के घर प्रकट होंगे। पीछे श्रीगुसांईजी के पंचमलालजी श्री रघुनाथ जी प्रकट हुए। उनकी बहू जी का नाम जानकी जी रखा था यह सुनकर महाभक्त श्रीतुलसीदास ने गोकुल आकर अनुभव किया तथा वहाँ एक पद गाया–"बरनो अवध गोकुल गाँव। वहां सरजु यहाँ यमुना दोउ एके ठांव" यहाँ श्रीआचार्यजी की दो प्रदक्षिणा पूरी हुई। पीछे अयोध्या से आप नैमिषारण्य पधारे। वहाँ तीन दिन बिराजकर पारायण की। वहाँ ज्ञानानंद नाम के विख्यात पंडित थे उससे वाद विवाद हुआ।

प्रसंग–४६

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु थानेश्वर पधारे वहाँ पर आपका प्रभाव देखकर राणा व्यास, गोविन्द दुबे, नारायण दास, वत्साभट्ट, अच्युताश्रम त्रिदंडी सन्यासी आदि आपकी शरण आकर सेवक हुए। थानेश्वर के निकट सरस्वती है इसलिए आप थानेश्वर ही बिराजे। आप सरस्वती का उल्लंघन नहीं करते

उसका कारण यह है कि जो सरस्वती है वह श्री भगवान् के मुखारविन्द की वाणी का प्रवाह है और श्रीआचार्यजी तो उसका मंडन तथा स्थापन करने के लिए प्रकट हुए हैं। इसलिए उसका उल्लंघन कैसे करें। उल्लंघन करने से तो भगवद् वाणी का खंडन करने जैसा है। इसलिए कोई आचार्य सरस्वती का उल्लंघन नहीं करते हैं। जो कोई दैवीजीव होते उनको यहाँ ही आपके पास नाम समर्पण करते थे। सिंहनद में दो सास बहू रहती थी उनके ऊपर आपकी बड़ी कृपा थी। उनसे श्रीठाकुरजी बहुत स्नेह रखते। इसलिए उनकी सराहना श्रीआचार्यजी स्वयं श्री मुख से बहुत करते और कहते कि क्या करूं। मेरे को सरस्वती का उल्लंघन नहीं करना है। नहीं तो उनके घर जाकर उनको दर्शन देता। ऐसी कृपा उन सास बहू के ऊपर श्रीआचार्यजी करते थे। एक समय आपने श्री सरस्वती के तीर पर स्नान करके संध्यावंदन किया। तब संध्यावंदन के जल से जो मिट्टी गिली हो गयी थी उसको आपने श्री हस्त में लेकर एक श्री ठाकुर जी का स्वरूप निर्माण किया। उनका नाम श्रीबालकृष्ण रखा। उनको बालमुकन्दजी भी कहते। उस समय एक सिंहनद का एक वैष्णव आपके निकट खड़ा था। उसने विनती की महाराज मेरे को श्रीठाकुरजी की सेवा पधरादो। मैं श्रीठाकुरजी की सेवा करूंगा। तब आपने वह स्वरूप उस वैष्णव के पधरादिया। वह स्वरूप आपने वैष्णव के सामने निर्माण किया था। इस लिए उस के मन में संदेह उत्पन्न हुआ। तब उसने श्रीआचार्यजी से प्रार्थना की महाराज मेरे मन में श्रीठाकुरजी को अभ्यंग, स्नान कराने का है इनको में कैसे कराऊंगा। आपने कहा तू ऐसा संदेह मत कर। तेरा जो मनोरथ हो वह तू सब करना। तब वह वैष्णव श्री बालकृष्ण को पधराकर अपने घर पाट बैठाये। अभ्यंग स्नान करवाया। पीछे श्रृंगारकर भोग सिद्ध किया तब बड़ा उत्साह उस वैष्णव के मन में हुआ।

श्रीठाकुरजी उस वैष्णव पर अनुग्रह कर के सानुभावता जनावन लगे। जो चाहिए था वह मांग लेते थे। जैसे कोई बालक क्रीडा करता है वैसे ही श्रीबालकृष्णजी क्रीडा करते थे। वह बड़ा कृपापात्र भगवदीय था। जिनके भाग्य से श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपने श्रीहस्त से स्वरूप निर्माण किया। ऐसा वह वैष्णव श्रीठाकुरजी की सेवा भली भांति से करता था।

प्रसंग–50

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु बद्रिका श्रम पधारे हुए थे। तब आपके साथ कृष्णदास मेघन गोविन्द दुबे, जगन्नाथ जोशी, रामदास सिकन्दरपुर के चारों जने आपके साथ थे। उस दिन वामन द्वादशी थी। तब श्रीआचार्यजी ने फलाहार बहुत ढुंढवाया। श्रीबद्रीनारायणजी ने भी फलाहार बहुत खोजा किंतु कहीं प्राप्त नहीं हुआ। इतने में कृष्णदास मेघन ने आकर कहा महाराज फलाहार तो कुछ मिलता नहीं है। उस समय श्रीबद्रीनारायण जी ने भी श्रीआचार्यजी महाप्रभु से कहा मैंने भी फलाहार बहुत खोजा पर कुछ भी मिला नहीं! तब श्रीआचार्यजी मन में खेद करने लगे कि मेरे लिए श्रीबद्रीनारायणजी ने इतना श्रम किया। श्रीबद्रीनारायणजी ने कहा–"उत्सवांते च पारणं" इसलिए मेरी आज्ञा है रसोई करके श्रीठाकुरजी को भोग धरकर भोग सराकर भोजन करो। तब से वामन जयन्ती में द्वादशी उपरान्त श्रीआचार्यजी महाप्रभु भोजन करने लगे पीछे सब वैष्णव आपस में चर्चा करने लगे। इतना श्रम श्रीबद्रीनारायणजी ने क्यों किया। तब उन वैष्णवों से कृष्णदास मेघन ने कहा कि तुम बावरे हुए हो श्रीआचार्यजी महाप्रभु के लिए श्रीनाथजी श्रम करते हैं तो श्रीबद्रीनारायण की

क्या चलती है। श्रीआचार्यजी महाप्रभु का प्रकार लौकिक विषय है। पीछे एक गुफा में पधाकर आप श्रीवेदव्यासजी के दर्शन करके आगे पधारे।

प्रसंग–५१

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु गंगा सागर पधारे तब श्री ठाकुर जी ने आपको आज्ञा दी अब तुम मेरे पास आओ। तब आपने विचार किया कि श्री ठाकुर जी ने तो यह आज्ञा दी और हमने तो मनोरथ बहुत सोचा है और कार्य तो बहुत ही करने है। आज्ञा तो ऐसी हुई है इसलिए अब क्या करना है। उसी समय आपने श्री भागवत के तृतीयस्कंध, चतुर्थ स्कंध की टीका श्री सुबोधिनी समाप्त की थी। वैसे में ही श्री ठाकुर जी की आज्ञा हुई कि शीघ्र आओ। तब आपने श्री भागवत के पंचम स्कंध, पष्ठ स्कंध छोड़कर दशम स्कंधकी श्रीसुबोधिनीजी का आरंभ किया। दशम स्कंध बड़ा है। इसमें निरोध लीला है। सभी स्कंध फलरूप है। इसी में भग वदियों का विलास है। लीला का समुद्र है। श्री सुबोधिनी जी के आरंभ में कहा है– एतान्निशय मृगु नंदन साधुवादम्। वैयासकिः स भगवानथ विष्णुरातम। प्रत्यर्च्य कृष्ण चरितं कलिकल्म षघ्नम्। व्याहर्तु मारभत भागवत प्रधान।।१।।

श्रीआचार्यजी महाप्रभु लिखते हैं और आप ही श्रीठाकुरजी कहते हैं और आप ही सुनते है। दशम स्कंध में जन्म प्रकरण में सब व्रज की तथा श्री नंदराय जी, श्री यशोदा जी और सब व्रज भक्तों की कथा है। उनको ही श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने प्रकट किया है। वह मार्ग तो व्रज भक्तों का है। वह आपने दैवीजीवों के लिए प्रकट किया है। इसलिए यह विचार कर बीच में के स्कंधों

को छोड़कर श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने दशमस्कंध की श्री सुबोधिनी जी का आरंभ किया। कितने ही अध्याय की दशमस्कंध की सुबोधिनी जी हुई। श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्लोक कहते जाते और माधव भट्ट लिखता जाता। जहां माधव भट्ट नहीं समझता वहां लिखना बंद कर देता। तब आप समझाकर आप कहते तब माधव भट्ट फिर लिखता। जब भोजन कर के आप बिराजते तब श्रीसुबोधिनी जी करते थे। कितने ही दिनों में ऐसे चलते मार्ग में वह ग्रन्थ सिद्ध हुआ। पीछे आप तीसरी पृथ्वी परिक्रमा पूरी कर अडेल पधारे थे।

।। इति श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्री मद्वल्लभाचार्य जी की– निजवार्ता संपूर्ण।।

जगद्गुरु श्री वल्लभाचार्य

घरू वार्ता

।।श्री कृष्णाय नमः।।

श्री मद्वल्लभाचार्य जी की घरू वार्ता प्रारंभ

प्रसंग–१

श्री गोकुलनाथजी आज्ञा करते हैं कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु अडेल में घरकर के बिराजे थे। पीछे के कुछ चरित्र संक्षेप से कहता हूं। उनको सुनो। यह सुनकर श्रोता बहुत प्रसन्न हुए। श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने १२ वर्ष की आयु में पृथ्वी प्रदक्षिणा आंरभ कर ६ वर्ष में एक प्रदक्षिणा पूरी की थी। ३० वर्ष की अवस्था में प्रदक्षिणा और ३ दिग्विजय की थी। उसके पीछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु काशी आये थे। वहां आने पर मायावा दियोंने एक पत्र दिया उसका उत्तर आपने शीघ्र दे दिया। तब उन ने कहा उत्तर ठीक नहीं है। उस समय आपके साथ जो माधव सरस्वती थे उनने कहा कि यहां माया बादियों की दुर्बुद्वि हो गयी है। इसलिए आप इन से मत बोलो। पीछे आप श्रीआचार्यजी महाप्रभु अडेल आकर बस गये पीछे भक्तिमार्ग का हठ से निरूपण किया। आप तीनों परिक्रमा संपूर्ण क़रके अड़ेल पधारे थे। उस दिन से प्रत्येक वर्ष चैत्र कृष्ण अथवा वैशाख शुक्ल पक्ष में द्वितीया को सोम यज्ञ करते थे। आप स्वधाम पधारे वहां तक न जाने आपने कितने ही सोम यज्ञ किये थे।

प्रसंग–२

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु विवाह करके पृथ्वी परिक्रमा को पधारे थे। तब संपूर्ण पृथ्वी परिक्रमा कर के आप चरणाट जाने के समय श्रीकाशीजी में

सुसर के घर भोजन करने को पधारे उस समय आपकी सास रसोई कर रही थी। इल्लमागारूजी उनका नाम था। मुख की मुखरता थी। इसलिए बेटी को बहुत दुःख देती रहती थी। उसके घर आकर श्रीआचार्यजी खड़े हुए तब उसने अपनी बेटी से कहा द्वार पर अतिथी आये हैं। उसको तू अनाज देदे। जब दाना लेकर अक्कई द्वार पर आयी तब दूर से आपको देखा। तब अक्काजी तो पीछे फिर गयी। पीछे माता ने देखकर कहा तू पीछे क्यों फिरी। तेरा मनुष्य आया है। अक्काजी ने माता जी से कहा तू उठ कर देख। तब वह द्वार पर आकर देखती है कि श्रीआचार्यजी खड़े है। तब लज्जा पाकर आपको घर में ले गई। तथा कहा आप स्नान कर श्रीठाकुरजी की सेवा करो। उनके घर में सेव्य स्वरूप बहुत थे। उन पंचायतन में श्रीगोकुलनाथजी भी बिराजते थे। आसन बहुत बड़ा था उस पर एक गाय भी बैठती तथा अन्य स्वरूप भी सब बिराजते थे। यह देखकर आपने शिर ध ुना। उसके पश्चात् श्रीमहाप्रभु ने सेवा कर भोजन किया। पीछे दूसरे दिन वहां से विदा होकर चलने लगे तब आपने अक्काजी से कहा कि तुम्हारी माता जी के पास से यह श्रीगोकुलनाथजी का स्वरूप है वह मांग लो। तब श्री अक्काजी ने वह स्वरूप माता के पास से मांगा और कहा यह जो श्रीठाकुरजी का स्वरूप है वह मेरे को दो तो मैं भोजन करूं। तब महतारी ने अपने पति मधुमंगल से कहकर श्री का स्वरूप लेकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु को पधरा दिया। आपने एक झांपी मंगवाई वह छोटी थी और श्री का स्वरूप बड़ा था। तब आप श्रीगोकुलनाथजी का छोटा स्वरूप धर कर उस झांपी में बिराजे। पीछे श्रीआचार्यजी अक्काजी सहित श्रीगोकुलनाथजी को पधरा कर सब भगवदीय सहित अपने घर चरणाट पधारे। वहां श्रीगोकुलनाथजी को पंचामृत स्नान कराकर पाट बैठाये। सेवा की तथा रसोई सिद्ध कर राजभोग समर्पित किया। प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने

श्रीगोकुलनाथजी की सेवा की थी। वहा सेवा श्रीगुसांईजी ने अपने लाल जी श्री गोकुल–नाथजी को उनके माथे पधरादी। वह संप्रति चोथी गादी के मालिक हैं।

प्रसंग–३

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु अडेल में बिराज रहे थे। तब एक दिन भंडारी ने सवेरे आकर आपसे विनती की महाराज भंडार में कुछ भी सामग्री नहीं हैं। तब आपने मंदिर में से कटोरी सोने की निकाल कर भंडारी को दी और श्री मुख से आज्ञा की इस कटोरी को गिखी रख कर नित्य नेग की आज लायक (भोग सामग्री ले आओ। तब वह कटोरी भंडारी गिखी धरकर सामग्री ले आया। उसकी साफ सफाई कर मंदिर में पहुंचाई। आपने रसोई सिद्ध कर मंगला से राजभोग तक की सामग्री सिद्ध कर राजभोग श्री ठाकुर जी को समर्पित किया। पीछे भोग सरा कर आरती कर, अनोसर कर वह सब प्रसाद गायों को खिलाया, कुछ यमुनाजी में बहाया। आप भूखे ही बैठ रहे। उत्थापन का समय हुआ इतने में ही वासुदेव दास छकड़ा सिंहनद से आया उसने आपको दंडवत्त प्रणाम किया और उसने सिंहनद के वैष्णव ने तीस मोहर श्री महाप्रभु को भेंट भिजवाई थी वह आपके आगे धरकर उनकी और से साष्टांग दंडवत्त की। आपने सब वैष्णवों के समाचार पूछे और श्री मुख से कहा कि तुम इतनी मोहर मार्ग में कैसे लाए। तब वासुदेव दास छकड़ा ने विनती की महाराज लाने के प्रकार को सुनकर आप चिढोगे। तब वासुदेव दास ने जो उपाय किया था वह सब कहा। महाराज इन मोहरों को लखोटा लाख के गोले मैं भर कर उस पर चंदन चढ़ाते मार्ग में चला आया हूं और रास्ते में कोई पूछता तो कहना यह वैरागी है। यह शालिग्राम की पूजा करता

है। इसी प्रकार थानेश्वर से चला और दिल्ली आया। तब वहां के वैष्णवों के घर प्रसाद लिया फिर मथुरा चलकर आगरा आया वहां भी वैष्णवों के घर प्रसाद लिया। उसके पीछे बीच में दो दिन बचे वह चबेना से काम चलाया। गांव बाहर सोता हुआ आया। गोला फोड़कर मोहर ले आया और आपके चरणारविन्द के दर्शन पाये हैं। यह सुनकर आपने वासुदेव दास छकड़ा से कहा अब तो किया सो किया फिर कभी भूलकर भी ऐसा मत करना। जिसमें स्वरूप की भावना करों उसमें अन्य भाव का विचार नहीं करना। तब वासुदेव दास पुनः श्रीआचार्यजी महाप्रभु से विनती की महाराज कुछ प्रतिष्ठा तो नहीं की थी और आपके चरण के प्रताप से हमको कुछ कष्ट नहीं हुआ। वासुदेव दास तो वैसे ही लेकर आजाता क्यों कि किसी मनुष्य में इसके बराबर बल नहीं था जो कोई मार्ग में छीन लेता। परन्तु रात्रिको कदाचित् सो जाये और निद्रावस्था में भी श्रीआचार्यजी महाप्रभु का द्रव्य कोई हरण कर ले तो अपराध हो इसलिए वासुदेव दास वैरागी वेश से ले आये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने प्रसन्न होकर भंडारी को बुलाकर वे मोहरें सोंपी और कहा कि तू पहले मंदिर की कटोरी छुड़ाकर ला। पीछे सब सामग्री ले आ। भंडारी मंदिर की कटोरी छुड़ाकर सब सामग्री ले आया। उस समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उत्थापन से शयन भोग साथ ही किये। पीछे भोग सरा कर शयन आरती कर श्रीठाकुरजी को पोढ़ाकर आप सकुटुम्ब माजी, दोनों लालजी समेत भोजन किया। पीछे सब सेवक, वैष्णवों ने महाप्रसाद लिया और वासुदेव दास छकड़ा को महाप्रसाद लिवाया। पीछे श्री महाप्रभु जी पोढ़े। इसके बाद प्रातः काल होने पर आप ने देहकृत्य किया। स्नान कर मंदिर में पधारे। तब आपने श्रीनवनीतप्रिय को जगाकर मंगला भोग धरा पीछे मंगला आरती कर स्नान

करा श्रृंगार कर के राजभोग सिद्ध कर के भोग समर्पित किया। समयानुसार भोग सराकर श्रीठाकुरजी की राजभोग आरती कर के अनोसर किये। सब भगवदीय वैष्णवों ने प्रसाद लिया। जब आप गादी तकिया के ऊपर बिराजे थे तब एक वैष्णव ने शंका की महाराज कल आपने राज भोग तक का सब प्रसाद गौओं को खिलाया और श्रीयमुनाजी में पधराया उसका क्या कारण था। तब आपने कहा कि कटोरी धरकर सामग्री आयी वह भोग तो श्री ठाकुरजी ने आप ही के द्रव्य का अरोगा वह तो आप ही का था। जो श्रीठाकुरजी का द्रव्य खायेगा वह मेरा नहीं। मेरा सेवक भगवदीय होंगा वह देव द्रव्य कभी नहीं खायेगा। यदि खायेगा तो महापतित होगा। इसलिए उस प्रसाद में से भोजन करने का अपना अधिकार नहीं था। इसके लिए गौओं को खिलाया और श्रीयमुनाजी में पधराया। यह सुनकर सब वैष्णव चुप हो गये। पीछे वासुदेव दास ने आप से प्रार्थना की महाराज मेरे को पहुंच लिख दो मैं फिर जाऊं। तब आपने अपने सुख समाचार लिख कर उन मोहरों का जबाव लिख वासुदेव दास को दिया। वासुदेव दास आपके पास से विदाहोकर चला।वह कुछ दिनों में सिंहनद आ पहुंचा और वह पहुंच का पत्र वैष्णवों को दिया। तब सब वैष्णव उस पत्र को माथे चढा कर पढा और बहुत प्रसन्न हुए।

प्रसंग—४

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु अडेल विराजते थे। वहां आप बड़े वैभव से सेवा करते थे। उस समय लोग बहुत आकर बस गये थे। आपके मंदिर के मनुष्य जल घरिया, टहलुवा, परचारग पात्रर मांजा, सब ही सेवा में रहते। यह वैभव देखकर वहां एक ब्राह्मणी आपके न्यातिकी आकर रहने लगी उनका भी निर्वाह

श्रीआचार्यजी महाप्रभु के प्रताप से चल जाता और जो कोई वैष्णव देश परदेश से आपके दर्शन को आते वे चलते समय श्रीआचार्यजी की ज्ञातिकी जानकर उस ब्राह्मणी का समाधन कर के जाते थे। जब आपके घर प्रस्ताव विधान होता तब वह ब्राह्मणी उत्कर्ष देखकर कुढ़ती ऐसा उसका स्वभाव था। वैष्णव देश पददेश से आकर सब बहु बेटी को दंडवत्त करते यह देखकर भी वह ब्राह्मणी कुढ़ती थी। मेरे को तो कोई पूछता नहीं। इसलिए उस बाह्मणी ने द्वेष करना शुरू किया।

पर उससे कुछ भी नहीं हुआ । तब उसने मन में विचार किया इनको किसी प्रकार से दुःख दूं तो अच्छा रहे। इसलिए श्रीआचार्यजी महाप्रभु के सेवक जल घरिया जो यमुना जल लेने को जाते उन पर एकदिन उस ब्राह्मणी ने अपने लोटा का जल डाल दिया। वह जल घरिया बहुत कुढ़ा परन्तु वे तो श्रीआचार्यजी के सेवक थे इसलिए उनको जो कोई दुःख देता उसको सहन करते। परन्तु आप उसे दुःख नहीं देते। उसमे फिर वह ब्राह्मणी तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु की ज्ञाति की थी इसलिए चुप रहकर राज देखो आपकी ज्ञाति की ब्राह्मणी है उसने अपने लोटा का जल जानकर गागर के ऊपर डालदिया। तब आपने सुनकर कहा कि जाने दो। उससे बोलो मत गागर लेजा कर भर लावों। इस प्रकार नित्य जल भरकर लाते। परन्तु उस ब्राह्मणी की दृष्टि पड़ती तो वह अवश्य ही एक गागर छिवा देती थी। वे जल घरिया नित्य श्रीआचार्यजी महाप्रभु के पास जाकर कहते तब आप उनसे कह ते जाने दो। बोलो मत और गागर भर लाओं। क्यों कि धैर्य रखना अपना सिद्धान्त है। आपने विवेक धैर्याश्रय ग्रन्थ में कहा है–" त्रिदुःख सहनं धैर्य" परन्तु वे जल घरिया नित्य प्रति बहुत ही कुढ़ते थे। वे कहते थे महाराज आप उससे कुछ भी नहीं कहते हो इसलिए हम क्या करें। कोई दूसरा मार्ग आने जाने का नहीं है। नहीं तो और पेंडे जल

लावें। इस प्रकार कहकर बहुत कुढे। परन्तु प्रभु बड़े गंभीर हैं। सब सहन कर लेते है। दूसरों को भी यही कहते बोलो मत। इस प्रकार बहुत दिन हो गये। तब जल घरियाने श्रीआचार्यजी विनती से की महाराज अब हम क्या क़रें। भंडार में तो पैसे का नुकसान होता है और हमको बारबार नहाना पड़ता है। आप तो उसको मना करते नहीं है। इससे हम सब बहुत ही कायर (हैरान) हो गये हैं। यह बात सुनकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु को दया आई। आपने तब जल घरिया से कहा कि तुम उसकी कोई चीज ले आओ। तब उन जल घरियों ने कहा कि वह हमारे मुख की और देखती है तब ऊपर से पानी पटकती है। वह हमको कोई ..... कैसे देगी/आपने कहा वह अपने आप देगी। तब आपने जल प्रवाह अपने आप देगी। तब एक दिन एक जलघरिया जल की गागर भर कर आ रहा था। वह ब्राह्मणी अपने घर पोतना कर रही थी। उस समय उस ब्राह्मणी को ध्यान आया कि आज मैंने किसी जल घरिया को छुवाया नहीं। वह बाहर आकर देखती है कि जल घरिया तो आगे निकल गया है। उसने तब पीछे से वह पोतना फेंक कर गागर पर मारा। वह पोतना मिट्टी का भरा हुआ था इसलिए गागर से चिपक गया। तब उस जल घरिया ने वैसे ही लेजा कर वह गागर श्रीमहाप्रभुजी के आगे धरकर कहा महाराज देखो वह ब्राह्मणी इस प्रकार से दुःख देती है। मैं तो आगे चला आ रहा था। उसने पीछे से गागर पर फेंक कर मारा है। तब श्रीआचार्यजी ने कहा कि इस पोतना को लेजा कर अच्छी प्रकार से धोकर सुखा कर ले आओ। वह जल घरिया उस पोतना को धो सुखा कर ले आया। आपने उसके केंकेड़ा (बत्ती सिद्ध कर वाये। उसको तेल में डुबाकर रखे। पीछे पिछली रात्रिको वे केंकड़ा जलाकर सब रसोई देखी इसलिए उस ब्राह्मणी की सत्ता का अंगीकार हुआ। वह ब्राह्मणी उसी समय सोकर उठी तब

उसको ज्ञान हुआ और कहने लगी देखो मैंने श्रीआचार्यजी महाप्रभु का कितना अपराध किया किन्तु वे कैसे गंभीर है। उनने मेरे से कुछ भी नहीं कहा वे तो सर्व करण समर्थ हैं और यह गांव उनका ही है। यदि वे आज्ञा करें तो अभी मेरे को निकाल दें। परन्तु ये तो साक्षात् ईश्वर हैं। ईश्वर ही इतना सहन करते हैं। जीव का दोष नहीं देखते है। इसलिए हो सके तो मैं इनके पास जाकर अपराध क्षमा करवाऊं। तब उस ब्राह्मणी ने आकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु को बहुत बार निवेदन कि महाराज मैंने आपका बहुत ही अपराध किया है क्षमा करें। मैंने आप स्वरूप को नहीं जाना। आपतो साक्षात् ईश्वर हैं। आप बताओ तब ही जान सकते है। जीव तो संसार रूपी अधकूप में पड़ा हुआ है। जिसको आप अनुग्रह करके निकालोगे वही निकलेगा। इसलिए आप कृपा करके मेरे को सेवक करो। आप तो उदार शिरोमणि हैं इसलिए उस ब्राह्मणी को कृपा करके शरण लिया। सूरदास जी ने भी गाया– *"विमुखभये, कृपा या मुखकी जब देखो तब तैसे"* और श्रीआचार्यजी महाप्रभु का नाम ही ऐसा है

श्री वल्लभ महासिंधु समान। सदा सेवन होत जिनकों अभय पद को दान।।१।। कृपाजल भरपूर हो जहां उठतभाव तरंग। रत्न चौदह सब पदारथ भक्त दसविध संग।।२।। पुष्टि मारग नौका तरत नहीं या आस। ढिंग न आवे द्विविध आसुर मकर मीन निरास।।३।। जहां सेतु बांध्यों प्रकट करि सुत विठ्ठलेश कृपाल" भयो मारग सुगम सबको चलत नेंकु न आल।।४।। पुष्टि मारग सुधा प्रकटी दई सुरति निजदास। असुरवंचे मनुज माया मोहमुख मृद हास।।५।। छांडि सागर कोंन मूरख भजे थिल्लरनीर। रसिकमन ते मिटी अविद्या परसि चरन समीर।।६।।

बैठक चरित्र

इस वार्ता में श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने यह सिद्धान्त प्रकट किया कि जो जीव की सत्ता को श्री ठाकुर जी अंगीकार करें तब उसका मन फिरता है। इसलिए श्रीआचार्यजी महाप्रभु तथा श्रीगुसांईजी जीव की सत्ता का उपयोग श्री ठाकुर जी के विषय में करवाते। तब तत्काल उसका मन फिर जाता। इस जीव में दो बड़े दोष हैं। एक तो अहंता और एक ममता। अहंता तो मैं, और ममता में मेरी ये दोनों बड़े बाधक रूप हैं। जब तक यह जीव श्रीआचार्यजी महाप्रभु की शरण न आये तथा ये दोनों दोष नहीं छूट जाते। तब जानना चाहिए यह जीव संसार में पड़ा है और श्री ठाकुर जी आपको भूल गये हैं। इसलिए मैं और मेरे को सूझता है। ऐसे जीव को महादोष वाला देखकर श्रीआचार्यजी महाप्रभु को दया आगई। उन्हीं के लिए आप प्रकट हुए हैं और अपने जीवों की अहंता को दूरकी। अहंता छोड़ने से यह सिद्ध हुआ कि जो कुछ है वह तुम्हारा है। मेरा कुछ नहीं है। मैं तुम्हारा दास हूं। श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहते हैं–" साक्षिणा भवता ऽ दुखि–ला इसलिए साक्षीवत् मेरे को संसारकी पीडा मेरे को बाधा न करे। इसलिए भवगदीय सब श्रीठाकुरजी की सत्ता मानते हैं और आप साक्षीवत् होकर रहते हैं। ऐसा श्रीआचार्यजी महाप्रभु का मार्ग है। इसमें जिसका बड़ा भाग्य होगा वही आपकी शरण आयेगा। श्रीआचार्यजी ने गृहस्थाश्रम में ज्ञान और वैराग्य दोनो भगवदियों को सिद्ध करा दिये है। यह ज्ञान तो एक भगवत्सेवा का ही पुरूषार्थ जानता है और गृहस्थाश्रम में अपने घर में स्त्री,पुत्र, भाई आदि बहुत कुटुम्ब है। परन्तु एक श्रीठाकुरजी के चरणारबिन्दु बिना किसी से स्नेह नहीं। केवल एक प्रभु से ही स्नेह है। प्रत्यक्ष कालवश से घर में से किसी मनुष्य के जाने पर भी उस समय में भगवदियों को श्रीठाकुरजी की सेवा की चिंता ही रहती है। श्रीठाकुरजी के सेवा में विलम्बन हो भगवदियों का मनतो अहर्निश

श्रीठाकुरजी की सेवा में ही रहता है। इसलिए संसार का क्लेश भगवदियों को बाधा नहीं करता है। श्रीआचार्यजी ने गृहस्थाश्रम में ज्ञान, वैराग्य दोनों, भगवदियों के सिद्ध कर दिये हैं। ये दो महापुरूषार्थ है। दोनों भगवान की प्राप्ति के साधन है। ये प्रभु परम दयालु है। वे अडेल में बिराज कर भगवदियों को अनेक प्रकार के आनन्द का दान करते थे।

प्रसंग–५

एक समय श्री महाप्रभुजी श्रीगोवर्धननाथजी का श्रृंगार कर गोपीवल्लभ भोग लेने को रसोई में पधारे । उस समय रसोइया ने सामग्री सिद्ध नहीं की थी। इसलिए आप पीछे तिबारी में आकर बिराज गये उस समय दामोदर दास हरसानी आपके पास बैठे थे। श्रीस्वामिनीजी गोपी वल्लभ का थाल साज ले कर पधारे। उस समय नूपुर, पायल, झांझर की झनकार होने लगी। यह शब्द श्रीमहाप्रभुजी ने सुना। तब आपने दामोदर दास हरसानी से कहा दमला तेने कुछ सुना। दामोदर दास ने विनती की महाराज श्रीस्वामिनीजी के आभरण का शब्द सुना। किन्तु कारण नहीं समझा। तब आपने दामोदर दास से कहा आज रसोई में गोपीवल्लभ भोग में देरी हुई। इसलिए श्रीस्वामिनीजी अपने श्री हस्त से थाल सजाकर लेकर प्रधारी है। इस भोग में विलम्ब श्रीस्वामिनीजी सहन नहीं करती है। यह श्रृंगार का भोग है। प्रभु का श्रृंगार होते समय व्रज भक्त अपने अपने घर से भोग की सामग्री सिद्ध कर ले आते हैं। इसलिए श्री ठाकुर जी व्रजभक्तों से मिलकर हास्यादि करते हुए अरोगते है। इसी कारण इस भोग का नाम गोपी वल्लभ भोग है। पीछे पुनः श्रीआचार्यजी महाप्रभु रसोई घर में पधारे। उस भोग का थाल ले जाकर श्रीगोवर्धननाथजी को समर्पित किया।

पीछे आपने रसोइया भीतरियाओं को आज्ञा की आज के पीछे भोग में विलम्ब होगा तो हम सहन नहीं करेंगे। इसलिए इस भोग की सामग्री शीघ्र पहुंचाया करना। उस दिन से सारे सेवक सेवा में सावधान हो गये।

प्रसंग—६

एक समय श्री महाप्रभु जी शीतकाल के दिन में पिछली रात को उठकर देह कृत्य कर तेल लगा रहे थे। तब श्रीगोपीनाथजी स्नान कर अपरस में आपके पास आकर खड़े हुए। तब (उन्होंने) श्री महाप्रभु ने उनको कहा कि तुम मंदिर में जाकर श्रीठाकुरजी को जगाओ। श्रीगोपीनाथजी किंवाड़ खोलकर आगे गये। वहाँ खड़े रहकर देखते हैं कि श्रीनाथजी भर निद्रा में पोढ़े हुए है। तब श्रीगोपीनाथजी ने आपसे आकर कहा श्रीठाकुरजी भर निद्रा में पोढ़े हैं क्या करूं? आपने गोपी नाथजी से कहा तुम एक क्षण भर खड़े रहो। पीछे मंदिर में जाकर हाथ की ताली बजाकर श्री को जगाओ। कारण यह है कि ब्रह्ममुहूर्त होने के पश्चात् श्री ठाकुर जी को जगाने। इस प्रकार की मर्यादा है। इस लिए अवश्य जगाना। श्रीआचार्यजी महाप्रभु तो निजस्वरूप का प्रकार सब जानते हैं। इसलिए श्रीनाथजी को ताली बजाकर जगा ने की आज्ञा दी।

प्रसंग—७

एक समय श्रीगोपीनाथजी ने श्रीआचार्यजी महाप्रभु से विनती की महाराज श्रीद्वारिकानाथजी को अपने घर पधरावें। तब आपने श्रीगोपीनाथजी से कहा कि तुमको बहुत पात्र सामग्री, गहना (आभूषण) देखकर लोभ हुआ होगा। श्रीगोपीनाथजी ने कहा महाराज आपके वंश में प्रकट होगा वह तो

लोभ नहीं करेगा। परन्तु हमको तो सेवा की इच्छा हुई है। इस लिए आपसे यह विनती की है। तब सभी वैष्णवों को सुना ने के लिए श्रीआचार्यजी ने यह बात श्रीगोपीनाथजी से कही मेरे वंश में अथवा मेरा कहलाने के लिए जो कोई भगवद् द्रव्य खायेगा उसका वंश निर्मूल होगा यह मेरी आज्ञा है।

प्रसंग–८

श्रीआचार्यजी महाप्रभु एकादशी का उपवास करते थे। इसलिए द्वादशी साधन करते। एक समय श्री आचार्यजी ने मन में विचार किया कि द्वादशी साधने के लिए श्रीठाकुरजी को शीघ्र जगाने पड़ते हैं। वह तो अपराध होता है। इसके लिए यह तो अच्छा नहीं है। यह बात आपने श्रीठाकुरजी से पूछी। तब श्री ठाकुर जी ने कहा कि तुम साधन द्वादशी सुख पूर्वक करो। हम प्रसन्न हैं। हम तो जल्दी अरोगते हैं यह प्रकार तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु के घर में है। परन्तु साधन द्वादशी श्रीगोवर्धननाथजी के यहाँ नहीं है। श्रीआचार्यजी प्रति एकादशी जागरण करते। श्रीगुसांईजी भी सेव्य स्वरूप से पूछने लगे। तब श्री ठाकुरजी ने श्रीगुसांईजी से कहा तुम हम को एक प्रबोधिनी की रात्रि को जगाना। इसलिए देव प्रबोधिनी की रात्रि को श्रीगुसांईजी के यहां श्रीठाकुरजी जागते हैं। श्री गोवर्धननाथजी के यहाँ स्वतः लीला है और श्रीगुसांईजी के यहां आठ महिना बंटा अरोगते है और श्रीनाथजी तो बारह महिना बंटा अरोगते हैं।

प्रसंग–९

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपनी बैठक में बिराज रहे थे। उस समय पांच सात वैष्णव आपके पास बैठे हुए थे। उस समय आपने श्री मुख

से कहा कि आज तो हमारा माथा (शिर) दुःख रहा है। जुखाम हुआ है शरीर अच्छा नहीं है। यह सुनकर वैष्णव बाजार जाकर औषध कुटवा कपड़ छन कर ले आये। दंडवत् कर दवा आपके सामने रखी और विनती की महाराज यह औषधी है इसे अंगीकार करिये। उस समय आपके आगे आग की अंगीठी रखी हुई थी। श्री हस्त से औषध लेकर सब अग्नि में डाल दी। ऐसा देखकर सब वैष्णव अपने मन में बहुत खेद करने लगे। हमतो इतना श्रम करके औषधी लाए थे और प्रभु ने अप्रसन्न होकर सारी औषधि अग्नि में जला दी किन्तु कोई भी कुछ कह नहीं सकता। परन्तु श्रीआचार्यजी महाप्रभु अन्तर्यामी साक्षात् पूर्ण पुरूषोत्तम है। जब प्रसन्नता में बिराजे हुए थे तब उन वैष्णवों ने आपसे प्रार्थना कर पूछा कि महाराज उस दिन हम आपके लिए औषधी लाए थे उसको आपने नहीं लिया और आपने श्री हस्त से अंगीठी में डाल दिया सो ऐसा क्यों आप कृपाकर हमको कहो। तब आपने श्री मुख से कहा। अरे वैष्णव वह तो सब औषधी मैंने ही अरोगी थी। क्या तुम नहीं जानते हो। तब उन वैष्णवों ने आपसे विनती की महाराज हमतो अज्ञानी जीव है क्या जानें। उस समय आपने कृपा करके अपने स्वरूप को वैसा बताया। जो साक्षात् अग्नि रूप है। तब वे अपने को धन्य मानने लगे।

प्रसंग–१०

एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु अडेल में बिराज रहे थे। वहाँ श्रीभागवत के दशमस्कंधकी श्रीसुबोधिनीजी संपूर्ण हुई और एकादश स्कंध चल रहा था। उसमें नवयोगी प्रसंग है। उसमे श्री ठाकुर जी ने उद्धव जी के आगे कहा है उसमें आठ योगी के ऊपर तो सुबोधिनीजी हुई है और नवम योगी कर भाजन के ऊपर प्रसंग की सुबोधिनी का आप विचार कर रहे थे। उस समय आपको

श्रीठाकुरजी की तीसरी आज्ञा हुई– "तृतीयो लोक गोचरः" श्रीठाकुरजी ने श्रीमहाप्रभुजी से कहा कि तुम जगत में अगोच रहो। कोई तुम्हारा दर्शन करे अथवा नहीं करे परन्तु जो भगवदीय हैं वे तो तुम्हारे ही हैं। वे तो दर्शन बिना नहीं रह सकेंगे। वे कैसे कृपा पात्र हैं वह आगे भगवानदास की वार्ता में लिखा हैं। श्रीआचार्यजी महाप्रभु पूर्व स्वरूप से दर्शन नहीं देते हैं। उसका कारण है आसुरी भी दर्शन करते। भक्ति बिना दर्शन का फल नहीं होता है। उसी को सूरदास जी ने गाया है– "भक्ति बिना भगवान दुर्लभ करत निगम पुकारि" इसलिए जिनका श्रीठाकुरजी पर स्नेह है और भक्ति है उनको श्रीठाकुरजी के स्वरूप का ज्ञान है। वे अन्य अवतार देह में भी सदैव दर्शन करते हैं। भगवान की लीला नित्य है नित्य व्रज में विहार है। उसको भगवदियों ने गाया है– "सदा व्रज में ही करत विहार" जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु के सेवकों को विरह दुःख होता है तब आप उनको दर्शन देकर वचनामृत सिंचन कर पोषित करते हैं। उसको गोपाल दास जी ने गाया है– "आरतिहरण चरण अंबुज पर बलि बलि दास गोपाल" श्रीआचार्यजी महाप्रभु की तो नित्य अखण्ड लीला है। पीछे जब श्रीआचार्यजी को श्रीठाकुरजी ने तीसरी आज्ञा दी कि अब आप पधारों। तब आपने विचार किया अब किस प्रकार से चलना। उस समय मन में विचार किया सन्यास ग्रहण करना। क्योंकि ब्राह्मण का स्वरूप लिया है। इस लिए ब्राह्मण को चारों आश्रम अंगीकार करना चाहिए। प्रथम तो आप ने ब्रह्मचर्या श्रम को अंगीकार किया था। पीछे श्रीठाकुरजी की आज्ञा से गृहस्थाश्रम अंगीकार किया था। जब श्रीगोपीनाथजी तथा श्रीगुसांईजी का प्राकट्य हुआ। तब से गृहस्थाश्रमी रहे। उसको वल्लभारव्यान में गोपालदास जी ने गाया है– "पूरणब्रह्म श्री लक्ष्मण सुत पुरूषोत्तम श्री विट्ठलनाथ। श्री गोकुल मां प्रकट पधार्या स्वजन की

घासनाथ'' फिर वानप्रस्थ लिया। साक्षात् ईश्वर से ही बने सकलपदार्थ विद्यमान है उनमें वैराग्य हो। पीछे विचार कर आपने संन्यास ग्रहण किया । आज्ञा आपकी धर्म पत्नी श्रीमहालक्ष्मीजी के पास उन्होंने मांगी। स्त्री की आज्ञा बिना संन्यास ग्रहण नहीं होता है तो आज्ञा दी नहीं। तब आपने वैसे ही किया जैसे कृष्णावतार में आपने किया । अब पधारने का समय हुआ है तब चारों और अग्नि का आवर्ण कर लिया उसका नाम आव्रत्याग्नि है। कृष्णावतार की तरह श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अभी किया। उस समय श्री महालक्ष्मी जी ने अग्नि का उपद्रव देखकर कहा प्रव्रज ''आप निकलो आप निकलो'' अग्निका उपद्रव बहुत हुआ है। इतना तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु को कहलवाना ही था। प्रव्रज शब्द का दूसरा अर्थ संयास होता है यह वचन सुनकर श्रीमहाप्रभुजी संन्यास ग्रहण करके काशी पधारे। वहां जाकर आपने अन्न जल और संभाषण इन तीनों ही वस्तु का त्याग किया। पीछे मौन व्रत धारण किया और ध्यान मुद्रासे रहे। संवत् १५८७ के आषाढ़ कृष्ण २ उपरान्त ३ के दिन आपने विचार किया कि आज मध्याह्न काल में श्री गंगाजी में जाकर श्री भगवान के धाम को जाना है। ऐसे में उनके पुत्र श्री गोपीनाथ जी तथा भी विट्ठलनाथजी सकुटुम्ब परिवार तथा सब सेवक जनों को संग लेकर श्रीआचार्यजी की खोज करते काशी जी में मध्यान्ह के समय आ पहुंचे। उस समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु को संन्यास दीक्षा में श्री गंगा जी पर पधारते देखा। तब वे आपके पास शीघ्रता से जा पहुंचे उस समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने उनके सामने ही नहीं देखा। तब आपके पुत्रों ने प्रणाम पूर्वक विनती की महाराज अब हमको क्या आज्ञा है। उस समय आपने तो मौन व्रत धारण कर रखा था इसलिए संज्ञा करके धूल में अंगुली से शिक्षा के साढ़े तीन श्लोक आपने अपने श्री हस्त से लिखे। वह श्लोक– ''यदा बहिर्मुखा यूयं भविष्यथ कथंचन। तदा काल प्रवाहस्था देह

चित्तादयो ऽप्युंत।।१।। सर्वथा भक्षयिष्यान्ति युष्मानिति मतिर्मम" न लौकिकःप्रभुः कृष्णो मनुते नैव लौकिकम्।।२।। भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्चै हिकश्च सः" परलोकश्च तेनायं सर्व भावेन सर्वथा।।३।। सेव्यः स एव गोपीशो विद्यास्यत्य खिलंहिनः "इन श्लोकों में आपने अपने वंशजों को शिक्षा कहकर बताया है कि यह तुम्हारा कर्त्तव्य है। इस में सब का सार पदार्थ आपने संक्षेपसे कह दिया पीछे शीघ्र अपना स्वरूप श्रीगुसांईजी को जतादिया और आप श्री गंगाजी की मध्य धारा में पधारे। वहां जाकर सभी के देख–ते अग्निकी शिखा रूप लेकर श्रीठाकुरजी के धाम–निज–नित्य लीला में पधारे। उस समय भी श्रीआचार्यजी के पूर्वाश्रम के द्वारपाल विष्णुदास छीपा संग थे उनने गाया– वंदेहं तं विमल हुताशं। जाते प्रकट प्रदीप श्री विट्ठल अमल अद्भुत तिमिर भ्रम नाशं।।१।। उठत स्फुलिंग विषद निज सेवक वचनमृदु प्रेर मारूत बलि श्वासं। अन्य भजन दावानल चहू दिश मायावाद मनुज मृगत्रा।। सं।।२।। शीत समीप दूरजन तापक अनुभव–उमय एक गुण भास देवानन ज़ड अमित समीर वश पुरूषोत्तम मुखपद्य विकासं।।३।। वागीशज्ञं रसज्ञ वरण पुनि अतुल स्वभाव गृहीत रूचिग्रासं अखिल धरा पद परस पूत कृत व्रज यमुना विहरत रूचि रासं।।४।। श्री वल्लभ विट्ठलसुत गिरिधर नर भूषण मतिगूढ प्रकाशं" श्री लक्ष्मण सुत विष्णु स्वामिपथ श्रुतिवच मंडन कहे विष्णु दासं।।५।। इस प्रकार से लीला यश का वर्णन विष्णुदास जी ने किया है और छीतस्वामी ने भी गाया है वह पद– हरिमुख अनल सकल सुर पुन सुख तिन तन धार धरम धुर लीनी। ले राख्यो सुरलोक भागि फल निजमरजाद भक्ति भली कीनी।।६।। तव हित भजन उपासन सेवा भली मति विमल दोष दुःख हीनी" छीतस्वामी गिरिधरन श्री विट्ठल सब सुख निध अपनेन को दीनी"

ऐसा श्रीआचार्यजी महाप्रभु आधिक दैविक अग्निका रूवरूप था। गंगा प्रवेश के समय प्रकट किया जैसे कृष्णावतार में श्रीठाकुरजी ने तेजो मय रूप धारण किया अस समय में सब देवता ब्राह्मादिक पधराने के लिए आये थे। किन्तु उस तेज पुंज की उन किसी को कुछ खबर नहीं पड़ी। जिस रीतिसे श्रीठाकुरजी अपने स्व धाम पधारे वैसा ही प्रकार श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने किया।

प्रसंग–११

श्रीआचार्यजी महाप्रभु संन्यास ग्रहण करने को घर में से संवत् १५८७ गुजराती वैशाख वदी १० के दिन बाहर पधारे। वे सीधे ही प्रयाग पधारे। वहां नारायणेन्द्र तीर्थस्वामी से मंत्रोच्चारण करवा उनको चतुर्थाश्रम के गुरू करके उनसे विधि पूर्वक संन्यास ग्रहण कर आप काशी पधारे। वहां आपने हनुमान घाटपर निवास स्थान किया। वहां एकमास तक अनशन व्रत करके (कोई चालीस दिन तक एकाशन भी लिखते हैं) उन दिनों में आपने अन्तः करण प्रबोध नाम का ग्रन्थ किया।

इस ग्रन्थ में कहा कि "तृतीयो लोक गोचरः" तीसरी आज्ञा लोक गोचर कहा तब श्रीठाकुरजी ने आज्ञा दी अब आप जगत को दर्शन मत दो। जैसे कृष्णावतार में सभी दर्शन करते हैं। अब तो जिसको ज्ञान भक्ति तथा भगवद् अनुग्रह होगा उसी को प्रभु के सदैव दर्शन होगे और श्रीठाकुरजी अखण्ड नित्यलीला करते हैं इस कारण न तो कहीं जाते है और न कही आते हैं। जब आप माया का टेरा (पर्दा) दूर करते है तब आपको दर्शन होते है जब माया का टेरा बीच में आता है। तब दर्शन नहीं होते हैं। इसलिए आविर्भाव

तिरोभाव सदैव रहता है। इस प्रकार से श्रीआचार्यजी का गमन देखकर पूर्णमल्ल क्षत्री ने बहुत शोक किया। उस समय प्रभुदास जलोटा क्षत्री जो काशी जी से ४० कोस दूर रहते थे। वहां पूर्णमल्ल जी को सूचना देने गये। एक अच्युत दास माणिकपुर में रहते उनकी वार्ता में लिखा है कि प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु के संगकाशी में जो वैष्णव था उनमें से उस एक वैष्णव को आज्ञा की थी कि जो तेरे को कभी संदेह होतो तू माणिकपुर में जाकर अच्युतदास से मिलना। उसको अच्युतदास से बहुत स्नेह था। इस समय उसने जाना कि अच्युत दास के मिलने से मेरा क्लेश निवर्त होगा। श्री महाप्रभु ने तो दुःख के समुद्र में डाल दिया है। जैसे श्री ठाकुरजी मथुरा पधारे थे तब भक्तों को विरह ताप रूपी क्लेश समुद्र में डाला था वैसे ही श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपने भगवदियों को ऐसा विरह का दान किया है। उस कारण यह जो विरह है वह मुख्य है। इसलिए विरह का नाम उत्तर दल है। इस कारण अधिक दुःख इसी को कहते है जो– "हृदय तें यह मदन मूर्ति छिनु न इत उतजात" इसी पद की पिछली तुक में सूरदास जी कहते है "सूर ऐसे दरस को यह मरत लोचन प्यास" नेत्रों की प्यास तो श्री मुख देखने से ही मिटती है। इस विषय में कृष्णदास जी ने– "गिरिधर देखें ही सुख होय"

इस पद में विरह का दुःख गाया है। इसलिए उस वैष्णव ने विचार कियां अच्युतदास से मिलने पर ही यह हमारा दुःख निवर्त हो सकता है। क्यों कि वे बड़े ही भगवदीय कृपा पात्र हैं। उनके ऊपर श्री महाप्रभुजी का बड़ा स्नेह है अपना स्वरूप उनको पधरा दिया है इसलिए उनसे अवश्य मिलें। इस भांति से अपने मन में विचार कर यह वैष्णव अच्युतदास से मिले। अच्युतदास

ने उस वैष्णव का अंत करण शुष्क देखा और मुख भी मुरझाया हुआ देखा। तब अच्युतदास ने उस वैष्णव से पूछा कि तुम्हारी ऐसी दशा क्यों है। तब उसने कहा कि श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीठाकुरजी के पास स्वधाम पधारें है वह विरह दुःख सहन नहीं हो रहा है। क्योंकि मेरे को तो आपने ऐसा ही दर्शन दिया है। तब अच्युतदास जी ने कहा कि श्री भागवत माहात्म्य में कहा है कि जब श्रीठाकुरजी से अन्त में मिलकर सब रानी श्रीद्वारिका से व्रज मे आयी तब आप वैकुण्ठ पधारे। इसलिए उनके मन में अत्यन्त क्लेश हुआ। वहां व्रज में श्री यमुना जी के तीर पर श्री कालिन्दी जी का दर्शन हुआ। श्री कालिन्दी जी श्री यमुना जी के तीरपर बैठी थी। उनको देखकर जो सोलह हजार भक्त श्रीठाकुरजी की नायिका थी उनने श्रीकालिन्दीजी से पूछा कि श्रीठाकुरजी सब के पति हैं वे तो वैकुण्ठ पधारे है और तुम परम प्रसन्न हो और हम को तो महाक्लेश हो रहा है उसका क्या कारण है। तब श्री कालिन्दी जी ने कहा कि ऐसा तो श्री ठाकुर जी कभी नहीं करेंगे। यह तो आसुर व्यामोह लीला है। आप तो सदा श्री यमुना जी की पुलिन पर विहार करते हैं। इसलिए आपका गुण गान करोगे तो वे तुम को साक्षात् दर्शन देंगे। आपकी तो नित्य लीला है। ऐसे उस वैष्णव को अच्युतदास ने कहा। वैसे ही श्रीआचार्यजी महाप्रभु की अपनी लीला है। भगवदियों को तो आप नित्य दर्शन देते हैं। जिनको आपने अंगीकार किया है उनको सदैव लीलासहित आप नित्य दर्शन देते है वह लीला ऐसी है उसको गोपालदास जी ने गाया है–

"ज्यांहां नृत्य रास बहू पेरें मधिनायक नितर्त हेरे, ज्यांहां रतन जटित तट सरित। ज्याहां नव पल्लव भोमिहरिता, ज्यांहां धातु रत्नगिरि राजे वाजित्र

विविध पेरे,' वाजे, ज्यांहा युवती यूथ बहू मांहेरे श्रीजी सांवल वरण सोहाएरे, एणी परे श्रीगुसांईजी ने जाणो रे, जाणी अहरनिश ध्याई वरवाणोरे, जे जीव जातस होए, कोईरे, तेहेन ततक्षण सर्व सुख होई रे, सेवक जन दास तमारोरे तेहेना रूप वियोग निवारोरे''।

ऐसी लीला के दर्शन होते हैं। इसलिए ऐसा श्रीआचार्यजी महाप्रभु का मार्ग है। जो कोई किसी भी जाति का शरण आवे उसको श्रीआचार्यजी के और श्रीगुसांईजी के चरणारविन्द की प्राप्ति होगी और जो कृपा पात्र सेवक है उनका तो क्या कहना। पीछे अच्युतदास जी ने अपने मंदिर के किंवाड़ खोलकर पर्दा हटाकर उस वैष्णव को श्रीआचार्यजी महाप्रभु के दर्शन करवाये। तब वह वैष्णव क्या देखता है कि आप तो श्री सुबोधिनी जी का पाठ कर रह हैं। उस वैष्णव ने तब आपसे पूछा कि महाराज वहां तो ऐसा दिखाया और यहां तो आप ऐसे बिराज रहे हो जिसका क्या कारण है। तब आपने उस वैष्णव को श्री मुखसे कहा कि तू ऐसा संदेह मतकर। तेरे को तो दर्शन नित्य है और वहां तो हमने सब के लिए पर्दा बीच में कर रखा है। हम भगवदियों को तो एकांत में दर्शन देंगे और सब को तो दर्शन नहीं देंगे। इसलिए श्रीगुसांईजी ने श्री महाप्रभु का नाम कहा है– ''रहप्रियः'' और ''व्रजप्रियः'' ।। इसलिए ऐसे भगवदियों को दर्शन सदैव है और आपकी स्थिति सदैव गोवर्धन में है। श्री सर्वोत्तम जी में श्रीगुसांईजी ने आपका नाम कहा है–'' गोवर्धन स्थित्युत्साह'' : ''श्रीआचार्यजी महाप्रभु की भगवदियों सहित अनेक वार्ता है। आपके यश का तो कुछ भी पार नहीं हैं। इसीलिए वल्लभाख्यान में गोपाल दास जी ने गाया है। कि– ''निगम नेतिनेति गाए'' और जीव तो कहां तक

वर्णन करेगा। छीत स्वामी ने भी गाया है– "गोवल्लभ गोवर्धन वल्लभ श्रीवल्लभ गुण गिने न जांई" इसलिए श्रीआचार्यजी के तथा श्रीगुसांईजी के अनंत चरित्र है।

वार्ता प्रसंग–१२

श्रीआचार्यजी महाप्रभु को श्री स्वामिनी (श्री राधिका जी ने) आज्ञा की थी कि जब आपको स्वधाम आने की श्री ठाकुर जी की तीन बार आज्ञा हो तब आना। इसलिए प्रथम आज्ञा गंगा सागर पर हुई।तब (आप श्रीआचार्यजीने श्रीसुबोधिनी जी नाम की भागवत की टीका प्रारंभ की। पीछे दूसरी आज्ञा हुई तब संन्यास ग्रहण का विचार किया। तीसरी आज्ञा हुई तब काशी जाकर निज धाम पधारे। श्रीआचार्यजी ने ३ दिग्विजय की। पीछे पृथ्वी पर बिराजकर कुल ५२ वर्ष तक आपने दर्शन दिये। पीछे चार स्वरूप भगवद स्वरूप में लीन हुए। इस प्रकार (१) श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्री गंगा जी के प्रवाह में (२) श्रीपुरूषोत्तम जी को श्रीनाथजी ने हाथ पकड़कर अपनी लीला में पधराये (३) श्रीगोपीनाथजी श्री जगदीश पधारे थे वहाँ श्री बलदेव जी के स्वरूप में लीन हुए।

(४) श्री गिरिधरजी श्री मथुरानाथ जी के मुरवारविन्द में समा गये। इस रीति से सब लीला में पधारे। उस समय के जो दूसरे आचार्य थे सभी देवताओं के अंशावतारी पृथ्वी पर धर्म प्रवर्तित करने के लिए प्रकट हुए थे। इस रीति से निम्बार्क संप्रदाय के आचार्य निम्बार्काचार्य जो सुदरर्शन का अवतार थे और सुरेश्वराचार्य सूर्य के अवतार हुए और देव प्रबोधाचार्य बह्मजी के अवतार हुए। ये दोनों न्याय.और मीमांसा के आचार्य हुए। श्रीवेदव्यासजी

का अवतार श्री विष्णुस्वामी और महादेवजी का अवतार श्रीशंकराचार्यजी हुए। हनुमानजी का अवतार मध्वाचार्य जी हुए और लक्ष्मण का अवतार श्रीरामानुजाचार्य जी थे। मध्वाचार्य जीने प्रथम विद्याभ्यास शंकराचार्य जी के पास किया था। पीछे शंकराचार्यजी के शिष्य मणिमाद से मध्वाचार्य जी का शास्त्रार्थ हुआ था।

।। श्रीवल्लभचार्यजी की घरू वार्ता समाप्त।।

चि.गो. श्री १०५ श्री भूपेश कुमार जी

(श्री विशाल बावा)

नाथद्वारा

जन्मतिथि पौष कृष्ण ३०
विक्रम संवत् २०३६

सन्
५ जनवरी, १९८१

ब्रह्मवाद के सूत्र

(१) "ब्रह्म सर्वज्ञ है"

(२) "जीव अल्पज्ञ, अणु और ईश्वर का ही अंश है"

(३) "ब्रह्म अपरिमेय और अज्ञेय है, दुर्गम्य भी है किन्तु अनुग्रहैक गम्य भी वही है"

(४) "ब्रह्म सर्व धर्मों का केन्द्र है"

(५) "ब्रह्म सर्व सामर्थ्य सम्पन्न ईश्वर है और वही परमतत्व भगवान् श्री कृष्ण ही है"

(६) "ब्रह्म सर्व विरूद्ध धर्मों का आश्रय है"

(७) "ब्रह्म निर्दुष्ट है"

(८) "ब्रह्म सर्व सद्गुण संयुक्त है"

"कृष्णात्परं नास्ति दैवं वस्तुतो दोष वर्जितम्"

महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य

संशोधक : त्रिपाठी यदुनन्दन श्री नारायणजी शास्त्री

पुस्तक प्राप्ति स्थान : श्री गोवर्द्धन पुस्तकालय, मोती महल चौक, श्रीनाथजी का मंदिर, नाथद्वारा (राज.)